श्री दौलतराम गौड़ प्रणीत

विधान प्रकाश पद्धति

भाषा-टीका
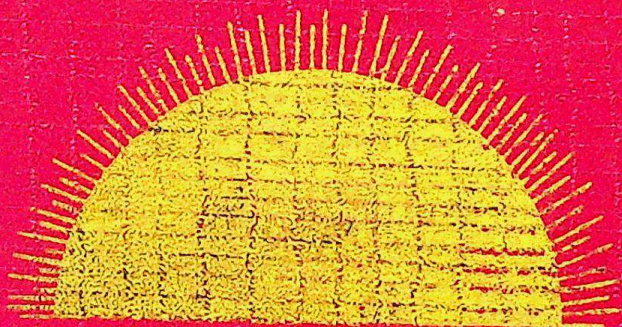
टीकाकार- अशोक कुमार गौड़

प्रकाशक :-

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
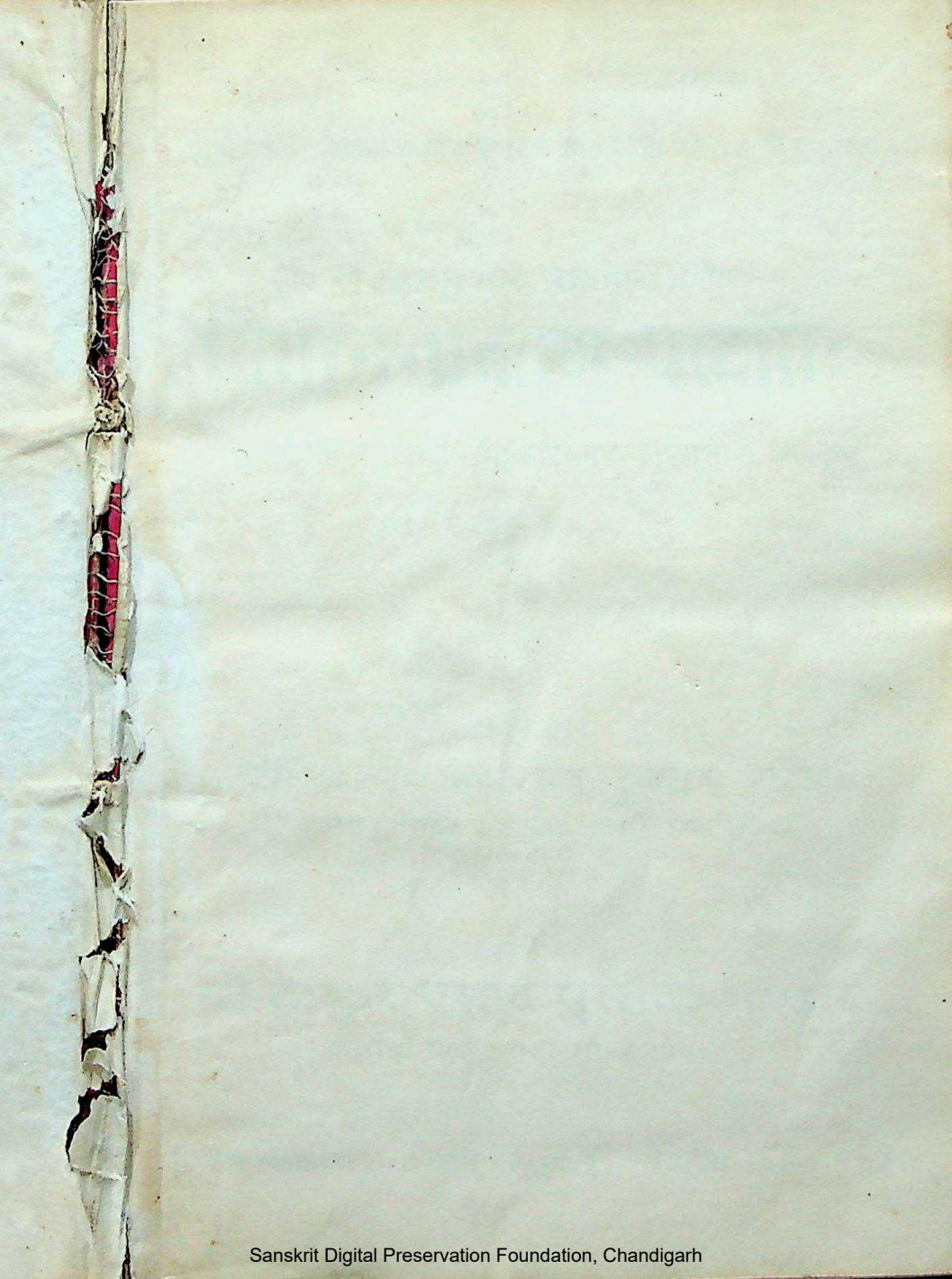
कचौड़ीगली, वाराणसी

वेदाचार्य पं० दौलतराम गौड स्मारक ग्रन्थमाला की १८ वीं पुष्पलता

पं० दौलतराम गौड वेदाचार्य प्रणीत—

विधान-प्रकाश-पद्धतिः

'अशोकेन्दु हिन्दी टीका तथा हरि-पुष्प टिप्पणी से अंलकृत'

टीकाकार

वैदिक पं० अशोक कुमार गौड

अध्यक्ष-भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल, वाराणसी

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ी गली, वाराणसी-२२१००१

द्वितीय संस्करण] सन् १९९८ ई. [मूल्य १००/- रुपये

समर्पित

जिनका चारों वेदों पर पूर्ण अधिकार था

व्याकरण, धर्मशास्त्र मीमांसा जिनकी जिह्वा पर थी

जो समस्त शास्त्रों के उद्भट्ट ज्ञाता थे

जो वैदिक वाङ्मय के जन्मसिद्ध अधिकारी थे

जो धर्म प्राण व सदैव सत्यव्रत निरत थे

ऐसे

साक्षात् वेद स्वरूप

मेरे पितामह

महामहोपाध्याय स्व० पं० विद्याधर जी शास्त्री गौड

पूर्व संकायाध्यक्ष—प्राच्यविद्या व धर्मविज्ञान विभाग

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी

के

कमनीय कर—कमलों में

सादर—समर्पित

अशोक कुमार गौड

श्रद्धा के प्रसून

वेदवल्ली विलूना सा, गता सौहार्दमाधुरी।
विधवा भारती भूता, गते विद्याधरे दिवम्॥
(म. म. पा. पं. हरिहर कृपालु जी द्विवेदी)
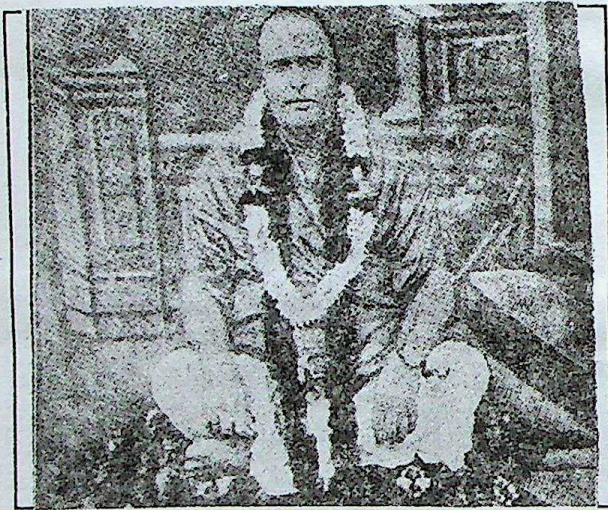
सर्वतन्त्र–स्वतन्त्र
महामहोपाध्याय पं० विद्याधर जी गौड शास्त्री अग्निहोत्री

यस्मिन् प्रशस्तमति-शालिनि गौड्धुर्ये
विद्याधरे सुफलिताऽखिलवेदविद्या।
तस्मिन् सुरेश्वरपदङ्गमितेऽत्र तस्याः,
सिंहासनं मुषितरत्नमिवाद्य जातम्॥
गोस्वामी श्री पं. दामोदर लाल जी

श्रद्धा के प्रसून

विधान–प्रकाश–पद्धतिः के प्रणेता
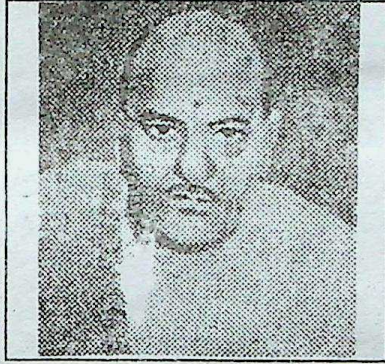
उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित

स्व० पं० दौलतराम जी गौड वेदाचार्य

विधान–प्रकाश पद्धतिः–के टीकाकार
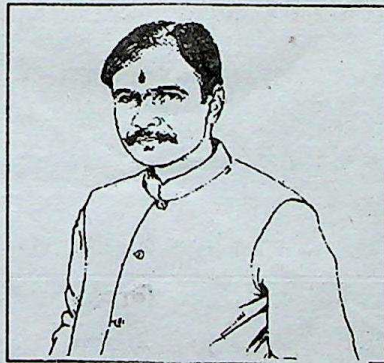
वैदिक पं० अशोक कुमार गौड

भूमिका

मुझे यह जानकर हार्दिक आह्लाद और परम संतुष्टिपूर्ण हर्ष हो रहा है कि वेदाचार्य पंडित दौलतराम जी गौड के सुपुत्र श्री अशोक कुमार गौड ने अपने वेद-विद्या-वर्चस्वी पिताजी के सुख्यात ग्रंथ 'विधान प्रकाश पद्धतिः' की अत्यन्त उपादेय और सरल हिन्दी-टीका करके उसे प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

वैदिक कर्मकाण्ड और श्रौत-स्मार्त यज्ञ करनेवाले याज्ञिक-पंडितों के लिए तो, यह ग्रन्थ सहायक और पथ-प्रदर्शक होगा ही, साथ ही जो जिज्ञासु वैदिक आचार और यज्ञ-यागादि का मूल रहस्य और उसका सम्यक् विधान जानने के इच्छुक होंगे, उनकी भी सभी जिज्ञासाओं की तृप्ति इस ग्रन्थ से हो सकेगी।

वेदाचार्य पंडित दौलतराम गौड स्मारक ग्रन्थ माला की १८वीं पुष्पलता में प्रकाशनीय इस 'विधान-प्रकाश-पद्धतिः' नामक ग्रन्थ में तीन प्रकरण समाविष्ट है-

प्रथम प्रकरणमें-शिव, पार्थिव, सूर्य और लक्ष्मी के पूजन का सविस्तार विधान समझाकर काली, दुर्गा, लक्ष्मी, गणेश व हनुमत् के विग्रह की प्रतिष्ठा का भी पूर्ण कर्मकाण्ड दे दिया गया है।

द्वितीय प्रकरणमें-लक्ष्मीयाग, लक्ष्मीनारायणयाग, गणेशयाग, शिवशक्ति-याग तथा सभी प्रकार के यज्ञों में अनिवार्य रूप से संपादनीय गणेश आदि देवों के विधि पूर्वक अर्चन का व्यवस्थित विवरण दे चुकने के पश्चात् विष्णुयागस्वाहाकार, विश्वशांतियाग-स्वाहाकार, रुद्रयाग स्वाहाकार तथा गणेशयाग-स्वाहाकार तथा अन्य यज्ञों के स्वाहाकार के वैदिक मंत्रों का समावेश भी कर दिया गया है। साथ ही साथ सभी यज्ञों के न्यासों को भी टीकाकार ने सविधि प्रस्तुत किया है।

क्योंकि आजकल बहुत से वैदिक विद्वान् अनेक प्रकार के स्मार्तयज्ञ कराने तो लगे हैं किन्तु, उनमें किन-किन मंत्रों का कहाँ

किस प्रकार विनियोग होता है, इसका पूर्ण ज्ञान न होने से यज्ञ का पूर्णफल नहीं प्राप्त होता है। अत: यह प्रकरण सभी प्रकार के यज्ञ कराने वालों के लिए नितान्त आवश्यक रूप से ज्ञातव्य है।

तृतीय प्रकरणमें—विभिन्न प्रकार के यज्ञों के विविध-प्रकार के कुण्डों के निर्माण का प्रामाणिक विधान समझा कर दिया गया है। इसके साथ ही साथ ग्रहों के कुण्डों का भी समावेश किया गया है। क्योंकि कुण्ड-निर्माण तो सम्पूर्ण वैदिक कर्मकाण्ड की आत्मा है।

इस प्रकार यह ग्रन्थ सब प्रकार के प्रत्येक वैदिक कर्म के लिए महान् ज्ञान-प्रदीप बन गया है, जिसका सुलभ आलोक पाकर वैदिक कर्मकाण्डी, विद्वान् सुविधा पूर्वक, यज्ञ कर्म संपादित करा सकेगें। ५२० पृष्ठों में ही विद्वान् सम्पादक और टीकाकार ***श्री अशोक कुमार गौड*** ने इतनी सब सामग्री सन्निविष्ट करके गागर में सागर भरने का अपूर्व श्लाघनीय प्रयास किया है। मैं हृदय से उनके इस सात्विक आयाम का अभिनन्दन करते हुए, उन्हें बधाई देता हूँ और विश्वास करता हूँ कि, वैदिक समाज में इस ग्रन्थ का व्यापक समादर होगा।

—सीताराम चतुर्वेदी

वेदपाठी भवन
मुजफ्फनगर
उत्तरप्रदेश (भारत)

सम्मति

भारतीय संस्कृति के रक्षक, सनातनधर्म के प्रतिपालक, दिल्ली हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश *श्री विपिनचन्द्रा नन्द सरस्वती* (जज स्वामी) की सम्मति–

वेद व धर्मशास्त्र के मूर्द्धन्य विद्वान् श्री स्वर्गीय पण्डित दौलत राम जी गौड़ वेदाचार्य के सुपुत्र श्री अशोक कुमार गौड़ ने अपने पिता श्री के विख्यात ग्रन्थ 'विधान प्रकाश पद्धति:' की अत्यन्त सरल हिन्दी–टीका करके प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में तीन अंश समाविष्ट है। जिसमें क्रमश: पूजन, प्रतिष्ठा, यज्ञ, विविध प्रकार के यज्ञों के स्वाहाकार के वैदिक मंत्र व यज्ञों के न्यासादि तथा विविध प्रकार के कुण्डों के निर्माण की विधि भी प्रस्तुत की गई है।

ग्रन्थ को उपयोगी बनाने के हेतु परिशिष्ट भाग में अत्यन्त 'कर्मकाण्डोपयोगी' विषयों का समावेश, अद्वितीय रूप से किया गया है। विशिष्ट--परिशिष्ट में महत्वपूर्ण वैदिक विषयों पर विचार भी प्रस्तुत किया गया है। 'विधानप्रकाश पद्धति' नामक इस ग्रन्थ का आश्रय लेकर सम्पूर्ण कर्मकाण्ड विधिवत् कराया जा सकता है।

टीकाकार श्री अशोक कुमार गौड ने इस ग्रन्थ में उन सभी वैदिक व कर्मकाण्ड से सम्बन्धित विषयों का समावेश किया है, जिसकी आवश्यकता वैदिक, कर्मकाण्डी तथा वेद का अध्ययन करने वाले छात्रों व वेद व कर्मकाण्ड के जिज्ञासुओं को आज के समय में पड़ती है। इस ग्रन्थ में कर्मकाण्ड की गूढ़ और सूक्ष्म विधियों तथा रहस्यों का बड़ी कुशलता से उद्घाटन किया गया है।

मैं टीकाकार तथा सम्पादक ***श्री अशोक कुमार गौड*** को उनकी इस रचना तथा हिन्दी टीका करने के उपलक्ष में हार्दिक बधाई देते हुए, उनके आगामी सुन्दर भविष्य की कामना करता हूँ।

—*विपिनचन्द्रनन्द सरस्वती 'जज-स्वामी'*

सम्मति

उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित, वेद के अद्वितीय विद्वान् पूर्व वेद विभागाध्यक्ष 'गोयनका संस्कृत महाविद्यालय' वाराणसी के *श्री पंडित वंशीधर मिश्र वेदाचार्य* की सम्मति–

साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान् श्री पंडित सीताराम चतुर्वेदी जी ने इस ग्रन्थ की भूमिका में इस ग्रन्थ को 'अगाध ज्ञान प्रदीप' की संज्ञा से विभूषित किया है, जो वास्तव में इस ग्रन्थ के अनुरूप ही है, क्योंकि इस ग्रन्थ में पूजन, प्रतिष्ठा, यज्ञ, स्वाहाकार, कुण्ड निर्माणादि और परिशिष्टादि में विविध महत्वपूर्ण विषयों का चयन जिस क्रम से किया गया है, वह अत्युत्तम क्रम है, ऐसे ग्रन्थ की विशेष आवश्यकता भी थी।

इस ग्रन्थ के टीकाकार, *श्री अशोक कुमार गौड* ने जिस परिश्रम से ग्रन्थ का निर्माण कर अथ से इति पर्यन्त तक जिस शास्त्रीय परम्परा का निर्वाह किया है; वह वास्तविक रूप से प्रसंशनीय है।

इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ का अवलोकन कर वैदिक, कर्मकाण्डी, विद्वत् वर्ग तथा अध्ययनरत संस्कृत के छात्र, टीकाकार के प्रति उपकृत होंगे।

शुभ कामनाओं सहित–

—वंशीधर मिश्र वेदाचार्य

डी. १५/२५ मान मन्दिर
वाराणसी–२२१००१

प्रस्तावना

समस्त हिन्दू जाँतिका प्राचीन धर्म ग्रन्थ वेद है, वेदों में कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड व ज्ञानकाण्ड का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इन तीनों में सर्वप्रथम स्थान 'कर्मकाण्ड' को ही प्राप्त है। क्योंकि हमारे शास्त्रज्ञों व धर्माचार्यो ने स्वयं ही वेद की नित्यता को स्वीकार किया है।

क्योंकि मनुष्य के उत्पन्न होने से मृत्यु तक जो भी संस्कार किये जाते हैं, उनमें वैदिक मन्त्रों का आश्रय लिए बिना उनको कर्मकाण्डिक रीति से पूरा नहीं कराया जा सकता है।

प्रत्येक युग में कर्मकाण्ड के द्वारा ही पूजन, प्रतिष्ठा, यज्ञादि विविध प्रकार के वैदिक कर्मो को निष्पन्न किया गया है, जिनमें वैदिक मन्त्रों का ही प्रयोग होता था। क्योंकि–

अनन्तः वै वेदाः-अर्थात्–वेद तो अनन्त है।

इन्हीं वैदिक मन्त्रों के प्रयोग से कर्मकाण्ड के विविध वैदिक कर्मो को संपन्न कराया जाता है।

वेदाचार्य स्वर्गीय पंडित दौलतराम गौड़ स्मारक ग्रन्थ माला की १८वीं पुष्पलता 'विधान प्रकाश पद्धतिः' नामक यह ग्रन्थ मेरे पिताजी के द्वारा प्रणीत है, जिसकी अत्यन्त सरल हिन्दी–टीका करके आप सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

'विधान-प्रकाश-पद्धतिः' तीन अलग–अलग शब्दों से बना हुआ एक पूर्ण वाक्य है, जिसके नाम के उच्चारण करने मात्र से एक पूर्ण 'ग्रन्थ' का बोध होता है।

विधान–'वि' उपसर्ग पूर्वक 'डु' तथा 'ञ्' इत्संज्ञक धारण–पोषणार्थक 'धा' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय होने से 'विधान' शब्द बनता है।

प्रकाश–'प्र' उपसर्ग पूर्वक दीप्त्यर्थक ऋकार इत् संज्ञक 'काश' धातु से 'घञ्' प्रत्यय होने से प्रकाश शब्द बनता है।

पद्धति–इसमें चरणार्थक पद शब्द है तथा (हन्) धातु के 'क्तिन्' प्रत्यय करने से 'हति' शब्द बनता है। इन दोनों शब्दों को जोड़ने से ही 'पद्धति' शब्द बनता है।

यदि इस 'विधान प्रकाश पद्धतिः' को विशेष वैदिक कर्मो को प्रकाश में लाने की विधि कहा जाये, तो सम्भवतः यह अतिशयोक्ति न होगी।

वर्तमान समय में इस ग्रन्थ में तीन अंश समाविष्ट है तथा जिसमें उन्हीं विषयों का समावेश, जिसकी आवश्यकता आज के युग में प्रत्येक वैदिक व कर्मकाण्डी को पड़ती है।

कागज की बढ़ती हुई मूल्यवृद्धि को ध्यान में रखते हुए अधिकांश विषयों को संक्षिप्त तथा कुछ विषयों का समावेश नहीं कर सका, जिसका मुझे नितान्त दुःख भी है, अगले संस्करण में निःसंदेह उन विषयों का समावेश इस ग्रन्थ में करूँगा।

आज स्मृति ही जिनकी अवशेष बची है, उन सर्वतन्त्र-स्वतंन्त्र शिवस्वरूप अपने 'पितामह' *स्व० पं० विद्याधर जी शास्त्री* पूर्व अध्यक्ष–प्राच्य विद्या व धर्म विज्ञान संकायाध्यक्ष, काशीहिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के चरणकमलों में इस ग्रन्थ को श्रद्धा सहित समर्पित करता हूँ।

भारत विख्यात साहित्य के विद्वान् *श्री पं० सीताराम चतुर्वेदी* जी का मैं आभारी रहूँगा, जिन्होंने इस ग्रन्थ की भूमिका लिखी है। उन विद्वानों का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने अपनी सम्मति तथा शुभकामना संदेश प्रदान कर ग्रन्थ की शोभा को बढ़ाया है।

मैं उन विद्वानों का आभारी हूँ जिन्होंने इस ग्रन्थ के विषय में अपने महत्वपूर्ण विचार अपनी उद्‌भट् लेखनी से व्यक्त किये हैं। साथ ही साथ अपने प्रिय बन्धु ***पं० शेषधर मिश्र*** जी का आभारी हूँ जिन्होंने संशोधन कार्य में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

मानवरूपी शरीर प्राप्त होने के कारणवश इस ग्रन्थ में कुछ कमियों एवं अशुद्धियों का होना स्वाभाविक ही है; अगले संस्करण में संशोधन करके उन कमियों व अशुद्धियों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करूँगा।

भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल
महामहोपाध्याय विद्याधर गौड लेन
डी ७/१४, संकरकन्दगली
वाराणसी–२२१००१
दूरभाष : ३२७१६०

भवदीय
अशोक कुमार गौड
विक्रम सं. २०५५

विषय—प्रवेश

अनुक्रमणिका　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पृष्ठ संख्या

प्रथमअंश

१. शिव पूजनम्	१७
२. शांतिसारोक्त पार्थिव पूजनम्	४०
३. सूर्यपूजनम्	४३
४. महालक्ष्मी नित्यपूजा	६२
५. दुर्गा–प्रतिष्ठा	७५
६. लक्ष्मी–प्रतिष्ठा	६८
७. काली–प्रतिष्ठा	१०८
८. गणेश–प्रतिष्ठा	१३५
९. हनुमत–प्रतिष्ठा	१६०

द्वितीयअंश

१०. लक्ष्मी–याग	२११
११. होमात्मकोलक्ष्मीनारायणयाग	२६७
१२. गणेश–याग	२८६
१३. शिव–शक्तियाग	३१०
१४. यज्ञों में गणेशआदि का अर्चन प्रकार	३३४
१५. विष्णुयाग स्वाहाकार मंत्राः	३५६
१६. विश्वशान्तियाग स्वाहाकार मंत्राः	३६१
१७. रुद्रयाग स्वाहाकार मंत्राः	३६४
१८. गणेशयाग स्वाहाकार मंत्राः	३७८
१९. सूर्ययाग स्वाहाकार मंत्राः	३७९
२०. नवग्रहयाग स्वाहाकार मंत्राः	३८१
२१. लक्ष्मीयाग स्वाहाकार मंत्राः	३८५
२२. प्रजापतियाग स्वाहाकार मंत्राः	३८६

२३. विष्णुयाग मंत्र न्यास विधिः ३८८
२४. रुद्रयाग मंत्र न्यास विधिः ३९०
२५. लक्ष्मीयाग मंत्र न्यास विधिः ३९१
२६. गणेशयाग मंत्र न्यास विधिः ३९३
२७. विश्वशान्तियाग मंत्र न्यास विधिः ३९५
२८. नवग्रहयाग मंत्र न्यास विधिः ३९५

तृतीयअंश

२९. कुण्डनिर्माण में आवश्यक बातें ३९८
३०. विविधप्रकार के कुण्डों का निर्माण ४०६
३१. ग्रहों की आकृति बनाने का प्रकार ४३५
३२. प्रत्येक ग्रहों के कुण्ड बनाने का प्रकार ४४२
३३. ग्रहकुण्डों में योनि का स्थान निर्देश ४५५

परिशिष्ट

३४. एकवस्त्र स्नान प्रयोगः ४५८
३५. रुद्रस्नान प्रयोगः ४६४
३६. षड्ग्रहयोग शान्ति प्रयोगः ४६७
३७. हवनात्मक महारुद्र स्नान प्रयोगः ४७०
३८. विष्णवादिप्रतिष्ठादौ मूर्ति न्यासः ४८२

विशिष्ट परिशिष्ट

३९. विविध विषयों पर आवश्यक विचार ४९६
४०. विविध देवी-देवताओं के गायत्री मंत्र ५०३
४१. पूजन-सामग्री ५०४
४२. प्रतिष्ठा-सामग्री ५०५
४३. यज्ञ-सामग्री ५११
४४. यमुना-स्तोत्रम् ५१६
४५. त्रिपुरसुन्दरी स्तोत्रम् ५१८

विधान-प्रकाश-पद्धतिः

'भाषा-टीका सहित'
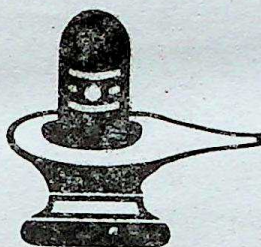
मङ्गलाचरणम्—

नत्वा वारं वारं श्रीमद्विश्वेश्वरं सपरिवारम्।
विधानप्रकाशाख्यं ग्रन्थं बहुविस्तरं कलये॥
श्रीविश्वेशमजस्त्रसेवनतया यः वेदविद्यानिधिं
साङ्गोपाङ्गमधीत्य विश्वविदितः ख्यातिं सदा लब्धवान्।
मीमांसा-बहुधर्मशास्त्रविषये यज्ञादिकार्ये तथा
नैपुण्यं निगदन्ति यस्य सुधियः तस्याऽस्ति रम्या कृतिः॥
श्रीमद्दौलतराम-संज्ञक-सुधीः तातो मम स्वर्गतः
दत्वाशीर्वचनं तदीय-कृपया शास्त्राण्यनेकान्यहम्।
बारम्बारमनन्यचिन्तनतया संचिन्त्य ग्रन्थं त्वमुं।
नूत्नैः सद्विषयैः विभूष्य तिलकं कुर्वे कनिष्ठात्मजः॥

अशोक कुमार गौड

शिव मृत्युंजय यंत्र
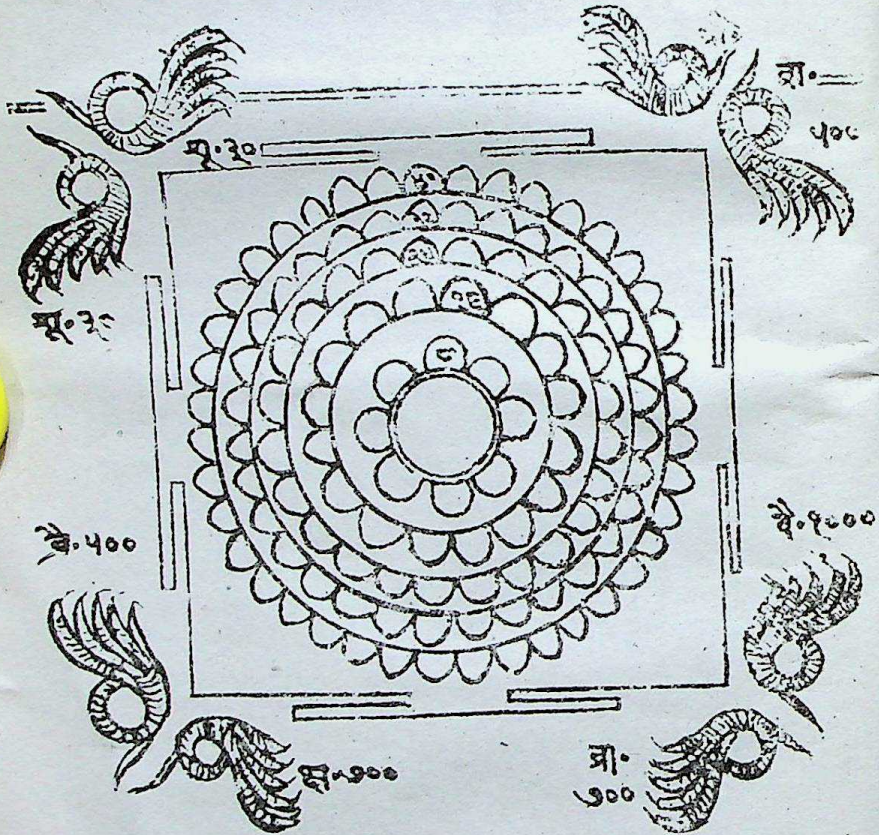
दो सौ वर्ष पूर्व की दुर्लभ कृति से उद्धृत–'शिव मृत्युंजय यंत्र'

विधान-प्रकाश-पद्धतिः

शिव[1] पूजनम्

पूजनकर्ता पूर्वाभिमुख शुद्ध कुशा अथवा कम्बलासन पर बैठ कर पूजन सामग्री एवं स्वंय को निम्न मंत्र के द्वारा जल छिड़कर पवित्र करे-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

तत्पश्चात् आचमन एवं प्राणायाम करे, तथा शिवपूजन के निमित्त यह संकल्प करे-

संकल्पः-ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकमासे-अमुकपक्षे-अमुक तिथौ-अमुकवासरे-अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहं (अमुक

---

१. पुरुषार्थ चिन्तामणौ-

आरोग्यं ज्ञानमैश्वर्यं वर्धते सर्वदेहिनाम्।
रुद्राध्यायेन ये देवं स्नापयन्ति महेश्वरम्॥
तज्जलैः कुर्वते स्नानं ते मृत्यु सन्तरन्ति च।

वर्माऽहं अमुक गुप्तोऽहं) धर्मार्थकाममोक्षादिफल--प्राप्त्यर्थञ्च साम्बसदाशिवप्रीतिकामः अमुक लिङ्गोपरि पूजन पूर्वकं अमुक द्रव्येष रुद्राभिषेक (शिव पूजनं) कर्म करिष्ये॥

संकल्प के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी का आवाहन करे-

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्वलाङ्ग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसनं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥
आयाहि हे चन्द्रकलाशिरोमणे गङ्गाधर त्र्यम्बक भूतिभूषण।
सान्निध्यमत्रास्तु जगन्निवासते पूजां ग्रहीतुं विधिवन्मयार्पिताम्॥
नमः शम्भ्वाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतरा च॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः। साम्बसदाशिवमावाहयामि स्थापयामि।

आवाहन के पश्चात् निम्न मंत्र एवं श्लोक के द्वारा शिवजी को आचमन प्रदान करे-

ॐ मनो जूतिर्ज्जूषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्त्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवा स ऽइह मादयन्तामोऽ३ प्रतिष्ठ॥

सिंहासने कनकरत्नमणि प्रभास्वत् छत्रं ध्वजालसितचामरतोरणाढ्यम्।
बालार्ककोटिसदृशं कनकाम्बराढ्यं श्रीविश्वनाथमनसैव समर्पितं ते॥

ॐ या ते रुद्रशिवा तनूरघोरापापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥

श्रीभगवते साम्बससदाशिवाय आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

आसन प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को पाद्य जल प्रदान करे–

दूर्वांकुराम्बुजमनोहरपुष्पयुक्तं-शुद्धं जलं सुरभिचूर्णसमन्वितं च।
सौवर्णपात्रविलसत्पदयोर्विशुद्धं पाद्यं गृहाण जगदीश समर्पितं ते॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवाङ्गिरित्रतां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषञ्जगत्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

पाद्य जल प्रदान करने के पश्चात निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को अर्घ्य जल प्रदान करेः–

दूर्वाद्यवाक्षतसुगन्धिहिरण्यरत्नं दर्भाम्बुजत्रिपथगाजलपुष्पयुक्तम्।
सौवर्णपात्ररचितं फलयुक्तमर्घ्यं भो! विश्वनाथ मनसैव मयार्पितं ते॥

ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽअसत्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

अर्घ्यजल प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को स्नान करावेः–

गंङ्गाजलैरमृतमाधुरतामुपेतैरेलालवङ्गशुभगन्धमनोभिरामम्।
गौरीपते कनकपात्रधृतं मया ते भक्त्यार्पितं रुचिरमाचमनं गृहाण॥

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च्च यातुधान्यो धराचीः परासुव ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय स्नानीयं समर्पयामि ।

पश्चात् निम्न क्रमानुसार, दुग्ध-दधि-घृत-मधु-शर्करा-शुद्धजल तथा पंचामृत से स्नान करावे :-

दुग्ध स्नानम् :-

दिव्यौषधिद्रवभवं नवनीतपूर्णक्षीराब्धि सम्भृतसुधाधिकधामधामम् ।
स्वर्धेनुसम्भवमपूर्वसुमिष्टमेतत्स्नानार्थमेवमुररी कुरु देव दुग्धम् ॥

ॐ पयः पृथिव्याम पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय पयस्नानं समर्पयामि । पयस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

दधि स्नानम् :-

कर्पूरकुन्दकुमुदेन्दुकरावदातं-मल्लीप्रफुल्लकुसुमाकरकान्तिकान्तम् ।
स्नानाय शुद्धरसराजसुकोमलार्चिस्निग्धं शुभं दधि निधाय समर्पितं ते ॥

ॐ दधिक्राव्णोऽ अकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्रणऽ आयूꣳषि तारिषत् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय दधिस्नानं समर्पयामि । स्नान्ते आचमनिय जलं समर्पयामि ।

घृतस्नानम् :-

तेजोमयेन तपनद्युतिपावितेन गव्येन भव्यविधिना परमन्त्रितेन ।
शम्भौ सृतेन रचयामि रसावृतेन भौमामृतेन च घृतेन तवाभिषेकम् ॥

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य यो निर्घृते श्रितो घृतंवस्य धाम ।
अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभवक्षि हव्यम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय घृतस्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते शु०।

मधु स्नानम्:-

नानाविधौषधिलतारससंभृतान्तर्माधुर्यमिष्टममृतप्रतिभं गुणेन।
माणिक्यपात्रसमपूरितभक्तिपूर्णमङ्गीकुरुष्व मधुदेव महेश शम्भो॥

ॐ मधु वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवर्ठ० रजः॥ मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२॥ ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय मधु स्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते शु०।

शर्करा स्नानम्:-

पूर्णोक्षुसागरसमुद्भवयातनिम्नामुक्ताफलद्रवसुधाधिकया महिम्ना।
सर्वाङ्गशोधनविधौ वरयात्रिनेत्र सुस्नाहि सिद्धवर शर्करया महेश॥

ॐ अपार्ठ० रसमुद्वयसर्ठ० सूर्ये सन्तर्ठ० समाहितम्। अपार्ठ०रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय शर्करास्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते शु०।

शुद्धोदक स्नानम्:-

दिव्यद्रुमेन्धनसमिद्धहुताशनाप्तैः शुद्धोदकैः सुविमलैश्च समुद्धृतैश्च।
गौरीपते परिगृहाण यथासुखेन स्नानं मयैव विधिवद्धरते प्रदिष्टम्॥

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते शु०।

पंचामृत स्नानम्:-

सर्पिस्सुदुग्धदधिमाक्षिकशर्कराद्यैर्भागैर्युतैः कनककुम्भभृतैः समन्त्रैः। कर्पूर केशरसुगन्धिभिरिन्दुमौले स्नानार्थमर्पितमिदं विधिवत् गृहाण॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे ऽभवत्सरित्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते शु०।

पंचामृत स्नान के पश्चात् पुनः शिवजी को शुद्ध जल के द्वारा स्नान करावे, उसके पश्चात् चंदन-चावल के द्वारा पूजन कर अभिषेक पात्र में अभिषेक के लिए-गन्ध-पुष्प-दुग्ध-जल आदि डालकर भगवान् शंकर पर तिपाई अथवा अभिषेक पात्र लटका कर श्रृंगी को हाथ में लेकर जिससे निरन्तर धारा जगत का कल्याण करने वाले शिवजी पर पड़ती रहे, उसके पश्चात् वेदोक्त रौद्राध्याय से शिवजी का महाअभिषेक करे।

अभिषेक की समाप्ति के पश्चात् पूजनकर्त्ता निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा भगवान् शिव को वस्त्र एवं उपवस्त्र प्रदान करेः-

कौशेयवस्त्रयुगलं कनकैर्विचित्रंबालार्ककोटिसदृशं सुमनोभिरामम्। भक्त्या मयार्पितमिदं परिधाय शम्भोसिंहासने समुपविश्य गृहाण पूजाम्॥

ॐ असौ योवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।

उतैनङ्गोपाऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः सदृष्टो मृडयाति नः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय वस्त्रमुपवस्त्रं च समर्पयामि। वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनिय समर्पयामि।

वस्त्र एवं उपवस्त्र के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को यज्ञोपवित प्रदान करे:-

दत्तं मया सुमनसा वचसा करेण यद्ब्रह्मवर्चसमयं परमं पवित्रम्।
यद्धर्मकर्मनिलयं परमायुष्यञ्च यज्ञोपवीतमुररी कुरु दीनबन्धो॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय यज्ञोपवितं आचमनियं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवित के पश्चात् भगवान् शिव को जल से आचमन करवा कर निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा चन्दनादि व गंध (लेपन) प्रदान करे:-

माणिक्यमौक्तिकसुविद्रुमपद्मराग हीरेन्द्रनीलमणि रत्नमनोहराणि।
नानाविधानि सुशुभाभरणानि शम्भोभक्त्या मया परिगृहाण निवेदितानि॥

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

यच्छ्रेष्ठमस्ति मलयाचलचन्दनानां कर्पूरकेशरसुगन्धिरसेन घृष्टम्।
आमोदमानमनिशं मनसार्पितं ते तच्चन्दनं त्वमुररी कुरु दीनबन्धो॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो येऽ अस्य सत्त्वानो हस्तेब्भ्यो करन्नमः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय कनिष्ठामूलगताङ्गुष्टयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्श्य अनामिकया गन्धानुलेपन समर्पयामि।

कनिष्ठीका अंगुली अथवा अगुँठे के अग्र भाग को मिला कर गन्ध-मुद्रा प्रदर्शित करते हुए अनामिका अंगुली के द्वारा शिवजी को चन्दन चढ़ावे।

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को भस्म प्रदान करें–

यदङ्गसंसर्गकृतावरेण्यं मौलौ निजे सङ्गमयन्ति देवाः।
देहे सदैवाहितविश्वभारे सारे जगत्या वितनोति भस्म॥

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सर्ठ० सृज्यमातृभिष्ट्वञ्ज्योतिष्मान्पुनरासदः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय भस्मं समर्पयामि।

भस्म प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को अक्षत प्रदान करेः–

श्वेतैरखण्डितमनोहरशालिबीजैः संक्षालितैः शुचिजलैश्च सुगन्धिमिश्रैः।
त्वामर्चयामि भगवन्! मनसा सदाहं गौरीपते मयि निधेहि कृपाकटाक्षम्॥

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो वप॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय। अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को पुष्पमाला प्रदान करेः–

विल्वैश्च चम्पकमनोहरजातिपुष्पैः मन्दारपङ्कजजपाकुमुदैर्दलैश्च।
मालादिभिः कनकसूत्रसुग्रन्थितैश्च सम्पूजितो मयि निधेहि कृपाकटाक्षम्॥

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन पुष्पमाला समर्पयामि।

तर्जनी अंगुली एवं अंगुठे को मिलाकर ही जगत की रचना करने वाले शिवजी पर पुष्पमाला चढ़ावें–

मालूरवृक्षजनितानि मनोहराणि भक्त्या त्वदर्थमनिशं प्रतिपादितानि।
श्रीविल्वपत्रविपुलानि समर्पितानि गौरीपते परि गृहाण सुकोमलानि॥

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

पश्चात् भगवान् शिवजी के अनेका-नेक नाम मंत्रों से एक-एक बिल्वपत्र शिवजी पर चढ़ाते रहे, बिल्वपत्र चढ़ाने के लिए शिवजी के विभिन्न नाम क्रमशः इस प्रकार से हैं-

नाममंत्रों के द्वारा शिवजी पर बिल्व पत्र समर्पित करें-

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः १ ॐ हिरण्यबाहवे नमः २ ॐ सेनान्ये नमः ३ ॐ दिशां च पतये नमः ४ ॐ वृक्षेभ्यो नमः ५ ॐ हरिकेशेभ्यो नमः ६ ॐ पशूनां पतये नमः ७ ॐ शष्पिञ्जराय नमः ८ ॐ त्विषीमते नमः ९ ॐ पथीनां पतये नमः १० ॐ हरिकेशाय नमः ११ ॐ उपवीतिने नमः १२ ॐ पुष्टानां पतये नमः १३ ॐ बभ्लूशाय नमः १४ ॐ व्याधिने नमः १५ ॐ अन्नानां पतये नमः १६ ॐ भवस्यहेत्यै नमः १७ ॐ जगतां पतये नमः १८ ॐ रुद्राय नमः १९ ॐ आततायिने नमः २० ॐ क्षेत्राणां पतये नमः २१ ॐ सूताय नमः २२ ॐ अहन्त्ये नमः २३ ॐ वनानां पतये नमः २४ ॐ रोहिताय नमः २५ ॐ स्थपतये नमः २६ ॐ वृक्षाणां पतये नमः २७ ॐ भुवन्तये नमः २८ ॐ वारिवस्कृताय नमः २९ ॐ ओषधीनां पतये नमः ३० ॐ मन्त्रिणे नमः ३१ ॐ वाणिजाय नमः ३२ ॐ कक्षाणां पतये नमः ३३ ॐ उच्चैर्घोषाय नमः ३४ ॐ आक्रन्दयते नमः ३५ ॐ पत्तीनां पतये नमः ३६ ॐ कृत्स्नायतयाधवते

नमः ३७ ॐ सत्वनांपतये नमः ३८ ॐ सहमानाय नमः ३६ ॐ निव्याधिने नमः ४० ॐ आव्याधिनीनां पतये नमः ४१ ॐ निषङ्गिणे नमः ४२ ॐ ककुभाय नमः ४३ ॐ स्तेनानां पतये नमः ४४ ॐ निचेरवे नमः ४५ ॐ परिचराय नमः ४६ ॐ अरण्यानां पतये नमः ४७ ॐ वञ्चते नमः ४८ ॐ परिवञ्चते नमः ४६ ॐ स्तायूनां पतये नमः ५० ॐ निषङ्गिणे नमः ५१ ॐ इषुधिमते नमः ५२ ॐ तस्कराणां पतये नमः ५३ ॐ सृकायिभ्यो नमः ५४ ॐ जिघार्ठ०सद्भ्यो नमः ५५ ॐ मुष्णतां पतये नमः ५६ ॐ असिमद्भ्यो नमः ५७ ॐ नक्तञ्चरद्भ्यो नमः ५८ ॐ विकृन्तानां पतये नमः ५६ ॐ उष्णीषिणे नमः ६० ॐ गिरिचराय नमः ६१ ॐ कुलुञ्चानां पतये नमः ६२ ॐ इषुमद्भ्यो नमः ६३ ॐ धन्वायिभ्यो नमः ६४ ॐ आतन्वानेभ्यो नमः ६५ ॐ प्रतिदधानेभ्यो नमः ६६ ॐ आयच्छद्भ्यो नमः ६७ ॐ अस्यद्भ्यो नमः ६८ ॐ बिसृजद्भ्यो नमः ६६ ॐ विद्यद्भ्यो नमः ७० ॐ स्वपद्भ्यो नमः ७१ ॐ जाग्रद्भ्यश्च वो नमः ७२ ॐ शयानेभ्यो नमः ७३ ॐ आसीनेभ्यश्च वो नमः ७४ ॐ तिष्ठद्भ्यो नमः ७५ ॐ घावद्भ्यश्च वो नमः ७६ ॐ सभाभ्यो नमः ७७ ॐ सभापतिभ्यश्च वो नमः ७८ ॐ अश्वेभ्यो नमः ७६ ॐ अश्वपतिभ्यश्च वो नमः ८० ॐ आव्याधिनीभ्यो नमः ८१ ॐ विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमः ८२ ॐ उमणाभ्यो नमः ८३ ॐ तृर्ठ० हतीभ्यश्च वो नमः ८४ ॐ गणेभ्यो नमः ८५ ॐ गणपतिभ्यश्च वो नमः ८६ ॐ व्रातेभ्यो नमः ८७ ॐ व्रातपतिभ्यश्च वो नमः ८८ ॐ गृत्सेभ्यो नमः ८६ ॐ गृत्सपतिभ्यश्च वो नमः ६० ॐ विरूपेभ्यो नमः ६१ ॐ विश्वरूपैभ्यश्च वो नमः ६२ ॐ सेनाभ्यो नमः ६३ ॐ सेनानिभ्यश्च वो नमः ६४ ॐ रथिभ्यो नमः ६५ ॐ अरथेभ्यश्च वो नमः ६६ ॐ क्षतृभ्यो नमः ६७ संगृहीतृभ्यश्च वो नमः ६८ ॐ महद्भ्यो नमः ६६ ॐ अभकेभ्यश्च वो नमः १०० ॐ तक्षभ्यो नमः १०१ ॐ रथकारेभ्यश्च वो नमः

१०२ ॐ कुलालेभ्यो नमः १०३ ॐ कर्मारिभ्यश्च वो नमः १०४ ॐ निषादेभ्यो नमः १०५ ॐ पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमः १०६ ॐ श्वनिभ्यो नमः १०७ ॐ मृगयुभ्यश्च वो नमः १०८ ॐ श्वभ्यो नमः १०९ ॐ श्वपतिभ्यश्च वो नमः ११० ॐ भवाय नमः १११ ॐ रुद्राय नमः ११२ ॐ शर्वाय नमः ११३ ॐ पशुपतये नमः ११४ ॐ नीलग्रीवाय नमः ११५ ॐ शितिकण्ठाय नमः ११६ ॐ कपर्दिने नमः ११७ ॐ व्युप्तकेशाय नमः ११८ ॐ सहस्राक्षाय नमः ११९ ॐ शतधन्वने नमः १२० ॐ गिरिशयाय नमः १२१ ॐ शिपिविष्टाय नमः १२२ ॐ मीढुष्टमाय नमः १२३ ॐ इषुमते नमः १२४ ॐ ह्रस्वाय नमः १२५ ॐ वामनाय नमः १२६ ॐ बृहते नमः १२७ ॐ वर्षीयसे नमः १२८ ॐ वृद्धाय नमः १२९ ॐ सवृधे नमः १३० ॐ अग्र्याय नमः १३१ ॐ प्रथमाय नमः १३२ ॐ आशवे नमः १३३ ॐ अजिराय नमः १३४ ॐ शीघ्र्याय नमः १३५ ॐ शीभ्याय नमः १३६ ॐ ऊर्म्याय नमः १३७ ॐ अवस्वन्याय नमः १३८ ॐ नादेयाय नमः १३९ ॐ द्वीप्याय नमः १४० ॐ ज्येष्ठाय नमः १४१ ॐ कनिष्ठाय नमः १४२ ॐ पूर्वजाय नमः १४३ ॐ अपरजाय नमः १४४ ॐ मध्यमाय नमः १४५ ॐ अपगल्भाय नमः १४६ ॐ जघन्याय नमः १४७ ॐ बुध्न्याय नमः १४८ ॐ सोभ्याय नमः १४९ ॐ प्रतिसर्याय नमः १५० ॐ याम्याय नमः १५१ ॐ क्षेम्याय नमः १५२ ॐ श्लोक्याय नमः १५३ ॐ अवसान्याय नमः १५४ ॐ उर्वर्याय नमः १५५ ॐ खल्याय नमः १५६ ॐ वन्याय नमः १५७ ॐ कक्षाय नमः १५८ ॐ श्रवाय नमः १५९ ॐ प्रतिश्रवाय नमः १६० ॐ आशुषेणाय नमः १६१ ॐ आसुरथाय नमः १६२ ॐ शूराय नमः १६३ ॐ अवभेदिने नमः १६४ ॐ बिल्मिने नमः १६५ ॐ कवचिने नमः १६६ ॐ वर्मिणे नमः १६७ ॐ वरूथिने नमः १६८ ॐ श्रुताय नमः १६९ ॐ श्रुतसेनाय नमः १७० ॐ दुन्दुभ्याय नमः १७१ ॐ

आहनन्याय नमः १७२ ॐ धृष्णवे नमः १७३ ॐ प्रमृशाय नमः १७४ ॐ निषङ्गिणे नमः १७५ ॐ इषुधिमते नमः १७६ ॐ तीक्ष्णेषवे नमः १७७ ॐ आयुधिने नमः १७८ ॐ स्वायुधाय नमः १७९ ॐ सुधन्वने नमः १८० ॐ स्रुत्याय नमः १८१ ॐ पथ्याय नमः १८२ ॐ काटचाय नमः १८३ ॐ नीप्याय नमः १८४ ॐ कुल्याय नमः १८५ ॐ सरस्याय नमः १८६ ॐ नादेयाय नमः १८७ ॐ वैशन्ताय नमः १८८ ॐ कूप्याय नमः १८९ ॐ अवटचाय नमः १९० ॐ बीघ्याय नमः १९१ ॐ आतप्याय नमः १९२ ॐ मेघ्याय नमः १९३ ॐ विद्युत्याय नमः १९४ ॐ वर्ष्याय नमः १९५ ॐ अवर्ष्याय नमः १९६ ॐ रेष्माय नमः १९७ ॐ वास्तव्याय नमः १९८ ॐ वास्तुपाय नमः १९९ ॐ सोमाय नमः २०० ॐ रुद्राय नमः २०१ ॐ ताम्राय नमः २०२ ॐ अरुणाय नमः २०३ ॐ शङ्गवे नमः २०४ ॐ पशुपतये नमः २०५ ॐ उग्राय नमः २०६ ॐ भीमाय नमः २०७ ॐ अग्रेवधाय नमः २०८ ॐ दूरेवधाय नमः २०९ ॐ हन्त्रे नमः २१० ॐ हनीयसे नमः २११ ॐ वृक्षेभ्यो नमः २१२ ॐ हरिकेशेभ्यो नमः २१३ ॐ ताराय नमः २१४ ॐ शम्भवाय नमः २१५ ॐ मयोभवाय नमः २१६ ॐ शङ्कराय नमः २१७ ॐ मयस्कराय नमः २१८ ॐ शिवाय नमः २१९ ॐ शिवतराय नमः २२० ॐ पार्याय नमः २२१ ॐ अवार्याय नमः २२२ ॐ प्रतरणाय नमः २२३ ॐ उत्तरणाय नमः २२४ ॐ तीर्थाय नमः २२५ ॐ कल्याय नमः २२६ ॐ शष्प्याय नमः २२७ ॐ फेन्याय नमः २२८ ॐ सिकत्याय नमः २२९ ॐ प्रवह्याय नमः २३० ॐ किर्ठ० शिलाय नमः २३१ ॐ क्षयणाय नमः २३२ ॐ कपर्दिने नमः २३३ ॐ पुलस्तये नमः २३४ ॐ इरिण्याय नमः २३५ ॐ प्रपथ्याय नमः २३६ ॐ व्रज्याय नमः २३७ ॐ गोष्ठचाय नमः २३८ ॐ तल्प्याय नमः २३९ ॐ गेह्याय नमः २४० ॐ हृदय्याय नमः २४१ ॐ निवेष्प्याय नमः २४२ ॐ काटचाय

नमः २४३ ॐ गह्वरेष्ठाय नमः २४४ ॐ शुष्क्याय नमः २४५ ॐ हरित्याय नमः २४६ ॐ पा॑ठं० सव्याय नमः २४७ ॐ रजस्याय नमः २४८ ॐ लोप्याय नमः २४९ ॐ उलुप्याय नमः २५० ॐ ऊर्व्याय नमः २५१ ॐ सूर्व्याय नमः २५२ ॐ पर्णाय नमः २५३ ॐ पर्णसदाय नमः २५४ ॐ उद्गुरमाणाय नमः २५५ ॐ अभिघ्नते नमः २५६ ॐ आखिदते नमः २५७ ॐ प्रखिदते नमः २५८ ॐ इषुकृद्भ्यो नमः २५९ ॐ धनुस्कृद्भ्यश्च वो नमः २६० ॐ किरिकेभ्यो नमः २६१ ॐ देवानार्ठं० हृदयेभ्यो नमः २६२ ॐ विचिन्वत्केभ्यो नमः २६३ ॐ देवानार्ठं० हृदयेभ्यो नमः २६४ ॐ विक्षिणत्केभ्यो नमः २६५ ॐ देवानार्ठं० हृदयेभ्यो नमः २६६ ॐ आनिर्हतेभ्यो नमः २६७ ॐ देवानार्ठं० हृदयेभ्यो नमः २६८।

इन नाम मंत्रों का उच्चारण कर शंकरजी पर बिल्वपत्र चढ़ाकर पुनः निम्न मन्त्र के द्वारा दूर्वा चढ़ावे:-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।

श्रीसाम्बसदा शिवाय दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

दूर्वा प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोकानुसार शिवजी को नानापरिमल द्रव्य चढ़ावे-

श्वेतातिरेणुसहितं शुभरक्तचूर्णं सिन्दूरचुर्णविपुलान्वितपीतचूर्णम्।
कर्पूरकेसरसुगन्धिसुवासितं च सौभाग्यचूर्णमुररी कुरु दीनबन्धो॥
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

उपर्युक्त श्लोक का उच्चारण कर शिवजी पर अबीर-बुक्का आदि नानापरिमल द्रव्य चढ़ावें।

अथाङ्गपूजा

तत्पश्चात् कर्ता नीचे लिखे दस नाम मन्त्रों से शिवजी की गन्ध, अक्षत, पुष्प द्वारा पूजा करें–

१. ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि
२. ॐ शङ्कराय नमः जङ्घे पूजयामि
३. ॐ शिवाय नमः जानुनी पूजयामि
४. ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि
५. ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि
६. ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि
७. ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि
८. ॐ सर्वतोमुखाय नमः नेत्रयोः पूजयामि
९. ॐ नागभूषणाय नमः शिरसि पूजयामि
१०. ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

अंग पूजा के पश्चात् शंकरजी पर निम्न श्लोक एवं मंत्र से इत्रादि सुगन्धित द्रव्य चढ़ावें–

श्रीकेतकीवकुलचम्पकमल्लिकानां संभृत्यसारमुचितं किल गन्धद्रव्यम्।
पात्रे हाटकमये मणिरञ्जितान्मे तूलङ्गृहाण जगदीश सुगन्धियुक्ताम्।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

उपरोक्त मन्त्र से सुगन्धित द्रव्यादि समर्पित करने के पश्चात् शिवजी के चरण, नाभी, वक्षस्थल और शिर का निम्न मन्त्र का उच्चारण कर आलभन अर्थात् स्पर्श करें–

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यान्धमतिसम्पत्रैर्द्यावा भूमीजनयन्देव ऽएक॥

इस वैदिक मन्त्र से पैरं, नाभि, वक्षस्थल तथा सिर का स्पर्श करते हुए प्रत्येक बार इस मन्त्र की पुनरावृत्ति करें।

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मन्त्र के द्वारा शिवजी को छत्र समर्पित करें–

छत्रं सुवर्णदृढदण्डविधानचारुमुक्तामणि प्रकरकीर्णकरोज्वलं यत्।
सद्योधिजातमिवशारदशर्वरीशं चीनांसुकीर्णमुररीकुरु दीनबन्धो॥

ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्यो ऽ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्॥

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय छत्रं समर्पयामि।

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मन्त्र के द्वारा शिवजी को चामर प्रदान करे:–

रत्नप्रभे कनकदण्डमये सिते द्वे आकाशसिन्धुपतदूर्मिसुफेनिलेव।
श्रीचामरे तु परिपार्श्वचरे भवेतामीशार्पिते करयुगेन गृहाण भक्त्यां॥

ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वा: समविर्ठ० शतिः।
तेऽ अग्ग्रेश्वमयुञ्जँस्ते ऽअस्मिमञ्जवमादधु:॥

ॐ इमारुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभराम हेमती:।
यथा शमसदद्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टङ्ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम्॥

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय चामरं समर्पयामि।

चामर प्रदान करने के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मन्त्र के द्वारा शिवजी को विविध प्रकार के व्यञ्जन प्रदान करें:–

संवीजने कनकदण्डमणिप्रभोत्थे ये शीतले सततवायुखैकरम्ये।
दत्ते मयाद्य जगदीश्वर ते गृहीत्वा संवीजयन्निजमुखेन कृतार्थयामुम्॥
ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणोरथासस्तेभिरागहि। नियुत्त्वान् सोमपीतये॥

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय व्यजनं समर्पयामि।

तत्पश्चात् शिवजी को निम्न मन्त्र के द्वारा चरणपादुका प्रदान करें:-

ॐ त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा ऽअदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय चरणपादुकां समर्पयामि।

चरण पादुका के पश्चात् निम्न श्लोक एवं मन्त्र के द्वारा शिवजी को दर्पण दीखावें।

केशप्रसारकरणिं किलदर्पणेन दत्तां गृहाण जगदीश्वर विश्वमूर्ते।
चाक्षुष्यमञ्जनमिदं कलधौतपात्रे सम्यङ्निधाय कलधौतशलाकया च॥

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागान्तुथो वो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथाप्रेत चन्द्रदक्षिणा विश्वः पश्यव्यन्तरिक्षं यतस्वसदस्यैः।

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय आदर्शं दर्शयामि।

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र का उच्चारण करके शिवजी को धूप दिखावें-

कालागुरोश्च घृतमिश्रितगुग्गुलस्य धूपो मया विरचितो भवतः पुरस्तात्।
आघ्राय तं शुचिमनोहरगन्धचूर्णं तूर्णं विनाशय महेश्वर मोहजालम्॥

ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२॥ उत। अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः॥

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय। तर्जनीमूलरङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्श्य धूपमाघ्रापयामि।

धूप प्रदान के समय तर्जनी अंगुली और अंगुठे के योग से धूप मुद्रा दीखाकर शिवजी के समक्ष धूप बत्ती को जलाकर रखें–

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मन्त्र से शिवजी को दीपक दीखावें :–

पूर्णे घृतेन गिरिजेश सुवर्णपात्रे कौसुम्भसूत्रदृढवर्तिविराजमानः।
दीपः पुरस्तव मयारचितो य एष शीघ्रं विनाशयतु मे दुरितान्धकारम्॥

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टमहस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥

श्रीभगवते साम्ब सदाशिवाय मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्य प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। ततः–

दीपक दर्शयामि में मध्यमा और अंगुष्ठ के योग से दीपमुद्रा प्रदर्शित कर द्रीपक जलाकर रखें, और दीपक स्पर्श के बाद दोनों हाथों पर शुद्ध जल डालकर धो ले। फिर शिवजी के आगे चतुस्त्र मंडल बनाकर उसके मध्य में नैवेद्य और जलपात्र रखकर उसमें बिल्वपत्रादिक छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़े–

जिह्वासुधांकनकपात्रविराजमानमन्त्रादिकं मधुरशाकफलावलीढम्।
पञ्चामृतल्पुतमनेकविधं रसौधं सङ्कल्पितं त्वमुररी कुरु दीनबन्धो॥

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम्॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

इस प्रकार उच्चारण कर अनामिका अंगुली का मूल भाग **और** अंगुष्ठ के योग से बनी नैवेद्य मुद्रा दिखाकर ग्रास मुद्रा इस **प्रकार** प्रदर्शित करें।

ॐ प्राणाय स्वाहा कहें

अंगुष्ठ अनामिका और मध्यमा मिलाकर।

ॐ अपानाय स्वाहा कहें

अंगुष्ठ अनामिका और कनिष्ठा मिलाकर।

ॐ व्यानाय स्वाहा कहें

कनिष्ठा तर्जनी और अंगुष्ठ मिलाकर।

ॐ समानाय स्वाहा कहें

अंगुष्ठ और सब अंगुलीयों को मिलाकर।

ॐ उदानाय स्वाहा कहें

फिर गमछे या दुपट्टे से पर्दा करते हुए गोदोहनकालपर्यन्त देवता के स्वरूप का ध्यान करते हुए रौद्रा अध्याय का पाठ करें।

उसके बाद–

मध्ये पानीयं समर्पयामि, उत्तरापोशनं समर्पयामि।

हाथ धोने के लिए जल समर्पित कहकर तीन बार जल छोड़े।

गन्धानुलेपन मंत्रः–

उष्णोदकैः पाणियुगं मुखं च प्रक्षाल्य शम्भो कलधौतपात्रे।
कर्पूरमिश्रेण सकुङ्कुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन॥

ॐ अर्ठ० शुनातेऽ अर्ठ० शुः पृच्याम्परुषापरुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

गन्धानुलेपन के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण कर शंकरजी को ऋतु फल चढ़ावें:–

कालोपपन्नविधिवद्विविधं भृतं ते पील्विक्षुखण्डपरिपत्रमहारहूरम्।
सर्वं फलं सुरपते परितोषणाय संभृत्य सम्यगिदमर्पितागृहाण॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय ऋतुफलानि समर्पयामि।

तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र के द्वारा शिवजी को ताम्बूल एवं पुंगीफल प्रदान करें:-

पूगैलचूर्णखदिरैर्नवजातिपत्रैर्जातीफलत्रुटिलवङ्गघनैः प्रपूर्णः।
ताम्बूलकं तु मनसा वचसा धृतं यत्तत्स्वीकुरुष्व वृषभध्वज दीनबन्धो॥

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वठं० सहस्रा क्षतेषुधे।
निशीर्यशल्यानाम्मुखाशिवो नः सुमना भव॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय पूगीफलं च समर्पयामि।

निम्न मंत्र का उच्चारण कर शिवजी को दक्षिणा चढ़ावें:-

विभावसोर्बीजमिदं हिरण्यं दिव्यं प्रकाश विधिगर्भसंस्थम्।
गृहाण भूताधिपते महेश मुद्रार्पणं वै मनसार्पितं ते॥

ॐ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्वने॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय दक्षिणा समर्पयामि।

निम्न श्लोक एवं मंत्र का उच्चारण कर शिवजी को कर्पूर नीराजन (आरती) समर्पित करें:-

कर्पूरखण्डपरिकल्पितपञ्चदीपै रानम्रमौलिमुकुटद्युतिसंप्रवृद्धिः।
नीराजितं त्रिजगदेकगुरो मया ते पादाम्बुजं दिशतु वाञ्छितकार्यसिद्धम्॥

ॐ आरात्रिपार्थिवठं० रजः पितुरप्रायिधामभिः।
दिवः सदाठं० सि बृहती वितिष्ठसऽ आत्त्वेषं वर्त्तते तमः॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

मंत्र पुष्पाञ्जलि-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं श्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामया मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्य भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति तदप्येषश्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुतविश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यान्धमतिसम्पत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽ एकः॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

मंत्र पुष्पांजलि के तत्पश्चात् निम्न श्लोक एवं मंत्र का उच्चारण कर शिवजी की प्रदक्षिणा करें:-

पापानि यानि विविधानि मया कृतानि प्राक्कोटि जन्मदुरितानि च यानि-यानि।
शम्भो प्रदक्षिण पदेषु-पदेषु नाथ शीघ्रं विनाशय-विनाशय तानि-तानि॥

ॐ मा नो महान्तमुत मानोऽ अर्भकं मानऽ उक्षन्तमुतमानऽ उक्षितम्। मा नो वधीः पितरम्मोतमातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥

श्रीभगवते साम्बसदा शिवाय प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिण कर्म की समाप्ति के पश्चात् निम्न श्लोकानुसार शिवजी को प्रणाम करें:–

ॐ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः॥

स्तुतिः–

इन पौराणिक श्लोकों के द्वारा कर्ता स्तुति करे

त्रिकाण्डवेदा नयनानि यस्य वेदश्चतुर्थश्च शिरः प्रतीतः।
अङ्गानि-चाङ्गानि च यस्य तस्मै वेदस्वरूपाय नमश्शिवाय॥
मोहादिपञ्चकमहारसपञ्चमाय नानाविधात्मगतभेदविभेदकाय।
सङ्केतसूचितपरत्वमहासुखाय तञ्चात्मने परतराय नमश्शिवाय॥
वाक्यप्रधानमथ धर्म निदानयुक्तं यन्मण्डितं विधिनिषेध-परैश्च मन्त्रैः।
भ्राजत्सहस्त्रकिरण प्रतिभाय तस्मै कर्मात्मने सुरवकराय नमश्शिवाय।
यत्षट्पदार्थविततं ध्रुवपीलुकादि यच्चापि षोडशकलं घटपाकवादि।
तस्मै प्रमाणयुतसर्वविचित्रिताय तर्कात्मने परतराय नमश्शिवाय॥
यस्माद्भवन्ति विरमन्ति च यत्र वेदा यो निस्तरङ्गित महोदधितुल्यशोभः।
लीलाकृते विकृतरूपधराय तस्मै शब्दात्मने परतराय नमश्शिवाय॥
चरन्ति चिन्वन्त्यपि तर्कपङ्क्तिस्वरूपतो यं न विदन्ति के चित्।
फलानुमेयं च वदन्ति तस्मै धर्मस्वरूपाय नमश्शिवाय॥
मूर्त्यष्टकं लसति यस्य यमादिरूपं सिद्ध्यष्टकं लसति यस्य विभूतिरेव।
आनन्दिने निखिलशक्तियुताय तस्मै योगात्मने परतराय नमश्शिवाय॥
यत्साधनान्युपरतिश्च विरागिता च नानाव्रतानि शुचिता च जितेन्द्रियत्वम्।
निसङ्गता च परमार्थपदाय तस्मै योगात्मने परतराय नमश्शिवाय॥
श्रीयुक्तहारमणिकुण्डलकङ्कणाय गङ्गाविभूतिगरलेन्दुजटाधराय।
नृत्यत्पिशाचपरिवारशतावृताय संक्रीडते परतराय नमश्शिवाय॥

नमः सोमाय शान्ताय सगुणायादि हेतवे। निवेदयामि चात्मानं त्वं गतिः परमेश्वर॥
नमामि त्वां विरूपाक्ष नीलग्रीव नमोऽस्तु ते। त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यमुमादेहार्द्धधारिणे॥
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नमः। पिनाकिने नमस्तुभ्यं नमो मीढुष्टमाय च॥
नमामि त्वां महाभूत पतये त्वां नमाम्यहम्। स्वयं भिक्षान्न भोक्ता च भक्तानां राज्यदायक॥
सूर्यरूपं समासाद्य देहिनां देहदायक। यतीनां मुक्तिदस्त्वं च भूतानां चापि मुक्तिदः॥
राजसेन स्वयं ब्रह्मा सात्विकेन स्वयं हरिः। तामसेन स्वयं रुद्रस्त्रितयं त्वयि संस्थितम्॥
त्वं माता त्वं पिता त्वं हि त्वं बन्धुस्त्वं च मे सखा। त्वं विद्या द्रविणस्त्वं वै त्वं च सर्व मम प्रभो॥
नमो विरञ्चि विश्वेश भेदेन परमात्मने। निसर्गस्थितिसंहारव्यापिने परमात्मने॥
न्यूनातिरिक्तं यत्कर्म जपहोमार्चनादिकम्। कृतमज्ञानतो देव तन्मम क्षन्तुमर्हसि॥
विश्वेश्वरविरूपाक्ष विश्वरूप सदाशिव। शरणं भवभूतेश करुणाकरशङ्कर॥
हरशम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ। शिवशङ्करसर्वात्मन्नीलकण्ठ नमोऽस्तु ते॥
मृत्युञ्जयमहारुद्र सर्वेश शशि शेखर। चन्द्रचूडमहादेव पार्वतीश नमोऽस्तु ते॥
मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय सर्वाय महादेवाय ते नमः॥
रुद्रहोमो जपो वापि न्यूनो वाप्यधिकोऽपि वा। सम्पूर्णस्त्वत्प्रसादेन भूयाद् भूतिविभूषण॥

इस प्रकार स्तुति कर के निम्न श्लोकों का उच्चारण कर हाथ में चावल पुष्पादि लेकर शिवजी पर छोड़ते हुए विसर्जन करे:-

विसर्जनम्—

ॐ अपराधसहस्राणि क्रियतेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥
अपराधसहस्राणां सहस्रमयुतं तथा। अर्बुदं चाप्यसंख्येयं करुणाब्धे क्षमस्व मे॥
यश्चापराधं कृतवान्नज्ञानात्पुरुषोत्तम। भक्तस्य मम देवेश त्वं सर्वं क्षन्तुमर्हसि॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष त्वं परमेश्वर॥
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्रचमेव च। आगता सुखसम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात्॥
जपच्छिद्रं-तपछिद्रं-यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि। सर्वं भवतु मेऽछिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः॥
काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी। देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः॥
सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तुनिरमयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥

अज्ञानादल्पशक्तित्वादालस्याद्दुष्टचेतसः। यन्न्यूनमतिरिक्तं वा तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि॥
आवाहनं न जानामि पूजां चोमापते प्रभो। क्षमस्व देवदेवेश मामङ्गीकुरु शङ्कर॥
घोरान्घोरं प्रपन्नापि महाक्लेशं भयानकम्। शिवपूजाप्रभावेण तरिष्यन्ति महाभयम्॥
अज्ञानात् ज्ञानतो वाऽपि जातन्यूनाधिकं च यत्। दासत्य मम दीनस्य क्षन्तव्यं लोकलोचन॥
त्रियम्बकाय शर्वाय शङ्कराय शिवाय च। सर्वलोकप्रधानाय शाश्वताय नमो नमः॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तच्छम्भोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमीश्वरम्॥

उपर्युक्त कर्म की समाप्ति के पश्चात् बारहबार निम्न वाक्य करें– **ॐ नमः शिवायः।**

कर्ता हाथ में जल लेकर कहें:–

अनेन कर्मण श्रीभगवते साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

इस प्रकार कर्ता कह कर जल को भूमि में छोड़ देवे।

॥ इति संक्षिप्त शिवपूजनम्॥

शान्तिसारोक्त पार्थिव पूजनम्[1]

पूजनकर्ता किसी भी शुभदिन में स्नानादि कार्यों से निवृत्त होने के पश्चात् आचमन एवं प्राणयाम कर कम्बलासन पर सपत्नीक पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठकर अपने ऊपर एवं समस्त पूजन सामग्री के ऊपर इस श्लोक का उच्चारण कर जल छिड़कें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकांक्ष स बाह्याभ्यन्तरः शुचि॥

तीन बार उच्चारण करें :-

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु

इन श्लोकों का उच्चारण करें–

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भव भवानी सहितं नमामि॥
वन्दे महेशं सुरसिद्धसेवितं भक्तै सदा पूजितपादपद्मम्।
ब्रह्मेन्द्र-विष्णु-प्रमुखैश्च वन्दितं ध्यायेत् सदा कामदुघं प्रसन्नम्॥

पूजनकर्ता प्राङ्मुख होकर यह संकल्प करें–

---

(१) देवीपुराणे मृदाहरण संघट्टप्रतिष्ठाह्वानमेव च। स्नपनं पूजनं चैव विसर्जनमतः परम्॥ हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्। पशुपतिः शिवश्चेव महादेव इति क्रमः॥

प्राण प्रतिष्ठा का क्रम-अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः कौं कीलकं देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं सं स। सोऽहं पार्थिवशिवस्य प्राण इह प्राणाः। ॐ आँ ह्रीं॰ पार्थिवशिवस्य इह स्थितः। ॐ ह्रीं कीं॰ पार्थिवशिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्रोत्राजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्था इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अमुककामः पार्थिवपूजां करिष्ये।

ॐ हराय नमः—इति मृदाहरणम्।

ॐ महेश्वराय नमः-इति संघट्टनम्।

ॐ शूलपाणये नमः-प्रतिष्ठापनम्।

ॐ पिनाकिके नमः-आवाहनम्।

इस श्लोक का उच्चारण कर ध्यान करें:-

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्ग परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुममरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं ।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंच वक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

आवाहन के पश्चात्—**ॐ शिवाय नमः** का उच्चारण कर पाद्य, अर्घ्य एवं आचमनीय समर्पित करें।

उपर्युक्त कर्म के पश्चात्—**ॐ पशुपतये नमः** इसका उच्चारण कर स्नान करावें।

स्नाने के पश्चात्—**ॐ शिवाय नमः** इसका उच्चारण कर, वस्त्र—यज्ञोपवित—गन्ध अलंकार—पुष्प—धूप—दीप—नैवेद्य—फल और ताम्बूल चढ़ावें। पश्चात्

१-ॐ क्षितिमूर्तये नमः। **२-ॐ भवाय जलमूर्तये नमः।**

३-ॐ रुद्रायाग्नि मूर्तये नमः। **४-ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।**

५-ॐ भीमायाकाश मूर्तये नमः। **६-ॐ पशु० नमः ॐ यज० मूर्तये नमः।**

७-ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः। **८-ॐ ईशानाय सोममूर्तये नमः।**

कर्ता यह उच्चारण कर क्षमापनम्[1] करे :– **ॐ महादेवाय नमः।**

॥ इति शान्तिसारोक्त पार्थिव पूजनम्॥

---

१. पुरुषार्थ चिन्तामणि:–

पंचसूत्रविधानं च पार्थिवे न विचारयेत्।
यथा कथञ्चिद्विधिना मणीयं तु कारयेत्॥
पक्वजम्बूफलाकारं सर्वकामफलप्रदं शिवम्।

मृत्तिका परिमाणम्:–

यावतस्यादात्मनः शक्तिर्मृदं तावत् समुद्धरेत्।
तदर्धं वाऽथतस्यार्ध तदर्ध वातदर्धकम्॥
एवं पलद्वयान्नयूनं न तु कुर्यात्कदाचन।
कार्तिके मार्गशिर्षे वा माघे वैशाखसंज्ञके।
श्रावणे बहुले पक्षे व्रतस्याचरणं कुरु॥

विशेष:–

१. उत्पन्नस्य उत्पत्स्यमानस्याखिलारिष्टनिवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादात् दीर्घायुष्यसततारोग्यावाप्तये श्रीमृत्युञ्जयमन्त्रजपं करिष्ये।

२. अद्येत्यादि ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिद्वारा धर्मार्थ-काममोक्षचतुर्विधसिद्धये आधिदैविकाधिभातिकाध्यात्मिकतापत्रपोप-शान्ततये जन्मकुण्डल्यां वर्षकुण्डल्यां गोचरे च उत्तरोत्तरव्यापारेष्वभिवृध्यर्थं धनागमप्रतिबन्धक ग्रहजन्यसर्वारिष्टनिवृत्तये श्रीसाम्बसदाशिवोपरि एकादश (पञ्च) ब्राह्मणद्वारा (एकदशभिर्दिनैः) रुद्राभिषेक कारयिष्ये।

३. सर्वविधरोगोपशान्तये आयुरारोग्याद्यभिवृद्धये च श्रीमहामृत्युञ्जयप्रीत्यर्थं च ब्राह्मणद्वारा कारितस्य सपादलक्षपरिमित्सय महामृत्युञ्जयमन्त्रजपस्य संसिद्ध्यर्थं तद्दशांशभूतं हवनं तद्दशांशभूतं तर्पणं तद्दशांशभूतं मार्जनं च ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।

सूर्य पूजनम्

पूजनकर्ता पवित्र अर्थात शुभ दिन में कुशा के आसन पर बैठकर गणेशादि पूजन कर, सर्वतोभद्र की पीठ पर गौरी को तिलककर ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन और पूजन कर, मध्य में कलश स्थापितकर वहाँ स्वर्ण–रजत–ताँबे के पत्रपर सूर्य यन्त्र इस प्रकार से लिखें–

सूर्य यन्त्र बनाने का प्रकार :–

अष्टगन्ध या लालचन्दन से यंत्र के मध्य में बिन्दु लगाकर उसके पश्चात् षट्कोण बनावें उसके ऊपर वृत लिखें तथा वृत्तपर अष्टदल बनावें उपरान्त फिर वृत्त का निर्माण करें। उस वृत्त पर द्वादश दल बनावे तथा चतुरस्त्र क्रम से लगा के उसमें बराबर की तीन रेखाएँ सभी दिशाओं में लिखें, फिर पुनः छाया और संज्ञा की प्रतिमा तथा सूर्य भगवान् की सूर्य रथ पर प्रतिमा स्थापित कर के मण्डप का ध्यान कर उसमें नानारत्नरचितमुक्तादि विभूषित सिंहासन का कर्त्ता स्मरण करें।

ततः पूर्वद्वारे–ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ गणपतये नमः

पश्चिम द्वारे–ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ दुर्गायै नमः।

उत्तरद्वारे–ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

इस प्रकार से द्वारपालों का विधिवत् पूजन करें–

इन न्यासों को करें–

ॐ अकार्य नमः मूर्ध्नि। ॐ रवये नमः ललाटे। ॐ सूर्याय नमः नेत्रयोः। ॐ दिवाकराय नमः कर्णयोः। ॐ भानवे नमः नासिकायाम्। ॐ भास्कराय नमः मुखे। ॐ पर्जन्याय नमः ओंष्ठयोः। ॐ तीक्ष्णाय नमः जिह्वायाम्। ॐ सुवर्णरेतसे नमः कण्ठे। ॐ तिग्मतेजसे नमः स्कन्धयोः। ॐ पूष्णे नमः बाह्वोः।

ॐ मित्राय नमः पृष्ठे। ॐ वरुणाय नमः दक्षिणहस्ते। ॐ त्वष्ट्राय नमः वामहस्ते। ॐ उष्णकराय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ भानुमते नमः हृदये। ॐ यमाय नमः उदरे। ॐ आदित्याय नमः नाभौ। ॐ हंसाय नमः कट्याम्। ॐ रुद्राय नमः ऊर्वोः। ॐ गोपतये नमः जान्वोः। ॐ सवित्रे नमः जङ्घयोः। ॐ विवस्वते नमः पादयोः। ॐ प्रभाकराय नमः गुल्फयोः। ॐ तमोध्वंसाय नमः सर्वाङ्गे।

अथ षडङ्गन्यासः—ॐ रत्नादेव्यै अङ्गुष्ठाभ्यः नमः। ॐ छायादेव्यै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ संज्ञायै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विश्वधात्र्यै अनामि०। ॐ अश्विन्यै कनिष्ठिका०। ॐ दिव्यदेहायै करतलपृष्ठा०। एवं हृदयादि।

ॐ ह्रां सत्यतेजसे ज्वलज्वालामामालिने मणिकुम्भाय फट् स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं ब्रह्मतेजसे ज्वलज्वालातर्जनीभ्यां०। ॐ ह्रूँ विष्णुतेजसे० मध्यमा०। ॐ ह्रैं रुद्रतेजसे० अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां ॐ ह्रः सर्वतेजसे० करतल पृष्ठाभ्यां० एवं हृदयादि। ॐ भूर्भुवः स्वरोमितिदिग्बन्धः। ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनी०। ॐ ह्रं मध्यमा। ॐ ह्रैं अनामि०। ह्रौं कनिष्ठिका०। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां०। एवं हृदयादि। ॐ भूर्भुवः स्वरोमितिदिग्बन्धः। ॐ हं सां अङ्गु०। ॐ हं सी तर्जनीभ्यां०। ॐ हं सूं मध्य०। ॐ हं सैं अनामिका०। ॐ हं सौं कनिष्ठिका०। ॐ हंसः करलतपृष्ट०। एवं हृदयादि। ॐ

भूर्भुवः स्वरोमितिदिग्बन्धः। ॐ भास्कराय नमः शिखायाम्। ॐ सूर्याय ललाटे। ॐ भानवे० भ्रूमध्ये। ॐ जगच्चक्षुसे नमः चक्षुषोः। ॐ त्वष्ट्रे० मुखे। ॐ भानवे कण्ठे। ॐ तिमिरनाशाय० स्तनयोः। ॐ जातवेदसे नमः नाभौ। ॐ कालात्मने नमः कट्याम्। ॐ उग्रवपुषे नमः गुह्ये। ॐ तेजोवपुषे० जङ्घयोः। ॐ प्रभाकराय० पदयोः ॥ इति न्यास॥

अथकलशपूजनम्—कलशमुखे—ॐ विष्णवे नमः विष्णुमा०। ॐ लक्ष्म्यै० लक्ष्मीमा०। कण्ठे—ॐ रुद्राय० रुद्रमा०। ॐ गौर्यै० गौरीमा०। मूले—ब्रह्मविष्णुभ्यां० ब्रह्मविष्णुमा०। ॐ सावित्र्यै० सावित्रीमा०। मध्ये—मातृगणेभ्यो० मातृगणान् आ०। कुक्षौ—ॐ सप्तसागरेभ्यो० सप्तसागराना०। ॐ सप्तद्वीपेभ्यो० सप्तद्वीपानावा०। ॐ वसुन्धरायै० वसुन्धरामा०। ॐ गङ्गायै० गङ्गामा०। ॐ यमुनायै० यमुनामा०। ॐ सरस्वत्यै० सरस्वतीमा०। ॐ ऋग्वेदाय० ऋग्वेदमा०। ॐ यजुर्वेदा० यजुर्वेदमा०। ॐ सामवेदा० सामवेदमा०। ॐ अथर्ववेदा० अथर्ववेद०। ॐ अष्टपर्वतेभ्यो० अष्टपर्वतानावा०। ॐ अष्टदिग्गजेभ्यो० अष्टदिग्गजानावा०। ॐ गायत्र्यै० गायत्रीमा०। ॐ सावित्र्यै० सावित्रिमा०। ॐ शान्त्यै० शान्तिमा०। ॐ पुष्ट्यै० पुष्टिमा०। ॐ तुष्ट्यै० तुष्टिमा०।

कलशस्य० इत्यादि इन श्लोकों को पढ़कर गंध-पुष्प फेकें।

ॐ भूर्भुवः स्वरोमित्यन्तं इसको पढ़कर गायत्री को प्रणव से बारह बार अभिमन्त्रित करें।

ॐ सूर्याय०। ॐ रवे०। ॐ विवस्वते०। ॐ खगाय०। ॐ अरुणाय०। ॐ मित्राय०। ॐ आदित्याय०। ॐ अंशुमते०। ॐ भास्कराय०। ॐ सावित्रै०। ॐ पूष्णे०। ॐ गभस्तये०।

इस प्रकार आवाहन कर पूजा करें।

अथ शंखाराधनम्–किसी पात्र में उदक शंख रखकर गंध-अक्षत, पुष्प उस पर छोड़ें।

ॐ पुरा त्वं सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवानां पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥
गर्भादेवादिनारीणां विशीर्येण तव प्रियः।
तव नादेन पातालां पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥
शंखमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि।
अङ्गलग्नमनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत् ॥ ३ ॥
शंखिनी शोधिनी चैव गरुड धेनुमेव च।
शूलिनी चक्रिणी चैव कौमुदी प्रणमोदक ॥ ४ ॥

'देवस्य त्वेति' इस मंत्र से सिर पर तीन बार अभिषेक कर शेष जल से कलश द्रव्य और अपना प्रोक्षण कर पुनः जल भर कर–

ॐ लक्ष्म्यै०। ॐ सरस्वत्यै०। ॐ तुष्टयै०। ॐ पुष्टयै०। ॐ ब्रह्माण्यै०। ॐ अनुमायायै०। ॐ पद्मगर्भायै०। पूजयेत्।

उपरोक्त क्रम से रूई द्वारा बारह तारों की बटी हुई बत्ती से युक्त घृत पूरित एक अखण्ड दीप अथवा बारह अलग-अलग दीप प्रज्वलित कर उसके पश्चात् ही पीठ पूजा इस क्रम से करें–

अथ पीठपूजा—ॐ अधारशक्त्यै नमः। ॐ मूल प्रकृत्यै०। ॐ कूर्माय०। ॐ अनन्ताय०। ॐ वराहाय०। ॐ पृथिव्यै०। ॐ सुवर्णमण्डलाय०। ॐ रत्नसिंहाय०। ॐ धर्माय०। ॐ अधर्माय०। ॐ ज्ञानाय०। ॐ अज्ञानाय०। ॐ वैराग्याय०। ॐ अवैराग्याय०। ॐ ऐश्वर्याय०। ॐ अनैश्वर्याय०। ॐ ऋग्वेदाय०। ॐ यजुर्वेदाय०। ॐ सामवेदाय०। ॐ अथर्ववेदाय०। ॐ कृतयुगाय०। ॐ त्रेतायुगाय०। ॐ द्वापराय०। ॐ कलियुगाय०। ॐ मन्दराय०। ॐ पारिजाताय०। ॐ सन्तानाय०। ॐ कल्पवृक्षाय०। ॐ मूलप्रकृत्यै०। ॐ स्कन्दाय०। ॐ नालाय०। ॐ पत्रेभ्यो०। ॐ पद्मेभ्यो०। ॐ यक्षेभ्यो०। ॐ केसरेभ्यो०। ॐ दलेभ्यो०। ॐ कर्णिकायै०। ॐ सूर्यमण्डलाय०। ॐ सोममण्डलाय०। ॐ वह्निमण्डलाय०। ॐ ब्रह्मणे०। ॐ विष्णवे०। ॐ रुद्राय०। ॐ सत्वाय०। ॐ रजसे०। ॐ तमसे०। ॐ आत्मने०। ॐ अन्तरात्मने०। ॐ परमात्मने०। ॐ चिदात्मकाय०। ॐ भूः पुरुषाय०। ॐ भुवः पुरुषाय०। ॐ स्वः पुरुषाय०। ॐ भुर्भूवः स्व पुरुषाय०। ॐ अरुणाय०।

पश्चात् प्रतिमा को '**ॐ अश्मन्नूर्जम्**' इस अनुवाक्य से सूर्य-सूक्त, विष्णु सूक्त, लक्ष्मी सूक्त से अभिषेक कर देवता को जल से बाहर निकाल कर यन्त्र के ऊपर रख कर प्राणप्रतिष्ठा[1] करें।

१-प्राणप्रतिष्ठा के क्रम के लिए इस पुस्तक में हनुमत् प्रतिष्ठा देखें।

अथाङ्गपूजा—ॐ आदित्याय नमः पादौ पूजयामि। ॐ दिवाकराय० गुल्फौ पू०। ॐ भास्कराय० जङ्घयोः पू०। ॐ प्रभाकराय जानुनि पू०। ॐ सहस्रांशवे नमः उरौ पू०। ॐ त्रैलोकेशाय० कटि पू०। ॐ हरिदश्वाय नाभौ पू०। ॐ रवये० उदरं पू०। ॐ दिवाकराय० हृदयं पू०। ॐ दशात्मकाय० स्कन्धौ पू०। ॐ त्रयीमूर्तये० कण्ठं पू०। ॐ सूर्याय० मुखं पू०। ॐ ब्रह्मरूपाय० कर्णौ पू०। ॐ महेश्वराय० नेत्र पू०। ॐ विष्णवे० ललाटं पू०। ॐ विष्णवे० शिरः पू०। ॐ संज्ञासहसूर्याय० सर्वाङ्गं पू०।

अथारुणपूजा

ततः—ॐ अरुणासनाय नमः। मध्ये-ॐ श्रीपरमसुखायनाय नमः। ॐ दित्यायै०। ॐ सूक्ष्मायै०। ॐ जयायै०। ॐ विजयायै०। ॐ भद्रायै०। ॐ विभूत्यै०। ॐ विमलायै०। ॐ अमोघायै०। ॐ ॐ विद्युतायै०। ॐ सर्वतोमुख्यै०।

सूर्यस्य

अम्भोजिनीदलविलासि करोसि नाथ
पादौ दधासि कमलेषु सुकोमलेषु।
सौजन्यशीलमनुचिन्त्यनमाम्यहं त्वां
सम्प्रार्थये च नव पीठमिहाधिरोढुम् ॥ १ ॥
वृष्टिं तनोषि विदधासि च कं जनेषु
जीवन्ति प्राणिनिकरा स्महसा तवैव।
तस्मात्सभागतवति त्वयि पद्मनाथे
पाद्यं ददामि सहसा पदयोः कमेव ॥ २ ॥

गंगाजलेन यमुनामयजीवनेन पाटीर
चूर्णनिकरेण विनर्मित यत्।
सुस्वादुशीतलमनिन्द्यगुणैः समेतं
दत्तं मयार्धमिदमर्क गृहाण सद्यः ॥ ३ ॥

दुःखौघदैत्यदलनार्जितसुव्रतेन
सौवर्णपात्रनिहितं विमलं करेण।
शुद्धं परागमहितं मधुरं विविक्तं
सूर्य त्वदीयमिदमस्ति गृहाण पेयम् ॥ ४ ॥

देवेशमानपरिरक्षणचिन्तयेव
धात्रामृतन्तु निहितं न तु नाम तस्य।
तत्कीर्त्यै तेऽत्र पय एव वसुन्धरायां
भानो गृहाण मधुरं तदिदं समोदम् ॥ ५ ॥

पीयूषतुल्य रजनीशमित्रं परीतञ्च सितारसेन।
जाड्यापहारस्तव कीर्तनेन स्वीकार्यमेतद्दधि च त्वयैव ॥ ६ ॥

गन्धेन पूर्णं सरसं पवित्रं विनिर्मिलं यन्मधुमाक्षिकाभिः।
तदद्य भानो मददायि रूपं क्षौद्रं निधेहि स्वमुखे पवित्रे ॥ ७ ॥

रसस्त्वया तीव्रकरैर्निपीतस्तथामृतं देवपरस्परासु।
सितानलोके भ्रमताशिता या मयार्पितां तामधुना गृहाण ॥ ८ ॥

आयुष्करं हृद्यमथानवद्यं सद्यः सुखाकारमनिद्य देहम्।
पात्रे घृतं शुभ्रघृतं मदीयं सहस्रभानो स सुखं गृहाण ॥ ९ ॥

विश्वात्मकोऽपि भगवन्करुणाकरोसि
प्रीतिं करोषि बहु जाड्यामया करोषि।
जाने दयालुरसि नाथ तथापि शङ्कां
शीघ्रं जहासि यदि वस्त्रमलङ्करोषि ॥ १० ॥

कौशेयसत्रैः कलितं पवित्रं महार्घमैतद्बहुगन्धयुक्तम्।
तवोपयुक्तं मकरन्दसिक्तं लोकोत्तरं धारय चोत्तरीयम् ॥ ११ ॥
कौशेयसूत्रण विनिर्मितं यत् गङ्गाम्बुजा यच्च कृतं पवित्रम्।
तद्दक्षिणस्कन्धनिवेशनाय समर्पये पूषण यज्ञसूत्रम् ॥ १२ ॥
पाटीरचूर्णपरिमिश्रितवारिपृक्तं कश्मीरजेन कुमुदच्छविनामलेन।
रक्तोत्पलेन च तथा परिपूरितं तं गन्धं- गृहाण दिननाथ महोत्सवेऽस्मिन् ॥ १३ ॥
यथा यथा त्वां भजते प्रवीणस्तथा तथा भाग्यधनं ददासि।
मदीयमप्यक्षतमस्तु पुण्यं तथोपहारी क्रियतेऽक्षतस्ते ॥ १४ ॥
अनन्तसौन्दर्य्यसमर्थनाय कण्ठे त्वदीये रुचिरा भवेद्या।
गन्धांशमन्दीकृतभृङ्गमाला समर्प्यते सा नवपुष्पमाला ॥ १५ ॥

द्रव्यस्य भूरिनिवहं न दध भिभानो
नाप्यस्ति पूजनविधौ विमलामतिर्मे।
भक्त्या प्रणम्य परया पदयोस्तवाहं
द्रागर्पयामि तुलसीदलमद्य शुद्धम् ॥ १६ ॥

कूपोपकण्ठमुपतिष्ठति या सदैव
प्रीत्या परोपकरणस्य फलान्यधीते।
एकाङ्घ्रिया घनतपस्कुरुते विविक्ते-
दूर्वां च तामिह ददामि पदोः समग्राम् ॥ १७ ॥

महीयस्ते तेजो जगति विदितं विघ्नकुलिशं
करैरुग्रैर्यस्मादवसि धरणीमीति पतिताम्।
प्रणश्यन्तं सन्तं दिशसि सुकृतं भावविदतं
अबीरं सौभाग्यं भवतु तव पादेष्विन्! शुभम्॥ १८ ॥

सूर्यप्रियासंज्ञायाः

दिनकरकरपरिलालितसंज्ञा संज्ञाधरासुकृतिपूज्या।
आसनमद्य पवित्रं सज्जीकुरुते प्रफुल्लास्या ॥ १ ॥

सूर्यप्रिये! प्रतिदिनं चरणोपनभ्रे
दीने विदेहि सततं करुणार्द्रदृष्टिम्।
स्वीकृत्य पाद्यमधुना जगदेकवन्द्ये!
त्वन्नाशय प्रतिपलं मम दोषजातम् ॥ २ ॥

मातस्त्वदीययशसः सततं प्रशंसाम्
कुर्वत्सगर्वमधुनार्घ्यमिदं ददामि।
देवाः समस्तजगतीतलमध्यगा मे
तेषां यतोऽसि जननी ननु वन्दनीया ॥ ३ ॥

पेयमम्ब! तव काञ्चनपात्रे स्वर्णमञ्चमधितिष्ठति पूतम्।
चन्द्रभानुनिभशुभ्रतेजसा देहि मे मनसि भावमनिन्द्यम्॥४॥
प्रियदुग्धमिदं मदर्पितं मम चानन्दप्रदं रविप्रिये!।
शिवमद्य भवेत्तदैव मे यदि पानं क्रियते त्वयाऽधुना ॥ ५ ॥
इह घृतं दधि प्रेमसमन्वितं जननि! स्वादुतरं गुडमिश्रितम्।
कुरु कृपां मयि देव! गृहाण किं निजसुतस्य करोषि विलम्बनम् ॥६॥

प्रगुणितहिम किं न हेमपात्रे मधुचैत्रेण प्रदत्तमत्र भाति।
करुणालवमद्य मयि विधाय निजपुत्रेऽपि गृहाण विश्ववन्द्ये॥ ७ ॥

दीने विधाय करुणां शुचिशर्करां किं
प्रस्थापितां पुनरिमामधमाधमे च।
छाये! गृहिष्यसि निलिम्पजनप्रपूज्ये!
सर्वस्य भद्रमभि वाञ्छति भद्रचेता ॥ ८ ॥

संज्ञे! घृतं स्वीकुरु चाग्रपूतं शुद्धोदकं शुद्धधिया प्रदत्तम्।
कल्याणि! कल्याणपरं पराणां कुरुष्व भोक्तारमिमं स्वपुत्रम् ॥ ९॥

सन्ध्याभ्रनीकाशमिदं पुरस्तात् कौशेयवासो निहितं सुमुक्षे।
देवैः सदाराधितपादपद्मे गृहाण मद्दत्तमनन्तभक्त्या ॥ १० ॥

उपवस्त्रमिदं पुरस्थितं निजहस्तेन गृहाण शर्मदे!।
अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते किं न त्वयापि मोद्यते ॥ ११॥

सुराणां रक्षायां दनुजकुलविध्वंसनपरे!
सुगन्धं कल्याणि! प्रियमतितरांस्वीकुरु मम।
विपद्गर्तेव्यग्रं पृथुकमधुना मां प्रियतरं
विहाय त्वां मातर्ननु क इह रक्षेद्भुवितले ॥ १२॥

[illegible]तोऽसि निहितः पुरतो यः प्रसृतोऽयमधिकाञ्चनपात्रम्।
देवि! पाहि भवसागरतो मां स्वीकुरुष्व सुतरामघुमद्य ॥ १३ ॥

[illegible]लिन्दैरधिकं प्रशंसिता मालामला रम्यगुणेन योजिता।
[illegible]ः सुकण्ठे विधिवन्निपातिता करोतु वृद्धि द्विगुणां सुवासिता ॥ १४॥

तुलसीदलजातमस्ति यत्सुतरां भाति सुदेवि! सज्जितम्।
करुणा[illegible]णताप्रकाशमन्मम गात्रं कुरु स्वीकुरुष्व तत् ॥ १५ ॥

अबीरसौभाग्यमिदं मदीयं गृहाण संज्ञे! निहितं पुरस्तात्।
एतेन यायान्ति मुदं विरोके लोके जना मानधनाः समन्तात् ॥ १६॥

सूर्यप्रियाच्छायायाः

सूर्यप्रिया नु ब्रह्मानन्दं वन्द्या न शावके स्वीये।
कलयति स्वीयमिहाद्य सज्जीकृत्यासनं नितराम् ॥ १ ॥
पाद्यं तवातिविमलं वरदे! सदैव प्रस्थापितं विविधगन्धयुतं वरेण्ये।
पूतां निधाय निजदृष्टिमिहस्वकीये पुत्रेऽतिदुःखदलिते कुरु प्रीतिमन्याम् ॥ २ ॥
त्वं पालनाय जगतामतिगर्वशीला दारिद्र्यदुःख-हरणेऽसि जनैकवन्द्या।
किं लालयन्न निजबालकदत्तमर्घ्यैस्वीकृत्य तज्जननि! चाद्य ददासि धैर्यम् ॥ ३ ॥
संस्थापितं तव चिरं तपनीयकुम्भे रम्यं हि गाङ्गजलमाचमनीयमम्ब।
स्वीकार्यमद्य निजपुत्रप्रदत्तमार्पे छाये! निवारय सुतं भवतापदुःखात् ॥ ४ ॥
दुग्धं विभाति विमलं कमनीयपात्रे पानं विधाय तव देवि! दयार्द्रचित्ते।
साहाय्यमर्जयसि किं न विधाय पूर्णम् तूर्णं निजस्य पृथुकस्य च पापनाशे ॥ ५ ॥
जननि! स्वादुतरं दधिसज्जितं मधुरमद्य गुडेन समन्वितम्।
कुरु कृपां मयि देवि! शुभप्रदे! वितर भद्रमनन्तगुणान्विते ॥ ६ ॥
देहि धैर्यमयि! ज्ञानमनन्तं दुःखसिन्धुब्रुडितस्य कृतेऽपि।
रम्यमद्य मधु भाति चिराय तद् गृहाण परिपाहि जनं स्वयम् ॥ ७ ॥
छाये! गृहाण मधुरां शुचिशर्कराञ्च हर्षैः कुरुष्व करयोश्च प्रियोदयाय।
जाने न मेऽस्तिकिल पुण्यकणोऽपिप्रायः प्रियां तव दया मधुना दधामि ॥ ८ ॥
शुद्धोदकं शुद्धधिया प्रदत्तं छाये! धृतं वातितरां पवित्रम्।
कल्याणि! कल्याणिनि स्वीयमङ्के पुत्रं विधायाति प्रियं गृहाण ॥ ९ ॥
पूजाविधिं तव न वेद्मि निलिम्पपूज्ये नो वा स्मृतं तव कदापि सुनाम वन्द्ये।
पापे मति विदधतोऽपि ममात्र मातर्वस्त्रं गृहाण करुणां मयि मुञ्च छाये ॥ १० ॥
उपवस्त्रमिदं विभाति ते गुणयुक्तं प्रियगन्धवासितम्।
करुणाकरमस्तके निजपुत्रस्य विधाय धारय ॥ ११ ॥

सन्तापमालाकलितोऽपि वालो नवालकस्तेऽद्य ददाति गन्धम्।
स्तनन्धये पोत इव स्वकीये जनेऽपि किं तेन कृपार्द्रदृष्टिः ॥ १२॥
अक्षतान किमु सन्ति मदीयाः प्रसृताः प्रियतरा भुवि वन्द्ये।
स्वीकृतिं प्रियतरां ननु कृत्वा पाहि देवि! भवसागरतो माम् ॥ १३॥
इयं पुष्पमाला विभात्यन्नपात्रे विपन्नाशिका हर्षदात्री सदैव।
मुदा कुर्वती कण्ठमध्ये न छाया जगत्यत्र छायेव तापातसुगाप्त्री ॥ १४ ॥
तुलसीदलमच्छमर्पितं ननु मञ्चे तपनीयनिर्मिते।
पृथुकस्य विधाय मस्तके करमद्यापि गृहाण शर्मदे ॥ १५ ॥
अबीरसौभाग्यमिदं पुरस्तात् कल्याणि! दीनस्य गृहाण शीघ्रम्।
संसार चक्रेण विदीर्यमाणं मां बालकं तारय लोकशोकात् ॥ १६ ॥

रथस्य

त्वं प्राणदातारमनन्तभानुं दिवादिशं धारयसि स्वमूर्ध्ना।
भारोद्वहेते तृणकल्पमेतत्प्रेम्णासनं स्यन्दन मे गृहाण ॥ १ ॥
दिने दिने पुष्करलङ्घनाय त्वं सप्तकं धारयसे हरीणाम्।
तथापि पादैश्चलसीतिहेतोर्गृहाण पाद्यं सुखदं पदेषु ॥ २ ॥
सुधाम्बुधौमिष्टमनन्तश्रेयो लावण्यमङ्गीकुरुषे च सिन्धौ।
नीतन्न यद्भक्तिरसेन युक्तं त्वयार्घ्यमश्वैः सममद्योपयम् ॥ ३ ॥
त्वया कृतः कालकलाविभागः तथार्तवः प्रीतिपरास्ततैव।
अहं तु प्रीति कलये शताङ्ग! गृह्णासि चेदाचमनीयमेतद् ॥ ४ ॥
यद्धेनुभिः शुद्धतृणानि भुक्त्या प्रकल्पितं हृद्यमिदं विविक्तम्।
पयोऽमृतं भक्तिपरो नरोऽपं ददाति चक्रिन् सततं गृहाण ॥ ५ ॥

न चन्द्ररूपं विमलं स्वरूपे गन्धेन कल्हारसोऽस्ति यस्य।
हृद्येन दुग्धेन विनिर्मितं यत् दधित्वमेतत् रथ सन्निधे हि ॥ ६ ॥
परोपकारामितविग्रहाभिर्विनिर्मितं यन्मधुमक्षिकाभिः।
शताङ्गभानोः सह सप्तवाहैरङ्गीकुरुष्वाद्य मधुत्वमेतत् ॥ ७ ॥
यज्जीवनं विज्ञवरैः प्रमीतं सुस्वादुसर्वैरभिनन्दनीयम्।
दिवाकराश्चैः सहितो रथेश! पिबोदकं वा धृतमेव वा त्वम् ॥ ८ ॥
कौशेयसूत्रैः नितरां पवित्रैर्विनिर्मितं ग्राम्यवधूसमूहैः।
राका निशानाथ विचित्रदेह वस्त्रंमदीयं रथ धारयत्वम् ॥ ९ ॥
यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं कौशेयसूत्रैकलितात्मरूपम्।
विशिष्टतेजः परिरक्षणाय तुरङ्गसङ्ग रथ! धारयेदम् ॥ १० ॥
काम्यं मनोज्ञरचनं शुभसूत्रपृक्तं देवैर्महर्षि-प्रवरैरभिनन्दनीयम्।
सुस्पर्शमेवमधुराकृतिलोभनीयं दत्तंमयोपवसनंरथधारयेदम् ॥ ११ ॥
त्वञ्चक्रयानास्मद्भाग्यचक्रं शिवस्य मार्गे प्रहितं करोषि।
स्वीकृत्य गन्धं कुरु प्रेम येन स्वर्णे सुगन्धस्य समागमं स्यात् ॥ १२ ॥
रथेश सूर्यस्य साहाय्यमेत्य धान्यस्य वृद्धिं कुरुषे समन्तात्।
तदक्षतीभूय कृतार्थतायां पादाम्बुजे तेऽद्य समर्पयेऽहम् ॥ १३ ॥
पद्मैरकारि कठिनं तप एव वाप्यां प्राप्नोति येन सगुणैः सह प्रीतिवासम्।
पूर्णं तपोऽस्ति कलये यदिपूर्णचक्रिन्! गृहाणासिवाहसहितो नव पद्ममालाम् ॥
समीकरणं शुद्धमिदं करोति सम्मूलमुन्मूलयति प्ररोगान्।
प्रीतिं परां कण्ठगतं ददाति गृहाण काष्ठेश दल तुलस्याः ॥ १५ ॥
हरिन्मणेः स्वत्वमिदं गृहीत्वा कच्छेषुवासं विदधाति सद्यः।
रथे शते घोटमुखेषु गत्वा दूर्वातृणं सद्गतिमाप्नुयात्तत् ॥ १६ ॥
गन्धर्वनीतोऽसि दधासि चक्रं गतागतं देवपथे तनोषि।
स्वभक्तसम्पत्तियशो विधातुमवबीरसौभाग्यमिदं गृहाण ॥ १७ ॥

अथावरणदेवता

प्रथमविन्दौ मध्ये—सूर्याय नमः सूर्यमा० ।

तद्दक्षिणे—ॐ रत्नादेव्यै नमः रत्नादेवीमा० । ॐ छायायै नमः छाया० । ॐ संज्ञायै नमः संज्ञा० । इति प्रथमावरणार्चनम् ।

षट्दले—ॐ गुं गुरुभ्यो नमः गुरुमा० । ॐ पं परमगुरुभ्यो नमः परमगुरु० । ॐ पं. परमेष्ठीगुरुभ्यो नमः परमेष्ठिगुरुमा० । ॐ पं परात्परगुरुभ्यो नमः परात्परगुरुम० । ॐ हराय नमः हरमावा० । ॐ गणेशाय नमः गणेश० । इति द्वितीयावरणार्चनम् ।

अष्टदले—ॐ त्रैलोक्यप्रकाशाय नमः त्रैलोक्यप्र० । ॐ विश्वतोमुखाय नमः विश्वतोमु० । ॐ विवस्वते नमः विवस्वतमा० । ॐ सूक्ष्मात्मने नमः सूक्ष्मात्मनमा० । ॐ सर्वतोमुखाय नमः सवतोमुखमा० । ॐ सुवर्णरेतसे नमः सुवर्णरेतसमा० । ॐ मार्तण्डाय नमः मार्तण्डमा० । ॐ सूदमात्मने नमः सूदमा० । इति तृतीयावरणार्चनम् ।

पुनः तत्रैव पूर्वादिक्रमेण अष्टदले—ॐ ब्राह्यै नमः ब्राह्मी मा० । ॐ माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीमा० । ॐ कौमार्यै नमः कौमारीमा० । ॐ वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमा० । ॐ वाराह्यै नमः वाराहीमा० । ॐ नारसिंह्यै नमः नारसिंहमा० । ॐ ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमा० । ॐ चण्डिकायै नमः चण्डिकामा० । इति चतुर्थावरणार्चनम् ।

अष्टदलाग्रेषु—ॐ दिनेशाय नमः दिनेशामा० । ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रमा० । ॐ विवस्वते नमः विवस्वतमा० । ॐ पतङ्गाय

नमः पतङ्गमा०। ॐ धात्रे नमः धातारमा०। ॐ अर्यम्णे नमः अर्यम्णमा०। ॐ सवित्रे नमः सवितारमा०। ॐ शङ्करात्मने नमः शङ्करात्मनमा०। इति पञ्चमा-वरणार्चनम्।

अथ द्वादशदलेषु पूर्वा दिक्रमेण—अरुणाय नमः अरुणमा०। ॐ वेदाङ्गाय नमः वेदाङ्गमा०। ॐ भानवे नमः भानुमा०। ॐ रुद्राय नमः रुद्रमा०। ॐ विष्णवे नमः विष्णुमा०। ॐ गभस्तये नमः गभस्तिमा०। ॐ यमाय नमः यममा०। ॐ सुवर्णरेतसे नमः सुवर्णरेतसमा०। ॐ दिवाकराय नमः दिवाकरमा०। ॐ मित्राय नमः मित्रमा०। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमा०। ॐ सहस्रकिरणाय नमः सहस्रकिरणमा०।

तत्रैव पूर्वादिक्रमेण—ॐ मित्रायै नमः मित्रामा०। ॐ तीव्रायै नमः तीव्रामा०। ॐ नन्दायै० नन्दामा०। ॐ वज्रहस्तायै नमः वज्रहस्तामा०। ॐ संज्ञायै नमः संज्ञामा०। ॐ भोगदायै नमः भोगदामा०। ॐ कामदायै नमः कामदामा०। ॐ सुभगायै नमः सुभगामा०। ॐ स्तुतायै नमः स्तुतामा०। ॐ चिन्तायै नमः चिन्तामा० ॐ अश्विन्यै नमः अश्विनी०। ॐ सकलेश्वर्यै नमः सकलेश्वरीमा०। इति सप्तमावरणार्चनम्।

चतुरस्रेषु पूर्वादिक्रमेण—ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रमा०। ॐ अग्नये नमः अग्निमा०। ॐ यमाय० यममा०। ॐ निर्ऋतये० निर्ऋतिमा०। ॐ वरुणाय० वरुणमा०। ॐ वायवे० वायुमा०। ॐ सोमाय० सोममा०। ॐ ईशानाय० ईशानमा०। ॐ ब्रह्मणे०

ब्रह्माणामा०। ॐ अनन्ताय० अनन्तमा०। इति इत्यष्टमा-वरणार्चनम्।

तत्रैव क्रमेण आयुधानि—ॐ वज्राय० वज्रमा०। ॐ शक्तये० शक्तिमा०। ॐ दण्डाय० दण्डमा०। ॐ खड्गाय० खड्गमा०। ॐ पाशाय० पाशमा०। ॐ अंकुशाय० अंकुशमा०। ॐ गदायै० गदामा०। ॐ त्रिशूलया० त्रिशूलमा०। ॐ पद्माय० पद्ममा०। ॐ चक्राय नमः चक्रमा०। इति नवमावरणार्चनम्।

पूर्वपश्चिमयोः—ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः अश्विनीकुमारमा०। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसूनावा०। इति दशमावरणार्चनम्।

ॐ ऋग्वेदाय नमः ऋग्वेदमा०। ॐ यजुर्वेदाय नमः यजुर्वेदमा०। ॐ सामवेदाय नमः सामवेदमा०। ॐ अथर्ववेदाय नमः अथर्ववेदमा०। इत्येकादशमा-वरणार्चनम्।

रथाग्रे—ॐ शक्त्यै नमः शक्तिमा०। ॐ धर्माय नमः धर्ममा०। ॐ अधर्माय नमः अधर्ममा०। ॐ त्रयीमयाय नमः त्रयीमयमा०। ॐ छायासूर्याभ्यां नमः छायासूर्यमा०। ॐ रत्नादित्याय नमः रत्नादित्यमा०। ॐ अश्विनीभास्कराभ्यां नमः अश्विनीभास्करमा०। ॐ संज्ञादित्याभ्यां नमः संज्ञादिव्य०। ॐ धर्मराजाय नमः धर्मराजमा०। ॐ शनये नमः शनिमा०। ॐ सावर्णिमन्वन्तराय नमः सावर्णिमन्वन्तरमा०। ॐ यमुनायै नमः यमुनामा०। ॐ तापिन्यै नमः तापिनीमा०। इति द्वादशावरणार्चनम्।

सूर्यस्य:

पुष्टि तनोति विमली कुरुते शरीर
वतादिदोषनिकराननचिरेण हन्ति।
तद्धूपद्रव्यमधुनाकमलैकबन्धो!
दत्तं मया कुरु करे दिश-भक्तिभावम् ॥१६ ॥
त्वच्चण्डभानुनिकरैर्मलिनीकृतेक्ष्णा
दीपनिधाय करयोः पथि यान्ति भक्ताः।
दोषं निवार्य घृतदीपममुं गृहीत्वा
तेजस्विनो कुरु जनानवधामराशै ॥ २० ॥
परयोरगस्तकरयोनिहितं हिताय
शिष्यत्वमेत्य गिरिणा मलयेन पूर्वम्।
तद्दीयते सविनयं करयोस्तवार्क!
गन्धानुलेपनमिदं करमर्दनाय ॥ २१ ॥
मधुरं शुभ्रवर्ण भूषितं, अभितः पक्वमिदं रसान्वितम्।
दिननाथ गृहाण मे फलं सफलं मे कुरु कर्म पूषण ॥ २२ ॥
यज्ञस्य साफल्यविधौ विशिष्टां शिष्टैः प्रदत्ता विनयानमद्भिः।
श्रेयस्करी प्रीतिपुरस्कृतां तां समर्पयाम्यर्क सुदक्षिणां ते ॥ २३॥
स्वभक्तिभावस्य सुभानि नीत्वा
करौ च विज्ञाप्य हृदा समनत्।
विनिर्मिता या सुमनोऽभिरामा
तामञ्जलि सूर्य कुरुष्व रिक्ताम् ॥ २४ ॥

संज्ञायाः

धूपद्रव्यमधिगम्य चिराय रम्यतां गतमिदं मम सद्म।
स्वागतार्थमधिकं तव छाये! स्वीकुरुष्व प्रहितं प्रियपात्रे ॥ १७ ॥

दया यस्याश्चित्ते प्रवहति सदा भूरिविभवा
बलाद्-दुःखौघान् या ग्लपयति च लुप्तांश्च कुरुते।
प्रदीपं सा संज्ञाभुवनभयनाशं विदधती इमं
स्वीकुर्यान्मे हृदि ननु वसेल्लोकजननी ॥ १८ ॥

ऋतुफलं विमलं पुरतः स्थितं प्रियतरं मम देवि! गृहाण तत्।
निजशिशावपि लोकभयार्णवे निपतिते कुरु चाद्य कृपाकरम् ॥ १९ ॥

गन्धानुलेपनमिदं हि विधाय देहे संज्ञे!
कुरुष्व करुणां मयि देवि! नित्यम्।
शुद्धां विधेहि मम चाद्य धियं वरेण्या
माश्रित्य यामहमपीह भवामि पूतः ॥ २० ॥

दक्षिण्यपूर्णेन सुदक्षिणैयं संस्थापिता देवि! करे त्वदीये।
स्वीकृत्य चेमां मयि सानुरागा भूयाः सदैवातितरां प्रसन्ना ॥ २१ ॥

सफलतां नयकीर्तिलतामिमां गुणिगणप्रिय-कोमलपल्लवाम्।
सुरभितां कमनीयकलेवरां प्रियतरां कुसुमाञ्जलिमद्य मे ॥ २२ ॥

छायायाः

शक्तिस्वरूपे! जगदात्मरूपे! गृहाण छाये! मम धूपद्रव्यम्।
विपत्समूहस्य विनाशहेतुं करं वराङ्गे पृथकस्य कृत्वा ॥ १७ ॥

शोणरुचा शिखयाति महत्या कुण्डलनं कलयन्निति हृष्टः।
स्वागतमद्य विधातुमसौ किं नृत्यति ते च चिराय प्रदीपः ॥ १८ ॥

सफलतां नय मातरिदं स्थितं ऋतुफलं विमल फलदायकम्।
निजकरं करुणायुतमद्य मे कुरु दयामयि! देवि च मस्तके ॥ १९ ॥

मातस्त्वमेव वरदासि निलिम्पपूज्ये
गन्धानुलेपनमिदं पुरतः स्थितं ते।
स्वीकृत्य देवि! सदयं हृदयं मदीयं
पूतं विधाय निजभक्तियुतं विधेहि ॥ २० ॥

सुदक्षिणा ते परितः प्रदत्ता सुदक्षिणेनातिप्रियेण छाये।
स्वीकृत्य पुत्रेण चिराय चेमां कृपाकरं देहि सुमस्तके मे ॥ २१ ॥

कुसुमाञ्जलिरद्य चार्पिता वरदे! कीर्तिलता सुगन्धिता।
अवलम्बनमेत्य ते तरोः करुणायाः फलमस्त्वपीह नो ॥ २२ ॥

रथस्य

मन्दारपुष्पैर्बहुगन्धयुक्तं पुरामरैः स्वर्गपुरे विधत्तम्।
तदैव ते स्यन्दन! तोषणाय समर्पयेऽहं बहुधूपद्रव्यम् ॥ १८ ॥

न हेमपात्रे मणयो विभान्ति न पुष्पतैलं कलयापि चक्रिन्।
तथापि भक्त्येकपरो नरोऽहं स्वस्नेहदीतं च समर्पयामि ॥ १९ ॥

सुवर्णपात्रे निहितं पवित्रं सुस्वादुकर्पूरपरागगौरम्।
महर्षिवृन्दैरपि नन्दनीयं नैवेद्यमेतद्रथ मे गृहाण ॥ २० ॥

मयाहितं योग्यपदं रथेश! तनुष्व सौख्यं विपुलं विधेहि।
सर्वं विजानासि वदामि किं वा फलं गृहीत्वा सफलं कुरुष्व ॥ २१ ॥

गन्धं ददाम्यद्य करे तवामुं रथेन्द्र! देहे तव लेपनाय।
तवाश्ववृन्दाय तथातिधृष्टं स्वीकृत्य सर्वे शिवमा-दिशन्तु ॥ २२ ॥

यज्ञस्य सिद्धिं सकलं ददाति लोभश्च दातुर्विदधाति भूयः।
सुखं गृहीतुर्विदधाति तस्माद्ददामि ते स्यनन्दन ! दक्षिणांताम् ॥ २३ ॥

पुष्पैर्विचित्रैर्नवगन्धमित्रैः प्रपूरितो मेऽञ्जलिरेष साधुः।
भावं विधातुं सुममार्दवं ते पुनर्गृहीतुं रथ ! प्रार्थये त्वाम् ॥ २४ ॥

॥ इति संक्षिप्त सूर्यपूजनम् ॥

महालक्ष्मी नित्यपूजा

ब्राह्ममूहूर्त में शयन से उठकर मस्तिष्क में श्वेतवर्ण सहस्त्रदल कमल पुष्प पर विराजित एवं अभय मुद्रावाले प्रसन्न बदन वाम भाग में स्वशक्ति से विभूषित अपने गुरुदेव का ध्यान कर उन्हें मानसिक विधि से गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य ताम्बूल समर्पित कर अपने गुरुदेव को पूजनकर्ता इस मंत्र से प्रणाम करें–

तत्र मंत्र–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुः साक्षात् महेश्वरः।
गुरुरेव जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः॥

उपरोक्त श्लोक से प्रार्थना करने के पश्चात् योनिमुद्रा से अपने गुरुदेव को प्रणाम कर, उनके चरणकमल से निकली हुई अमृतधारा से अपना प्रक्षालन करते हुए निर्मल आनन्द की अनुभूति अर्थात् अनुभव करें।

मूलाधार से कुण्डली एवं षट्चक्र, भेदक्रम से ब्रह्मरंध्र में ले जाकर उस अमृतधारा को उसी में प्राप्त करते हुए नमस्कार करके अपने को मूर्तीभूत मानते हुए मूलाधार में ले जायें, मूल में ब्रह्मरंध्र पर्यन्त तक **'तेजोमय'**–

उपरोक्त मूल मंत्र को विचारते हुए मूलरंध्र से उस तेज से व्याप्त स्वदेह को विचारे। हृदय में अपनी इष्टदेवी का ध्यान कर मानसिक उपचारों से १०८ बार पूजन करे।

तेजोमय–इस मन्त्र का जप पुनः समर्पित करे पश्चात् श्रीदेवी की आज्ञा लेकर अजपाजप संकल्प सहित समर्पित करें।

ॐ षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्त्रं प्रजापतेः,
षट्शतं तु गदापाणेः षट्सहस्त्रं पिनाकिनः।
जीवात्मनः सहस्त्रन्तु सहस्त्रन्तु गुरोस्तथा।
परमात्मनः सहस्त्रन्तु जपसंख्यां निवेदयेत्॥

इस अजपाजप मन्त्र का उच्चारण करे।

भूम्यै नम:–इस प्रकार ऐसा उच्चारण करके नमस्कार करते हुए श्वास के अनुसार पैर रखकर बाहर जाएं, और मूत्रोसर्ग करके हाथ-पैर धोकर आचमन करें।

श्रीम्–इस बीज मन्त्र से अपने दन्त सफा करें।

मूल–पुन: इस मंत्र से मुख धोकर तीन बार फिर से आचमन करें।

तत्पश्चात् जल में त्रिकोण मण्डल बनाकर उसमें गंगादिक सब तीर्थों का स्मरण कर उस जल को लाक्षारुण देवी का चरणामृत मानकर स्नान कर मूलमन्त्र से पुन: तीन बार आचमन करके तत्पश्चात् शुद्ध वस्त्र पहन कर पुन: तीन बार आचमन कर बांये हाथ में जल लेकर दायें हाथ से ढककर मूल से सात बार अभिमन्त्रित कर मूल से गलित जल बिन्दुओं से सात बार पूजनकर्ता अपने सिर को सम्प्रोक्षित कर शेष जल को दाहिने हाथ में लेकर–

ईड़ा–इस मंत्र से आकृष्ट कर देह के अंत: स्थित सभी पापों को दूर कर उस जल को कृष्ण वर्ण पिंगला से दाहिने हाथ में रखकर अपने सम्मुख जलती हुई वज्रशिला में छोड़कर तथा हाथ एवं पैर धोकर सूर्यमंडल में देवी का ध्यान कर जलांजलि से तीन बार मूलान्त से–**श्री भुवनेश्वर्यै नम:। इदं अर्घं नम:।**

इसी प्रकार–**ह्लां-ह्लों-स: श्री सूर्याय नम:। एषते अर्घ्यो नम:।**

इस प्रकार पूजनकर्ता तीन बार अर्घ्य देकर गायत्री देवी अथवा मूल मन्त्र का दश बार जप करके करें।

तत्र गायत्री मन्त्र: –

श्री महालक्ष्म्यै विद्महे हरिप्रियायै धीमही: तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।

सूर्य मण्डल से देवी को अपने हृदय में स्थापित कर, मूलान्त में–

सांगाय सायुधाय सपरिवाराय श्रीभुवनेश्वरीम् समर्पयामि नमः।

उपरोक्त मन्त्र से तीन बार तर्पण करे।

॥ इति स्नान–सन्ध्या–तर्पण विधिः॥

तत्पश्चात् पूजनकर्ता अपने गृह में आकर द्वार देवताओं का इसी क्रम से पूजन करें–

वामे–गणेशाय नमः, दक्षिणे–धर्मराजाय नमः।

पश्चिमे–वरुणाय नमः, उत्तरे–कुबेराय नमः।

उपरोक्त क्रम से द्वार देवताओं का पूजन करने के पश्चात् पूजनकर्ता बायें पैर को आगे कर इस मन्त्र से ही घर में प्रवेश करे–

वाम पाद पुरुषाय नमः – इस मन्त्र को पढ़कर तीन बार ताली बजाकर समस्त विघ्नों को दूर करके इस मन्त्र से प्रणाम करे–

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ १॥
वामे–गुरुभ्यो नमः, दक्षे–गं गणपतये नमः।
पृष्ठे–क्षेत्रपालाय नमः, अग्रे–भुवनेश्वर्यै नमः।

उपरोक्त क्रम से प्रणाम करके भूतशुद्धि करें, तथा मूलाधार से कुण्डली जगाकर जीवात्मा की ही पूजा करें।

हंसः इस मंत्र द्वारा परमात्मा में विलीन कर दे, तत्पश्चात् वाम कुक्षि में पंचमहापादुकात्मक पापपुरुष का ध्यान करें–

यं–इस वायु बीज से कुम्भ योग से संशोधित कर–

रं–इस अग्नि बीज से कुम्भ पूरक के योग से पाप के संदेह जलाकर–

वं–इस बीज से रेचक योग पापभस्म को बाहर निकालकर–

वं-इस बीज से देह भस्म को प्लावित कर-

लं-इस बीज दृढ़ कर सिर से पैर तक उन अंगों को निष्पादित कर-

हंसः-इस मंत्र के द्वारा जीवात्मा को हृदय में लाकर कुण्डली मूलाधार में स्थापित कर हृदय में हाथ रखकर प्राण प्रतिष्ठा करें-

ॐ आंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषं संलंक्षं मम प्राणाः। एवं मम जीव इह स्थितः एवं मम सर्वेन्द्रिय माणि एवं मम वागमनु चक्षु श्रोत्-जिह्वा घ्राण प्राण इहागत्य सुखं-चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

॥ इति प्राणप्रतिष्ठा विधिः॥

मूल से प्राणायाम कर अथवा प्रणव से प्राणायाम कर-

पूरकं-सोलह, कुम्भकं-चौसठ, रेचकम्-बत्तीस।

अनुलोम-विलोम तीन बार करके इत्येव इस प्रकार प्राणायाम् करें। तत्पश्चात् पूजनकर्ता इस संकल्प (विनियोग) को करे-

ॐ अस्य श्रीमहा लक्ष्मीमन्त्रराजस्य भृगुऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः श्रीमहालक्ष्मीदेवता ऐंबीजं ह्रींशक्तिः क्लींकीलकं मम श्रीधर्मार्थ-काममोक्षार्थे जपे पूजायां विनियोगः।

भृगुऋषये नमः-शिरसि १ त्रिष्टुप्छन्दसे नमो-मुखे २ श्रीमहालक्ष्म्यै देवतायै नमो-हृदये ३ ऐंबीजाय नमो-गुह्ये ४ श्रीशक्तै नमः-पादयोः ५ क्लींकीलकाय नमो-नाभौ ६ मम श्रीधर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः। सर्वाङ्गे मूलने व्यापकं कुर्यात्-१ आंअगुष्ठाभ्यां नमः २ श्रींतर्जनीभ्यां नमः ३

श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ४ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ५ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

इस प्रकार उपरोक्त क्रम से ही करन्यास करे।

षडङ्गन्यास करने का क्रम-

१ श्रांहृदयाय नमः २ श्रींशिरसे स्वाहा ३ श्रंशिखायै वषट् ४ श्रैंकवचाय हुं ५ श्रौंनेत्राभ्यां वौषट् ६ श्रांअस्त्राय फट्।

इस क्रम के अनुसार मातृका न्यास करे-[1]विनियोग:

अस्य श्रीमातृकान्यासस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीछन्दः श्रीमातृकासरस्वती देवता हलोबीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं मम श्रीलक्ष्म्यङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।

१ अंकंखंगंघंङं आंअंगुष्ठाभ्यां नमः २ इंचंछंजंझंञं ईं तर्जनीभ्यां नमः ३ उंटंठंडंढंणं ऊंमध्यमाभ्यां नमः ४ एंतंथंदंधंनं ऐंनामिकाभ्यां नमः ५ ॐपंफंबंभंमं औंकनिष्ठकाभ्यां नमः ६ अंयंरंवंशंषंसंहंक्षंअः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

इस प्रकार करन्यास करें पश्चात् इस प्रकार देह का विन्यास कर स्वयं को काम-कला रूप सोचकर देवी का ध्यान इस क्रम से करे-

ॐ करयुगलगृहीतं पूर्णकुम्भं दधानं,
क्वचिदमलयजस्थं शंखचक्राब्जपाणिम्।
क्वचिदपि दयिताङ्गीं चामरव्यग्रहस्तां,
क्वचिदसृणिपपाशैर्विभ्रतीं हेमकान्तिम्॥

१-प्रातः कालेऽथवा पूजा समये होम कर्मणि।
जप काले समस्ते वा विनियोगः पृथक-पृथक॥

उपरोक्त श्लोक का उच्चारण करके देवी का ध्यान करने के पश्चात् मानसोपचारों से अर्चना करके तथा अपनी शक्ति के अनुसार ही जप-होम आदि करके अपने बायें भाग में षट्कोण के अन्तर्गत त्रिकोण बिन्दू का निर्माण करके उसके अन्तर्गत वृत्त (चतुरस्रमंडल) का निर्माण कर पुनः अपने से दाएँ त्रिकोण वृत्त (बिन्दूमंडल) में करके, भूमि पर ही आधारशक्ति की पूजा करके व उसके आधार की स्थापना करके उसके ऊपर '**अस्त्र**' इस मंत्र के द्वारा शोधित करके तथा 'हत्' इस मंत्र द्वारा पाशादि एवं शाखादि की स्थापना करके तथा गंगा आदि तीर्थो का आवाहन करने के पश्चात् प्रणव 'ॐ' इस मंत्र द्वारा गंधादि को रखकर अग्नि, सूर्य, सोम कलाओं की पूजा करके धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर अपने मंत्र द्वारा ही पूजन करें। इस प्रकार सामान्य अर्घ जल देकर अपने बायें भाग में पहले बनाये हुये दशक मंडल के ऊपर आधार की स्थापना करें।

शक्तिभ्यो नमः-इत्यादिसंपूज्य नमः।

इस विधि से आधार का प्रक्षालनकर मंडल के ऊपर संस्थापित करें-

रंवह्निमण्डलदशक मण्डलात्मने नमः-इति प्रपूज्य मण्डलं फडिति कलशं प्रक्षाल्य कारणेन प्रतूल्य रक्तवस्त्रमास्या दिना संपूज्य देवीं संस्थाप्य-

अंअर्कमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः १ इति कलशे संपूज्य।

ओंचन्द्र मण्डलाय षोडशकलात्मने नमः १ इति द्रव्ये संपूज्य॥

फडितिसंरक्ष्य हुमित्यवगुण्ठ्य मूलेन संवीक्ष्य नमः-इत्यभ्युक्ष्म मूलेन गन्धमाघ्राय कुम्भे पुष्पं दत्वा शापमोचनं कुर्यात्।

शापमोचन मन्त्र :-

ॐ एकमेव परब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यान्तेन ते नाशयाम्यहम्॥ १॥
सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसंभवे।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्॥ २॥
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन हे! देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु॥ ३॥

उपरोक्त श्लोकों का तीन बार उच्चारण करें।

ॐ वां वीं वूं वैं वौं नमः ब्रह्मशापमोचितायै सुरादेव्यै नमः।

इसका भी तीन बार उच्चारण करे।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुराकृष्णशापं मोचय-मोचय॥

इसका भी तीन बार उच्चारण करे।

अमृतं श्रावय-श्रावय स्वाहा।

इसका भी तीन बार उच्चारण करे।

ॐ सां सीं सूं सैं सः शुक्रशापं मोचय २ अमृतं श्रावय २ स्वाहा।
इत्येतान्मन्त्रान् वटं धृत्वा आनन्दभैरवभैरव्यौ च तत्र ध्यात्वा-
ॐ ह्रींश्रींहंसंक्षंमंलंवंरं ॐ आनन्दभैरवाय वौषट्।
सहस्त्रक्ष मंलंवंरंयंऊं सुरादेव्यै वौषट् इति॥

देव एवं देवी की तीन बार पूजा करके द्रव्य के मध्य में दाहिने ओर से तीन बार फेरी लगा कर- **अं, कं, थं**

तीन पंक्तियों में लिखकर उसके मध्य-**हं एवं क्षं**

लिखकर उसका समावेश करके द्रव्य के मध्य में अमृत का चिन्तन करके धेनुमुद्रा से अमृतमय होकर-

वं-इस, स्वच्छ बीज को जो मूलमंत्र है, उसको आठ बार धारण करके पुनः मूलमन्त्र का उच्चारण कर आत्म एवं श्रीचक्र के मध्य में त्रिकोण-षटकोणवृत्त को लिखकर चतुस्त्रादि चतुरस्त के लिए-

१. पूर्णगिरिपीठाय नमः **२. उद्यानपीठाय नमः**
३. कामपीठाय नमः **४. जालन्धरपीठाय नमः।**

इस प्रकार पूजन करके षट्कोण में षड्ङ्ग की पूजा करके तथा-

आधार शक्तिः की भी पूजा करके त्रिकोण के (गर्भ) मध्य में यंत्रिका की स्थापना करके नमस्कार करें।

यं धूम्रार्चिषे नमः १ रं ष्ट्रायै २ लं ज्वालिन्यै नमः ३ सं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः ४ वं सुश्रियै नमः ५ सं रूपायै नमः ६ हं कपिलायै नमः ७ लं हव्यवाहायै नमः ८ क्षं कव्यवहायै नमः ९ रं वन्हिमण्डलाय दशकलात्मने नमः १०॥

पूजनकर्ता इस प्रकार से ही पूजन करे, तथा पात्र को '**फट्**' मन्त्र से धोकर यंत्र के ऊपर स्थापित करके-

अर्क मण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः

जल से एक भाग को भरके वहाँ सुगन्धित द्रव्य छिड़क करके-

ओं इति षोडश कलात्मने सोम मंडलाय नमः।

इस प्रकार पूजा करके पूर्व के मंत्र से द्रव्य लिख करके त्रिकोणात्मक रेखा में-

अं-सोलह, कं-सोलह, थं-सोलह।

ऐसा तीन बार लिख कर उसके मध्य में-**हं, एवं, क्षं** इन बीजों को क्रमानुसार लिखे। तत्पश्चात् गंगादि तीर्थो का आवाहन

करके आनन्दभैरव एवं भैरवी की अपने मंत्र से पूजन करके तथा दूसरे मंत्र से संशोधन करके-**हुं**

उपरोक्त बीज मंत्र से अवगुण्ठन करके धेनुमुद्रा से अमृतमय होकर तीन बार ताली बजा करके, दसों दिशाओं को संबद्ध करके उसके ऊपर मूल मंत्र को सात बार जप करके देवी का आवाहन करके पुनः तीन बार ताली बजा करके दिशाओं को सबद्ध अवगुढ़ित एवं अमृतमय करके योनिमुद्रा को प्रदर्शित करके षडङ्ग से संपूर्ण कार्य करके मत्स्यमुद्रा से पात्र को देवी के संमुख विभावन करे-

तत्पश्चात् देवी की आज्ञा लेकर गृह के समीप गुरुपात्र, शक्तिपात्र, भोगपात्र, स्वपात्र, योगिनीपात्र, वीरपात्र तथा अन्य अर्ध्य के आचमनीय पात्रों की स्थापना करके चर्वणयुक्त कारण में तत्वमुद्रा पात्र से निकाल करके गुरुओं का तर्पण करके-श्री पात्र के अमृतमय इस मूल मंत्र से-

श्रीं देवीं सायुधांसवाहनांसपरिवारां तर्पयामि नमः।

॥ इति कलश पूजा विधिः॥

कलश पूजन के पश्चात पीठ पूजा करें-

मण्डूकाय नमः, कालाग्निरुद्राय नमः, आधारशक्त्यै नमः, कमलाय नमः, प्रकृत्यै नमः, कूर्माय नमः, अनन्ताय नमः, पृथिव्यै नमः, क्षीरसमुद्राय नमः, द्वीपाय नमः, कदम्बवनाय नमः, कल्पवृक्षाय नमः, मणिमण्डलाय नमः, रत्नसिंहासनाय नमः

अग्नियादिकोणे-

धर्म्म-ज्ञान-वैराग्यै-श्वर्येभ्यो नमः

पूर्वादिअधर्मअज्ञान अवैराग्य अनैश्वर्यादिभ्यो नमः।

कर्णिकायाम्-

रं अग्नि मण्डलाय नमः, अं अर्क मण्डलाय नमः, सौः सोममण्डलाय नमः

सं सत्वाय नमः, रं रजसे नमः, वं तमसे नमः

अं अन्तरात्मने नमः, पं परमात्मने नमः, ह्रीं ज्ञानात्मने नमः

तत्पश्चात् केशर के द्वारा पूजनकर्ता इन नौशक्तियों की पूजा करें-

१-अघोरायै नमः, २-मङ्गलायै नमः, ३-ह्रौं सदांशिव महाप्रेत पद्मासनायै नमः, ४-उमायै नमः, ५-जपायै नमः, ६-अजितायै नमः, ७-अपराजितायै नमः, ८-नित्यायै नमः, ९-(विलासित्यै नमः) दोग्ध्यै नमः

इस प्रकार सूर्य की किरण समूहों को प्रणाम कर अपने हृदय में देवी का भाव इस वाक्य का उच्चारण कर के स्थापित करें-

महालक्ष्मीममृतचैतन्य मूर्ति कल्पयामि नमः।

उपर्युक्त कर्म की समाप्ति के पश्चात मूर्ति का संकल्प करने के उपरान्त यन्त्र की स्थापना करके प्राणप्रतिष्ठा करे जिसका क्रम यह है-

ओं आंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंनंलंक्षं श्रीमहालक्ष्म्या प्राणा इह प्राणाः एवं जीव इहस्थितः, एवं सर्वेन्द्रियाणि वाग्मनश्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणइहागत्यं सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। श्रीभगवतिमहालक्ष्मि इहा गच्छ २ इह तिष्ठ २ इहसन्निधेहि २ इहसन्निरुद्धा भव २ अत्राधिष्ठानं कुरु मम पूजां गृहाण नमः।

देव्याङ्गे-ह्रां हृदयाय नमः

इस प्रकार पूजनकर्ता तीन बार ताली बजाकर दिग्बन्धनं कर्म करे। इसके बाद निम्न मंत्रों से ध्यान करें-

श्री महालक्ष्मी इंदमासनं नमः। एवमर्ध्यै स्वधा एवं पाद्यं नमः।

एवमाचमनीय नमः। एवं वस्त्रं नमः। एवं गन्धं नमः।

एवं अक्षतपुष्पाणि वौषट् एवं धूपं नमः दीपं नमः।

नैवेद्य को सामने रखकर कर्त्ता अर्घ के जल से '**अस्त्रतायफट्**' यह कहकर धेनुमुद्रा प्रदर्शित करें, तथा मूल मंत्र का आठ बार जाप करें तथा और इस वाक्य का उच्चारण कर के-**श्रीमहालक्ष्म्यै नमः**, कह कर देवी को नैवेद्य समर्पित करें। उपरान्त इस वाक्य का उच्चारण कर-**अमृतोपस्तरण मसि स्वाहा**, कहकर जल को पृथ्वी पर छोड़ दे उसके पश्चात् **पुनराचमनीयं नमः**, कहकर आचमनीय जल छोड़ दे तथा-**ताम्बूलं नमः**, कहकर ताम्बूल लक्ष्मी देवी को समर्पित करें।

उपर्युक्त कर्म के तत्पश्चात् तीन बार पुष्पांजलि के द्वारा पूजा करके मूलमंत्र का जप पूजनकर्ता स्वयं करें।

श्री महालक्ष्मीं तर्पयामि स्वाहेति-तीन बार कहकर **संत्प्यं संत्पर्य इति बिन्दौ आवरणपूजा मारभेत्।**

तत्रादौ-

गुरुपक्तिक्रमेण गुरु श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि।

एवं परमगुरुः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

एवं परमेष्टिगुरुः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

परापद गुरु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सिद्धौघ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गुरु श्री दिव्यौघगुरुः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

मानवोध गुरु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

विभूतिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

उन्नति श्री पादुकांति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सृष्टि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

कीर्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सन्तति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

व्युष्टि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयाामि।

उत्कृषि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

वृद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

इतिकोणेषु शक्तिः संपूज्य वामावर्त्तेन दिग्विदिग्दलेषु अष्टपत्रे दिग्दलेषु दक्षिणावर्तेन।

वासुदेव श्री पूजयामि तर्पयामि

सङ्कर्षण श्री०। प्रद्युम्नश्री०। अनिरूद्धश्री०। ततो विदिग्दलेषुदमनकश्री०। सलिलश्री०। गुग्गुल श्रीकुरुण्डकश्री०। इतिद्वितीयावरणम्। देवीदक्षिणपार्श्वे शंखनिधिश्री०। पंकजनिधिश्री०। वमुनिधिश्री०। वसुमतीनिधिश्री०। इतितृतीयवरर्ण ३ ततोदलाग्रेषुवलाकाश्री०। विमलाश्री०। वनमालिकाश्री०। इतिसंपूज्य चतुर्थावरणम्। तद्वहिःइन्द्रश्री० पा०। अग्निश्री०। यमलश्री०। नृतिश्री०। वरुणश्री०। वायुश्री०। कुवेरश्री०। ईशानश्री०। ब्रह्मश्री०। विष्णुश्री०। इतिसंपूज्य तद्वहिः–वज्रश्री०। शक्तिश्री०। दंडश्री०। खड्गश्री०। पादूकाश्री०। पाशश्री०। ध्वजश्री०। गदाश्री०।

त्रिशूलश्री०। पद्मश्री०। चक्रश्री०। इति संपूज्य दद्वहिः भैरवीश्री०। वेतालभैरवश्री०। त्रिपुरान्तकभैरवश्री०। एकपादभैरवश्री०। अग्निजिह्वाभैरवश्री०। रूपभैरवश्री०। कालांतकभैरवश्री०। कपालभैरवश्री०। मलयभैरवश्री०। हाटकेश्वरभैरवश्री० इतिसंपूज्य सप्तमावरणम्। चतुष्कोणेषु-ईशानादिबटुकभैरवश्री०। योगिनीश्रीपादु०। क्षेत्रपालश्री०। गणेशश्री०।

उपर्युक्त क्रमानुसार पूजा करके आवरणों का संतर्पण करके प्राणायाम पूर्वक यथाशक्ति किये हुए जाप को समर्पित कर कवचसहस्नाम एवं स्तव का पाठ करे।

तथा निम्न श्लोक का उच्चारण पूजनकर्ता करें-

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् महेश्वरि ॥

देवी के बायें हाथ में 'तेजोमय' जप का फल समर्पित कर होम कर्म करे, होम के पश्चात् बलिदान करे तथा निम्नवाक्य का उच्चारण करें-

इतः प्राण बुद्धि देह धर्माधिकारतो जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तावस्थासु मन सावा चापद्भ्यामुदरेण शिश्नायत्कृतं यदुक्तं यत्स्मृतं तत्सर्वमदीयं श्रीमहालक्ष्मी चरणकमलार्पण मस्तु स्वाहा श्री भगवति महालक्ष्मी पूजिता क्षमस्वेति।

तत्पश्चात्-संहारमुद्रा से पुष्प लेकर तथा उसे सूंघ कर जिस नाक से श्वास चल रहा हो, उसके द्वारा देवी को हृदयकमल में अर्पित कर अपने को देवी रूप सोच कर निर्माल्य को मस्तक पर धारण कर के नैवेद्य का भक्षण कर सुखपूर्वक विचरण करें।

॥ इति महालक्ष्मी नित्यपूजा समाप्तः॥

दुर्गा-प्रतिष्ठा

ज्योतिषी के द्वारा दिये गये शुभ समय में तथा शुभदिन में यजमान स्नानादि कार्यों से निवृत हो जाने के उपरान्त आचमन एवं प्राणायाम कर शुभासन पर सपत्नी सहित पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठ कर स्वयं के ऊपर और समस्त प्रतिष्ठा सामग्री की पवित्रता के हेतु इस श्लोक का उच्चारण करते हुए जल छिड़कें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

इसके पश्चात् यजमान के दायें हाथ में पुष्प एवं अक्षत प्रदान करके आचार्य सहित सभी ब्राह्मण शान्ति पाठ करें-

१-हरिः ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतो ऽदब्धासोऽअपरीतास ऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे ऽअसन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥

२-देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानार्ठ० रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानार्ठ० सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा नऽआयुः प्प्रतिरन्तु जीवसे॥

३-तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगंमित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं व्वरुणर्ठ० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्॥

४-तन्नो व्वातो मयोभुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विनाशृणुतं धिष्ण्या युवम्॥

५- तमीशानं जगतस्तस्थुषस्प्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसा मसद् वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥

६-स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्प्पतिर्द्दधातु॥

७-पृषदश्श्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वे नो देवा ऽअवसागमन्निह॥

८-भद्रङ्कर्णेभिः श्शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरै- रङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः॥

९-शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मद्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोः॥

१०-अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः। व्विश्वे देवा ऽअदितिः पञ्च जना ऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्॥

११-द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

१२-यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्प्रजाब्भ्यो ऽभयं नः पशुब्भ्यः॥ ॐ शान्तिः सुशान्तिः सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु॥

शान्तिपाठ के पश्चात् यजमान के हाथ में दिए गये पुष्प एवं अक्षत को भूमि पर अथवा पूर्वनिर्मित गणेश एवं गौरी के ऊपर आचार्य समर्पित करवा दें, पुनः यजमान के दायें हाथ में पुष्पाक्षत् देकर इन नाममन्त्रों का क्रम पूर्वक उच्चारण करते हुए यजमान से ही पुष्प एवं अक्षत का प्रक्षेप करवाये या नाम मंत्र के अंत में प्रक्षेप करवायें-

[1]ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृचरण कमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। ॐ गुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय ॐ महागणाधिपतयेनमः।

१: त्रिमात्रः प्रणवो वाच्यः कर्मारम्भे च सर्वदा।

तत्पश्चात् इन श्लोकों का आचार्य उच्चारण करे तथा अपने यजमान से भी इसका उच्चारण करवायें-

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ १ ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ २ ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ ३ ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ४ ॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ५ ॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्य समप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ६ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ ७ ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥ ८ ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ ९ ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ १० ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ११ ॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ १२ ॥
स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥ १३ ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ १४ ॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥ १५ ॥

यजमान के दायें हाथ में जल, अक्षत, पूगीफल यथाशक्ति द्रव्य देकर उससे इस संकल्प को आचार्य करावें–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रेमहाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे (इति काश्यामेवविशेषः) अमुकनाम्नि संवत्सरे, अमुकायने अमुकऋतौ, महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकराशिस्थितेचन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते

देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहं (वर्मा:, गुप्तः, दासः) मम सपत्नीकस्य शाश्वत ब्रह्मलोकप्राप्तिकामनया दीर्घायुर्लक्ष्मी सर्वकाम समृद्धि-अक्षय्यसुख प्राप्त्यर्थं श्रीदुर्गा देवी प्रीत्यर्थं दुर्गाप्रतिष्ठाख्यं कर्म करिष्ये। तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं, मातृकापूजनं, वसोर्धारापूजनम्, आयुष्यमंत्रजपं, नान्दीश्राद्धम्, आचार्यादिवरणं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

संकल्प के उपरान्त गणेश पूजन से नान्दीश्राद्ध तक के कर्म ग्रहशान्तिप्रयोग से करें।

यह संकल्प पुनः करें–

देशकालौ संकीर्त्य–अथाचार्य दुर्गाप्रतिष्ठाख्येकर्मणि अमुकशर्मणः यजमानेन वृतोऽहमाचार्य कर्म करिष्ये।

इन श्लोकों का उच्चारण कर आचार्य पीली सरसों को बिखेर कर पंचगव्य से प्रोक्षण करे, उसके पश्चात् शुद्धोदक जल से पुनः प्रोक्षण करें–

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन प्रतिष्ठाकर्म समारभे॥

आचार्य इस वैदिक मंत्र का उच्चारण कर शुद्धजलसे पुनः प्रोक्षण करें:–

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।

प्रोक्षण के उपरान्त नवनिर्मित मंडप में शंकुरोपण व ब्रह्मादि देवताओं की स्थापना व पूजन, बलिदान सूत्रवेष्टन, दुग्धधारा एवं मुदकधारा इत्यादि कर्म आचार्य प्रभुविद्याप्रतिष्ठार्णव से करावें।

उपरोक्त कर्म के समापन के पश्चात यह कहें-

'देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्षस्व।'

इस कर्म की समाप्ति के पश्चात् आचार्य रात्रिमें पंचगव्य-दूर्वाङ्कुर-यव-अवश्वत्थ-पलाश से मिश्रित जल से ही इस मंत्र का उच्चारण कर दुर्गादेवी की मूर्ति का अभिसिंचन करें-

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पुष्प-फल-अक्षत और दुर्वाङ्कुरादि यजमान से देवीपर आचार्य चढ़वाये--

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतोऽ नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानानेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

इस प्रकार स्थापनादि कृत्य करके दुर्गा देवी की मूर्ति के बायें हाथ में इस मंत्र का उच्चारण करके आचार्य प्रतिसरसूत्र यजमान से बधवायें-

ॐ रक्षोहणंव्वलगहनंव्वैष्णवीमिदमहन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मेसमानोयमसमा-नोनिचखाने दमहन्तंव्व-

लगमुत्कि रामियम्मे सबन्धुर्य्यमसबन्धु र्न्निचखाने दमहन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मे सजातोयमसजातो निचखा-नोत्कत्याङ्किरामि॥

इस वाक्य का उच्चारण कर पंचोपचार से पूजन करावें-

ॐ दुर्गा देव्यै नमः

पूजनादि करने के पश्चात् वस्त्रों और कुशा से देवी को ढंक दे। पश्चात् इन दो वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते हुए आचार्य जलाधिवास कर्म को करावें-

१-ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्धचरुशर्ठ॰ स मा न ऽआयुः प्रमोषीः॥

२-उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवनागासो अदितये स्याम॥

द्वितीय दिन मण्डल के देवताओं की स्थापना और पूजन करके प्रत्येक द्वार पर आठ कलश रखवा कर वरुणदेव का आवाहन करवाके यजमान से विधिवत् उनके पूजनादि कर्म को आचार्य करावें-

इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य यजमान से उंत्थापन कर्म करवायें-

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥

इसके पश्चात् आचार्य विधिवत पुण्याहवाचन करावें व इस श्लोक का उच्चारण करवाते हुए, आचार्य अपने यजमान से प्रार्थना करवायें-

ॐ स्वागतं देवि देवेशि नमस्ते विश्वरूपिणि।
शुद्धेऽपि त्वधिष्ठाने शुद्धिं कुर्मः सहस्वताम्॥

उपरान्त वल्मीक और कषाय का लेपन देवी की मूर्ति पर करें और स्थिर हृदय से शुद्धोदक जल से मूर्ति को स्नान करवायें–

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः।

शुद्धोदक जल से स्नान करवाने के पश्चात् इन श्रीसूक्त के श्लोकों का उच्चारण करते हुए मूर्ति को पंचगव्य से स्नान करवाये–

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगमिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्ये ऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥

शमी, खदिर, पलाश, बिल्व अश्वथादि, वृक्षों के कसायोदक के द्वारा ही इस मंत्र का उच्चारण करते हुए आचार्य अभिसिङ्चन कर्म करवायें–

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णों वो व्वसतिष्कृता। गोभाज ऽइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम्॥

आचार्य मणि, मुक्ता, प्रवाल और स्वर्ण के जल से तथा पूर्व स्थापित चार कलशों के जल से इस मन्त्र का उच्चारण कर अभिसिंचन कर्म करावें–

ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥

ब्राह्मणों के साथ आचार्य भी अष्टसहस्त्र, अष्टसत् अथवा आठ बार मात्र ही पढ़ कर जल गिरा देवें। देवी के पीठानन्तर में प्रवेश करके वस्त्रयुग्म, गन्ध, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्यादि से पूजन करवाने के उपरान्त किसी तेजसपात्र में स्थित मधु को स्वर्ण की शलाका से ग्रहण करके नेत्रोन्मीलन कर्म को आचार्य विधिवत् निम्न क्रमानुसार करवायें–

आचार्य दुर्गा की मूर्ति के मुख तथा नेत्र में स्वर्ण की शलाका के द्वारा सहत–घृत मिश्रित कर इस आधे मंत्र का उच्चारण करके चिह्न करें–

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करके पायस, भक्ष्य, भोज्य, दर्पणादि मूर्ति को दिखा दें–

ॐ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

इस प्रकार से नेत्रोन्मीलन कर्म करवाने के उपरान्त दुर्गा देवी की मूर्ति के समक्ष नारिकेल अथवा कोहड़े की बलि प्रदर्शित करें।

निम्न आठ-मंत्रों का क्रमानुसार उच्चारण करते हुए आठ दीपक देवी के सम्मुख दिखा देवें-

१-हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।

२-य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृतं यस्य मृत्यु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

३-यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इन्द्राजा जगतो बभूव। य इशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

४-यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

५-येन द्यौरुग्रा पृथिवी च इडहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

६–यं क्रन्दसी अवसा तस्तमाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने। यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

७–आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

८–यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधानां जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

उपरान्त आचार्य देवी के पीछे की ओर खड़े होकर सतूर्यघोष करें तथा इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण करके दुर्गा के एक–एक नेत्र को खोल देवें–

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।

इस कर्म की समाप्ति के उपरान्त–

ॐ नमो भगवती दुर्गायै हिरण्यरेतस्यै परायै परमात्मायै हिरण्यरूपिण्यै शिवप्रियायै नमः॥

इस क्रम के अनुसार ही नेत्राकार लिखकर अंजन और मधुअंजन दुर्गा देवी को प्रदान करें। पश्चात् नेत्रोन्मीलन के अंगत्व यजमान अपने आचार्य को इस संकल्प का उच्चारण करके गौदान देवे।

संकल्पः–

देश कालौ संकीर्त्य-नेत्रोन्मीलन अङ्गत्वे गोदानं अहं करिष्ये।

गौदान कर्म के पश्चात् निम्न मन्त्र का उच्चारण कर आचार्य उत्थापन कर्म करवाये–

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥

उत्थापन की समाप्ति के पश्चात् कुशा के आसन को एक वस्त्र से आच्छादित कर ब्रह्ममण्डल पर देवी को शयन करा देवें, तथा देवी के दक्षिण पार्श्व की ओर छत्र, व्यंजन और पंखा तथा चरणों में पादुका पीछे की ओर शान्तिकुम्भ रखें। देवी के सम्मुख आसन, दर्पण, घण्टा तथा नानाप्रकार की भोज्य वस्तुएँ एवं शीतल व सुगन्धितजल स्वच्छपात्र में रक्खे, इसके पश्चात् भस्म, तिल, अदर्भ देवी के चारों ओर रक्षा हेतु तीन प्रकार्य करके आचार्य स्थाण्डिल का निर्माण विधिवत् करे एवं अग्नि को प्रतिष्ठापित कर उसमें ही द्रव्य का त्याग यजमान से ही करावें।

प्रधान होम कर्म–

प्रधान होम के अंत में ' **ताम्अग्निवर्णा:** ' मन्त्र का उच्चारण होते ही यजमान देवी के चरणों का स्पर्श करें–

इस मन्त्र का उच्चारण होते ही यजमान देवी की नाभि का स्पर्श करें–

ॐ अग्ने त्वं पारयानव्यो अस्मान् त्स्वस्तिभिरति दुर्गाणिविश्वा। पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शं योः॥

इस मंत्र का उच्चारण होते ही यजमान देवी के सिर का स्पर्श करें–

ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्न ऽआसुव।

आचार्य द्वारा इस मंत्र का उच्चारण होने पर देवी के सभी अंगों का स्पर्श करें–

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतोऽनि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करते हुए आचार्य दुर्गादेवी का उत्थापन करावें–

१–ॐ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृक्षे विश्वाय सूर्यम्॥

२–ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतोऽ नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

पश्चात् देवालय अथवा मंडप में आचार्य सहित यजमान प्रवेश कर मणि, मुक्ता, प्रवाल, सुवर्ण, रजत का गर्त में निक्षेपन कर आचार्य सहित सभी ब्राह्मण विधिवत् देवी की स्थापना करावे।

पश्चात् आचार्य इस वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए देवी का स्पर्श एवं जाप करावें।

ॐ आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः। विशस्त्वा सर्व्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्टमधिभ्रशत्॥

स्पर्श एवं जाप के पश्चात् आचार्य इसप्रकार से दुर्गा देवी का षडङ्गन्यास यजमान से करावें–

१–ॐ ऐं हृदयाय नमः, २–ॐ ह्रीं शिर से स्वाहा, ३–ॐ क्लीं शिखायै वषट् ४–ॐ चामुण्डायै कवचाय हुं ५–ॐ विच्चे नेत्र त्रयाय वौषट् ६–ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे-अस्त्राय फट्

षडङ्गन्यास करने के पश्चात् निम्न क्रमानुसार आचार्य प्राणप्रतिष्ठा करावें।

कर्ता विनियोग करें–

अस्यश्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि चैतन्य रूपिणी जगत्सृष्टिकर्त्री प्राणशक्तिर्देवता आंबीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रीं कीलकं प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ आं ह्रीं क्रीं अं कं खं गं घं ङं आकाशवाय्वग्नि-जलभूम्यात्मने आम्-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ आं ह्रीं क्रीं इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं-तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ आं ह्रीं क्रीं उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुघ्राणात्मने ओं-मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ आं ह्रीं क्रीं एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं–अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं क्रीं पं फं बं भं मं वचनदानाविहरणोत्स-र्गानन्दात्मने ओं–कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ आं ह्रीं क्रीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं मनोबुध्यहङ्का-रनिवृत्तात्मने ओं–करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः–एवं हृदयादि।

इस प्रकार से ध्यान करवाके प्राणप्रतिष्ठा करावें–

ॐ आं ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं हं क्षं सः देव्या प्राणाः। ॐ आं क्रीं ॐ यं रं हं सः देव्याः इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रीं ॐ यं रं लं देव्याः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षु श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थ इह देव्याः आगत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

॥इति सजीवं ध्यायेत्॥

आचार्य देवी के दाहिने कर्ण में निम्न दुर्गा गायत्री मंत्र का जप यजमान से करावें–

गायत्री मन्त्रः– कात्यायनाय विद्महे कन्याकुमारि धीमहि तन्नोदुर्गा प्रचोदयात्।

जाप के पश्चात् यह प्रार्थना करें–

स्वागतं देवि देवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागतः।
सन्निध्यं सर्वदा देविदुर्गेऽस्मिन्परिकल्पय॥

तत्पश्चात् आचार्य शेष चार कलशों को लाकर उनमें से एक में रत्न डालकर उस रत्नमिश्रित जल के द्वारा देवी का अभिसिंचन करें।

पुनः इस वैदिक मंत्र का उच्चारण करके आचार्य कूर्चासन कर्म करावे–

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

दूर्वा, विष्णुक्रान्ता, श्यामाक, पद्मपत्र मिश्रित कलशों के जल से इस श्लोक का उच्चारण कर देवी को आचार्य अर्ध्य प्रदान करावें–

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

एला, लवङ्ग, कर्पूर मिश्रित कलश के जल से आचार्य इस श्लोक का उच्चारण कर देवी को आचमन करावें–

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

इस कनिक्रद्[1] सूक्त का उच्चारण कर देवी को अभ्यङ्ग विधि से स्नान करावे और पंचामृत चढ़ावें।

पुनः इस श्लोक का उच्चारण कर शुद्धोदक प्रदान करावें–

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या ऽअलक्ष्मीः॥

[2]अलंरूद्रमितिसूक्त, आपोहिष्ठाकी तीन ऋचायें हिरण्वर्णाः शुचयः, पवमानः सुवर्जनः इन व्याहृतियों से एवं देवस्यत्वेति। इन मंत्रों से स्नान करवा कर चुपचाप आचार्य अमंत्रक आचमन भी करावें।

आचार्य इस श्लोक का उच्चारण कर देवीको वस्त्र प्रदान करावें–

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

---

१. कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण इयर्ति वाचमरितेव नावम्। सुमङ्गलश्च शकुने भवासि मा त्वा काचिदमिभा विश्वाविदत्। मा त्वा श्येन उद वधीन्मा सुपर्णो मा त्वा विददिषुमान् वीरो अस्ता। पित्र्यामनु प्रदिशं कनिक्रदत् सुमंगलो भद्रवादी वदेह वदेह अव क्रन्दः दक्षिणतो गृहाणां सुमंगलो भद्रवादी शकुन्ते। मा नः स्तेन ईशत माघशंसो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः॥ (ऋ०२।४२।१-३)

२. अलंरुद्रमितिसूक्त से देवस्यत्वेति तक के सभी कर्मो को प्रतिष्ठामयूख के द्वारा आचार्य करावें।

आचार्य इस श्लोक का उच्चारण कर देवी कोयज्ञोपवीत और आचमनीय प्रदान करावें।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्हम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥

पश्चात् नाम मंत्रों के द्वारा यजमान प्रतिसरसूत्र खोलकर, देवीको नमस्कार करें पुनः आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण कर देवी को गंध प्रदान करावें–

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
इश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

इस श्रीसूक्त के श्लोक एवं इस वैदिक मंत्र का आचार्य उच्चारण कर देवी को पुष्प समर्पित करावें–

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥
ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः॥

पुष्प समर्पित करवाने के पश्चात् आचार्य इस वैदिक मंत्र का उच्चारण कर देवी को सौभाग्य सामग्री प्रदान करावें–

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्यायां हेतिं प्परिबाधमानः। हस्तग्घ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न-पुमान्पुमार्ठ० सं प्परिपातु व्विश्वतः।

आचार्य इस श्लोक का उच्चारण कर देवी को धूप दीखायें–

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

आचार्य इस श्लोक का उच्चारण कर देवीको दीपक दीखायें-

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

आचार्य इस श्लोक का उच्चारण कर देवी को नैवेद्य प्रदान करावे इसके पश्चात् क्रमशः आचमन एवं चन्दनादि प्रदान करवायें-

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

आचार्य इस श्लोक का उच्चारण कर देवी को पूगीफल एवं ताम्बूल प्रदान करावें-

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

आचार्य इस वैदिक मंत्र का उच्चारण कर देवी के सम्मुख श्रद्धा भक्ति से यजमान दक्षिणा प्रदान करावें-

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम॥

आचार्य इस श्लोक का उच्चारण कर देवीके समक्ष कपूर की आरती घूमाये-

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरर्ठ० सर्व्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि। अग्निः प्प्रजां बहुलां मे करोत्त्वन्नं पयो रेतो ऽअस्म्मासु धत्त। आ रात्त्रि पार्थ्थिवर्ठ० रजः पितुरप्प्रायि

धामभिः। दिवः सदार्ठ० सि बृहती व्वितिष्ठुस ऽआ त्त्वे षं वर्त्तते तमः॥

आचार्य इन तीन मंत्रों का उच्चारण करके दुर्गा देवी को यजमान से पुष्पाजंलि प्रदान करावे तथा प्रणाम करावे व उनकी प्रदक्षिणा भी करावे-

तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यांहिरण्यंप्रभूतंगावोदास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

अब आचार्य ब्रह्मादिमंडल के लिए एक-एक आज्य [1]आहुति यजमान से प्रदान करवा के आचार्य इस वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्नि का पूजन करवायें-

ॐ अग्ग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान् विश्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान्। युयोध्य-सम्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं व्विधेम॥

१-देवोद्देशेन बह्नो मन्त्रेण हविः प्रक्षेप आहुतिः। (का० श्रौ० २।१।२०)

अपने बायें हाथ से किसी बड़े पात्र में तिल व शाकल को ग्रहण कर दहिने हाथ से घृत भर कर स्रुवे को लेकर, दाहिने पैर की जांघ को मोड़कर ब्रह्मा से स्पर्श कर इन नाम मन्त्रों द्वारा स्विष्टकृत संज्ञक आहुति प्रदान कर स्रुवे के अवशेष घृत का प्रोक्षणी पात्र में त्याग भी करें-

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा- इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥

आचार्य निम्न देवताओं को पायसबलि यजमान से प्रदान करावें-

दशदिक्पाल, गणेश, वरुण षोड़शमातृका, सप्तघृतमातृका, नवग्रह, पंचलोकपाल, वास्तोष्पति, वास्तुपीढ़देवता योगिनी, असंख्यातरुद्र, विष्णु, दुर्गाप्रधान देवताभ्यः पायस बलिं समर्प्य क्षेत्रपालदेवतायै माषभक्त बलिंमाष दध्योदनबलिं व चतुर्मुखदीपसहितं दद्यात्। तद् विधिःश्तु ग्रहशांतिपद्धति-अनुसारेण कुर्यात्।

आचार्य कर्ता[1] के नाम के सहित देवी का नाम सदा व्यवहारार्थ करें उसमें अमुख नाम की देवी इसप्रकार से नामकरण करके ब्राह्मण प्रार्थना करके उत्तरपूजन के निमित्त आचार्य यजमान से इस संकल्प को करावें-

ततः कृतस्यदुर्गाप्रतिष्ठाख्यकर्मणः साङ्गतासिद्धये आवाहितदेवानामुत्तर पूजनं करिष्ये।

संकल्प की समाप्ति के पश्चात् विधि विधान से गणपत्यादि देवताओं की पूजा यजमान से करावें। पश्चात् आचार्य इन श्लोकों का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें-

---

१- यजमानः स्वनामयुतं देवी-देवस्य नाम कुर्यादित्यन्यत्र॥ (प्रतिष्ठामयूखः)

रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे॥
महिषघ्नि महामाये चामुण्डा मुण्डे मालिनी।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवी नमोऽस्तु ते॥

आचार्य एवं अन्य ब्राह्मणों को [1]दक्षिणा प्रदान करने के निमित्त यजमान यह संकल्प करें-

कृतस्यदुर्गाप्रतिष्ठाकर्मणःसाङ्गतासिद्ध्यर्थंतत्सम्पूर्णफल-प्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो-महर्त्विग्भ्यः हवनकर्तृ-भ्योऽन्येभ्यश्च यथाशक्ति दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

ब्रह्मा को पूर्णपात्रदान देने हेतु यह संकल्प यजमान करें-

कृतस्यदुर्गाप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्येतत्सम्पूर्ण-फलप्राप्तये च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे।

ब्रह्मा पूर्णपात्र ग्रहण करके कहें-

ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रति गृह्णातु।

पुनः ब्राह्मण भोजन करवाने से पूर्व निम्न संकल्प यजमान करें-

कृतस्यदुर्गाप्रतिष्ठाकर्मसमृद्धये यथाशक्तिब्राह्मणान् भोजयिष्यामि।

संकल्प के उपरान्त ब्राह्मणों को प्रेम, आदर, सत्कार से भोजन करावें, ब्राह्मणभोजन के पश्चात् यजमान दीन, अनाथजनों को यह संकल्प करके भूयसीदक्षिणा और अन्नादिक भी देवें-

---

१-दक्षिणाः सर्वयज्ञानां दातव्याभूतिमिच्छतो। (साम्बपुराण ३४/२९)

कृतेऽस्मिन् दुर्गाप्रतिष्ठा कर्मणिन्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये॥

उपर्युक्त कर्म की समाप्ति के पश्चात यजमान अग्नि का विर्सजन इस श्लोक का उच्चारण करके करें-

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन!॥

इन श्लोकों का उच्चारण करवा के आचार्य क्षमाप्रार्थना यजमान से करावें-

जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः॥ १ ॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥ २ ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ३ ॥

इसके पश्चात् आचार्य एवं सभी ब्राह्मण यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी व उसके परिवार के सदस्यों को तिलक लगाकर ही आशीर्वाद प्रदान करें, उपरान्त ही यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी, अपने पुत्र-पौत्रादि व परिवार के लोगों के इष्ट मित्रों एवं सम्बन्धियों सहित दुर्गादेवी के महाप्रसाद को हर्षोल्लास के साथ ग्रहण करें।

॥ दुर्गाप्रतिष्ठा समाप्तः ॥

लक्ष्मी-प्रतिष्ठा

ज्योतिर्विद् द्वारा दिये गये लक्ष्मी की प्रतिष्ठा के लिए शुभ समय तथा शुभ दिन में यजमान स्नानादि कृत्यों से निवृत होकर आचमन एवं प्राणायाम कर कुशासन अथवा कम्बलासन पर अपनी धर्मपत्नी सहित पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर अपने ऊपर तथा समस्त प्रतिष्ठासामग्री की पवित्रता के हेतु इस पौराणिक श्लोक का उच्चारण करके जल छिड़कें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु

उपरान्त यजमान के दायें हाथ में पुष्प व अक्षत प्रदान करके आचार्य सहित सभी ब्राह्मण [1] शान्तिपाठ करें इसके उपरान्त यजमान के दायें हाथ में जल इत्यादि देकर इस [2] संकल्प को करावें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रेमहाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे (इति काश्यामेवविशेषः) अमुकनाम्नि संवत्सरे, अमुकायने

१-शान्तिपाठ के मंत्रों को इसी पुस्तक के पृष्ठ सं. ७५ में देखें।

२-संकल्पेन बिना कर्म यत्किंचत् कुरुते नरः। फलं चाप्याल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयो भवेत्॥ [भविष्य-पुराण]

अमुकऋतौ, महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकराशिस्थितेचन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहं (वर्माः, गुप्तः, दासः) मम सपत्नीकस्य शाश्वत ब्रह्मलोकप्राप्तिकामनया दीर्घायुर्लक्ष्मी सर्वकाम समृद्धि-अक्षय्यसुख प्राप्त्यर्थं श्रीलक्ष्मीदेवी प्रीत्यर्थं लक्ष्मीप्रतिष्ठाख्यं कर्म करिष्ये। तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं, मातृकापूजनं, वसोर्धारापूजनम्, आयुष्यमंत्रजपं, नान्दीश्राद्धम्, आचार्यादिवरणं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

पश्चात् आचार्य गणेश पूजन से नान्दी श्राद्ध तक के समस्त वैदिक कर्मों को ग्रहशांतिप्रयोग के द्वारा ही सम्पन्न करावें।

आचार्य यजमान से इस संकल्प को करावें-

अथाचार्यलक्ष्मीप्रतिष्ठाख्येकर्मणि अमुक शर्मणः यजमानेन वृतोऽहमाचार्य कर्म करिष्ये।

उपरान्त इन श्लोकों का उच्चारण कर के पूर्वादि दिशाओं में पीली सरसों और धान के लावे को बिखेरकर पंचगव्य द्वारा प्रोक्षित करके आचार्य प्रादेशान्त कर्म करावें-

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन प्रतिष्ठाकर्म समारभे॥

इस वैदिक मंत्र का उच्चारण करके पुनःशुद्धजल द्वारा प्रोक्षण करें-

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन महेरणाय चक्षसे॥

उपरोक्त कर्म के पश्चात् प्रतिष्ठामयूख में वर्णित विधि द्वारा ही आचार्य मंडप स्नपादि कर्म करावें, पश्चात् भद्रपीठ पर ही आठ कलशों सहित लक्ष्मी देवी की मूर्ति को भी स्थापित करें।

इस मूल मंत्र का उच्चारण कर घृतद्वारा अभ्यंग करके आचार्य पंचगव्य से ही स्नान करावें-

मूल मंत्र-**ॐ लं लक्ष्म्यै नमः॥**

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करके लक्ष्मी की मूर्ति का नेत्रोन्मीलन कर्म करें-

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह॥

नेत्रोन्मीलन का द्वितीय प्रकारः-आचार्य लक्ष्मी की मूर्ति के मुख और दोनों नेत्रों में स्वर्ण की शलाका द्वारा घृत एवं मधु को मिश्रित कर इस आधे आदि मंत्र का उच्चारण करके चिन्ह करें-

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः॥
(यजु. अ. ७ मं. ४२)

इस मंत्र का उच्चारण कर आचार्य पायस, भक्ष्य, भोज्य, दर्पणादि मूर्ति को दीखावें।

ॐ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

आचार्य इस मंत्र का उच्चारण कर लक्ष्मी की मूर्ति के समक्ष त्रिमधु अर्पित करें-

तां म आवह जातवेदो लंक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

पूर्वदिशा की ओर के कुम्भ जल से इस मंत्र का उच्चारण करके अभिषेक करें-

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रीयं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

आचार्य इस मंत्र का उच्चारण करके दक्षिणदिशा की ओर के कलश से अभिषेक करें-

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्दां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करके पश्चिमदिशा की ओर के कलश से अभिषेक करें-

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करके उत्तरदिशा के कलश से अभिषेक करें-

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्त्व वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करके आग्नेयकोण के कलश से अभिषेक करें-

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्ति मृद्धिं ददातु मे॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करके नैऋत्यकोण की ओर के कलश से अभिषेक करें-

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥

इस मंत्र का उच्चारण आचार्य करके वायव्यदिशा की ओर के कलश से अभिषेक करें-

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करके ईशानकोण के कलश से अभिषेक करें-

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करके लक्ष्मी जी की मूर्ति के शिर पर से इक्यासी कलशों के जल द्वारा विधिपूर्वक स्नान करावें-

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करके लक्ष्मी जी की मूर्ति को अधोभाग से स्नानकरावें-

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करके गन्धोदक के कलशों के द्वारा स्नान करावें-

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण कर पुष्पों से युक्त कुम्भ के जल से स्नान करावें-

आर्दां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह॥

'ता मआवह' इस ऋचा से **'शान्तिय'** मंत्र से तथा **'श्रीसूक्त'** के मंत्रों के द्वारा आचार्य शैय्याधिवास कर्म को करावें।

श्रीम्—इस बीज मंत्र का आचार्य विधिवत् उच्चारण करके चित्तशक्ति का न्यास आचार्य करके पुनः पूजन कार्य यजमान के द्वारा ही करावें।

श्रीसूक्त-के सभी मंत्रों के द्वारा मण्डप में निर्मित कुण्डों में कमल पुष्पों से या करवीर के पुष्पों से सौ अथवा एक हजार आहुति प्रतिष्ठा-स्थल पर उपस्थित होम में भाग लेने वाले ब्राह्मणों के द्वारा हवन कुण्ड में आचार्य प्रदान करावें-

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह स्वाहा॥ १॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् स्वाहा॥ २॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् स्वाहा॥ ३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्दां, ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां, तामिहोपह्वये श्रियम् स्वाहा॥ ४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि स्वाहा॥ ५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः स्वाहा॥ ६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे स्वाहा॥ ७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् स्वाहा॥ ८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् स्वाहा॥ ९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः स्वाहा॥ १०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् स्वाहा॥ ११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले स्वाहा॥ १२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह स्वाहा॥ १३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह स्वाहा॥ १४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् स्वाहा॥ १५॥
यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् स्वाहा॥ १६॥

आचार्य श्रीसूक्त के सोलह मंत्रों का उच्चारण कर सभी गृहोपयोगी वस्तुओं को लक्ष्मीजी की मूर्ति के समक्ष अर्पित करें, पश्चात् लक्ष्मीमंत्र द्वारा पीड़िका का निर्माण कर श्रीसूक्त के सभी मंत्रों द्वारा उनकी विधिवत् प्रतिष्ठा करें, आचार्य प्रत्येक ऋचा का जाप प्रतिष्ठा मंडप में उपस्थित ब्राह्मण और जपकर्ता ब्राह्मण से ही करावें।

लक्ष्मी की प्राण प्रतिष्ठा के लिये कर्ता यह विनियोग करें-

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्युजः सामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं श्रीमहालक्ष्म्यादिदेवता-प्रीत्यर्थं प्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्यो ऋषिभ्यो नमः-शिरसि।

ॐ ऋग्युजःसामछन्दोभ्यो नमो-मुखे

ॐ प्राणशक्तिदेवतायै नमः-हृदये।

ॐ आं बीजाय नमः-गुह्ये।

ॐ ह्रीं शक्तये नमः-पादयो।

ॐ क्रों कीलकाय नमः-नाभौ।

ॐ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः-सर्वाङ्गे।

ॐ ह्राम्-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीम्-तर्जनीभ्यां नमः ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैम्-अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्–

ध्यायेल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखीं राज्यसिंहासनस्थां,
मुद्राशक्तिं सकलविनुतां सर्वसंसेव्यमानाम्।
अग्नौ पूज्यामखिलजननीं हेमवर्णां हिरण्यां,
भाग्योपेतां भुवनसुखदां भार्गवीं भूतिधात्रीम्॥

इस प्रकार से ध्यान करके मूर्ति के ऊपर हाथ रखकर प्राणप्रतिष्ठा बीजों का उच्चारण करें–

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं सः श्रीमहालक्ष्मीदेव्याः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं सः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं सः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणपादपायूपस्था इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

**ॐ अस्यै[1] प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति कश्चन॥**

उपरान्त एकाग्रचित्त होकर दाहिने हाथ में कमल के पुष्पों से युक्त माला लेकर प्रार्थना करें उसके पश्चात् लक्ष्मी देवी का विधि-विधान से पूजन कर्म आचार्य यजमान के द्वारा सम्पन्न करावें।

लं लक्ष्म्यै नमः–इस मूलमंत्र के द्वारा लक्ष्मी देवी का सानिध्य भी करें।

१–कालिकापुराणे–अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु यत्। असौ देवत्वसंख्यायै स्वाहेति यजुरुच्चरन्॥ अस्मिन्प्राणप्रतिष्ठान्तु प्रतिमा पूजनाद् ऋते॥ प्राणप्रतिष्ठां प्रथमं पूजाभागविशुद्धये॥ न कश्चित् बुधः कुर्यात्कृत्वा मृत्युमवाप्नुयात्।

आचार्यादि दक्षिणा संकल्प: -

कृतस्य 'लक्ष्मीप्रतिष्ठाकर्मण:' सांगतासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो, महर्त्विग्भ्य: सूक्तपाठकेभ्यो, मंत्रजापकेभ्यो, हवनकर्तृभ्योऽ अन्येभ्यो देवयजनमागतेभ्यश्च दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥

गौदानसंकल्प:-

कृतस्य लक्ष्मीप्रतिष्ठाकर्मण: सांगतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं गौदान महं करिष्ये॥

ब्राह्मणभोजन संकल्प:-

कृतस्य लक्ष्मीप्रतिष्ठाकर्मसमृद्ध्यै यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि॥

भूयसीदक्षिणा संकल्प:-

कृतेऽस्मिन् लक्ष्मीप्रतिष्ठाकर्मणि - न्यूनातिरिक्त - दोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च - यथाशक्ति - भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये॥

लक्ष्मी प्रतिष्ठा से सम्बन्धित सभी वैदिक कर्मो के समाप्ति के उपरान्त प्रतिष्ठा-स्थल पर उपस्थित सपत्नीक यजमान पुत्र-पौत्रादि सहित, इष्ट-मित्र बन्धु-बान्धवों के साथ हर्षोल्लास के साथ लक्ष्मीदेवी के महाप्रसाद को ग्रहण करें।

॥ लक्ष्मीप्रतिष्ठा समाप्त:॥

काली-प्रतिष्ठा

शुभमुहूर्त में तथा शुभदिन में यजमान स्नानादि कार्यो से निवृत्त होकर आचमन एवं प्राणायाम करने के पश्चात् शुभासन पर सपत्नीक पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर अपने ऊपर और समस्त प्रतिष्ठा सामग्री के पवित्रीकरण हेतु इस श्लोक का उच्चारण करके जल छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

इसके पश्चात् यजमान के दाहिने हाथ में अक्षत एवं पुष्प देकर आचार्य सहित सभी ब्राह्मण [1]शान्तिपाठ करें, इसके पश्चात् यजमान से निम्न सङ्कल्प आचार्य करावें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे-महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे (इति काश्यामेवविशेषः) अमुकनाम्नि संवत्सरे, अमुकायने अमुकऋतौ, महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकराशिस्थितेचन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ

१-शान्तिपाठ के लिये इसी पुस्तक में की पृष्ठसंख्या ७५ को देखें।

शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहं (वर्माः, गुप्तः, दासः) अस्यां कालीदेवी मूर्त्तौ देवता सान्निध्यार्थं दीर्घायुर्लक्ष्मीसर्वकाम-समृध्यक्षय्य-सुखप्राप्तिकामं प्राप्त्यर्थं श्रीकालीचर-प्रतिष्ठाकर्म करिष्ये। तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं, मातृकापूजनं, वसोर्धारापूजनम्, आयुष्यमंत्रजपं, नान्दीश्राद्धम्, आचार्यादिवरणं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं महागणपतिपूजनं करिष्ये।

गणपतिपूजन से नान्दीश्राद्ध तक के सभी वैदिक कर्मो को आचार्य ग्रहशान्तिपद्धति के द्वारा करवायें उसके पश्चात् यजमान इस संङ्कल्प के द्वारा आचार्य का वरण करें–

देशकालौ संकीर्त्य–अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकप्रव-रान्वितः अमुकशर्माऽहम्, अमुक गोत्रोत्पन्नममुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्या-यिनममुकशर्माणं ब्राह्मणमस्मिन् कालीमूर्त्तेः चरप्रतिष्ठाकर्मणि एभिवरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं [1]वृणे।

यजमान पुनः यह सङ्कल्प यजमान करें–

कर्मनिष्ठं स्वशाखाढ्यं सर्वशास्त्रार्थ पारगंत शान्तिदातारं शुभाद्यर्थ-माचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।

इस सङ्कल्प के पश्चात् आचार्य के हाथ में यजमान फलादि देकर गंधादि के द्वारा पूजन करते हुए इस श्लोक का उच्चारण करते हुए आचार्य की प्रार्थना करें–

१-वरणं नाम करिष्यमाण कर्मस्वरूपदक्षिणाद्रव्य तत्परिमाण श्रावणापूर्वकं स्वयमप्रवृत्तानामाचार्यादि कर्मसु कर्तृत्वेनाभ्यर्थनम्।

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादिनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत!॥

आचार्य प्रार्थना के पश्चात् आचार्य कालीदेवी की चरप्रतिष्ठा कर्म को प्रारम्भ करें–

पक्ष में कुण्डमण्डप का निर्माण कर अथवा छायामण्डप बनाकर इन मंत्रों का उच्चारण करते हुए आचार्य उदुम्बर के पत्ते और दूर्वा के जलों से प्रोक्षण करें–

ॐ आपो हि ष्ट्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥

ॐ शं न इन्द्राग्नि भवता मवोभिः शं न इन्द्रा वरुणा रातहव्याः। शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रा पूषणा वाजशातौ।

इन श्लोकों का उच्चारण करते हुए आचार्य प्रादेशान्त कर्म को यजमान से करावें–

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन प्रतिष्ठाकर्म समारभे॥

प्रादेशान्त कर्म की समाप्ति के अनन्तर आचार्य निम्न क्रमानुसार विधिविधान से पञ्च गव्य बनावें उसमें सर्वप्रथम आचार्य

गायत्री मन्त्र पढ़कर गोमूत्र [1]"गन्धद्वारां' इस मन्त्र से गोबर, आप्यायस्व[2] इस मन्त्र से दूध दधि क्राब्णो[3] इस मन्त्र से दधि [4]'घृतंमिमिक्षे' इस मंत्र से घृत 'आपोहिष्ठाः'[5] इस मन्त्र से कुशोदक एक पात्र में लेकर 'प्रणव' का उच्चारण करते हुए यज्ञियकाष्ठ से मिलावे। तथा प्रणव मन्त्र द्वारा ही उसे अभिमन्त्रित भी करें।

तत्पश्चात् आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए पञ्चगव्य को दिशाओं में भूमि में और अन्तरिक्ष में छिड़कें-

ॐ आपो हि ष्ट्ठा मयो भुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥

यजमान मूर्त्ति का निर्माण करने वाले शिल्पकार का सत्कार अर्थात् उसे द्रव्यादि से प्रसन्न करके उससे मूर्ति ले आवे। पश्चात् निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करके आचार्य जलाधिवासकर्म को करावें-

ॐ अव ते हेलो वरुण नमोभि रव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः। क्षयन्न स्मभ्यमासुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि॥

१-गन्ध द्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। इश्वरीं सर्वभूतानां तामि हो पह्वये श्रियम्॥ [ऋ० परि० ११ म० ९]

२-आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णसियम्। भवा वाजस्य संगथे। [ऋ० १।९।१।१६]

३-दधि क्राब्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः। सुर भि नो मुखा करत्त्रण आयुर्ठ० षितारिषत्॥ [ऋ० ४। ३९।६]

४-घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिघृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्। [शुक्लयजुर्वेद]

५-आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। [ऋ० १०।९।१]

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवनागसो अदितये स्याम॥

जलाधिवास कर्म की समाप्ति के पश्चात् यजमान के दाहिने हाथ में जल-अक्षत देकर आचार्य निम्न सङ्कल्प करावें-

श्रीकालीचर प्रतिष्ठा कर्म करिष्ये।

सङ्कल्प के पश्चात् आचार्य यजमान से यह प्रार्थना करवाये-

स्वागतं देवदेवशि विश्वरूप नमोस्तु ते।
श्रद्धे वत्वदधिष्ठाने शुद्धिकर्म सहस्व भो॥

भूतशुद्धिआदि करके निम्नलिखित मातृकान्यास, पुरुषसूक्तन्यास तक करे, वे इस प्रकार है-

मातृका न्यासः

१. ॐ अं नमः तालुके	२. ॐ आं नमः मुखे
३. ॐ इं नमः दक्षिण नेत्रे	४. ॐ ईं नमः वाम नेत्रे
५. ॐ उं नमः दक्षिण श्रोत्रे	६. ॐ ऊं नमः वाम श्रोत्रे
७. ॐ ऋं नमः दक्षिण गंडे	८. ॐ ॠं नमः वाम गंडे
९. ॐ लृं नमः दक्षिण चिबुके	१०. ॐ लृं नमः वाम चिबुके
११. ॐ एं नमः उर्ध्व दशनेषु	१२. ॐ ऐं नमः अधोदशनेषु
१३. ॐ ओं नमः उर्ध्वोष्ठे	१४. ॐ औं नमः अध रोष्ठे
१५. ॐ अं नमः ललाटे	१६. ॐ अः नमः जिह्वायां
१७. ॐ यं नमः त्वचिरंचक्षुषोः	१८. ॐ लं नमः नासिकाय
१९. ॐ वं नमः दशनेषु	२०. ॐ शं नमः श्रोतयोः
२१. ॐ षं नमः उदरे	२२. ॐ सं नमः कटिदेशै
२३. ॐ हं नमः हृदये	२४. ॐ क्षं नमः नाभ्यां
२५. ॐ कं नमः लिंगे	२६. ॐ पं फं बं भं मं नमः दक्षिणबाहौ

२७. ॐ तं थं दं धं नं नमः वामबाहौ

२८. ॐ टं ठं डं ढं णं नमः दक्षिणजंघायां

२९. ॐ चं छं जं झं ञं नमः वामजंघायां

३०. ॐ कं खं गं घं ङं नमः सर्वांगुलीषु

॥ इति मातृकान्यास ॥

पुरुषसूक्त न्यासः

हरिः ॐसहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिर्ठ॰ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ वामकरे ॥

पुरुष ऽएवेदर्ठ॰ सर्व्वं य्यद्भूतं य्यच्च भाव्यम्।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ दक्षिणकरे ॥

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।

पादो ऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ वामपादे ॥

त्रिपादूर्द्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत्पुनः।

ततो व्विष्वङ् व्यक्क्रामत्साशनानशने ऽअभि ॥ दक्षिणपादे ॥

ततो व्विराड्जायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः।

स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ वामजानौ ॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।

पशूँस्ताँश्च्चक्क्रे व्वायव्यानारण्ण्या ग्राम्म्याश्च ये ॥ दक्षिणजानौ ॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दार्ठ॰सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ वामकट्याम् ॥

तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभदयातः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जा ता ऽअजावयः॥ दक्षिण कट्याम्॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ नाभौ॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमरू पादा ऽउच्च्येते ॥ हृदये ॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याठं॰शूद्रो अजायत ॥ वामबाहौ ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च्च प्राणश्च्च मुखादग्निरजायत् ॥ दक्षिणबाहौ ॥।
नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षठं॰ शीष्र्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ ऽअकल्पयन् ॥ कण्ठे ॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्य ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ मुखे ॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥ अक्ष्णोः ॥।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥ अस्त्राय फट्॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याठं॰ शूद्रो अजायत ॥ हृदयायनमः ॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।
श्श्रोत्त्राद्वायुश्च्च प्प्राणश्च्च मुखादग्निरजायत् ॥ शिर से स्वाहा ॥
नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षर्ठ० शीष्ण्र्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ ऽअकल्पयन्॥ कवचाय हुम ॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्य ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्न्पुरुष पशुम्॥ शिखायै वषट् ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥ अस्त्रायफट् ॥

॥ इति पुरुषसूक्तन्यासः॥

इस प्रकार से आचार्य यजमान के द्वारा ही उसके शरीर पर इन न्यासों को करवाने के उपरान्त काली देवी की मूर्ति में इन न्यासों को करें—वे न्यास नीचे क्रमानुसार दिए जा रहे हैं—

निवृत्यादि न्यासः

ॐ ह्रीं अं निवृत्यै नमः शिरसि न्यासामि।
ॐ ह्रीं आँ प्रतिष्ठायै नमः मुखे न्यासामि।
ॐ ह्रीं इं विद्यायै नमः दक्षिणनेत्रे न्यासामि।
ॐ ह्रीं ई शान्त्य नमः वामनेत्रे न्यासामि।
ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै नमः दक्षिणश्रोते न्यासामि।
ॐ ह्रीं ऊं दिपिकायै नमः वामश्रोते न्यासामि।

ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे न्यासामि।
ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे न्यासामि।
ॐ ह्रीं लृं सूक्ष्मायै नमः वामकपोले न्यासामि।
ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै नमः उर्ध्वदंतेषु न्यासामि।
ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधोदंतेषु न्यासामि।
ॐ ह्रीं ओं सावित्र्यै नमः उर्ध्वोष्ठे न्यासामि।
ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै नमः अधरोष्ठे न्यासामि।
ॐ ह्रीं अं सुरूपायै नमः जिह्वायां न्यासामि।
ॐ ह्रीं अः अनंतायै नमः कण्ठे न्यासामि।
ॐ ह्रीं कं सृष्ठयै नमः दक्षबाहुमुले न्यासामि।
ॐ ह्रीं खं ऋध्यै नमः दक्षकर्पूरे न्यासामि।
ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै नमः दक्ष मणिबन्धे न्यासामि।
ॐ ह्रीं घं मेघायै नमः दक्षकरांगुलिमूलेषु न्यासामि।
ॐ ह्रीं ङं घन्त्यै नमः दशाङ्गुल्यग्रेषु न्यासामि।
ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै नमः वामबाहुमुले न्यासामि।
ॐ ह्रीं छं द्युत्यै नमः वाम कूपरे न्यासामि।
ॐ ह्रीं जं स्थिरायै नमः वाममणिवन्धे न्यासामि।
ॐ ह्रीं झं स्थित्यै नमः वामांगुलिमुले न्यासामि।
ॐ ह्रीं ञं सिध्यै नमः वामांगुल्यग्रेषु न्यासामि।
ॐ ह्रीं टं जरायै नमः दक्षपादमूले न्यासामि।
ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै नमः दक्षजानुनि न्यासामि।
ॐ ह्रीं डं शान्त्यै नमः दक्षगुल्फे न्यासामि।

ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै नमः दक्षपादाङ्गुलीषु न्यासामि।

ॐ ह्रीं णं रत्यै नमः वामपादमूले न्यासामि।

ॐ ह्रीं तं कामिन्यै नमः वामपादमूले न्यासामि।

ॐ ह्रीं थं रदायै नमः वामजानुनि न्यासामि।

ॐ ह्रीं दं ह्रादिन्यै नमः वामगुल्फे न्यासामि, वामपादाङ्गुल्यग्रेषु न्यासामि।

ॐ ह्रीं धं प्रित्यै नमः वामपादाङ्गलिमूले न्यासामि।

ॐ ह्रीं नं दीर्घायै नमः वामांगुल्यग्रेषु न्यासामि।

ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै नमः दक्षिणकुक्षौ न्यासामि।

ॐ ह्रीं फं सुप्त्यै नमः वामकुक्षौ न्यासामि।

ॐ ह्रीं बं अभयायै नमः पृष्ठे न्यासामि।

ॐ ह्रीं भं निद्रायै नमः नाभौ न्यासामि।

ॐ ह्रीं मं मात्रे नमः उदरे न्यासामि।

ॐ ह्रीं यं शुद्धायै नमः हृदि न्यासामि।

ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै नमः कंठे न्यासामि।

ॐ ह्रीं लं कृपायै नमः ककुदि न्यासामि।

ॐ ह्रीं वं उत्कायै नमः स्कन्धयो न्यासामि।

ॐ ह्रीं शं मृत्यवे नमः दक्षिणकरे न्यासामि।

ॐ ह्रीं षं पीताय नमः वामकरे न्यासामि।

ॐ ह्रीं सं श्वेतायै नमः दक्षपादे न्यासामि।

ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः वामपादे न्यासामि।

ॐ ह्रीं त्रं असितायै नमः मूर्धापादान्तं न्यासामि।

ॐ ह्रीं क्षं सर्वसिद्धिगौर्यै नमः पादादिमूर्धान्तं न्यासामि।

वशिन्यादिन्यासः

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं एं ऐं ओं औं अं अः क्लृं वासिनीवाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्र न्यासामि ॥ १ ॥

ॐ कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ललाटे न्यासामि॥ २ ॥

ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये न्यासामि॥ ३॥

ॐ टं ठं डं ढं णं ब्ल्यू विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे न्यासामि ॥ ४ ॥

ॐ तं थं दं धं नं क्लीं अरुणावाग्देवतायै नमः हृदि न्यासामि ॥ ५ ॥

ॐ पं फं बं भं मं हस्लब्ल्यूं जयनीवाग्देवतायै नमः नाभौ न्यासामि॥ ६ ॥

ॐ यं रं लं वं हस्पब्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः आधारे न्यासामि ॥ ७॥

ॐ शं षं हं क्षं क्ष्मीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः सर्वाङ्गे न्यासामि ॥ ८ ॥

ततः-'**खड्गाय से पादादि शिर पर्यन्त**' तक के सभी न्यासों को देवी की मूर्ति पर करें।

इसके पश्चात् काली देवी के मूल [1]मन्त्र का न्यास आचार्य अथवा मन्त्र शास्त्री से जानकर ही यजमान करे।

उपरान्त क्राँ इत्यादि दीर्घबीज से करांङ्गुली न्यास करने के पश्चात् यजमान षडंग न्यास कर देवी का ध्यान करें। इसके पश्चात् इस मंत्र का उच्चारण करके मूर्ति को बारह बार मिट्टी से शुद्ध करें–

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः॥

पुनः मूर्ति के उत्तर भाग में स्थण्डिल का निर्माण कर उसके चारों कोनों पर चार कलश स्थापित कर प्रथम कलश में सप्तमृतिका द्वितीय कलश में क्षीरवृक्षत्वक तृतीय कलश में यवशाली, चतुर्थ कलश में गन्ध पुष्प डालकर इस मंत्र से अलंकृत करें।

ॐ आपो हि ष्ट्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥

तत्पश्चात् इस मंत्र का उच्चारण करते हुए आचार्य यजमान से प्रथम कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक करावें–

ॐ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः॥

पुनः इस मंत्र का उच्चारण करते हुए आचार्य यजमान से द्वितीय कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक करावें–

तस्मा ऽ अरङ्गमामवोयस्य क्षयाय जिन्वथ, आपो जनयथा च नः।

१–क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

पश्चात् आचार्य पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से तृतीय कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक करावें-

शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः।

उपर्युक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए आचार्य यजमान से चतुर्थ कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक करावे।

अभिषेक के पश्चात् यजमान घृत से काली देवी की मूर्ति का लेपन कर उस पर उबटन। (उद्वर्तन) लगावें।

उद्वर्तन द्रव्य यह है-

१-चंदन २-कर्पूर ३-इलायची ४-काचौर ५- उशीर ६-शतपत्र ७-भद्रमुस्ता।

इनको चूर्ण कर दुग्ध में मिलाकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए दस बार अभिमंत्रीत करेः-

मन्त्रः-यां सां चंद्र चूड़ नीलकंठजटाजूटवृत्त-सुशीतामोदवाहना-रुतांगप्रत्यंगावय वधातुभ्यं एतन् मूर्ते निष्काश्यदाहताप शमयशमयसुशीतल त्वं कुरु-कुरु देहि-देहि यां सां स्वाहा॥

इस मंत्र का आचार्य उच्चारण करते हुए यजमान से मूर्ति में उद्वर्तन लगवाएँ-

ॐ या ऽओषधीः पूर्व्वा जाता देवेब्भ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बब्भ्रूणामहर्ठ० शतं धामानि सप्त च॥

विशेष-कालीप्रतिष्ठा में 'अग्न्युत्तारण' कर्म कृता-कृत है।

उपर्युक्त कर्म के समापन के पश्चात् आचार्य इस अनुवाक्य का उच्चारण यजमान से करवाते हुए मूर्ति पर जलधारा गिरवाये

पवमानः [1]सुवर्जनः।

आचार्य सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं की पूजा यजमान से करवाएँ, पूजन के पश्चात्–नवीन वस्त्र से वेष्ठित करवाकर आचार्य यजमान से पायस बलि भी प्रदान करवाएँ।

पायसबलि प्रदान करवाने के पश्चात् जलपूर्ण वस्त्रवेष्ठित तथा आम्रपल्लव विभूषित आठकलशों को आचार्य इन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान द्वारा ही आठों दिशाओं क्रम से स्थापित करवायें–

१. हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

२. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

३. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशै अस्य द्विपदश्चतुष्पद कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

४. यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

१–पवमानः सुवर्जनः पवित्रेण विचर्षणि। यः पोता स पुनातु मा॥

५. येन द्यौरुग्रा पृथिवी च हडहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

६. यं क्रन्दसी अवसा तस्तमाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने। यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

७. आपो ह यद्वृहतीविंश्वमायन् गर्भ दधाना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरे कः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

८. यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ (ऋ० १०।१२१।१-८)

आचार्य आठों दिशाओं में आठों कलशों को स्थापित करवाने के पश्चात् आठ दीपकों को प्रज्वलित कर समीप में रखे, पश्चात् किसी तेजस पात्र में घृत और सहद मिलाकर स्वर्ण (सोने) की शलाका से मूर्ति के दक्षिण नेत्र का उनमिलन आचार्य इस मन्त्र की उच्चारण करते हुए यजमान के द्वारा करवायें–

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः॥

इस कर्म की समाप्ति के पश्चात् आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होमारममर्त्यम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्म्यसौ॥

तत्पश्चात् यजमान शलाका को जल से स्वच्छ करे और मधु लेकर मूर्ति के वामनेत्र का उनमिलन करते समय आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ तच्चक्षु र्देवहितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत् पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतठ० शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम् शरदः शत मदीनः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

इन तीनों मन्त्रों का उच्चारण आचार्य सहित सभी ब्राह्मण करें उस समय वहाँ ब्राह्मण एवं आचार्य के अतिरिक्त कोई भी अन्य सदस्य न हों–

१. ॐ सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्या खरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः। न्य ङ्गि यन्तुपरस्य निष्कृतं पुरु रेतो दधि रे सूर्यश्रितः।

२. ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्य मगन्म ज्योति रुत्तमम्।

३. ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणाग्ने॥

इसके पश्चात् काली देवीको अन्नराशि प्रदान करें तथा दर्पण दिखावें। इसके साथ ही साथ मन्त्र घोष एवं वाद्य घोष करें तथा इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य तथा प्रतिष्ठा स्थल पर उपस्थित अन्य ब्राह्मण देवी को स्नान करावें–

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः॥

पुनः इन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए देवी को स्नान करावें–

ॐ समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविश मानाः। इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥

ॐ या आपो दिव्या उतवा स्त्रवन्ति खनित्रिमा उतवा याः स्वयंजाः। समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥

ॐ या सां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवयश्यञ्जनानाम्। मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥

ॐ या सुराजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवा यासर्ज मदन्ति। वेश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टन्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥ (ऋ० ७।४६।१-४)

देवी के स्नान के पश्चात् इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आचार्य वस्त्रयुग्म आच्छादित करें–

ॐ अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षा ऽभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः। अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्या ऽभ्यश्वान् रथिनो देव सोम॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से मूर्ति के दाहिने हाथ में श्वेत ऊनी धागा बधवाएँ–

ॐ कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण इयर्ति वाचमरितेव नावम्। सुमङ्गलश्च शकुने भवासि मा त्वा का चिदमिभा विश्वाविदत्॥

मूर्ति के दायें हाथ में श्वेत ऊनी धागा बधवाने के पश्चात् आचार्य व सभी ब्राह्मण पुरुषसूक्त के इन सोलह मन्त्रों का उच्चारण कर काली देवी की स्तुति यजमान से करावें–

पुरुषसूक्तम्

हरिः ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
पुरुष ऽएवेदर्ठ० सर्व्वं य्यद्भूतं यच्च भाव्व्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशने ऽअभि॥
ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पुरुषः।
स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्क्रे वायव्यानारण्ण्या ग्राम्म्याश्च ये॥
तस्माद्याज्ञात्सर्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्म्मा दजायत॥
तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावयः॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा ऽअयजन्त साद्ध्या ऽऋषयश्च ये॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्च्येते॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो ऽअजायत।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ ऽअकल्पयन्॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो! ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबघ्नन्पुरुषं पशुम्॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्धचाः सन्ति देवाः॥

॥ इति पुरुषसूक्तम् स्तुतिः ॥

पुरुषसूक्त से काली देवी की स्तुति करवाने के पश्चात् आचार्य देवी की भूतशुद्धि करावें।

भूत शुद्धि के लिए इन दो मंत्रों का उच्चारण क्रमानुसार करें-

१. ॐ विश्वकर्मन हविषा वावृधानः स्वयं यजस्य पृथिवीमुतद्याम्। मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु॥

२. ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

पुनः [1]भूतशुद्धि के लिए 'इयममाप्रजाम्' इस मंत्र का उच्चारण करें, उसके पचात् आचार्य इन मन्त्रों का उच्चारण स्वयं करते हुए यजमान से भी करवायें-

---

१-तन्त्रोक्त भूतशुद्धि-
ॐ भूत श्रृगाराच्छिरः सुषुम्ना पथे न जीव शिवम् परं शिव पदे योजयामि स्वाहाः ॥ १ ॥
ॐ यँ लिङ्गाशरीरं शोषय-शोषय स्वाहा ॥ २ ॥
ॐ रँ संकोच शरीरं दह-दह स्वाहा ॥ ३ ॥
ॐ परम शिव सुषुम्नापथेन मूल षिृ मूल सोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सोऽहम् हंसः स्वाहा ॥ ४ ॥

तत्र मंत्रः–यतो बुध्यहं कारचितं पथिव्यप्ते काश शब्द स्पर्श रुपर सगंध–श्रोत्रत्वक् चक्षुजिह्वा घ्राणवाक् पाणिवाद पायूस्थ जीव प्रणाई हागव्य सुखुं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सो हं इति॥

यजमान के हाथ को देवी के मस्तक पर रखवाकर उपर्युक्त मन्त्रों का उच्चारण आचार्य स्वयं तीन बार करें।

प्राणप्रतिष्ठा

तदनन्तर काली देवी के शिर या हृदय को स्पर्श कर प्राण-प्रतिष्ठा करें उसके पूर्व निम्न विनियोग करें–

अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि। क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता। ॐ बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकम् प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः।

इसके पश्चात् ऋष्यादियों का निम्न क्रम से शिर-मुख-हृदय-नाभि गुह्यस्थान और पैरों में न्यास करें।

ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्यो ऋषिभ्यो नमः–शिर

ॐ ऋग्यजुः–सामछन्देभ्यो नमः–मुखे

ॐ चैतन्यरूपायै प्राणशक्त्यै देवतायै नमः–हृदि

ॐ आं बीजाय नमः–गुह्यस्थान

ॐ शक्त्यै नमः नमः–पादयो

ॐ कं खं गं घं ङं अं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने ॐ हृदयाय नम–हृदय

ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा–शिर।

ॐ टं ठं डं ढ़ं णं उं श्रोत्रत्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणात्मने ॐ शिखायै वषट् - शिखा।

ॐ तं थं दं धं नं एं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्सने ऐं कवचाय हुम्–कवच।

ॐ पं फं बं भं मं ॐ वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्–नेत्र।

ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कार चित्तात्मने अः अस्त्राय फट्-अस्त्र।

इस प्रकार से काली देवी की मूर्ति में न्यास करके, उपर्युक्त कर्म के पश्चात् देवी का स्पर्श कर जप करें–

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य जीव इह स्थितः॥

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य सर्वेन्द्रियाणि।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य वाङ्मनश्चक्षुः।

श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राण इहागत्यस्वस्तये सुख चिरंतिष्ठतु स्वाहा।

इसके पश्चात् आचार्य इस सूक्त का जप करके अर्चित हृदय में अंगुठे को देखकर जप करें–

ॐ ध्रुवा द्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वतो इमे।
ध्रुवविश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥

ध्रुवं ध्रुवेण हविषा ऽभि सोमं मृशामसि। अथो त इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्॥

इस श्लोक का उच्चारण करें-

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्यमर्चायै स्वाहेति यजुरीरयेत्॥

उपर्युक्त कर्म के पश्चात् यो प्रणव (ॐ) से रोककर देवी का सजीव ध्यान करे।

इस मन्त्र से देवी के शिर में हाथ रखकर देवी का ध्यान करें-

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यान्धमति संपतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन देवऽएकः॥

प्राण-प्रतिष्ठा के पश्चात् आचार्य पुरुषसूक्त के मन्त्रों का उच्चारण करते हुए काली देवी का उपस्थान करावें, उसके पश्चात् आचार्य यजमान से इस प्रार्थना करवायें-

स्वागतं देव-देवेशि मद्भाग्यादिहागता।
धर्मार्थ काममोक्षार्थं स्थिरा भव शुभासने॥

तत्पश्चात् आचार्य इस मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान से कालीदेवी के पैर से सिर तक स्पर्श करावें-

हरिः ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञठं० समिमं दधातु विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥

प्रतिष्ठा सूक्त के उपरान्त आचार्य एवं सभी ब्राह्मण इन पाँच मन्त्रों का तीन बार उच्चारण करें-

१. इहवैधि माप च्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः। इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठे ह राष्ट्र मु धारय ॥

२. इममिन्द्रो अदीधरद् ध्रुवं ध्रुवेण हविषा। तस्मै सोमो अधि ब्रवत् तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः॥

३. ध्रुवा द्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वतो इमे। ध्रुवविश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्।

४. ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रशचाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥

५. ध्रुवं ध्रुवेण हविषा ऽभि सोमं मृशामसि। अथो त इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्॥

उपर्युक्त कर्म की समाप्ति के पश्चात् आचार्य निम्न पौराणिक श्लोकों एवं वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करते हुए, क्रमानुसार देवी को पाद्य-आचमन करावे तथा पञ्चामृत से स्नान करावें-

पाद्यम्-

सुवर्णपात्रेऽतितमां पवित्रे भागीरथीवारिमयोपनीतम्।
सुरासुरैरर्चितपादयुग्मे गृहाण पाद्यं विनिवेदितं ते॥

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतं दिवी॥

आचमनम्—

समस्तदुःखौघविनाशदक्षे! सुगन्धितं फुल्लप्रशस्त पुष्पैः।
अये! गृहाणाचमनं सुवन्द्ये! निवेदनं भक्तियुतः करोमि॥

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः। स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्श्चाद् भूमिमथो पुरः॥

पञ्चामृत स्नानम्—

दुग्धेन दध्ना मधुना घृतेन संसाधितं शर्करया सुभक्त्या।
आलोकतृप्ति कृतलोक! देवि! पञ्चामृतं स्वीकुरु लोकपूज्ये!॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।

'इमा आपः शिवतमः', इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य काली देवी का अभिषेक यजमान से करावें। तत्पश्चात् विभिन्न सूक्तों का उच्चारण कर आचार्य देवी को स्नान करावें तथा वस्त्रादिक उपचारों से यजमान से देवी की मूर्ति का पूजन भी करावें।

आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण कर यजमान से अग्नि का पूजन करावें—

ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान् विश्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान्। युयोध्यस्म्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं व्विधेम॥

पश्चात् किसी बड़े पात्र से तिलों को ग्रहण कर दाहिने हाथ से घी भर कर स्त्रुव को ले दाहिने पैर की जांघ को मोड़ कर ब्रह्मा से स्पर्श कर इस मन्त्र से स्विष्टकृत संज्ञक आहुति यजमान से प्रदान

करावें तथा स्रुवे में बचे घृत का त्याग आचार्य प्रोक्षणी पात्र में यजमान से ही करावें-

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥

पश्चात्-अग्निदेव के दक्षिण अग्नि के पीछे पश्चिम देश में पूर्वाभिमुख बैठकर स्रुव के द्वारा कुण्ड से भस्म लेकर निम्न नाम मंत्रों से यजमान क्रमानुसार ललाट्-गले-दाहिने बाहु और हृदय में भस्म लगावें-

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः-ललाट् में लगावें।

ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषम्-गले में लगावें।

ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषम्-दाहिने बाहु में लगावें।

ॐ तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्-हृदय में लगावें।

इसके पश्चात् आचार्य होम कर्म का समापन करावें। तथा यजमान से इस श्लोक का उच्चारण करवा के विसर्जन करावें-

गच्छ गच्छ सुर श्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन!॥

विसर्जन के पश्चात् यजमान संकल्प करके ही आचार्य को गौदान देवें।

यजमान अपने आचार्य को दक्षिणा अलंकार तथा स्वर्णादि देने से पूर्व निम्न संकल्प करें-

कृतस्य कालीचरप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो महर्त्विग्भ्यः दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

दक्षिणा के पश्चात् ब्राह्मण भोजन करवाने से पूर्व पुनः निम्न संकल्प यजमान करें-

कृतस्यकालीचरप्रतिष्ठाकर्म समृद्धये यथाशक्ति-ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि।

सकल्प के पश्चात् ब्राह्मणों को प्रेम व आदर सत्कार से भोजन करावें। ब्राह्मण भोजन के पश्चात् यजमान दीन, अनाथजनों को इस संकल्प करके भूयसी दक्षिणा एवं अन्नादिक भी प्रदान करें।

कृतेऽस्मिन् कालीचरप्रतिष्ठाकर्मणिन्यूनातिरिक्तदोष-परिहारार्थं दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये॥

यजमान सपत्नीक, पुत्र-पौत्रादि व अपने सम्बन्धियों तथा अपने इष्टमित्रों के साथ कालीदेवी के प्रसाद को ग्रहण करें।

॥ कालीप्रतिष्ठा समाप्तः॥

गणेश-प्रतिष्ठा

नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के पश्चात् यजमान शुभासन पर प्राङ्मुख बैठे, तथा अपने से दक्षिण की ओर अपनी धर्मपत्नी को बैठाकर इन तीन नामों का उच्चारण कर तीन बार आचमन करें:-

ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः।

इस मंत्र का उच्चारण कर पवित्र धारण करके प्राणायाम करे:-

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

पश्चात् इस श्लोक का उच्चारण कर स्वयं के ऊपर और समस्त प्रतिष्ठा सामग्री की पवित्रता हेतु जल छिड़के-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु,

तत्पश्चात् यह संकल्प करें-

देशकालौसंकीर्त्य-अमुक गोत्रोत्पन्नो-मुकशर्माऽहं[वर्माऽहं-गुप्तोऽहं]सर्वाय-छांति पूर्वक दीर्घायु विपुल पुत्र-पौत्राद्यनवछिन्न-संततिवृद्धि स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभ-शत्रु पराजय सर्वपाप निरसन सकल वाप्ति सकलसुख-धर्मार्थ-काम-मोक्ष प्राप्ति द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं वा महागणपति प्रीत्यर्थं गणेशमूर्ति चलप्रतिष्ठाख्यंकर्म करिष्ये।

• तदंङ्गत्वेन स्वस्ति पुण्याहवाचनं-मातृकापूजनं-नान्दी श्राद्धं-आयुष्य मंत्रजपं आचायादि ब्राह्मणानां वरणं करिष्ये।

उपर्युक्त कर्म की समाप्ति के पश्चात् इस श्लोक का उच्चारण कर आचार्य पीली सरसों फेकें-

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

पश्चात् पंचगव्य और शुद्ध जल को कुशा के द्वारा समस्त प्रतिष्ठा सामग्रीयों के प्रोक्षण हेतु छिड़के।

पश्चात् निम्न वैदिकमंत्र का उच्चारण कर रक्षा-कर्म करें:-

ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्षस्व।

उपर्युक्तकर्म की समाप्ति के पश्चात् निम्न क्रमानुसार गणेशजी की मूर्ति में अग्न्युत्तारण करें-

आचार्य अग्न्युत्तारण कर्म के लिए यजमान से निम्न संकल्प करावें:-

करिष्यमाण गणेशप्रतिष्ठाकर्मणि न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थं अथवा अवघातादि दोष परिहारार्थं अमुक गोत्रः अमुक शर्माहं [वर्मा-गुप्तः]अस्यां सुवर्णमय अथवा रजतमय अथवा काँस्यमय श्रीगणेशप्रतिमायाः सान्निध्यार्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये।

संकल्प की समाप्ति के पश्चात् किसी पात्र में स्वर्ण की अथवा रजत की या ताम्र की गणेशजी की प्रतिमा को पंचामृत से लेपन पूर्वक पान के ऊपर रख (समुद्रस्य से शिवोभव) तक के इन बारहवैदिक मंत्रों का उच्चारण कर अग्न्युत्तारण कर्म को करें:-

---

• संकल्प के पश्चात् स्वतिपुण्याहवाचनं, मातृकापूजन, नान्दीश्राद्धं, आयुष्य मंत्र जंप, आचार्य वरण कर्म ग्रहशांति प्रयोग अनुसार करें।

अग्न्युत्तारणमन्त्राः—

ॐ समुद्द्रस्य त्वावकयाग्ग्ने परि व्ययामसि।
पावको ऽअस्म्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव ॥ १ ॥

ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ग्ने परि व्ययामसि।
पावको ऽअस्म्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव ॥ २ ॥

ॐ उप ज्म्मनुप वेतसेऽवतर नदीष्ष्वा।
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि।
सेमं नोयज्ञं पावकवर्ण्णर्ठ० शिवं कृधि ॥ ३ ॥

ॐ अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्द्रस्य निवेशनम्।
अन्न्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको
अस्म्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव ॥ ४ ॥

ॐ अग्ग्ने पावक रोच्चिषा मन्द्रया देव जिह्वया।
आ देवान्न्वक्षि यक्षि च ॥ ५ ॥

ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ग्ने देवाँ२ ॥ऽइहावह।
उप यज्ञर्ठ० हविश्च्च नः ॥ ६ ॥

ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्रुरुच ऽउषसो न भानुना। तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽआ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः ॥ ७ ॥

ॐ नमस्ते हरसे शोच्चिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे। अन्न्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्म्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव ॥ ८ ॥

ॐ नृषदे व्वेडप्सुषदे बेड् व्वर्हिषदे व्वेड् व्वनसदे व्वेट् स्वर्व्विदे व्वेट् ॥ ६ ॥

ॐ ये देवा देवानां य्यज्ञिया यज्ञियानार्ठ० संवत्सरीण-मुपभागमासते। अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्मिन्त्स्वय पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥ १० ॥

ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्न्ये ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य। येभ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्नुषु ॥ ११ ॥

ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा व्वर्च्चोदा व्वरिवोदाः। अन्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्म्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ १२ ॥

पश्चात् अग्निपद रहित, फिर अग्निपद सहित प्राकृतसूक्त को पढ़े, फिर +आपोहिष्ठा इन तीन मंत्रों से एवं * हिरण्यवर्णाम् इन चार

+आपोहिष्ठा की तीन ऋचाएँ–

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन महे रणाय चक्षसे महिम् ॥ १ ॥

यो: वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः ॥ २ ॥

तस्मा अरं गमाम वो यस्याक्षयाय जिन्वण आपो जनयथा च नः ॥ ३ ॥

(शु० अ० ११, म० ५०, ५१, ५२)

* हिरण्यवर्णां की चार ऋचाएँ–

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥ १ ॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्या हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवि मुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिह्वोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥ [श्रीसूक्तम्]

मंत्रों से और पवमान सुवर्जन इन अनुवाकों से और व्याहृतियों से गणेशजी को पंचगव्य से स्नान कराकर निम्न मंत्र का उच्चारण करके गणेशजी की मूर्ति को पंचपंल्वों से स्नान करावे–

ॐ अश्श्वत्त्थे वो निषदनं पर्ण्णे वो व्वसतिष्कृता।

गोभाज ऽइत्किलासथयत्त्सनवथ पूरुषम्॥

पुनः मणि–मुक्ता–प्रवाल एवं सुवर्णादि के जल से प्रतिमा को शुद्धोदक स्नान कर निम्न बीज मंत्रों से प्रोक्षण करें:–

अं गं सं

पश्चात् गणेशजी की मूर्ति के सिर पर हाथ रखकर इन मंत्रों का उच्चारण पुष्पांजलि प्रदान करें–

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम ऽआहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भ धम्।

पुष्पांजलि प्रदान करने के पश्चात् पीठान्तर में वस्त्र युग्म प्रदान कर निम्न श्लोकानुसार गंध एवं पुष्प अथवा पुष्पमाला के द्वारा गणेशजी का पूजन करे।

गन्ध से पूजन–

कर्पूरवासितजलेनसुधृष्टमेतं श्रीभद्रारुजमिमंसुविलेपनाय।
गन्धगृहाणशिवपुत्रशिवायमेस्या हारिद्रगन्धग्रहणायशिवेप्रसीद॥

पुष्प अथवा पुष्प माला से पूजन–

पुष्पाणि गन्धरससवर्ण सुरूपभाञ्जि कालोपजानि विनयेन मयाऽऽहृतानि।
लम्बोदराय जननी सहिताय तुभ्यं भक्त्याऽर्पये परिगृहाण दयस्व मह्यम्॥

पश्चात् [1]हिरण्यगर्भ इत्यादि इन आठ मंत्रों का क्रमानुसार उच्चारण कर आठ दीपकों के द्वारा गणेशजी की आरती करें। इसके पश्चात् स्वर्ण की शलाका लेकर गणेश की प्रतिमा के समक्ष भोजन पदार्थ-छत्र-चामर, इत्यादि वस्तुओं को रखे, फिर यजमान गणेश देवता की प्रतिमा के पीछे से दक्षिण की ओर जाकर गणेश जी का ध्यान करें।

उपरान्त इस मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम ऽआहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भ धम्।

पश्चात् इस मंत्र का उच्चारण कर पायस-भक्ष्य भोज्य दर्पण आदि रख देवें-

ॐ आ कृष्णेन रजसा व्वर्तमानो निवेशयन्न मृतंमर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

१-हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम १ यः आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम २ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजया जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ३ यस्यमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहु कस्मै देवाय हविषा विधेम ४ येन द्यौरुग्रा पृथिवी च हडहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ५ यं क्रदसी अवसा तस्तमाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने। यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ६ आपो ह यद्वृहतीविश्वमायन् गर्भ दधेना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरे कः कस्मै देवाय हविषा विधेम ७ यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम ८ (ऋ० १०। १२१। १-८)।

पश्चात् ताम्रपात्र में [1]मधुवाता इस मंत्र से मधु और [2]घृतंमिमिक्षे इस मंत्र से अभिमंत्रित करके स्वर्ण की शलाका से यथा अंजतित्वा[3] इस मंत्र से आज कर, देवस्यत्वा[4] इस मंत्र से पुनः शकर आजे।

गौद्रोहन काल के पर्यन्त समय व्यतीत कर सभी लोग गणेश देवता के दाहिनी ओर से भूमिपर दण्डवत होकर निम्न प्रार्थना करें-

भगवन् देव देवेश त्वं माता देवदेहिनाम्।
त्वया व्याप्त मिदं सर्वं जगत् स्थावर जंगमम्॥
त्वमीन्द्र० पावकश्चैव यमोनिऋति रेव च।
वरुणो मातरः सोम यो ईशान प्रभुरव्ययः॥
येण रूपेण भगवन् सत्व्रयाह्यं चराचरम्।
तेनं रूपेण देवेश अर्चायां सन्निधौ भव॥

उपर्युक्त कर्म के पश्चात् निम्न क्रमानुसार सर्वतोभद्रमंडल में ब्रह्मादि देवताओं की स्थापना करें-

आचार्य यजमान के दाएँ हाथ में जल अक्षतादि एवं यथाशक्ति द्रव्य देकर निम्न संकल्प करावें-

गणेश चल प्रतिष्ठा कर्मणि महावेद्यां सर्वतोभद्रमण्डले ब्रह्मादि देवतानां स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

१-मधुव्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमतपार्थिवठ. रजः। मधु द्यौ रस्तु नः पिता मधुमान्नो वनस्पतिर्म धुमाँ अस्तु सूर्य्यः माध्वी गावो भवन्तुनः॥ [ऋ० १।९०।६-८]

२-घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितौ घृतं वस्य धामं। अनुष्व धमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृष भवक्षि हव्यम् [यजु० स०]

३-यथा अजतित्वा इस मंत्र के विषय में कुछ संशय होने के कारण इसको यहाँ नहीं दिया जा रहा है।

४-देवस्यत्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनौ बाहुभ्यां पुष्णौ हस्ताभ्याम् [तेत-सं० १।१।६]

संकल्प के जलादिको यजमान भूमि पर छोड़ दे, पश्चात् आचार्य काष्ठ की चौकी अथवा पीढ़े पर वस्त्रादि बिछाकर चारों ओर से मौली के द्वारा बंधनकर उस पर सर्वतोभद्रमंडल का निर्माण कर चावल की ढेरी पर ताम्र कलश की स्थापना यजमान से करावे, पश्चात् उसपर सिंहासन अथवा किसी शुद्ध पात्र में गणेश जी की प्रतिमा स्थापित करें।

नीचे लिखे मंत्रों से अथवा नाममंत्रों का उच्चारण कर सर्वतोभद्र मंडल के देवताओं का स्थापन एवं पूजन निम्न क्रम से करें–

[१] ब्रह्म यज्ञानम्	ब्रह्मणे नमः
[२] वयर्ठ० सोम	सोमाय
[३] तमीशानम्	ईशानाय
[४] त्रातारमिन्द्रम्	इन्द्राय
[५] त्वन्नो अग्ने	अग्नये
[६] यमायत्वाङ्गि	यमाय

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं–

१–ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरसाद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः।
स बुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः॥

२–व्वयर्ठ० सोम व्रतेतवमनस्तनू षु बिभ्रतः॥ प्रजावन्तः सचेमहि॥

३–तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्व्यम्।
पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥

४–त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

५–त्वन्नो ऽअग्ने तवदेवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्वश्चवन्द्य।
त्राता तोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषर्ठ० रक्षमाणस्तवव्व्रते॥

६–यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्मायस्वाहाघर्म्मः पित्रे॥

[1]असुन्वन्तमयज	निर्ऋतये
[2]तत्त्वायामि	वरुणाय
[3]आनो नियुद्भि	वायवे
[4]सुगावो देवाः	अष्टवसुभ्यो
[5]रुद्राः सर्ठ०	एकादशरूद्रेभ्यः
[6]यज्ञोदेवानाम्	द्वादशादित्येभ्यः
[7]अश्विना	अश्विभ्यां
[8]विश्वेदेवास	सपैतृकविश्वेभ्योदेवेभ्यो

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं–

१–असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य।
अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्या नमो देविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु॥

२–तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः।
अहेडमानोव्वरुणेह बोद्ध्युरुशर्ठ० समानऽआयुः प्रमोषीः॥

३–आनोनियुद्भि शतिनी भिरध्वर्ठ० सहस्रिणी भिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायोऽअस्मिन्तसवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

४–सुगावो देवाः सदनाऽअकर्म्मय ऽआजग्मेवर्ठ० सवनऽ जुषाणाः।
भरमाणाव्वहमाना हवीर्ठ० ष्यस्मे धत्तव्वसवो व्वसुनि स्वाहा॥

५–रुद्राः सर्ठ० सृज्य पृथिवीम्बृहज्योतिः समीधिरे।
तेषांभानुरजस्रऽइच्छुक्रो देवेषुरोचते॥

६–यज्ञोदेवानां प्रत्येतिसुम्नमादित्यासोभवता मृडयन्तः।
आवोऽर्व्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्यादर्ठ० होश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा॥

७–अश्विनातेजसाचक्षुः प्प्राणेन सरस्वती व्वीर्य्यम्।
व्वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥

८–व्विश्वेदेवासऽआगत शृणुतामऽइमर्ठ० हवम्। एदम्बर्हिन्निषीदत। उपयाम-
गृहीतोऽसिव्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएषते योनिर्व्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः॥

[१]अभित्यन्देवर्ठ०	सप्तयक्षेभ्यः
[२]नमोऽस्तुसर्प्पे	भूतनागेभ्यः
[३]ऋताषाड्ऋत	गन्धर्वाप्सरोभ्यः
[४]यदक्रन्दः	स्कन्दाय
[५]आशुःशिशानो	नन्दीश्वराय
[६]यत्तेगात्रा	शूलाय
[७]काषिरसि	महाकालाय

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं–

१–अभित्यन्देवर्ठ० सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्च्चामि सत्त्यसवर्ठ० रत्क्रधामभि प्प्रियंमतिंकविम्॥ ऊद्ध्र्वायस्याऽमतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्य पाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपास्वः। प्रजाब्भ्यसत्वा प्प्रजास्त्वानुप्प्राणन्तुप्प्रजास्त्व मनुप्प्राणिहि॥

२–नमोऽस्तु सर्प्पेब्भ्यो यो ये केचपृथिवीमनु॥
येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यर्ठ० सर्प्पेभ्योनमः॥

३–ऋताषाड्ऋत धामाग्निर्गन्धर्व्व स्तस्यौषधयोप्सरसोमुदोनाम।
स नऽइदंब्रह्मक्षत्रंपातुतस्मैस्वाहा। व्वाट्ताब्भ्यः स्वाहा॥

४–यदक्रन्दः प्प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वापुरीषात्॥
श्येनस्य पक्षाहरिण स्यबाहूऽउपस्त्युत्यम्महि जातन्तेऽअर्व्वन्॥

५–आशुः शिशानो व्वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
सङ्क्रन्दनोनिमिषऽ एकवीरः शतर्ठ० सेनाऽअजयत्त्साकमिन्द्रः॥

६–यत्तेगात्रादग्निापच्यमानादभिशूल्यन्निह तस्यावधावति।
मातद्भूम्यामाश्रिणन्मातृणेषु देवेब्भ्यस्तदशद्ब्भ्योरातमस्तु॥

७–ॐ काषिरसि समुद्दस्य त्त्वाक्षित्त्या ऽउन्नयामि।
समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥

[१]शुक्रज्योतिश्च	दक्षादिसप्तगणेभ्यः
[२]अम्बेऽअम्बिके	दुर्गायै
[३]इदं विष्णु	विष्णवै
[४]पितृभ्यः स्वधायिभ्यः	स्वधायै
[५]परम्मृत्यो	मृत्युरोगेभ्य
[६]गणानांत्वा	गणपतये
[७]अप्स्वग्ने	अद्‌भ्यो
[८]मरुतोयस्य	मरुद्भयोः

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं–

१–ॐ शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्ज्योतिष्मॉश्च।
शुक्रश्च ऽऋतपाश्चात्यर्ठ० हाः॥

२–ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽअम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

३–इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाठ० सुरेस्वाहा॥

४–पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः
स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः॥
अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरोऽतीतपन्त पितरः पितरः शुन्धद्वम्॥

५–ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थां यस्तेऽ अन्यऽइतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाठ० रीरिषोमोतव्वीरान्॥

६–गणानात्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा
निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भ धम्॥

७–अप्स्वग्ने सधिष्टवसौषधीरनुरुध्यसे। गर्भे संजायसे पुनः॥

८–मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवोव्विमहसः। ससुगोपातमोजनः॥

[१]स्योनापृथिवि	पृथिव्यै
[२]पंचनद्यः	गंगादिनदीभ्यः
[३]समुद्रोऽसि	सप्तसागरेभ्यः
[४]परित्वा	मेरवे
[५]गणानांत्वा	गदायै
[६]त्रिर्ठ०शद्धाम	त्रिशूलाय
[७]महा २॥ इन्द्रो	वज्राय
[८]व्वसुचमे	शक्तये
[९]इडऽएह्यदित	दण्डाय

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं–

१–स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छानः। शर्म्मसप्रथाः॥

२–पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्॥

३–समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रऽदानुः शम्भूर्म्मयो भूरभिमाव्वहि स्वाहा। मारुतोऽसिम रुतांगणः शम्भूर्म्मयोभूरभिमाव्वाहिस्वाहा वस्यूरसिदुवस्वांछम्भूर्म्मयो भूरभिमाव्वाहि स्वाहा॥

४–परित्वागिर्व्वणोगिर ऽइमाभवन्तु व्विश्वतः॥ व्वृद्धायुमनुवृद्धयोजुष्टाभवन्तु जुष्टयः॥

५–गणानात्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम आहमजानि गर्ब्भमात्त्वमजासि गर्ब्भ धम्॥

६–त्रिर्ठ० शद्धामविराजति वाक्यपतङ्गाय पतड़ाय धीयते। प्रतिवस्तोरहद्युभिः॥

७–महाँ२॥ इन्द्रोवज्रहस्तः षोडशीशर्म्मयच्छतु। हन्तुपाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसिमहेन्द्रायत्वैषतेयोनिर्महेन्द्रायत्वा॥

८–व्वसुचमेव्वसतिश्चमेकर्मचमेशक्तिश्च मेऽर्थश्चमएमश्चइत्याचमे गतिश्चमेयज्ञे न कल्पन्ताम्॥

९–इडऽएह्यदितऽएहि काम्म्याऽएत। मयि वः काम धरणं भूयात्।

[1]खड्गोव्वैश्व खड्गाय

[2]उदुत्तमं पाशाय

[3]अर्ठ० शुश्च मे अङ्कुशाय

[4]आयं गौः गौतमाय

[5]अयन्दक्षिणा भरद्वाजाय

[6]इदमुत्तरात्स्व विश्वामित्राय

[7]त्र्यायुषं कश्यपाय

[8]अयं पश्श्चाद जमदग्नये

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं–

१–खड्गोव्वैश्वदेव: श्वाकृष्ण: कर्णोगदर्दभस्तेरक्षुस्तरक्षसामिन्द्रायसूकर: सिर्ठ० होमारुत: कृकलास: पिप्पकाशकुनिस्तेशरव्यायैविश्वेषांदेवानांपृषत:॥

२–उदुत्तमंवरुणपांशमस्मदवाधमं व्विमध्यमर्ठ० श्रथाय॥
अथा व्वयमादित्य व्व्रतेतवानागसोऽअदितये स्याम॥

३–अर्ठ० शुश्चमेरश्मिश्चमेऽदाब्भ्यश्चमेऽधिपतिश्चमऽउपार्ठ० शुश्चममेऽन्तर्यामश्चऽऐन्द्र वायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमऽ आश्विनश्चमे प्रति प्रस्थानश्चमे शुक्रश्चममन्थीचमेयज्ञन कल्पन्ताम्॥

४–आयं गौ: पृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुर: पितरं च प्रयन्त्स्व:॥

५–अयन्दक्षिणा: व्विश्वकीर्मातस्यमनो व्वैश्वकर्मणग्रीष्मोमानसस्त्रि ष्टब्ग्रैष्मो त्रिष्टभा: स्वारर्ठ० स्वारदन्तर्यामोन्तर्यामात्पंचदश: पञ्चदशाद्बृहद् भरद्वाजऽ ऋषि: प्रजापतिगृहीतया त्वया।

६–ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्श्रोत्रर्ठ० सौवर्ठ० शरच्छौत्र्यनष्टुप शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिन ऽएकविर्ठ० शऽएकविर्ठ० शाद्वैराजं व्विश्श्वामित्र ऽऋषिर्ठ० प्प्रजापतिगृहीतया त्वया श्श्रोत्रं गृह्णामि प्प्रजाब्भ्यर्ठ०।

७–ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेर्ठ० कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तुत्र्यायुषम्।

८–अयंपश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्व्वैश्वव्य च संवर्षाश्चाक्षुष्यो जगतोव्वार्षी जगत्याऽऽऋक्सममृक्स माच्छुक्र: शुक्रात्सप्तदश: सप्तदशाद्वैकरुपंजमग्नि ऋषि: प्रजा पतिगृहीतया त्वयाचक्षु र्गह्णामि प्रजाब्भ्य:॥

[१]अयं पुरो	वसिष्ठाय
[२]अत्रपितरो	अत्रये
[३]तं पत्नीभि	अरुन्धत्यै
[४]अदित्यैरास्ना	ऐन्द्यै
[५]अम्बेऽअम्बिके	कौमार्य्यै
[६]इन्द्रायाहि	ब्राह्मय
[७]इन्द्रस्यक्क्रोडो	वाराह्यै
[८]अम्बेऽअम्बिके	चामुण्डायै

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं—

१-अयं पुरोभुवस्तस्य प्राणो भौवायनोवसन्तः प्राणायनोगायत्री व्वासन्तीगायत्र्यै गायत्रङ्गायत्रादुपाठं० शुरुपाठं० शोस्त्रिवृत्त्रिवृतोरथन्तरंव्वसिठऽऋषिः प्रजापतिगृही तयात्वया प्राणङ्गृह्णामि प्रजाब्भ्यः॥

२-अत्रपितरोमादयद्ध्वंयथा भागमावृषायद्ध्वम्।
अमीमदन्तपितरोयथा भागमावृषायिषत॥

३-तं पत्नीभिरनुगच्छेमदेवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वाहिरण्यैः॥
नाकंगृब्भ्णानाः सुकृतस्यलोके तृतीयेपृष्ठे ऽअधिरोचनेदिवः॥

४-ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽऽउष्णीषः। पूषासिघर्माय दीष्व॥

५-अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके न मा नयति कश्च्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।

६-ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो व्विप्रजूतःसुतावतः। उपब्ब्रह्माणि व्वाग्घतः॥

७-ॐ इन्द्रस्यक्क्रोडोऽअदित्यै पाजस्य द्रिशां जत्रवोऽदित्त्यै भसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्ष पुरीतता नभऽउदर्य्येण चक्क्रवाकौ मतस्नाब्भ्यां दिवं व्वृक्काब्भ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्ना व्वल्म्मीकान्क्लोमभिग्ग्लौभिर्गुल्म्मान्हिराभि स्त्रवन्तीह्रदान्कुक्षिब्भ्यासमुद्रमुदरेण व्वैश्वानरं भस्म्मना॥

८-अम्बेऽअम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।

[1]आप्यायस्व वैष्णव्यै
[2]या ते रुद्र माहेश्वर्यै
[3]समक्ख्ये देव्या वैनायक्यै

वेदी में अग्निप्रतिष्ठा

तीन कुशाओं से पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा या दक्षिण दिशा से उत्तर दिशा की तरफ तीन बार परिससमूहन कर उन कुशाओं को ईशानकोण में छोड़ दे, फिर जल मिश्रित गोबर को लेकर उदक संस्थ [दक्षिण से उत्तर] अथवा प्राक्संस्थ तीन बार कुण्ड या वेदी का लेपन करें, फिर स्रुव नाम यज्ञीय हवन करने वाले पात्र से प्रादेश प्रमाण या स्थाण्डिल प्रमाण प्रागग्र पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा की तरफ ६ : ६ : अंगुल व्यवहित कर उल्लेखन क्रम से अनामिका और अंगुठे से जहाँ रेखा दी है। उन रेखाओं से एक बार वहाँ की मिट्टी को उठाकर बायें हाथ में रखे, फिर बायें हाथ की सब मिट्टी दाहिने हाथ में रख ईशान कोण में फेंक दे। मुष्टिकृत नीचे को हाथ कर जल से अभ्युक्षण कर बिना धूम वाली अग्नि को स्वाभिर्मुखमध्य में ही अग्नि कोण में चुपचाप रख वही पर आमाद और क्रव्याद

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं-

१-आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम व्वृषणयम्। भवा व्वाजस्य संगथे॥

२-यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी॥ तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि॥

३-समक्ख्ये देव्याधिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मामऽआयुः प्रमीषीम्मोऽअहन्तवव्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि॥

विशेष-यह सर्वतोभद्रदेवता के स्थापन व पूजन का संक्षिप्त क्रम है, अतः प्रत्येक मंत्रों व नाम मंत्रों का उच्चारण कर सुपारी पर अक्षत छोड़े। विस्तृत क्रम से यदि स्थापन व पूजन करवाना हो तो आचार्य स्वयं अथवा ग्रहशान्तिप्रयोग द्वारा करवायें।

नामक दो अंगारों को त्याग अवशिष्ट अग्नि का मध्य में स्थापन करें, अर्थात्–आमाद तथा क्रव्याद को स्थाण्डिल के बाहर न निकाले (शारदा तिलक) आदि मत से तान्त्रिकों को बाहर निकालना लिखा है। किन्तु वैदिक कर्म में ऐसी बात नहीं है।

इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण करते हुए, अग्नि स्थापन करे–

ॐ अग्निदूतं पुरोम दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२॥ आसादयादिह॥

अथ ग्रहाणां मावाहनं पूजनं च

ईशानकोण की ओर पीढे अथवा चौकी पर वस्त्र बिछाकर नवग्रहमंडल लिखकर सूर्यादिनवग्रह–अधिदेवता–प्रत्यधिदेवता–पंचलोकपाल–वास्तोष्पति–क्षेत्रपाल–दशादिक्पाल का आवाहन निम्न क्रम से करें–

[१]आ कृष्णेन रजसा	सूर्याय
[२]इमन्देवा	चन्द्रम से
[३]अग्निर्मूर्द्धा	भौमाय
[४]उदबुध्यस्वाग्ने	बुधाय

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं–

१–ॐ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेनादेवी याति भुवनानि पश्यन्॥

२–ॐ इमन्देवा ऽअसपत्नर्ठ० सुबद्ध्वं महते क्षत्त्राय महते ज्यैष्ठाय्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमुस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा॥

३–ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ० सि जिन्वति॥

४–ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्त्वमिष्टापूर्ते सर्ठ० सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थेऽध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

[१]बृहस्पतेऽअति	बृहस्पतये
[२]अन्नात्परिस्त्रुतः	शुक्राय
[३]शन्नो देवी	शनिश्चराय
[४]कयानश्चित्र	राहवे
[५]केतुं कृणवन्न	केतवे

ग्रहदक्षिण पार्श्वे अधिदेवता स्थापनम् :-

[६]त्र्यम्कं यजामहे	ईश्वराय
[७]श्रीश्चते	उमायै
[८]यदक्रन्दः	स्कन्दाय

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं-

१-ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मसु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

२-ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रप्जापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानरठ० शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥

३-ॐ शं नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तुः नः॥

४-ॐ कया नश्चित्रऽ आभुवदूती सदावृधः सखा कया शचिष्ठया व्वृता।

५-ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽअपेशसे। समुषद्भि रजायथाः।

६-ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

७-ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्नयावहोरात्रे पार्श्वे। नक्षत्राणि रूपवश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुँ म ऽइषाणा सर्वलोकं म ऽइषाण॥

८-ॐयदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्राादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन्॥

[१]व्विष्णो रराटमसि	विष्णवे
[२]अब्रह्मन्	ब्रह्मणे
[३]स जोषाऽइन्द्र	इन्द्राय
[४]यमायत्वाङ्गि	यमाय
[५]कार्षिरसि	कालाय
[६]चित्रावसो	चित्रगुप्ताय

ग्रहवाम पार्श्वे प्रत्यधिदेवता स्थापनम्-

[७]अग्नि दूतम्	अग्नये
[८]आपो हिष्ठा	अद्भ्यो
[९]स्योना पृथिवि	पृथिव्यै

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं-

१-ॐ व्विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्तथोव्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्द्ध्रुवोऽसि। व्वैष्णवमसि व्विष्णवे त्त्वा॥

२-ॐ आ ब्ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्व्योऽतिव्याधी महारथी जायतां दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिर्ठ० पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेय युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

३-ॐ सजोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब व्वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूँ २॥ रपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि व्विश्वतो नः॥

४-ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

५-ॐ कार्षिरसि समुद्द्रस्य त्त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि।
समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधी भिरोषधीः॥

६-ॐ चित्रावसोस्वस्ति तेपारमशीय॥

७-ॐ अग्नि दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ २॥ ऽआसादयादिह॥

८-ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥

९-ॐ स्योनापृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः॥

[१]इदं विष्णुः	विष्णवे
[२]इन्द्रआसान्ने	इन्द्राय
[३]अदित्यैरास्ना	इन्द्राण्यै
[४]प्रजापतेनत्व	प्रजापतये
[५]नमोऽस्तु	सर्पेभ्यो
[६]ब्रह्मयज्ञानम्	ब्रह्मणे

पंचलोकपालानां स्थापनं ग्रहाणांमुत्तरेः—

[७]गणानां त्वा	गणपत्ये
[८]अम्बे ऽअम्बिके	अम्बिकायै
[९]वायोयेते	वायवे

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं—

१–ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्क्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाठं० सुरे स्वाहा॥

२–ॐ इन्द्रऽ आसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोमः।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वाग्ग्रम्॥

३–ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः। पूषासि घर्म्मायदीष्व॥

४–ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यो विश्श्वा रूपाणि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु व्वयठं० स्याम पतयोरयीणाम्॥

५–ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः॥

६–ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः।
स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः॥

७–ॐ गणानां त्वा गणपतिठं० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिठं० हवामहे निधीनांत्वा निधिपतिठं० हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भ धम्॥

८–ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

९–ॐ व्वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्ते भिगहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये॥

[१]घृतं घृतपावानः	आकाशाय
[२]यावाङ्कशा	अश्विभ्यां
[३]वास्तोष्पते	वास्तोष्पतये
[४]नहिस्पशमवि	क्षेत्राधिपतये

मण्डलस्य बाह्ये इन्द्रादिदशदिक्पालानां मावाहनम्:-

[५]त्रातारमिन्द्र	इन्द्राय
[६]त्वन्नो अग्ने	अग्नये
[७]यमायत्वाङ्गिरस्वते	यमाय
[८]असुन्वन्त	निर्ऋतये

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं-

१-ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो व्विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

२-ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञ म्मिमिक्षतम्॥

३-ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्यस्मान् स्वावेशो ऽअनमीवोभवा नाः।
यत्वेमहेप्रति तन्नो जुषष्व शं न्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

४-ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः।
एमेनमवृधन्नमृत ऽअमर्त्यं व्वैश्श्वानरङ् क्षैत्राजित्याय देवाः॥

५-ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिद्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

६-ॐ त्वं नो ऽअग्ने तव देव पायुभ्भिर्मघोनो रक्षतन्वश्श्च वन्द्य।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषर्ठ० रक्षमाणस्तवव्रते॥

७-ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्म्माय स्वाहा घर्म्म पित्रे॥

८-ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्क्करस्य।
अन्न्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु॥

[१]तत्त्वायामि वरुणाय

[२]आनो नियुद्भिः वायवे

[३]वयर्ठ० सोम सोमाय

[४]तमीशानम् ईशानाय

[५]अस्म्मेरुद्रा ब्रह्मणे

[६]स्योनापृथिवि अनन्ताय

पश्चात् निम्न पौराणिक श्लोक एवं वैदिक मंत्र का उच्चारण कर प्रार्थना करें-

पौराणिक श्लोक-

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारिः भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च-शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

ये सभी मंत्र शु० यजुर्वेद संहिता के हैं-

१-ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः
अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० समान ऽआयुः प्रमोषीः॥

२-ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्।
व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पातस्वस्तिभिः सदा नः॥

३-ॐ व्वयर्ठ० सोमव्रते तव मनस्तनुषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

४-ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे व्वयम्।
पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥

५-ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः।
यः शर्ठ० सते स्तुवते धायि पज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्म्माँ२ ऽअवन्तुदेवाः॥

६-ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म्मस प्रथाः॥

वैदिक मंत्र–

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जा हुतयोव्व्यन्तो व्विप्प्रायमतिम्। तेषां व्विशिप्प्रियाणांव्वोऽहमिषमूर्ज्जर्ठ० समग्ग्रभमुपया-मगृहीतोऽसीन्द्रा यत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्॥

॥ कृताकृतम्॥

ग्रहों के आवाहन और पूजन के उपरान्त गणेश चल प्रतिष्ठा, होम देवता, चक्षुसी, इत्यंत एवं आदित्यादि नवग्रहों की आठ–आठ की संख्या में समीधा, चरु, तथा घृताहुति देकर पुनः प्रधान गणेश देवता की चार–चार आवृति में प्रति द्रव्य की आठ–आठ संख्याओं में इक्षु, शत्तू, केला, पृथक तिल, मोदक, नारिकेल लाजा इत्यादि द्रव्यों से– **'शेषण इत्यादि आज भागान्त'** प्रधान होम करें।

अथ शान्तिकपौष्टिकहोमः

आचार्य पलाश, उदुम्बर, अश्वत्थ, अपामार्ग और शमी आदि क्रम से द्वादश, सहस्रादिक किसी पक्ष द्वारा समिधाकर निम्न वैदिक मंत्रों से हवन करें–

ॐ शन्नोव्वातः पवतार्ठ० शन्स्तपतु सर्य्यः॥ शन्नः कनिक्रद देवः पर्जन्यो अभिबर्षतु॥

ॐ अहा निशम्भवन्तुनः शर्ठ० रात्री प्रति धीयस्पम्। शन्नऽइन्द्रागनी भवता मबोभिः शन्नऽइन्द्रा वरुण गतघ्या॥

ॐ शन्नो[1] दे० इति शान्तिकै

१–शं नो देवीरभिष्टय ऽआ पो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः। (ऋ० १०।९।४)

ॐ अयमग्निः पुरीष्यो रयिमान्पुष्टि वर्द्धनः। अग्ने पुरीष्याभिद्युम्नम भिसहऽआपच्छस्व॥

ॐ त्वष्टातुरीपोऽअद्भुतऽइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धना। द्विपदा-च्छन्दऽइन्द्रिय मुक्षा गौर्न्नवयोदधुः॥

ॐ त्र्यम्बकं[1] यजामहे-इति पौष्टिकैश्च (षड्भिः) मन्त्रैः प्रति मन्त्रं प्रति द्रव्यं द्विसहस्त्र, एकसहस्त्र, पंचशत, अष्टषष्ट्युत्तरशत, अष्टादशान्यत्तमसंङ्ख्या जुहुयात्।

अथ वेदादि होमः

आचार्य पलाश की समीधा आदि से 'अग्निमीडे' इत्यादि इन आठ वैदिक मंत्रों से (जो चारों वेदों के है) इनसे एकहजारआठ, एक-सौ आठ, अथवा आठ आहुतियाँ देवें-

१. अग्नि मीडे०	ऋग्वेद
२. ॐ वौषट स्वाहा०	,,
३. इषे त्वोर्ज्जेत्वा०	यजुर्वेद
४. ॐ तत्ववितु०	,,
५. अग्नआयाहि०	सामवेद
६. जातवेद से सुनवाम०	,,
७. शन्नोदेवी०	अथर्ववेद
८. ब्रह्मयज्ञानं०	,,

१-त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। (ऋ० ७।५६।१२)

अर्थ मूर्त्यादि होमः

आचार्य पलाशादि किसी द्रव्य (पलाश, समीधा, तिल, या घृत में से किसी एक द्रव्य से गणेश जी की मूर्ति, 'मूर्तिप' लोकपाल को एक हजार आठ, या एक सौ आठ अथवा आठ आहुतियाँ किसी भी पक्ष से देवें।

अथ महाव्याहृति होमः

आचार्य तिल, यव, ब्रीहि, चरु, घृत आदि द्रव्यों से क्रम से एक हजार आठ, या एक सौं आठ अथवा आठ व्याहृति की आहुतियाँ किसी भी पक्ष से देवें–

तत्र व्याहृतिः **ॐ भूर्भुवः स्वाहा।**

अथ स्थाप्य गणेश देवता लिंगक मंत्र होमः

आचार्य स्थापित गणपति देवता के मंत्र से एक हजार आठ, एक सौ आठ या आठ आहुतियां घृत से देवे–

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेय प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्ताऽसि। त्वमेव केवलं धर्ताऽसि। त्वमेव केवलं हर्ताऽसि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्माऽसि। त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम् स्वाहा ॥ १ ॥

ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि स्वाहा ॥ २ ॥

अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम् अवाऽनूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि-पाहि समन्तात् स्वाहा ॥ ३ ॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयस्त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयस्त्वं सच्चिदानन्दाऽद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यंक्ष ब्रह्माऽसि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि स्वाहा ॥ ४ ॥

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वंजगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। सर्वं त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नमः त्वं चत्वारि वाक्पदानि स्वाहा ॥ ५ ॥

त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् स्वाहा ॥ ६ ॥

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तर। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चाऽन्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। सꣳहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्रीछन्दः। गणपतिदेवता। ॐ गं गणपतये नमः स्वाहाः ॥ ७ ॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् स्वाहा ॥ ८ ॥
एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम्॥
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्त-गन्धाऽनुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्॥

भक्ताऽनुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।

आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात् परम्॥

एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः स्वाहा ॥ ९ ॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रथमपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय वरदमूर्तये नमः ॥ १० ॥

सुखमधते। स पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायंप्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। सर्वत्राऽधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्ममर्थं कामं मोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद् दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रा-वर्तनाद् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत् स्वाहा ॥ ११ ॥

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न विभेति कदाचनेति स्वाहा ॥ १२ ॥

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वै श्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदक-सहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स्वाहा ॥ १३ ॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रा भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। स सर्वविद् भवति य एवं वद स्वाहा ॥ १४ ॥

आचार्य गणानां स्वामी सः गणेशः अर्थात् जो इस पृथ्वी के समस्त गणों के स्वामी है पार्वती एवं शंकर पुत्र श्री गणेशजी की प्राणप्रतिष्ठा यजमान से निम्न विनियोग को कराते हुए निम्न क्रम से ही करावें-

निम्न विनियोग करें-

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुःसामानि छंदासि प्राणप्रतिष्ठा शक्ति र्देवता आंबीजं। ह्रींशक्तिः क्रोकिलकं गणेशप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं खं सं हं सों हं० सः॥ तिष्ठन्तु स्वाहा।

गणेशजी की प्रतिमा के हृदय में हाथ का स्पर्श कर जाप करे। उपरान्त इस श्लोक से प्रतिमा का ध्यान करें:-

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा रंक्षे तुं च।
अस्यै देवत्वं मर्चायै मामहेति च कश्चन॥

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात् आचार्य गणपति की मूर्ति के कर्ण में निम्न गायत्री मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुंडाय धीमहि। तंनो गणेशः प्रचोदयात्।

इसके पश्चात् पुनः आचार्य गं गणपतये नमः इस मंत्र के द्वारा प्रतिष्ठा स्थल पर उपस्थित जप कर्ता ब्राह्मण से गणेशजी का यथा संख्या जप करवावें।

आचार्य गणेश की प्रतिमा के मुख और नेत्र में स्वर्ण की शलाका के द्वारा सहत-घी-मिश्रित कर इस आधे मंत्र से चिह्न करें।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।

शास्त्रों के अनुसार गणेशजी का पूजन इसी स्थान पर प्रतिष्ठा के पश्चात् करना चाहिए किन्तु जिस हस्तलिखित पुस्तक का मैंने अवलोकन करके इस पुस्तक का निर्माण किया है उस पुस्तक में गणेशपूजन इस स्थान पर करने का निर्देश नहीं दिया गया है अतः मैं उसी चारसौवर्ष पुरानी कृति के अनुसार इस ग्रन्थ की हिन्दी टीका कर रहा हूँ।

अग्निपूजनम्

आचार्य इस वैदिक मंत्र से अग्नि का पूजन यजमान से करवायें–

ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्म्मान् व्विश्श्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान्। युयोद्ध्यस्म्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं व्विधेम् ॥

स्विष्टकृत्

ततपश्चात् आचार्य बड़े पात्र में तिलों को ग्रहण कर दाहिने हाथ से घी भरकर स्रुव को ले दाहिने पैर की जांघ को मोड़कर ब्रह्मा से स्पर्श कर इस मन्त्र से स्विष्टकृत् संज्ञक आहुति देवें–

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥

व्याहृति होम अर्थात् नवाहुतिः

आचार्य बैठकर इन वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करते हुए नौव्याहृति आदि की आहुति घी से प्रदान करवायें:–

ॐ भूः स्वाहा — **इदंमग्नये न मम।**

ॐ भुवः स्वाहा — **इदं वायवे न मम।**

ॐ स्वः स्वाहा — **इदं सूर्याय न मम।**

ॐ त्वं नो ऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽअव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाठं॰ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

ॐ स त्वंनो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्टोऽअस्या ऽउषसोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनो वरुणठं॰ रराणो व्वीहि मृडीकठं॰ सुहवो नऽएधि स्वाहा।

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया ऽअसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजठं॰ स्वाहा॥

इदमग्नये अयसे न मम।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो ऽअद्य सवितो विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा।

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमठं॰ श्रथाय। अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानगसोऽअदितेस्याम स्वाहा।

इदं वरुणायादित्यायादितये न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये न मम। (मनसा)

बलिदानम्

आचार्य इस संकल्प को बलिदान के लिए यजमान से करावें–

अस्य गणेश प्रतिष्ठा कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं सदीपमाषभक्तबलिदानं पायसबलिदानं वा करिष्ये–

वास्तुदेवानां पूर्वं बलिर्न कृतश्चेदत्र कुर्यात्। वस्तुतस्तु वास्तुदेवताभ्योऽत्रैव बलिदानं युक्तम्, पूर्वं मयूखादा-वनुक्तत्वात्। स चेत्थम्–'शिखिने एव पायसबलिर्नमः। इत्येवं तत्तन्नम्ना बलिं दद्यात्। यद्वा–शिख्यादिवास्तु-देवताभ्यो नमः' अमुं पायसबलिं समर्पयामि।

भो! वास्तुमण्डलदेवता पायसबलिं गृह्णीत मम सुकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तार क्षेमकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन वास्तुमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्ताम्।

ततः–'वास्तोष्पत्यन्तेभ्यः सूर्यादिग्रहेभ्यो नमः' पायसबलिं सम०। भो! भो! वास्तोष्पत्यन्ताः सूर्यादिग्रहाः पायसबलिं गृह्णीत मम यज०। अनेन बलिदानेन वास्तोष्पत्यन्ताः सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम्।

सतिसम्भवे ब्रह्मादिमण्डलदेवताभ्यो नमः। योगिनीभ्यो नमः। क्षेत्रपालेभ्यो नमः। माषभक्तबलिं सम०। भो! भा! ब्रह्मादिम० भो! भो! योगिनीदेवताः भो! भो! क्षेत्रपालदेवता मम सकुटुम्बस्य आयुः क० अनेन ब०। ततः अग्नायतनस्य संकल्पः देशकालौ संकीर्त्य-मण्डपस्य वा समन्तात् दिक्पालेभ्यो बलिं दद्यात्–

अद्यपुण्यतिथौ अस्य गणपति चलप्रतिष्ठा कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालादिप्रीत्यर्थं भूतप्रेतपिशाचादि निवृत्यर्थं च सार्वभौतिकबलिप्रदानं करिष्ये। शुद्धभूमौ सूर्यादि महाबलिं कुङ्कुमादिचर्चितं कृत्वा-

'ॐ सर्वभूतेभ्यो नमः। ॐ क्षेत्रपालादिभ्यो नमः।

इस प्रकार से आवाहन करके गन्ध आदि से पूजा करने के उपरान्त हाथ में जल लेकर यह प्रार्थना करें-

ॐ अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।
सपत्नीपरिवाराश्च परिगृह्णन्तु मे बलिम्॥
ईशानोत्तरयोर्मध्ये क्षेत्रपालो महाबलः।
भीमनामा महादंष्ट्रः स च गृह्णातु मे बलिम्॥
ये केचित्विह लोकेषु आगता बलिकाङ्क्षिणः।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्न्यस्म्माद्वैश्श्वानरातपुरऽएतारमग्ने। एमेनमवृधन्नमृताऽ अमर्त्त्यं व्वैश्श्वानरङ्क्षैत्रजित्याय देवाः॥

वेतालादि परिवारयुतक्षेत्रपालादिसर्वभूतेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः भूतप्रेतपिशा-चराक्षस-शाकिनीडाकिनीसहितेभ्य इमं बलि सम०। भो! भो! क्षेत्रपालादयः अमुं बलिं गृह्णीत मम सकुटुमबस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिक० पुष्टिक० तुष्टिक० निर्विघ्नक० वरदा भवत। अनेन सार्वभौतिकबलिप्रदानेन क्षेत्रपालादयः प्रीयन्ताम्।

पश्चात् इन श्लोकों का उच्चारण करें–

ॐ बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ १ ॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ २ ॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नागाविद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥ ३ ॥
जगतां शान्तिकर्तारौ ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ ४ ॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।

उपरोक्त श्लोकों के उच्चारण के पश्चात् इस बलि को दुर्ब्राह्मण ले जावे तथा चौराहे पर रख कर अपने हाथ-पैरों को जल से धो लेवें।

पूर्णाहुतिः

आचार्य इस संकल्प को यजमान से करावें–

गणेश चल प्रतिष्ठा 'होमकर्मणः' संगता सिद्धयर्थं तत् सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि।

इस प्रकार संकल्प करने के पश्चात् चार अथवा बारह बार घी को यज्ञीय पात्र स्रुव के द्वारा स्रुचि नामक पात्र में ग्रहण कर शिष्टाचार से उस स्रुचि पर सुपारी-पान-पुष्प-रेशमी वस्त्र से वेष्टितकर पुष्पमाला से सुशोभित कर तथा सुगन्धद्रव्यसिन्दूर आदि द्रव्य से सजाकर स्रुचि पर रख आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र से पूजन करावें–

ॐ पूण्णार्दर्व्विपरापत सुपूण्णा पुनरापत।
व्वस्न्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जंठं॰ शतक्रतो॥

तत्पश्चात् अधोमुख स्रुव को रख स्रुचि को हाथों से यथोचित्त रूप से पकड़ कर तथा खड़े होकर आचार्य व सभी ब्राह्मण इन वैदिक मन्त्रों को पढ़े:-

ॐ समुद्द्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२॥ उदारदुपाठं॰ शुना सममृतत्वमानट्॥ घृतस्य नामगुह्यं यदस्ति जिह्वादेवानाममृतस्य नाभिः ॥ १ ॥

ॐ व्वयन्नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञेधारया मा नमोभिः। उपब्रह्मा शृणवच्छस्यमानञ्चतुः शृङ्गोवमीद्गौरऽएतत्॥ २ ॥

ॐ चत्वारिशृङ्गात्त्रयोऽअस्य पादा द्वेशीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य॥ त्रिधाबद्धोव्वृषभोरोरवीति महोदेवो मँर्त्त्यां२॥ ऽआविवेश॥ ३॥

ॐत्रिधाहितम्पणिभिर्गुह्यमानङ्गविदेवासोघृतमन्ववविन्दन्। इन्द्रऽएकठं॰ सूर्य्य ऽएकञ्जजानव्वेनादेकठं॰ स्वधयानिष्टतक्षुः॥ ४॥

ॐ एताऽअर्षन्तिहृद्यात् समुद्द्राच्छत व्रजारिपुणानावचक्षे। घृतस्यधाराऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो व्वेतसो मध्यऽआसाम्॥ ५॥

ॐ सम्म्यक्स्रवन्तिसरितोनधेनाऽअन्तर्हृदा मनसापूयमानाः। एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्यमृगाऽइवक्षिपणोरीषमाणाः॥ ६॥

ॐ सिन्धोरिवप्राध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः॥ घृतस्यधारा ऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः॥ ७॥

ॐ अभिप्प्रवन्तसमनेवयोषाः कल्याण्यः स्मयमानासोऽअग्निम्॥ घृतस्यधाराः समिधो न सन्तताजुषाणो हर्य्यतिजातवेदाः॥ ८॥

ॐ कन्याऽइवव्वहतुमेतवाऽ उऽअञ्ज्यञ्ज्ञाऽअभिचाकशीमि। यत्त्रय सोमः सूयतेयत्र-यज्ञोघृतस्यधारा अभित त्पवन्ते॥ ९॥

ॐ अभ्यर्षतसुष्टुतिङ्गव्यमाजिमस्म्मासुभद्द्राद्द्रविणानिधत्त। इमंयज्ञन्नयतदेवतानो घृतस्यधारा मधुमत्पवन्ते॥ १०॥

ॐ धामन्तेव्विश्श्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहद्युन्तरायुषि॥ अपामनीकेसमिथेयऽआभृतस्तमश्यामममधुमन्तन्तऽऊर्म्मिम्॥ ११॥

ॐ पुनस्त्वादित्त्यारुद्रा व्वसवः समिन्धतांपुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः। घृतेनत्त्वन्तन्वं व्वर्धयस्वसत्याः सन्तुयजमानस्यकामाः॥ १२॥

ॐ सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्त धाम प्प्रियाणि॥ सप्त होत्राः सप्तधा त्त्वा यजन्ति सप्त योनीराप्पृणस्व घृतेन स्वाहा॥ १३॥

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्या व्वैश्श्वानरमृत ऽआ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ १४॥

ॐ पूण्र्णा दर्व्विपरापतसुपूर्णापुनरापत॥ व्वस्नेव व्विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्जर्ठ० शतक्क्रतो स्वाहा॥ १५॥

पश्चात् स्त्रुचि में स्थित नारिकेल को अग्निकुंड में यथोचित् रूप से सीधा रख दें। तदनन्तर स्त्रुचि स्थित घी के शेष को इस वाक्य का उच्चारण करके प्रोक्षणी पात्र में त्याग करें–

इदमग्नये वैश्वानराय न मम॥

वसोर्धाराहोमकर्म

आचार्य वसोर्धाराहोम के निमित्त यह संकल्प करावें–

कृतस्य गणेशचलप्रतिष्ठा 'होम कर्मणः' साङ्गता सिध्यर्थं वसोर्द्धारां होष्यामि।

संकल्प के पश्चात् दो स्तम्भों में धारण की हुई, उदुंबर की सीधी मनोहरा बाहुमात्र प्रमाण की वसोर्धारा को प्रागग्र रख, उसके ऊपर शृंखला से परिपूर्ण निर्मल घी से ताम्र आदि द्वारा नीचे यवमात्र छित्र द्वारा आज्य को छोड़ते हुए अग्नि के ऊपर वसोर्धारा गिरावे। उसके मुख में सोने जिह्वा बाँधे, स्त्रुचि पात्र द्वारा नाली से अग्नि में गिरती हुई जो धारा है उस समय आचार्य व सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए इन मन्त्रों से हवन करावें–

ॐ सप्तेऽअग्ने समिधः सप्तजिहव्वाः सप्तऽ ऋषयः सप्तधामप्रियाणि। सप्तहोत्राःसप्तधात्वा यजन्तिसप्तयोनी रापृणस्व घृतेन स्वाहा॥ १॥

ॐ शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्श्च सत्यज्ज्या-ेतिश्श्च ज्ज्योतिष्माँश्श्च शुक्क्रश्श्चऋत-पाश्श्चात्यर्ठ० हाः॥ २॥

ॐ ईदृङ्चान्यादृङ्ञ सदृङ्चप्प्रतिसदृङ् च। मितश्च्चसम्मितश्च्चसभराः॥ ३॥

ॐ ऋतश्श्च सत्यश्श्च ध्रुवश्श्चधरुणश्श्च। धर्त्ता च व्विधर्त्ता च व्विधारयः॥ ४॥

ॐ ऋतजिच्च सत्त्यजिच्च सेनजिच्चसुषेणश्श्च। अन्तिमित्रश्च दूरेऽअमित्त्रश्श्च गणः॥ ५॥

ॐ ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊषणुः सदृक्षासः प्प्रति-सदृक्षासऽ एतन। मितासश्चसम्मितासोनोऽअद्य सभ्भरसो मरुतो यज्ञेऽअस्म्मिन्॥ ६॥

ॐ स्वतवाँश्चप्रघासी चसान्तपनश्च गृहमेधी च। क्क्रीडी च शाकी चोज्जेषी इन्द्रं दैवीर्व्विशोमरुतो नुवत्मानो भवन् वमिएमंयजमानन्दैवीश्श्चव्विशोमानुषीश्श्चानु-वर्त्मानो भवन्तु॥ ७॥

ॐ इमंर्ठ० स्तनमूर्ज्जस्वन्तन्ध यायां प्रपीनमग्ग्ने सरिरस्य मद्धे। उत्सज्जुषस्वमधुमन्तमर्व्वन्तसमुद्रियर्ठ० सदनमा-विशस्व ॥ ८॥

ॐ व्वसोः पवित्र मसिशतधारंव्व सोः पवित्र मसिसहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातुव्वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा॥ ९॥

हवन के पश्चात् जो घृतादि शेष हो उसे प्रोक्षणी पात्र में इस वाक्य का उच्चारण करके छोड़ दें–

'इदमग्नये वैश्वाराय न मम'

उपरान्त आचार्य [1]मूल मंत्र का दस बार जाप करके आत्वाहार्षम्[2] इस ध्रुवसूक्त से तथा [3]तत्लिङकमंत्र से पुरुषसूक्त[4] से एवं गणेशगायत्री[5] से व्याहृति सहित गणेश जी की मूर्ति का प्रतिष्ठान करके भूतशुद्धि कर्म करावें।

---

१. ॐ गं गणपतये नमः।

२. आत्वाऽहार्ष मन्तर भूध्रु वस्तिष्ठा विचाचलि। विशस्त्वा सर्वा वांछन्तृमा त्वद्राष्टमधिभ्रशत्॥ (य०अ० ११ मंत्र ११)

३. तत्लिङ्कमंत्र को ऋग्वेद संहिता में देखें।

४. ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुष सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमिर्ठ० सर्वतः स्पृत्वात्त्यातिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ १ ॥पुरुषऽ एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ २ ॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वऽ उदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि ॥ ४॥ ततो व्विराडजायत व्विराजोऽ अधि पूरुषः। स जातेऽ अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दार्ठ०सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥ तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादतः।

इन न्यासों को क्रम से करे:-

आमोदाय नमः	**शिरसी**
प्रमोदाय नमः	**शिखायाम्**
संभोदयाय नमः	**भ्रूवोः**
गणाधिपा	**यभ्रूमध्ये**
गलक्रिडाय	**चक्षुषो**
गणनाथाय	**नासिकायां**
गलक्रीडान्विताय	**वदने**
सुमुखाय	**जिह्वायां**
दुमुखायग्री	**वायां**
विघ्नेशाय	**हृदये**
विघ्ननाथाय	**वक्षासि**
गणनाथाय	**बाहुयुग्मे**

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जा ता ऽअजावय: ॥ ८ ॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रत:। तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं व्यदधु: कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमरू पादाऽ उच्येते ॥ १० ॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत:। उरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्यार्ठ० शूद्रोऽ अजायत ॥ ११ ॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो सूर्यो ऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥ नांभ्याऽ आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौ: समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिश: श्रोतात्तथा लोकाँ ऽअकल्पयन् ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ इध्म: शरद्धवि: ॥ १४ ॥ सप्तास्या-सन्परिधयस्त्रि: सप्त समिध: कृता:। देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽ अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: ॥ १६ ॥ [शु० युजुर्वेद. २१।१-१६]

५-गणेशगायत्री-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ॥ तंनो दंति: प्रचोदयात्।

विघ्नकर्त्रे	उदरे
विघ्नहर्त्रे	लिंगे
गजवक्राय	कन्धा
एकदन्ताय	नितंबे
लम्बोदराय	गुह्ये
व्यालयज्ञोपविताय	पादयो
जापकाय	जंङ्घयो
हारिद्राय	सर्वांगे

पश्चात् निम्न श्लोक उच्चारण का ध्यान करें:-

लम्बोदर नमस्तेस्त विघ्नौघस्य विनाशनम्।
मम् यज्ञ गृहाणेशमीश पुत्र प्रियं वद ॥ १ ॥
नमस्ते गजवक्राय सिद्धि-बुद्धि प्रदाय च।
नमस्ते मोदक रूपे नमो लम्बोदराय च ॥ २ ॥

पुनः इस मंत्र का उच्चारण करते हुए आचार्य सर्वकर्म में अग्र पूजा के अधिकारी पार्वती-शंकर पुत्र गणों में गणपति अर्थात् गणेशजी का ध्यान यजमान से करावें-

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम ऽआहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भ धम्।

इसके पश्चात् यजमान से आचार्य इस श्लोक का पुनः उच्चारण करवाके पुनः एकदन्त गणेशजी का ध्यान करावें।

ध्यानम्–

ध्यायामि दन्तिवदनं युगबाहुदण्डं,
पाशांकुशादिसहितं रदनैकयुक्तम्।
कर्णेन सूर्पसदृशेन लसत्पताकं,
सन्तर्जयन्तमिव विघ्नगणं गणेशम्॥

स्वागतं देव देवेश मद्भाग्यात्वमि ह्यागवः।
सान्निध्यं सर्वदा देव स्वार्चायां परिकल्पय॥

पश्चात् पंचरत्न प्रक्षिप्त कलश के जल से विधिवत् गणेश देवता की नाभिका आभिषेक करें, उसके पश्चात् देवता को कूर्चासन प्रदान करे।

दूर्वा विष्णुक्रांता, श्यामाक, पद्मपत्र, जिस कलश में गेरी गयी हो उस कलश के जल से आचार्य इन वैदिक मंत्रों का उच्चारण कर पाद्य समर्पित करावें:–

इमा आपः शिवा०....................

पाद्यास्ता जुषतां प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्णतु भगवान्मद्य गणपतये नमो नमः॥

पाद्य समर्पित करने के पश्चात् जल, दूध, कुशा, अक्षत, यवतिल और दूर्वा जिस कलश में गेरी गयी हो उस कलश के जल से निम्न मंत्र का उच्चारण कर अर्घ प्रदान करें–

इमा आपः शिवा० ....

पाद्य समर्पित करने के पश्चात्, एला, लवंग, कर्पूर, मिश्रित जल से इस वैदिक मंत्र व गणपत्यअर्थवशीर्ष का उच्चारण करके आचार्य गणेशजी देवता को आचमन एवं स्नान करावें।

वैदिक मंत्र—

गणानांत्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रिय पतिर्ठ० हवामहे निधीनांत्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भ धम्।

गणपत्यअर्थवशीर्ष

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्ताऽसि। त्वमेव केवलं धर्ताऽसि। त्वमेव केवलं हर्ताऽसि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्माऽसि। त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यन् ॥ १ ॥

ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि ॥ २ ॥

अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। वाऽनूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तत्। सर्वतो मां पाहि-पाहि समन्तात् ॥ ३ ॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयस्त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयस्त्वं सच्चिदानन्दाऽद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्माऽसि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥ ४ ॥

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। सर्वं त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः त्वं चत्वारि वाक् पदानि ॥ ५ ॥

त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं

शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥ ६ ॥

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तर। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चा- ऽन्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तरपूम्। नादः सन्धानम्। सर्ठ० हिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री- छन्दः। गणपति-देवता। ॐ गं गणपतये नमः॥ ७ ॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ ८ ॥
एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्॥
रक्तं लम्बोदरं शूपकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्त-गन्धाऽनुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्॥
भक्ताऽनुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात् परम्॥
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥ ९ ॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रथमपतये नमस्तेऽस्तु। लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय वरदमूर्तये नमः॥ १०॥

सुखमधते। स पञ्चमहापापत्प्रमुच्यते। सायमधीग्रान दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति।

सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। सर्वत्राऽधीयानो-ऽपविघ्नो भवति। धर्ममर्थं कामं मोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद् दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत् ॥ ११ ॥

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्या-मनश्नन् जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न विभेति कदाचनेति ॥ १२ ॥

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वै श्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते ॥ १३ ॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा सूर्यवचस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रा भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। स सर्वविद् भवति य एवं वद ॥ १४ ॥

इसके उपरान्त न्यासादि कर्म करके ही गणेश जी का पूजन विधिवत् करें।

गणेश पूजनम्

ध्यानम्–

ध्यायामि दन्तिवदनं युगबाहुदण्डं,
पाशांकुशादिसहितं रदनैकयुक्तम्।
कर्णेन सूर्पसदृशेन लसत्पताकं,
सन्तजर्यन्तमिव विघ्नगणं गणेशम्॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठं हवामहे निधीनांत्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भ धमा त्त्वमजासि गर्ब्भ धम्॥

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्व्वतः स्पृत्वत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

आवाहनम्–

आवाहयामि गणनाथ मुमासुतं तं,
सिन्दूर शोणवपुषं गजवक्त्र शोभम्।
दुर्गां च तस्य जननीं परिपृष्ठ संस्थाम्,
भक्तयाऽऽह्वयामि सुतहार्दगल कुचाढ्याम्॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐपुरुष ऽएवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

आसनम्—

आवाहिताय च ददामि यथा स्वशक्ति,
स्वर्णासनं मणिमयं कुसुमासनं वा।
एकेन दन्तमूलेन विराजमानो,
गृह्णातु भक्तिनिहितं सदयाऽम्बिका च॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐएतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्श्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

पाद्यम्—

पादार्थमेतदुदकं सुरसिन्धुरेवा-
गोदाशतद्रुसरयू - यमुनादिकाभ्यः।
भक्तयाऽऽहृतं सुरभिवस्तुभिरामदच्चम्बु,
प्रीत्या गृहाण सदयं सविनायका मे॥

ॐ गणानांत्वा० ....

त्रिपादूर्द्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि॥

अर्घ्यम्—

अर्घ्यं गृहाण मम देव तथाऽम्ब मह्यं,
प्रीतौ सदा प्रमुदितौ भवतां भवन्तौ।
अष्टाङ्गमर्घ्यमुदितं मुनिभिः पुराणैर्भक्त्या,
मयां तु विहितं जलमात्रमेव॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः।
स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

पंचामृतम्–

स्नाहीश दुग्ध-दधि-साज्यमधु,
प्रपूर्णैर्दर्मोदकैः समितसौरभवस्तुयुक्तैः।
अम्बां च सावययतस्त्वमुदीक्षितोऽभूः,
स्नानार्थमेव शिवया जगतः शिवाय॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐतस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

शुद्धोदकम्–

गाङ्गोदकं च यमुनोदकमेतदीश,
गोदावरीजलमिदं सरयूजलं च।
रेवोदकं च मम भावनया प्रणीतं,
शुद्धोदकं परिगृहाण सुनु प्रसन्नः॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐतस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जा ता ऽअजावयः॥

वस्त्रम्-

कौशेयमेतदरुणं वसनद्वयं यद्,
भक्त्याऽर्पितं परिगृहाण समानवर्णम्।
लम्बोदरस्य जननित्वमीदमम्ब,
पीतारुणं वसनयुग्ममिदं गृहाण॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐ तं य्यज्ञं बर्हिषि प्प्रौक्षन्न्पुरुषं जातमग्ग्रतः।
तेन देवा ऽअयजन्त साद्ध्या ऽऋषयश्च ये॥

यज्ञोपवीतम्-

ॐ कार्पासमेतदखिलं नवतन्तुसिद्धं,
ग्रन्थित्रयैर्युतमहर्निशयं सधेयम्।
अग्रयं पवित्रमथकेशहरिप्रतिष्ठं,
यज्ञोपवीतमिदकं कृपया गृहाण॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्प्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमरूपादाऽउच्च्येते॥

गन्धम्-

कर्पूरवासितजलेन सुघृष्टमेतं,
श्रीभद्रारुजमिमं सुविलेपनाय।
गन्धं गृहाण शिवपुत्र शिवाय मे स्या,
हारिद्रगन्धग्रहणाय शिवे प्रसीद॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रो ऽअजायत॥

अक्षतान्-

ॐ शाल्यादिधान्यतुषकण्डनजाः सुदिव्या,
नापि क्षता न दलिताः परितोऽवदाताः।
ये तण्डुला गणपते प्रणयान्मया ते,
भालेऽर्पिताः परिगृहाण दयस्व मह्यम्॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥

पुष्पमालाम्-

ॐ पुष्पाणि गन्धरसवर्णसुरूपमाब्जि,
कालोपजानि विनयेन मयाऽऽ हृतानि।
लम्बोदराय जननीसहिताय तुभ्यं,
भक्त्याऽर्पये परिगृहाण दयस्व मह्यम्॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ ऽअकल्प्पयन्॥

धूपम्–

ॐ लाक्षादिगुग्गुलमयं गुडभागपूर्णं,
सर्पिः समन्वितमिमं पुरतः प्रकीणम्।
धूपं गृहाण कृपया मम वक्रतुण्ड,
त्वं चापि देवि गिरजे सुरभिं गृहाण॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥

दीपः–

ॐ कार्पासवर्तिगुणितं घृतपूरितं तं,
ध्वान्तापहं सकलमङ्गलहेतुभूतम्।
दीपं प्रभापटलबोधितवस्तुजातं,
भक्त्याऽर्पितं प्रतिगृहाण गजास्य दुर्गे॥

नैवेद्यम्–

ॐ अन्नं चतुर्विधमिदं कृतमोदकं च पक्वं,
घृते विविधमिष्टफलैः समेतम्।
एकं गृहाण गणनायक मोदकं त्वं,
शैषान् द्विजातय इमान्प्रददे प्रसीद॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्यानारण्ण्या ग्राम्म्याश्च ये॥

ताम्बूलम्–

ॐ ताम्बूलमर्पितमिदं सुधयासमेत,
जातीफलेन सदमनेन लवङ्गकेन।
कर्पूरपूगपरिपूरितमेव देव,
तुण्डेन चर्वगिरिजे च गृहाण मोदात्॥

ॐ गंणानांत्वा० ....

दक्षिणाः–

ॐ द्रव्यं हिरण्यरजतादि यथास्वशक्ति,
गन्धादिपूजितमिदं बहुमूल्यकायम्।
भक्त्याऽपर्यामि तव पादसरोज युग्मे,
शान्तिं प्रयच्छतु भवान् भुवनेश्वरी च॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम॥

ॐ गणानांत्वा० ....

नीराजनम्–

ॐ निःशेषदीप्तिनिलयं घृतवर्त्तियुक्तं,
दीपं सुरेशि! परिस्तव रोचयामि।
निःशेषराजनकरं मम मानसस्य,
भूयाच्छिवे: करुणया तव सात्मजायाः॥

तिरेक

विषा

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्॥

पुष्पाञ्जलिः—

ॐ लम्बोदरोसि सुमुखः कपिलो गजास्य,
धूम्रद्ध्वजोगणपतिर्विकटैकदन्तः।
मातङ्गकर्णकविनायक विघ्ननाश!,
हे भालचंद्र! मम पुष्पचय गृहाण॥

ॐ गणानांत्वा० ....

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्यासन्तिदेवाः॥

[1]अभिषेकः

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण उत्तर की ओर मुखकर पूर्वाभिमुख बैठे यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी तथा कुटुम्ब के सदस्यों का पूर्वस्थापित सबकलशों के जल को शुद्ध ताँबे के चौड़े मुख के पात्र में थोड़ा-थोड़ा लेकर 'दूर्वा और पंचपल्लवादि' से निम्न वैदिक मंत्रों व पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करके अभिषेक करें-

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्प्पतेष्ट्वा साम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्म्यसौ ॥ १ ॥

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाऽग्नेः साम्म्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥ २ ॥

अभिषेक की प्रधानता-

उत्तरतन्त्रे- अभिषेकं बिना भूते आचार्यं करोति यः।
चत्वारि तस्य नश्यन्ति आयुर्विद्यायशोबलम् ॥
धनं यशो बलायुष्यं महापातकनाशनम्।
सर्वाशा पूरकं सर्वमन्त्र दोषविनाशनम् ॥
सर्वार्थसाधनं देवि सर्वतीर्थफलप्रदम्।
अभिचारहरं सर्वं ग्रहदोषविनाशनम् ॥
तेजोवृद्धिकरं देवि बलवृद्धिकरं परम्।
तक्षकेनाप दष्टस्य विषपीडाविनाशनम् ॥
तैजोह्रासे बलह्रासे बुद्धिह्रासे धनक्षये।
स्त्रीकृतेष्वपि दोषेषु शरीरे मानसे तथा ॥
विकारे देशिकः कुर्यादभिषेकं विचक्षणः।
असौभाग्ये च नारीणामभिषेकः प्रवर्तते ॥

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्।अश्विनौभैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्च्च-सायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन व्वीयर्यायान्ना-द्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसे ऽभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥

पौराणिक श्लोकों द्वारा अभिषेक

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥ १ ॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥ ३ ॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४ ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सिताऽर्कजा ॥ ५ ॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव-दानव-गन्धर्वा - यक्ष-राक्षस-पन्नगाः ॥ ६ ॥
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये ॥ ८ ॥

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामाऽर्थसिद्धये ॥ ६॥
अमृताभिषेकोऽस्तु।

पश्चात् इस संकल्प को करें–

ततः कृतस्याभिषेक कर्मणः सांगफलप्राप्तये अभिषेक कर्तृभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां विभज्य ददे।

अथोत्तर पूजनम्–

इस संकल्प को करें–

कृतस्य गणेशचलप्रतिष्ठा 'होमकर्मणः' साङ्गतासिद्धये आवाहित देवानामुतर पूजां करिष्ये॥

संकल्प के उपरान्त विधिविधान से गणपत्यादि देवताओं की पूजा करें।

उत्तर पूजन के उपरान्त भस्मधारण कर्म करके ही अग्नि का विर्सजन करें।

गणेशजी का पंचोपचार पूजन–

गणानान्त्वा०	**गंध**
गणानान्त्वा०	**पुष्प**
गणानान्त्वा०	**धूप (हस्तौ प्रक्षाल्य)**
गणानान्त्वा०	**दीप (... ....)**
गणानान्त्वा०	**नैवेद्य**

आचार्यादि दक्षिणा संकल्प :–

कृतस्य 'गणेशचलप्रतिष्ठा' होम कर्मणः सांगतासिध्यर्थं तत्संपूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो, महर्त्विग्भ्यः

सूक्तपाठकेभ्यो, मंत्रजापकेभ्यो, हवनकर्तृभ्योः अन्येभ्यो देवयजनमागतेभ्यश्च दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये॥

गौदान संकल्प–

कृतस्य गणेशचलप्रतिष्ठाकर्मणि सांगता सिद्धये तत्संपूर्ण फल प्राप्त्यर्थं आचार्यादिभ्यो गौदान महं करिष्ये।

वृषभदान संकल्पः–

कृतस्य गणेशचलप्रतिष्ठाकर्मणि सांगता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च ब्रह्मणे वृषभदान महं करिष्ये।

अश्वदान संकल्पः–

कृतस्य गणेशचलप्रतिष्ठाकर्मणि सांगता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च सदस्याय अश्वदान महं करिष्ये।

ब्राह्मण भोजन संकल्पः–

कृतस्य गणेशचलप्रतिष्ठा कर्मणि सांगतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि॥

भूयसी दक्षिणा संकल्पः–

कृतस्य गणेशचलप्रतिष्ठा कर्मणि न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थं दीनानाथेभ्यश्च यथा शक्ति भूयसीदक्षिणां विभज्य दातु मह मुत्सृज्ये॥

उपरोक्त कर्मो की समाप्ति के पश्चात् यजमान परिवार, सम्बन्धि, मित्रगण, हर्षोल्लास के साथ गणपति देवता का प्रसाद ग्रहण करें।

॥ गणेश प्रतिष्ठा समाप्तः॥

'नारद पंचरात्रोक्त'

हनुमत्-प्रतिष्ठा

कर्मारम्भ से पूर्व आचार्य यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी को शुभ दिन तथा शुभसमय में प्रायश्चित एवं ज्ञाताज्ञातपापों के शमनार्थ पंचगव्यप्राशन इस श्लोकानुसार करवायें-

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्॥

पंचगव्यप्राशन कर्म के उपरान्त स्नानादि कार्यो से निवृत्त होने पर यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी को पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख शुभासन पर बैठाकर निम्न तीन नामों का उच्चारण करवाते हुए आचार्य उनसे आचमन करवायें-

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः,

पश्चात् आचार्य निम्न नामोच्चारण के द्वारा यजमान का हस्त प्रक्षालन करवायें-

ॐ हृषीकेशाय नमः ॐ गोविन्दाय नमः

आचमन एवं हस्तप्रक्षालन के पश्चात् आचार्य कुशा अथवा दूर्वा के द्वारा यजमान एवं समस्त प्रतिष्ठा सामग्री की पवित्रता हेतु निम्न श्लोक का उच्चारण करवाते हुए जल छिड़के-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥

उपरान्त आचार्य यजमान से घृत का रक्षादीप अक्षत पुंज पर स्थापित करवाकर प्रज्वलित करे तथा इस श्लोक का उच्चारण कर उनसे प्रार्थना करवाते हुए गन्धाक्षत अर्पण करवाये-

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

उपरोक्त कर्म के उपरान्त गृह के (मण्डप) उत्तरभाग में प्रथम दिन [1]शान्ति पाठ आचार्य सहित अन्य ब्राह्मण भी करें।

प्रधान-संकल्पः

यजमान से इस संकल्प को आचार्य करावें-

अस्यां हनुमत् मूर्तौ देवता सानिध्यार्थं दीर्घायुलक्ष्मी सर्वकामसमृध्यक्षयसुखप्राप्तिकामः हनुमत् प्रतिष्ठा करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिध्यर्थं, [2]महागणपतिपूजनं, स्वस्तिपुण्याहवाचनम्, मातृकापूजनम्, नान्दीश्राद्धम्, आयुष्यमन्त्रजपम् आचार्यादिवरणाम् करिष्ये।

स्वस्तिवाचन और संकल्प के उपरान्त आचार्य वेदी का निर्माण कर चारों द्वारों को (पुष्प-मालाओं) के द्वारा शोभित करें, पश्चात् इस मंत्र का उच्चारण कर सर्वोषधि द्वारा मूर्ति का प्रक्षालन करें-

ॐ या ऽओषधीः पूर्व्वा जाता देवेब्भ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बब्भ्रूणामहर्ठ० शतं धामानि सप्त च॥

प्रक्षालन के उपरान्त हनुमानजी की मूर्तिके अंगों में उर्द्वतन लगावें एवं सप्तधान्यकी पीठी से लेपन कर शुद्ध जलसे मूर्तिको स्नान करावें। पश्चात् हनुमानजी की मूर्तिका अग्न्युत्तारण करें-

आचार्य अग्न्युत्तारण कर्म के लिए यह संकल्प यजमान से करावें-

---

१. शान्तिपाठ के लिए इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या ७५ देखें।

2. महागणपति पूजनम्, स्वस्ति पुण्याहवाचनम्, मातृका पूजनम्, नांदीश्राद्धम्, आयुष्यमंत्रजपम् व आचार्यादिवरण कर्म ग्रहशांति प्रयोग से करें।

करिष्यमाण हनुमत् प्रतिष्ठाकर्मणि न्यूनातिरिक्त दोष परिहार्थं अथवा धातादिदोष परिहारार्थं अमुक गोत्र: अमुक शर्माहं अस्यां सुवर्णमय अथवा रजतमय श्री हनुमत् प्रतिमाया: सान्निध्यार्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये॥

संकल्प के उपरान्त किसी पात्र में सोनेकी अथवा रजत की हनुमानजी की प्रतिमाको पंचामृतलेपन पूर्वक पान के ऊपर रख इन वैदिक [1]मंत्रों का उच्चारण कर अग्न्युत्तारण कर्मको करवायें–

उपरान्त हनुमानजी की मूर्तिका जलाधिवास करें, तथा ईशानकोण की ओर [2]सर्वतोभद्र पर अर्थात् शैय्यापर मूर्तिको स्थापित कर इस मंत्रका उच्चारण कर उत्थापन कर्म को आचार्य विधिवत् करावें–

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुत: सुदानव ऽइन्द्र प्राशूभर्वा सचा॥

उत्थापन के उपरान्त आचार्य पुण्याहवाचन कर्म को करावे। दस दीपकों को प्रज्वलित (जला) कर, इन [3]हिरण्यगर्भ: आठ ऋचाओं मंत्रों का पाठ करें–

---

१. अग्न्युत्तारण के मंत्रों के लिए इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या १३७ पर देखें।

२. सर्वतोभद्र पूजन व स्थापन के क्रम के लिए इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या १४२ देखें।

३. हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम १ य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देव:। यस्य छायामृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम २ य: प्राणतो निमिषतो महित्वैक रुद्राया जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद कस्मै देवाय हविषा विधेम ३ यस्यमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहु: प्रदिशो यस्य बाहु कस्मै देवाय हविषा विधेम ४ येन द्यौरुग्रा पृथिवीं च इडहा येन स्व: स्तभितं येन नाक:। यो अन्तरिक्षे रजसो विमान: कस्मै देवाय हविषा विधेम ५ यं क्रदसी अवसा तस्तमाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमांने। यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ६ आपो ह यद्वृहतीविंश्वमायन् गर्भ दधेना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरे क: कस्मै देवाय हविषा विधेम ७ यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधानां जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम ८ [ऋ० १०/१२१। १-८]

पश्चात् पीलेवस्त्र से वेष्टित कर इस क्रम से प्राणप्रतिष्ठा करें–

सर्वप्रथम दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ें–

विनियोगः–

ॐ अस्य प्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्म, विष्णु, रुद्राः ऋषयः, ऋग्यजुः, सामानि छन्दासि, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम् प्राण प्रतिष्ठायां विनियोगः।

अं कं खं गं ङं, आकाश वाय्याग्नि सलिल भूम्यात्मोज अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥

इं चं छं जं झं ञं ईं, शब्दस्पर्शरूपगन्धात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥

टं ठं डं ढं णं ऊं श्रोतत्वक् चक्षु-जिह्वा, घ्राणात्मने मध्यमाभ्यां वषट् ॥ ३ ॥

एं तं थं दं धं नं वाक्पाणि पाद पायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां हुम् ॥ ४ ॥

ॐ पं फं बं भं मं ओं वचनादागमन, विसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥ ५ ॥

अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः मनोबुद्धि, चिता, ऽहङ्कारात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

एवं हृदयादिषु विन्यस्य-

नाभ्यादि पादान्तं–आं नमः। नाभ्यादि हृदयान्तं–ह्रीं नमः। हृदयादि शिरोऽन्तं–क्रौं नमः। इति विन्यस्य, हृदये पूर्वादितः।

१. यं त्वगात्मने नमः। २. रं असृगात्मने नमः

३. लं मासात्मने नमः। ४. वं मेदात्मने नमः।
५. शं अस्थ्यात्मने नमः। ६. षं मज्जात्मने नमः।
७. सं शुक्रात्मने नमः। ८. हं प्राणात्मने नमः।
९. लं जीवात्मने नमः। १०. क्षं सर्वात्मने नमः।

उपरोक्त दसनामों का क्रम से उच्चारण कर देवता का स्पर्श कर, मूल मंत्र से सिर से पैर तक व्यापक मुद्रा प्रदर्शित कर निम्न श्लोक का उच्चारण कर ध्यान करें–

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुण सरोजाधिरूढा कराब्जैः, पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमणिगुणमप्यङ्कुशं पञ्चवाणान्। बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या, देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥

ध्यान के पश्चात्, मानसोपचार से पूजनकर, हृदय में हाथ रख इन प्राणप्रतिष्ठा मंत्रों को पढ़ें –

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य जीव इस स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं ष सं हं सः देवस्य सर्वेन्द्रियाणि ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य वाङ्मनश्चक्षुः, श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राण इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

नेत्रोन्मीलनम्–

आचार्य हनुमानजी की मूर्ति के मुख और नेत्र में स्वर्ण की शलाका के द्वारा सहद व घृत को मिश्रित कर इस आधे वैदिक मंत्र का उच्चारण कर चिह्न करें–

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुण-स्याग्ने:।

आचार्य इस वैदिक मंत्र का उच्चारण कर पायस, भक्ष्य, भोज्य, दर्पण आदि मूर्ति को दिखा देवें-

ॐ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्न मृतंमर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन्॥

उपरान्त किसी तेजस पात्र (धातुपात्र) में मधु भरकर देवता के सामने रखें, मूर्ति के दाहिने ओर बाई ओर तच्चक्षु इस मंत्र से हवन करें-

हवन की समाप्ति के उपरान्त यजमान, आचार्य को नवीन पंचवस्त्र, (अलंकार सामर्थ्य हो तो) तथा द्रव्यादि देवें।

चार प्रकार के अन्नों को देवता के समक्ष रख कर, मण्डप के चारों द्वारों पर विधिवत् कलश की स्थापना करे।

पश्चात् मूर्ति को पंचामृत व शुद्धोदक से स्नान करावें, तथा एकसौआठ कलशों की स्थापना कर, उनमें से बीस-बीस घड़े लेकर मूर्ति को स्नान करावे, उपरान्त पृथक्-पृथक् आठ कलशों के जल द्वारा स्नान करावें।

[१]पुरुषसूक्त, पावमानसूक्त, अस्यवागीयसूक्त, रुद्रसूक्त, महाशांतिसूक्त, सौरसूक्त व वायुसूक्त का पाठ आचार्य सहित प्रतिष्ठा स्थल पर उपस्थित सभी ब्राह्मण स्नान करवाने के समय करें। इसके उपरान्त विधि विधान से हनुमान जी का पूजन आचार्य सहित सभी ब्राह्मण यजमान से करावें।

---

१. पुरुषसूक्त, पावमानसूक्त, अस्यवागीयसूक्त, रुद्रसूक्त, महाशांतिसूक्त, सौरसूक्त व वायुसूक्त के लिए मेरे द्वारा रचित-टीकाकृत, हनुमत्-प्रतिष्ठा-पद्धति में देखें।

हनुमत्-पूजनम्

ध्यानम्—

मनोजवं मारुत-तुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथ-मुख्यं श्रीरामदूतं शरण प्रपद्ये॥
ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्व्वतः स्पृत्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

आवाहनम्—

ॐ पुरुष एवेदर्ठ० सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

आसनम्—

ॐ पुरुषऽएवेदर्ठ० सर्व्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यद्दन्ने नातिरोहति॥

पाद्यम्—

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
विघ्नराजगृहाणोदं भगवन्भक्त वत्सल॥
ॐ एतवानस्य महिमातो ज्यायाश्च पूरुषः।
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिविः॥

अर्घ्यम्—

ॐ प्रजायतौ त्वा देवताया मुपोदके
लोकेनिदध्यभ्यसौ अयनः शोशुचदधम्॥

पंचामृतम्—

पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पंचामृतं यथाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशो भवत्सरित् ॥

शुद्धोदक—

सुवर्णकलशानीतैर्गङ्गादि- सरिदुद्भवैः।
शुद्धोदकैः कपीश! त्वामभिषांमि मारुते॥
ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्ज्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे॥

कटिसूत्रम्—

ग्रथिता नवभी रत्नैर्मेखलां त्रिगुणीकृताम्।
मौञ्जंमोञ्जीमयं पीतां गृहाण पवनात्मज!॥

कौपीनम्—

कटिसूत्रं गृहाणेदं कौपीनं ब्रह्मचारिणः।
कौशेयं कपिशार्दूल! हरिद्रक्तं सुमंगलम्॥

उत्तरीयम्—

पीताम्बर-सुवर्णाभमुत्तरीयार्थमेव च।
दास्यामि जानकी प्राण-त्राणकारण! गृह्यताम्॥

वस्त्रोपवस्त्रम्—

ॐ तस्माद्यज्ञातसर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूँस्ताँश्चके व्वायव्यानारण्या ग्ग्राम्याश्च ये॥

यज्ञोपवीतम्—

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरः॥

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्यं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

गन्धम्—

श्री खण्डंचन्दनं दिव्यं गन्धाठ्य सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रो ऽअजायतः॥

अक्षतान्—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरः॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रियऽ ऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रानव्विष्ठया मतीयोजाविन्द्र ते हरी॥

पुष्पाणि—

माल्यादीनि-सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोदध्वं पुष्प्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽइव सजि्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः॥

अबीरम्–

नानापरिमलै द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीर नामकं चूर्ण गन्धं चारु प्रतिगृह्यताम्॥

सिन्दूरम्–

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्य सुखवर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

धूपम्–

वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आध्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः॥

दीपम्–

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो ऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥

नैवेद्यम्–

नैवेद्यं गृह्यतां देव! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
इप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ताम्बूलम्—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्न्वत।
व्वसन्तो ऽस्यासीदाज्ज्यं ग्रीष्म्म ऽइध्मः शरद्धविः॥

दक्षिणाः—

हिरण्यगर्ब्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्यै देवाय हविषा व्विधेम।

आरती—

कदलीगर्भसंम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्प्रायि धामभिः दिवः सदार्ठ० सि बृहती व्वितिष्ठसऽआत्त्वे षं वर्त्तते तमः॥

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मेऽअस्तु दशवीरर्ठ० सर्व्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्प्रजानि पशूसनि लोक-सन्न्यभयसनि अग्निः प्प्रजां बहुलां मे करोत्त्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासु धत॥

पुष्पांजलिः—

नाना-सुगन्धि-पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः॥

प्रदक्षिणाः—

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा-पाप संभवः।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष! त्वमेव शरणं मम॥
यानि कानि च पापनि जन्मान्तर-कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥

प्रणाम—

मनोजवं मारुत-तुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथ-मुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥
नमस्तेऽतु महावीर! नमस्ते वायुनन्दन।
विलोक्यं कृपया नित्यं त्राहि मां भक्तवत्सल!॥

हनुमान जी के पूजन की समाप्ति के उपरान्त इस श्लोक का उच्चारण कर पुनः प्रार्थना करें—

हनुमानञ्जनी सूनु वार्युपुत्रो महाबल।
रामेष्ट फाल्गुनी सखः पिगाक्षोऽमितविक्रमः॥
समुद्रोल्लघनं चैव सीता शोकविनाशनः।
लक्ष्मण प्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा॥

ध्यान करें—

मनोजवं मारुत-तुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमंता वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथ-मुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

अथ कुशकण्डिका

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव 'भवामि' इति। पठित्वा तत्रोपवेशनम्। 'भवामि' इति ब्रह्मणः प्रत्युक्तिः। ब्रहा वाग्यतश्च भवेत्। ततः प्रणीतापात्रं सव्यहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तगृहीतेनोदकपात्रेण तत्र जलं सम्पूर्य पश्चादास्तीर्णकुशैषु दक्षिणहस्तेन निधाय (कुशैराच्छाद्य तत्पात्रमालभ्य ब्रम्हणोमुखमवलोक्य ईक्षणमात्रेण ब्रम्हणाऽनुज्ञातः उत्तरत आस्तीर्णेषु कुशेषु निदध्यात्। ततो द्वादशानां परिस्तरण कुशानां चतुरो भागान् वामहस्ते कृत्वा एकैकभागेन आग्नेयादीशानान्तम्, ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। इतरथा वृत्तिः। तत उत्तरतः स्तीर्णकुशेषु द्विशः पात्राणि यथासम्भवं न्युब्जानि उदक्संस्थानि प्राक्संस्थानि वा आसादयेत्। पवित्रे

अग्निदेव के दक्षिण दिशा की तरफ ब्रह्म देव के लिए कुशासन रखे। अग्नि के उत्तर दिशा में 'प्रणीता पात्र' के लिये दो आसन रखे।

ब्रह्मा के ही आसन पर ब्रह्मा को बैठा दे और कहे–हे ब्रह्मन् जब तक कर्म की समाप्ति न हो तब तक आप ब्रह्म के पद पर आसीन हो। ब्रह्मा मैं होता हूँ–यो कह कर पूर्व स्थापित आसन पर बैठे, तदनन्तर ब्रह्मा मौन हो जाये, फिर प्रणीता पात्र को बायें हाथ में धारण कर दाहिने हाथ से ग्रहण किये हुए जलपात्र से उस प्रणीता पात्र में जल को भरकर पहले से बिछी हुई कुशाओं पर दाहिने हाथ से रखकर कुशों द्वारा आच्छादन कर उस पात्र को स्पर्श कर ब्रह्मदेव के मुख को देखकर ईक्षण मात्र से ब्रह्मा की आज्ञा लेकर उत्तर दिशा की तरफ बिछी कुशाओं पर रख दे, तदनन्तर बाहर परिस्तरण कुशाओं के चार भागों को बायें हाथ में रखे उसमें से एक–एक भाग से परिस्तरण अग्निकोण से ईशानादि में ही करें। तदनन्तर–पश्चिम दिशा से उत्तर दिशा की ओर बिछी कुशाओं पर दो–दो पात्रों को यथा सम्भव

छेदनकुशाः। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। संमार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्त्रः। स्त्रुवः। आज्यम्। तण्डुला। पूर्णापात्रम्। उपल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय तत्तद्ग्रहवस्त्राणि। अधिदेवताद्यर्थं श्वेतानि। तत्तद्ग्रहवर्णाः। तत्तद्ग्रह पुष्पाणि। तत्तद्ग्रहधूपाः तत्तदग्रहनैवेद्यानि। फलानि। दक्षिणाः वितानम्। अर्कादिसमिधिः। सयवतिलाः पूर्णाहुत्यर्थं नारिकेल-स्त्रादि। ततः पवित्रकरणम्। आसादितकुशपत्रद्वयं स्थौल्येन समं मध्यशल्यरहितं वामहस्ते कृत्वा अग्रतः प्रादेशमात्रं परिमाय मूले तयोरुपरि कुशत्रयमुदग्ग्रं निधाय तत्कुशत्रय तयोर्मूलभागेन प्रादक्षिण्येन परिवेष्टय तयोः प्रादेशपरिमणमग्रभागं वामस्ते कृत्वा अवशिष्टं मूलभ्भागंकुशत्रयं च दक्षिणहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन त्रोटयेत् परित्यजेच्च। शिष्टं पत्रद्वयं पवित्रम्। तस्मिन्पत्रद्वयेऽविश्लेषाय ग्रथिं कुर्यात्। ततः प्रागग्रं प्रोक्षणीपात्रं

न्युब्ज-उदक् संस्थ या प्राक्संस्थ आसादन करे। दो पवित्र छेदन करने के लिए कुशा, प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जनकुशापाँच, उपयनकुशा सात, तीनसमीधा, स्रुव-घृत-चावल पूर्णपात्र आदि रखें, सूर्यादि ग्रहों के अनेक वर्ण के वस्त्र, अधिदेवता, देवता आदि के लिये सफेद वस्त्र, सूर्यादि ग्रहों के लिए अनेक प्रकार के चन्दन, तत्-तत् वर्ण के ग्रहों की धूप, ग्रहों के नैवेद्य-फल-दक्षिणा वितान सूर्यादि की समिधा यव और तिल, पूर्णाहुत्यर्थ नारिकेल और वस्त्र का आसादन करे। तदन्तर पवित्र बनाये जैसे-स्थापित मध्य (बीच कुशा से रहित) शल्य रहित दो कुशपत्रद्वय को आगे से बराबर नापकर बायें हाथ में कर कुशा के अग्रभाग से प्रादेशमात्र नापकर उसके मूल पर उन दोनों कुशा के ऊपर तीन कुशाओं को उद्ग्र रखकर उन कुशाओं को उस दो कुशा के मूल भाग से प्रादक्षिण्यक्रम से वेष्टन कर उन दो कुशपत्रों को प्रादेशमात्र परिमाण के अग्रभाग को बायें हाथ में कर बचे हुए मूल भाग को और तीन कुशाओं को दाहिने हाथ से तोड़ दें फिर उसका त्याग कर दें, शिष्ट पत्रद्वय ही पवित्र है। उस पत्रद्वय में अविश्लेषण के लिए गाँठ दे। तदनन्तर

प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र सपवित्रेण पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकं त्रिरासिच्य प्रोक्षणीपात्रं सव्ये कृत्वा दक्षिणेन वामहस्तधृतमेव कर्णसमुत्थाय नीचैः कृत्वा प्रणीतोदकेन पवित्रानोतेनोत्तानहस्तेन प्रोक्षणीः प्रोक्षयेत्। ततः प्रोक्षणीजलेन आज्यस्थालीं प्रोक्षणम्। चरुस्थालीं प्रोक्षणम्। समार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्त्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। ततस्ते पवित्रे प्रोक्षणीपात्रे संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्रमग्निप्रणतयोर्मध्ये निदध्यात्। ततोऽग्नेः पश्चादाज्यस्थालीं निधाय तत्राज्यं प्रक्षिपेत् एवं चरुस्थाली मग्नेः पश्चिमतो निधाय तत्र सपवित्रायां त्रिः प्रक्षालियान् तण्डुलान् प्रक्षिप्य प्रणीतोदकमासिच्योपयुक्तं जलं तत्र निनीय ब्रम्हदक्षिणत आज्यम् आचार्य उत्तरतश्चरुमदग्धमस्त्रावितमण्डमन्तरूष्मपक्वं सुश्रृतं पचेत्। (केवलाज्ये तु उत्तराश्रितामाज्य स्थाली मग्नावारोपयेत्।)

प्रागग्र प्रोक्षणीपात्र को प्रणीता के समीप रख दे वहाँ से सपवित्र पात्रान्तर हाथ से प्रणीता पात्र से जल को तीन बार आसेचन कर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में कर दाहिने से बायें हाथ से धारण किये हुए ही कान की तरफ उठाकर नीचे की तरफ कर प्रणीतापात्र के जल से पवित्र द्वारा ग्रहण किये हुए, उत्तानहाथ से प्रोक्षणीपात्र का प्रोक्षण करें। प्रोक्षणी जल से आज्यस्थाली का प्रोक्षण करे। चरुस्थाली का प्रोक्षण करे। संमार्जन कुशाओं का प्रोक्षण करे। उपयमन कुशाओं का, समिधा का, स्रुवका आज्यका और पूर्णपात्रका प्रोक्षण करे। तदन्तर उन दोनों पवित्रों को प्रोक्षणी पत्र में स्थापन कर उस प्रोक्षणी पात्र को अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य में रख दे। फिंर अग्नि के पीछे आज्यस्थाली रख उसमें आज्य का प्रक्षेप करे। इसीप्रकार अग्नि के पश्चिम में चरुस्थाली रख सपवित्रवाली उसमें तीन बार धोये हुए चावलों को छोड़ प्रणीता पात्र के जल से आसेचन कर उपयुक्त जल को उसमें छोड़कर ब्रह्मा के

ततोऽग्नेर्ज्वलदुल्मुकमादाय ईशानादि प्रदक्षिणमीशान पर्यन्तमग्निमाज्यचर्वोः परितं भ्रामयित्वोल्मुकमग्नौ प्रक्षिप्य अप्रदक्षिणं हस्तमीशानकोणपर्यन्तं पर्यावर्तयेत्। अर्द्धश्रिते चरौ स्रुव गृहीत्वाऽधोबिलं सकृत् प्रतप्य संमार्जनकुशाना-ममग्रैरन्तरतः उपरि मूलादारभ्याग्रेपर्यन्तं प्राञ्चं सम्मृज्य कुश - मूलै - र्बहिरधः प्रदेशे अग्रादारभ्य प्रत्यञ्चं समृज्य संमार्जन कुशा नग्नौ प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनःस्रुवं प्रत्यप्य दक्षिणस्यांदिशि तंतस्थापयेत् तत् शृंतचरु स्रुवेण गृहीतेनाज्येनाभिघार्य आज्यस्थालीं चरोः पूर्वेणानीयोत्तरत उद्वास्याग्नेः पश्चिमतः स्थापयेत्। ततश्चरुमादाय उत्तरत उद्वास्य आज्यस्य पूर्वेणानीय आज्यस्योत्तरतः स्थापयेत्।ततो दक्षिणहस्तस्याङ्-गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं सङ्गृह्यवाम-हस्तस्याङ्गुष्ठा-नामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं संङ्गृह्यवा-महस्तस्याङ्गुष्ठा नामि काभ्यां तयोरग्रं संङ्गृह्य ऊर्ध्वा ग्रनेनम्रीकृत्य धारयन्ने वाज्ये प्रक्षिप्याज्यस्योत्पवनं

दक्षिण तरफ घी को आचार्य उत्तरदिशा से अदग्ध अश्रावित पक्वचरु को पका दे। तदन्तर अग्निकुंड या स्थण्डिल से जलते हुए, उल्मुक को लेकर ईशान कोण आदि से प्रदक्षिण कर ईशानकोण पर्यन्त अग्नि स्थित आज्य और चरु के चारों तरफ घुमकर उस उल्मुक को अग्नि में छोड़े दे। फिर अप्रदक्षिण क्रम से अपने हाथ को ईशान कोण पर्यन्त घुमा दे। चरु के आधे पक जाने पर स्रुव को हाथ में ग्रहण कर उस स्रुव के बिल को नीचे की तरफ कर एक बार अग्नि में तपाकर समार्जन कुशाओं के अग्रभाग से भीतर की तरफ से मूलभाग से आरम्भ कर अग्रभागपर्यन्त पूर्व की तरफ संमार्जन कर कुश मूलों से बाहर और नीचे के हिस्से में अग्रभाग से आरम्भ कर शुद्ध कर सर्माजन कुशाओं को अग्नि में फेककर प्रणीत जल से स्रुव का अभ्युक्षण तथा स्रुव का प्रतपन कर दक्षिणदिशा की तरफ उस स्रुव को रख दे। तदनन्तर पके हुए चरु में स्रुव के द्वारा घी को छोड़ आज्यस्थाली को चरु के पूर्व से लेकर उत्तरदिशा

कुर्यादुच्छालयेत्। तत आज्यमवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरस्येत्। ततः पूर्ववत्पवित्रे गृहीत्वाप्रोक्षणीनामपामुत्पवनं कुर्यात्। ततो वामहस्ते उपयमनादाय दक्षिणेन प्रादेशमात्रीः पालाशीस्तिस्त्रःसमिधो घृताक्ता द्व्यङ्गुलादूर्ध्वं मध्यमानामिकांगुष्ठैर्मूलभागे धृतास्तर्जन्यग्रवत्स्थूलास्तन्त्रेणाग्नौतूष्णीं प्रक्षिप्य सपवित्रेण प्रोक्षण्युदकेन चुलुकगृहीतेन ईशानादि प्रदक्षिणमीशान कोणपर्यन्तं पर्युक्ष्य अप्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं हस्तं पर्यावर्तयेत्। ततः पवित्रे प्रणीतासु निधाय दक्षिणं जान्वाच्य

की तरफ रख फिर अग्नि के पश्चिम दिशा की तरफ स्थापन करें। फिर चरु को लेकर उत्तर दिशा से उतारे हुए घी के पूर्व से ले आकर घी के उत्तर की तरफ स्थापन करे।

तदनन्तर-दाहिने हाथ के अंगूठे और अनामिका से उस दोनों कुशाओं (पवित्र) के अग्रभाग को पकड़कर ऊपर के अग्रभाग को नम्र बनाकर धारण करते हुए ही आज्य(घी) में प्रक्षेप कर आज्य को उत्पवन करे। फिर घी को देख कर उसमें जो अपद्रव्य हो उसे निकाल दे। तदनन्तर फिर पवित्रों को ग्रहण कर प्रोक्षणी स्थित जल का उत्पवन करे फिर बायें हाँथ में उपयमन कुशा को लेकर दाहिने हाथ में प्रादेश प्रमाण की तीन समिधाओं को घी में भिगोकर दो अंगुल ऊपर मध्यमा अनामिका अँगूठे के मूलभाग में धारण की हुई, तर्जनी की तरह मोटी समिधा को एक साथ चुपचाप अग्नि में प्रक्षेप कर सपवित्र वाली प्रोक्षणी पात्र के जल से चुल्लु द्वारा ग्रहण कर ईशान कोण से प्रक्षेप कर फिर ईशान पर्यन्त प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण कर अप्रदक्षिण क्रम से ईशान कोण पर्यन्त अपने दाहिने हाथ को केवल घुमा दे। तदनन्तर उन पवित्र को प्रणीता पात्र में रख अपने दाहिने जानु को मोड़कर ब्रह्मा से कुशों द्वार अन्वारब्ध (स्पर्श) कर उपयमन कुशा के सहित अपने हाथ की अँगुलियों को फैलाकर उस हाथ को हृदय में लगा दाहिने हाथ से स्रुव के मूल से चार अंगुल छोड़कर शंखमुद्रा से स्रुव को ग्रहण कर प्रदीप्त अग्नि में वायव्यकोण से प्रारम्भ कर अग्निकोण पर्यन्त या पूर्व दिशा की तरफ निरन्तर घी की धारा द्वारा प्रजापति का मन से ध्यान कर स्रुव से चुपचाप शेष के सहित हवन करे, इसमें स्वाहाकार नहीं है। 'इदं प्रजापतये न मम' इस वाक्य का यजमान त्याग करे। होम त्याग के बाद स्रुव स्थित आज्य का सर्वत प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

नात्र स्वाहाकारः। इदं प्रजापतये न मम इति यजमानेन त्यागः कर्त्तव्यः।होमत्यागानन्तरं स्रुवा वशिष्टस्याज्यस्य सर्वत्र प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः। ततो निर्ऋतिकोणा दारभ्येशानकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा-ॐ इन्द्राय स्वाहा इति जुहुयात्। 'इदमिन्द्राय न मम' इति त्यजेत्। तत उत्तरपूर्वार्द्धे - ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः उपयमनकुशसहितं प्रसारितांगुलिहस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरङ्गुलं त्यक्त्वा शङ्खसन्निभमुद्रया श्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौवायव्य-कोणादारभ्याग्नि-कोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा सन्ततघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् श्रुवेण तूष्णीं सशेषं मौनी जुहुयात्। मम॥ इति हुत्वा दक्षिणपूर्वाधे-ॐ सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय न मम इति जुहुयात् ततो यजमानः द्रव्यत्यागं कुर्यात्। तत्र च बहुकर्तृके होम यथाकालं प्रत्याहुतित्यागस्य कर्तुमशकत्वा-त्सर्वंहवनीयं द्रव्यं देवताश्च मनसा ध्यात्वा त्यजेत्। तच्चैवम् इदमुपकल्पितं समित्तिलादिद्व्यं (यथासम्पादितम्) या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न ममेति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत्॥ यथा दैवतमस्तु॥

तदनन्तर-निर्ऋतिकोण से आरम्भ कर ईशान कोण पर्यन्त या पूर्व की तरफ 'इन्द्राय स्वाहा' इससे हवन करे। इद्रमिन्द्राय न मम, इससे त्याग करे फिर उत्तर पूर्वार्ध में 'अग्नये स्वाहा' से हवन करें। दक्षिण पूर्वार्ध में 'सोमाय स्वाहा' से हवन करे। तदनन्तर यजमान त्याग करे। क्योंकि बहुकर्तृक हवन में यथा समय प्रति आहुति के बाद प्रोक्षणी पात्र में त्याग करना असम्भव है। अतः सब हवनीय द्रव्य तथा देवताओं को मन से ध्यान कर 'इदमुपकल्पितं समित्तिलादि द्रव्यं या या यक्षणमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मयापरित्यक्तं न मम्' इस वाक्य को पढ़कर जल सहित अक्षत भूमि में प्रक्षेप करे 'यथादैवतमस्तु' यह कहें।

[1]बलिस्येति, इस सूक्त के प्रत्येक मंत्र से हवन करें, इस सूक्त की बत्तीस आवृत्ति से तीस, तथा चावल व घृत से हवन करे। उपरान्त [2]य आत्मदा इस मंत्र का उच्चारण कर एक सौ आठ आहुति प्रदान करें।

हनुमान अंजनीसूनु वार्युपुत्रो महाबल।
रामेष्ट फाल्गुनी सखः पिगाक्षोऽमितविक्रमः।।
समुद्रोल्लंघनं चैव सीता शोक विनाशनः।
लक्ष्मण प्राणदाता च दश ग्रीवस्य दर्पहा।।

उपर्युक्त श्लोक में हनुमानजी के बारह नामों का प्रवेश है। अतः पृथक्-पृथक् नामों का उच्चारण कर आहुति प्रदान करें।

पूर्णाहुतिः

इस संकल्प को करें-**हनुमत् प्रतिष्ठाकर्मणि संपूर्णफल प्राप्त्यर्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि।**

संकल्प करने के पश्चात् चार अथवा बारह बार घी को यज्ञीयपात्र स्त्रुव के द्वारा स्त्रुचि नामक पात्र में ग्रहण कर शिष्टाचार से उस स्त्रुचि पर सुपारी, पान, पुष्प, रेशमीवस्त्र से वेष्टितकर पुष्पमाला से सुशोभित तथा सुगन्धित द्रव्य, सिन्दूर आदि द्रव्य से सजाकर स्त्रुचि पर रख आचार्य इस वैदिक मन्त्र से पूजन करावें-

ॐ पूण्र्णादर्व्विपरापत सुपूण्र्णा पुनरापत।
व्वस्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जठं॰ शतक्रतो।।

[3]पूर्णाहुति के मंत्रोंका आचार्य सहित सभी ब्राह्मण उच्चारण करें।

---

१. 'बलिस्येतिसूक्त' के लिए यजुर्वेद संहिता देखें।

२. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा व्विधेम्। (यजुर्वेद सं॰)

३. पूर्णाहुति के मंत्रों को पृष्ठ सं॰ १६६ पर देखें।

अगर मूर्ति की अचल प्रतिष्ठा करनी हो तो मूर्ति के नीचे मणिक्य मोती, मूँगा, प्रवाल इन्द्रनील वैदूर्य (लहसूनिया) ये पंच रत्नादि रखें। 'स्थिरो भव' इस मंत्र का उच्चारण कर मूर्तिकी स्थापना करे।

कृतस्य हनुमत्प्रतिष्ठाहोमकर्मण साङ्गतासिद्धये आवाहित देवानांमुत्तर पूजां करिष्ये॥

संकल्प की समाप्ति के पश्चात् विधिवत् गणपत्यादि देवताओं की पूजा करें। उसके पश्चात् आचार्यदि की दक्षिणा के लिए यजमान यह संकल्प करें–

कृतस्य 'हनुमत्प्रतिष्ठा' कर्मणिः सांगता सिद्धये तत्संपूर्णफल प्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो, ब्राह्मणेभ्यो, सूक्तपाठकेभ्यो, हवनकर्तृभ्योः, अन्येभ्यो देवयजन-यागतेभ्य दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

इसके पश्चात् [1]अभिषेक कर्म को आचार्य करावे, उसके पश्चात् अभिषेक कर्म की फल प्राप्ति के लिए यह संकल्प करें–

कृतस्याभिषेक कर्मणः साङ्गफल प्राप्तये अभिषेक कर्तृभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां विभज्य ददे॥

यजमान ब्राह्मण भोजन के निमित्त इस संकल्प को करें–

कृतस्य हनुमत्प्रतिष्ठा कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि।

ब्राह्मणभोजन के उपरान्त विधिवत् हनुमानजी की स्तुति कर कर्मापण करें, यजमान परिवार, सम्बन्धि, मित्रगण हनुमानजी के प्रसाद को ग्रहण करें।

१-अभिषेक के लिए इस पुस्तक की पृष्ठ सं० १८६ देखें।

द्वितीय अंश

यज्ञ-प्रकरणम्

लक्ष्मी-याग

सर्वप्रायश्चित्त के दिन या उसके अगले दिन ब्रह्मचर्य, भूशय्या आदि नियमों से युक्त होकर नित्यक्रिया करके सपत्नीक यजमान उपवास एवं मंगलस्नानकरके तिलकादि से अलंकृत होकर शिखा बन्धन करे और प्रशस्त कुशासन बिछाकर उसके नीचे '**ह्रीम्**' बीज लिखे और पूरब या उत्तर की ओर मुँख करके बैठे तथा हाथ धोकर इस श्लोक द्वारा रक्षादीप प्रज्वलित करें-

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं धनसम्पदाम्।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

रक्षादीप मंत्र का उच्चारण कर पवित्री धारण कर दो बार आचमन करें तथा लक्ष्मीगायत्री से पूजन की सामग्रीका और अपना प्रोक्षण भी करें।

करिष्यामि व्रतं देवि त्वद्भक्तस्त्वत्परायणः।
तदविघ्नेन मे यातु समाप्तिं त्वत्प्रसादतः॥

तत्पश्चात् यजमान के हाथ में रक्तचावल और पुष्प देकर आचार्य सहित सभी ब्राह्मण [1]शान्ति पाठ करें।

शान्तिपाठ के पश्चात् आचार्य जल, अक्षत, पुष्प व द्रव्य यजमान के दाएँ हाथ में देकर यह संकल्प करावें-

ततो देशकालौ सङ्कीर्त्य-मम गृहे सर्वसङ्कटनानाविधरोगादिसर्वोपद्रवशान्तिपूर्वक धनधान्यरजतताम्रहिरण्यमुक्तामणिप्रवाल-ऊर्णादिबहुमूल्योपकल्पित-वस्त्राभरणाद्विपदचतुष्पदपुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिपूर्वक-विपुलमहालक्ष्मीप्राप्तिद्वारा-अलक्ष्मीपरिहारपूर्वक

---

१. शान्तिपाठ के लिए इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या ७५ देखें।

सकलमनोरथसिध्यर्थम्, समस्तपापक्षयार्थम्, ईश्वरच-रणारविन्दयोरचञ्चलभक्तिलाभसिध्यर्थम्, श्रीव्यास-निर्मिताष्टादशपुराणोपपुराणेषु मन्वादिस्मृतिषु तन्त्रेषु च कथितसमस्तलक्ष्मीपूजनजन्यफलप्राप्त्यथर्मम्, आचन्द्रा-र्कस्ववंशाख्यातकीर्तिसिध्यर्थम्, अस्मद्विरोधिनां दुष्टानां मनोवाक्कायस्तम्भनार्थम्, राजद्वारेषु सर्वानुकूलता-सिध्यर्थम्, सनातनधर्मप्रतिपादकानां वेदप्रभृतीनां पुराणान्तानां धार्मिकग्रन्थानां सर्वाषां विद्यानां च आचन्द्रार्कमभिवृध्यर्थम्, राजद्वारादिष्वप्रतिहतप्रवेश-पूर्वकसत्प्रतिष्ठाप्राप्त्यर्थम्, एकविंशति कुलोद्धरण-पूर्वकसमस्तपितृणां निरतशयानन्दसाश्वतब्रह्मलोक-निवासिसिध्यर्थम्, सालोक्यसामीप्यसान्निध्यसायुज्या-दिमोक्षफलावाप्त्यर्थम्, भारतवर्षवास्तव्यानां नानादिग्देशादागतानां महर्षिकल्पानां विदुषां महात्मनां चाज्ञया उपचीयमानाधर्मनिवृत्तिपुरस्सरं धर्माभि-वृद्ध्यर्थम्, समेषां प्राणिनां सदभावनोत्पादनार्थम्, विश्वकल्याणार्थं च निरन्तराविच्छिन्नलक्ष्मीस्थिरता-सिद्ध्यर्थं च षष्टिसहस्त्रा-धिकैकलक्षसङ्ख्यहोमात्मकं सग्रहमखं लक्ष्मीयागं, विंशत्यधिकलक्षत्रय-संख्याकहोमात्मकं सग्रहमखमति लक्ष्मीयागं करिष्ये। एवं सहस्त्रसंख्याकहोमात्मकम्, अयुतहोमात्मकम्, लक्षहोमात्मकम्, प्रयुतहोमात्मकम् कोटिहोमात्मकम्, शतसंख्याकहोमात्मकम्, दशसंख्याकहो-मात्मकम्, यथाशक्ति परिमितसंख्याकहोमात्मकं सग्रहमखं

लक्ष्मीयागं करिष्ये। तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनम्, षोडशमातृकापूजनम्, वसोर्द्धारापूजनम्, नान्दीश्राद्धम्, आयुष्य-मंत्र जपम्, आचार्यादिवरणानि च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

ऐसा संकल्प करके शेष कर्म ग्रहशान्ति पद्धति के अनुसार करें।

पश्चात् आचार्य मण्डपप्रवेश, वास्तु पूजन, मण्डप पूजन, कुण्डपूजा, पंचभूसंस्कार पूर्वक अग्निस्थापन, ग्रहस्थापन, असख्यात् रुद्रस्थापन, योगिनीपूजा, क्षेत्रपाल पूजा ग्रहशान्ति के द्वारा करें।

सर्वतोभद्रमण्डल के समीप आकर कम्बलादि आसन पर बैठकर स्थापन विधि से सुपारी आदि पर ब्रह्मादि देवताओं का स्थापन कर वेदी के मध्य में सुवर्णादि कलश स्थापित कर उसके ऊपर चाँदी के पात्र में सुवर्ण छत्र चामरादि युक्त सिंहासन स्थापित करके सोना-चाँदी-ताँबा या रेशमी वस्त्र पर लक्ष्मी यन्त्र इस क्रम से लिखे।

लक्ष्मी यन्त्र निर्माण प्रकार—महालक्ष्मी के अष्टगन्ध से या चन्दन से सोने की शलाका से बीच में एक बिन्दू रख कर, षट्कोण बनावे, उसके बाहर अष्टदल बनावे, उसके बाहर चतुरस्र बनावे, उसके चारों ओर तीन रेखायें दिशाओं में युक्त यंत्र बनावे।

इसप्रकार यंत्र लिखकर अपने सामने पीठ इत्यादि पर स्वर्णमयी महालक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित कर उसमें स्वर्णमय चार द्वारों वाला मंडप बनाकर यजमान के हाथ में अक्षत-पुष्प देकर ध्यान करावें।

ॐ अमृताम्भोनिधये नमः १ ॐ रत्नद्वीपाय नमः २ ॐ नानावृक्षमहोद्यानाय नमः ३ ॐ कल्पवाटिकायै नमः ४ ॐ सन्तानवाटिकायै नमः ५ ॐ हरिश्चन्दनवाटिकायै नमः ६ ॐ मन्दारवाटिकायै नमः ७ ॐ पारिजातवाटिकायै नमः

८ ॐ कदम्बवाटिकायै नमः ९ ॐ पुष्परागरत्नप्राकाराय नमः १० ॐ पद्मरागरत्नप्राकाराय नमः ११ ॐ गमेधकरत्नप्राकाराय नमः १२ ॐ वज्ररत्नप्राकाराय नमः १३ ॐ वैडूर्यरत्नप्राकाराय नमः १४ ॐ इन्द्रनीलरत्नप्राकाराय नमः १५ ॐ मुक्तारत्नप्राकाराय नमः १६ ॐ मरकतरत्नप्राकाराय नमः १७ ॐ विद्रूमरत्नप्राकाराय नमः १८ ॐ माणिक्यमण्डपाय नमः १९ ॐ सहस्त्रस्तंभमण्डपाय नमः २० ॐ अमृतवापिकायै नमः २१ ॐ आनन्दवापिकायै नमः २२ ॐ विमर्शवापिकायै नमः २३ ॐ बालातपोद्नाराय नमः २४ ॐ चन्द्रिकोद्गाराय नमः २५ ॐ महाशृङ्गारपरिधायै नमः २६ ॐ महापद्माटव्यै नमः २७ ॐ चिन्तामणिमयगृहराजाय नमः २८ ॐ पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय नमः २९ ॐ दक्षिणम्नायमयदक्षिणद्वाराय नमः ३० ॐ पश्चिमाम्नामयपश्चिम-द्वाराय नमः ३१ ॐ उत्तराम्नाय-मयोत्तरद्वाराय नमः ३२ ॐ रत्नप्रदीपवलयाय नमः ३३ ॐ मणिमयसिंहासनाय नमः ३४ ॐ ब्रह्ममयैकमञ्चपादाय नमः ३५ ॐ विष्णुमयैकमञ्चापादाय नमः ३६ ॐ रुद्रमयैकमञ्चपादा नमः ३७ ॐ ईश्वरमयैकमञ्चपादाय नमः ३८ ॐ सदाशिवमयैक-मञ्चफलकाय नमः ३९ ॐ हंसतूलिकातल्पाय नमः ४० ॐ हंसतूलिकमहोपधाय नमः ४१ ॐ कौसुम्भास्तरणाय नमः ४२ ॐ महावितानकाय नमः ४३ ॐ महामायायवनिकायै नमः ४४ तत्र नानारत्नखचितं मुक्ताद्यखङ्कृतं सिंहासनं स्मरेत्।

ततः पूर्वद्वारे–ॐ गं गणपतये नमः। ॐ क्षं-क्षेत्रपालाय नमः। दक्षिणद्वारे–ॐ श्री लक्ष्यै नमः। ॐ ऐं सरस्वतयै नमः। पश्चिमद्वारे–ॐ वं वटुकाय नमः ओं यं यमुनायै नमः

उत्तरद्वारे–ओं अस्त्राय फट्-इति पूर्वादिदिक्षु द्वारेषु देवान् आवाह्य गन्धाक्षतपुष्पैः पूजयेत्। अशक्तौ तु-ओं द्वारदेवताभ्यो नमः।

इस प्रकार से पूजा करनी चाहिये। हाथ में जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रों से विनियोग करें।

'ॐ श्रीम्' इस बीज मंत्र द्वारा व शुद्ध तीर्थ जल से तीन बार कर शुद्धि करें।

अथ विनियोगः–

हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य, श्रीआनन्दकर्दमचिल्कीदेन्दिरा सुता महर्षयः, श्रीर्देवता आद्यास्त्रिस्त्रोनुष्टुभः, पञ्चमीषष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ ततोऽष्टानुष्टुभः, द्वादशी निचृदनुष्टुप् त्रयोदशी-चतुर्दश्यावनुष्टुभौ, अन्त्या आस्तारपंक्तिः, न्यासे विनियोगः।

विनियोग के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रों से ऋष्यादिक न्यास करें।

ॐ आनन्दकर्दमचिक्लीतेन्दिरा सुत ऋषिभ्यो नमः-शिरसि
ॐ अनुबादिछन्दोभ्यो नमः-मुखे। ॐ श्रीर्देवतायै नमः-हृदये।
ॐ हिरण्यवर्णामिति बीजाय-गुह्ये।
ॐ कां सोस्मितामिति शक्तये नमः-पादयोः।
ॐ बिन्दुः कीलकाय नमः-नाभौ।
ॐ ममाभीष्टलक्ष्मीप्राप्त्यर्थे न्यासे विनियोगाय नमः-सर्वाङ्गे।

ऋष्यादिक न्यास के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रों से षडङ्गकरन्यास करें–

ॐ हिरण्यवर्णाम्-अङ्गुष्ठयोः। ॐ हरिणीम्-तर्जन्योः। ॐ सुवर्णरजतस्त्रजाम्-मध्यमयोः। ॐ चन्द्रांहिरण्मयीम्-अनामिकयोः। ॐ लक्ष्मीम्-कनिष्ठिकयोः। ॐ जातवेदो म आवह-करतलकरपृष्ठयोः।

षडङ्गकरन्यास के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रों से हृदयादिषडङ्ग न्यास करें।

ॐ हिरण्यवर्णाम्-हृदयाय नमः। ॐ हरिणीम्-शिरसे स्वाहा। ॐ सुवर्णरजतस्त्रजाम्-शिखायै वषट्। ॐ चन्द्रां हिरणमयीम्-कवचाय हुम्। ॐ लक्ष्मीम्-नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ जातवेदो म आवह-अस्त्राय फट्। ॐ हिरण्यवर्णायै नमः-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ सुवर्णायै नमः-तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रजतस्त्रजायै नमः-मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चन्द्रायै नमः-अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हिरणमय्यै नमः-कनिष्ठिभ्यां नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ हिरण मय्यै नमः-हृदयाय नमः। ॐ चन्द्रायै नमः-शिरसे स्वाहा। ॐ रजतस्त्रजायै नमः-शिखायै वषट्। ॐ हिरण्यस्त्रजायै नमः-कवचाय हुम्। ॐ हिरण्याक्षायै नमः-नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हिरण्यवर्णायै नमः-अस्त्राय फट्।

ॐ श्रियै नमः-शिरसि। ॐ लक्ष्म्यै नमः-नेत्रयोः। ॐ वरदायै नमः-कर्णयोः। ॐ विष्णुपत्न्यै नमः। नासिकयोः। ॐ वसुदायै नमः-मुखे। ॐ हिरण्यवर्णायै नमः-गण्डयोः। ॐ

स्वर्ण-मालिन्यै नमः-कण्ठे। ॐ स्त्रजायै नमः-ओष्ठयोः। ॐ सुवर्णगृहायै नमः-दक्षिणबाहौ। ॐ स्वर्ण प्राकाराय नमः-बामबाहौ। ॐ पद्मवासिन्यै नमः-स्तनयोः। ॐ पद्महस्तायै नमः-दक्षिणहस्ते। ॐ पद्मप्रियायै नमः-वामहस्ते। ॐ मुक्तालङ्कारायै नमः-हृदये। ॐ सूर्यायै नमः-उदरे। ॐ चन्द्रायै नमः-नाभौ। ॐ बिल्वप्रियायै नमः-दक्षिणकरे। ॐ ईश्वर्यै नमः-वामकरे। ॐ भुक्त्यै मुक्त्यै नमः-कुक्षिद्वये। ॐ विभूत्यै वृद्ध्यै नमः-कटिद्वये। ॐ समृध्यै नमः-गुह्ये। ॐ तुष्टचै पुष्ट्यै नमः-उरुद्वये। ॐ गङ्गायै धनेश्वर्यै नमः-जानुद्वये। ॐ शुद्धायं भोगिन्यै नमः-गुल्फद्वये। ॐ भोगदायै धात्र्यै नमः-पादद्वये। ॐ विधात्र्यै नमः-सर्वाङ्गे। उपरिभागे-ॐ साम्राज्यलक्ष्म्यै नमः। पुरतः-ॐ सागरजायै नमः। पृष्ठे-ओं कमलायै नमः। दक्षिणभागे-ओं द्विजराजसहोदर्यै नमः। वामभागे-ओं जयप्रदायै नमः। पाताले-ओं विजयप्रदायै नमः। मध्ये-ओं सर्वसौभाग्यदायै नमः। 'ओं भूर्भुवः स्वरोम्' इति दिग्बन्धनम्।

ॐ श्राम-हृदयाय नमः। ॐ श्रीम्-शिरसे स्वाहा।
ॐ श्रूम-शिखायै वषट्। ॐ श्रैम्-कवचाय हुम्।
ॐ श्रौम-नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रः अस्त्राय फट्।
ॐ ह्राम्-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीम्-तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रम्-मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैम्-अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रौम्-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

न्यास का क्रम पूजा समुच्चय के मत से–

(१) ॐ हिरण्यवर्णाम् भगवत्यै महालक्ष्म्यै नमः शिरसि
(२) ॐ तां म ऽ आवह ,, ,, नेत्रयोः
(३) ॐ अश्वपूर्वाम् ,, ,, कर्णयोः
(४) ॐ कांसोस्मिताम् ,, ,, नासिकयोः
(५) ॐ चन्द्रां प्रभासाम् ,, ,, मुखे
(६) ॐ आदित्यवर्णे ,, ,, कण्ठे
(७) ॐ उपैतु माम् ,, ,, बाह्वोः
(८) ॐ क्षुत्पिपासामलाम् ,, ,, हृदये
(९) ॐ गन्धद्वाराम् ,, ,, नाभौ
(१०) ॐ मनसः कामम् ,, ,, गुह्ये
(११) ॐ कर्दमेन प्रजा ,, ,, पादयोः
(१२) ॐ आपः सृजन्तु ,, ,, ऊर्वोः
(१३) ॐ आर्द्रां पुष्करणीम्,, ,, जान्वोः
(१४) ॐ आर्द्रां यष्करणीम्,, ,, जङ्घयोः
(१५) ॐ तां म अवह ,, ,, पादयोः

(१) ॐ कर्दमेन प्रजा भगवत्यै महालक्ष्म्यै नमः हृदयाय नमः।
(२) ॐ आपः सृजन्तु ,, ,, शिरसे स्वाहा
(३) ॐ आर्द्रां पुष्करणीम्,, ,, शिखायै वषट्
(४) ॐ आर्द्रां यष्करणीम् ,, ,, कवचाय हुम्
(५) ॐ तां म आवह ,, ,, नेत्रत्रयाय वौषट्
(६) ॐ यः शुचिः प्रयतो ,, ,, अस्त्राय फट्

तत्पश्चात् कुशों के द्वारा श्रीसूक्त के मन्त्रों से मार्जन करना चाहिए, इस प्रकार समग्रपूर्ण श्रीसूक्त को पढ़कर, पापों का प्रायश्चित करके उस जल को अपने बायीं ओर से डालकर तथा उठकर ऊपर हाथ उठाकर श्रीसूक्त के मंत्र से उपस्थान करना चाहिए, इसके पश्चात् इस श्लोक के द्वारा अपने हृदय में महालक्ष्मी का पूजन करना चाहिए–

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी।
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिताशुभ्रवस्त्रोत्तरीया॥
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्ममणिगणखचितैः स्नापिताहेमकुंभै।
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता॥

अथ पाद्यादिपात्रस्थापनपूजनम्

पूर्व नवकोष्ठात्मिकां भूमिं संपाद पूर्वादितो मध्ये च पाद्यादिपात्राणामुत्तरक्रमेण संस्थाप्य एवं पञ्चपञ्चामृतपात्राणां स्थापनं कृत्वा विदिक्षु सुगन्धित द्रव्याणि निधाय स्थापनक्रमेण नवसु पात्रेषु सद्द्रव्येषु नव देवताः पूजयेत्–

ॐ विद्यायै नमः। ॐ अविद्यायै नमः। ॐ प्रकृत्यै नमः। ॐ मायायै नमः। ॐ तेजस्विन्यै नमः। ॐ प्रबोधिन्यै नमः। ॐ सत्याय नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ तमसे नमः। इति संपूज्य गायत्र्याऽभिमृशेत्।

अथ पूजाकलशार्चनम्

अपने वाम भाग में पूजा कलश स्थापित कर "इमं मे वरुणेति" इस मंत्र से वरुणदेव का पूजन कर गायत्री से दस बार मंत्र को अभिमन्त्रित करें।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥
सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

इसके पश्चात् 'ॐ कलशस्य मुखे वि०' इति विष्णवादीनामावाहयेत्। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ मातृगणेभ्यो नमः। ॐ सागरेभ्यो नमः। ॐ सप्तद्वीप-वसुन्धरायै नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। यजुर्वेदाय नमः। सामवेदाय नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः। ॐ वेदाङ्गेभ्यो नमः। ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।

इनका आवाहन कर पूजा करें।

अथ पीठपूजा

उपर्युक्त कर्म की समाप्ति के पश्चात् आचार्य पीठपूजा निम्न क्रमानुसार यजमान से करावें–

ॐ मण्डूकाय नमः। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ आधारशक्त्यै नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वाराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुधासमुद्राय नमः। ॐ श्वेतद्वीपाय नमः। ॐ स्वर्णपर्वताय नमः। ॐ करुणातोयपरिखायै नमः। ॐ स्वर्णमण्डपाय नमः। पूर्वद्वारे–ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सत्वाय नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ आत्मने नमः। ॐ कालतत्वाय नमः। ॐ अम्बिकायै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः।

ॐ वेदमात्रे नमः। ॐ शैलपुत्र्यै नमः। ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। ॐ चण्द्रघण्टायै नमः। ॐ स्कन्दमात्रे नमः। ॐ कात्यायन्यै नमः। ॐ गौर्यै नमः।

दक्षिणद्वारे–ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ सिद्धायै नमः। ॐ क्षमायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ विद्यातत्त्वाय नमः। ॐ जगन्मात्रे नमः। ॐ मायायै नमः। ॐ शिवायै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ प्रभायै नः। ॐ ह्रीं कारायै नमः। ॐ क्लीं कारायै नमः। ॐ मायाशक्त्यै नमः। ॐ वीरायै नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ दण्डधराय नमः।

पश्चिमद्वारे–ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ वारुण्यै नमः। ॐ शंखायुधायै नमः। ॐ हंसवाहिन्यै नमः। ॐ जगज्जीवायै नमः। ॐ जगद्बीजायै नमः। ॐ षोडशकलायै नमः। ॐ पूर्णकलशाय नमः। ॐ चित्रिण्यै नमः। ॐ चित्रभालायै नमः। ॐ चित्रायै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः।

उत्तरद्वारे–ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ कपालधारिण्यै नमः। ॐ भक्तवत्सज्योत्स्नायै नमः। ॐ कल्याण्यै नमः। ॐ शर्वाण्यै नमः। ॐ चन्द्रकलायै नमः। ॐ चन्द्रवदनायै नमः। ॐ विभूत्यै नमः। ॐ परमविभूत्यै नमः। ॐ भस्मधारिण्यै नमः। ॐ पावनायै नमः। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ भागीरथ्यै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ प्रवरायै नमः। ॐ प्रणतायै नमः। ॐ क्रां कारायै नमः। ॐ

क्रीं कारायै नमः। ॐ क्रौं कारायै नमः। ॐ सर्वबीजात्मने नमः। ॐ बीजप्रवाहिन्यै नमः।

मध्ये—ॐ रत्नवेदिकायै नमः। ॐ रत्नसिंहासनाय नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। ॐ श्वेतच्छत्राय नमः। ॐ विच्छित्यै नमः ॐ मायाशक्त्यै नमः। ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ संविन्नालाय नमः। ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॐ पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्वेभ्यो नमः। ॐ तत्वरूपायै कर्णिकायै नमः। अं अर्कमण्डलाय नमः। ॐ मं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ सं सोममण्डलाय नमः। ॐ सं सत्वाय नमः। ॐ रं राजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अं अन्तरात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। ॐ आत्मतत्वाय नमः। ॐ मायातत्वाय नमः। ॐ विद्यातत्वाय नमः। ॐ कालतत्वाय नमः। ॐ परतत्वाय नमः।

केसरेषु पूर्वादिक्रमेण—

ॐ विभूत्यै नमः। ॐ उन्नत्यै नमः। ॐ कान्त्यै नमः।

ॐ हृष्टयै नमः। ॐ कीर्त्यै नमः। ॐ सन्नत्यै नमः। ॐ व्युष्टयै नमः। ॐ उत्कृष्ट्यै नमः। ॐ मत्यै नमः। ॐ ऋध्यै नमः।

ततः—ॐ श्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः। ॐ महालक्ष्मीयोगपीठाय नमः।

इसप्रकार समस्त पीठों की पूजा करके कर्णिका में पुष्पांजलि प्रदान करे।

अथाग्न्युत्तारणम्

देवी की प्रतिमा को सुवर्ण के पात्र में रखकर मधु और घृत से धोकर 'ॐ अश्मन्नूर्जम्' इस वाक्य का उच्चारण कर श्री सूक्त से तथा दूध मिश्रित जल से या केवल दूध से अभिषेक करके प्रतिमा को बाहर निकाल कर, स्वच्छ एवं नवीन वस्त्र से पोछ करके उसे यंत्र के ऊपर स्थापित करके प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

प्राणप्रतिष्ठा

लक्ष्मी प्राण प्रतिष्ठा मंत्र के ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर ऋषि हैं। ऋग्यजु, साम छन्द हैं, प्राण शक्ति देवता हैं, आं 'बीज' हैं, 'ह्रीं' शक्ति हैं, 'क्रों' कीलक हैं।

इस प्रकार महालक्ष्मी देवी को प्रसन्न करने के लिए उनके प्रतिष्ठापत्र का यह विनियोग कर्ता को करना चाहिए।

ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्यो ऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ ऋग्यजुःसामछन्दोभ्यो नमो मुखे। ॐ प्राणशक्तिदेवतायै नमः-हृदये। ॐ आं बीजाय नमः-गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः-पादयोः। ॐ क्रों कीलकाय नमः-नाभौ। ॐ प्राणप्रतिष्ठापते विनियोगः-सर्वाङ्गे।

ॐ ह्राम्-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीम्-तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रुं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैम्-अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रुं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

उपरोक्त कर्म के पश्चात् यजमान से लक्ष्मी देवी का ध्यान इस श्लोक का उच्चारण करके आचार्य करावें-

ध्यायेल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखीं राज्यसिंहासनस्थां।
मुद्राशक्तिं सकलविनुतां सर्वसंसेव्यमानाम्॥
अग्नौ पूज्यामखिलजननीं हेमवर्णां हिरण्याम्।
भाग्योपेतां भुवनसुखदां भार्गवीं भूतिधात्रीम्॥

इस प्रकार ध्यान करवाके प्रतिमा के ऊपर आचार्य अपने हस्त (हाथ) को रखकर प्राणप्रतिष्ठा बीज को पढ़ें-

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं सः श्रीमहालक्ष्मीदेव्याः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं सः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं सः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणपादपायूपस्था इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै दवत्वमर्चायै मामहे तीति कश्च न॥

इसके बाद आचार्य यजमान से प्रणव मंत्र का सोलह बार जप करवाना चाहिये। बाद में एकाग्रचित्त होकर यजमान दाहिने हाथ में सुन्दर पुष्पमाला लेकर खड़े होकर इन श्लोकों द्वारा प्रार्थना करें-

समस्तसंपत्सुखदां महाश्रियं समस्तसौभाग्यकरीं महाश्रियम्।
समस्तकल्याणकरीं महाश्रियं भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम्॥ १॥
समस्तभूतान्तरसंस्थिता त्वं समस्तभूतेश्वरि विश्वरूपे।
तन्नास्ति यत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तु त्वपादपद्मं प्रणमाम्यहं श्रीः॥ २॥
दारिद्रयदुःखौघतमोपहन्त्री त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व।
दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः॥ ३॥

अम्ब प्रसीद करुणासुधयार्द्रदृष्ट्या मां त्वत्कृ-पाद्रविणगेहिमिमं कुरुष्व।
आलोकनप्रणयिहृद्गत शोकहन्त्रीत्वत्पादपद्मयुगलं प्रणयाम्यहं श्रीः ॥ ४ ॥
शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणायै कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै।
शान्त्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्यसमृद्धिदायै ॥ ५॥
विज्ञानवृद्धिं हृदये कुरु श्रीः सौभाग्यसिद्धिं कुरु मे करे श्रीः।
दयासुपुष्टिं कुरुतां मयि श्रीः सुवर्णवृद्धिं कुरु मे करे श्रीः ॥ ६ ॥
न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लिसद्भक्तिचिन्तामणि कामधेनो।
विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे ॥ ७ ॥
माता-पिता त्वं गुरुसद्गतिः श्रीस्त्वमेवसञ्जीव-नहेतुभूता।
अन्यं न मन्ये जगदेकनाथे त्वमेव सर्वंमम देवि सत्यम् ॥ ८ ॥
अशेषवाग्जाड्यमलापहारिणीं नवं-नवं स्पष्टसुवा-क्प्रदायिनि।
ममैहि जिह्वाग्रसुरङ्गनर्तकी भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः ॥ ६ ॥
वागर्थसिद्धिं बहुलोकवश्यं वयः स्थिरत्वं ललनासुभोगम्।
पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं प्रदेहि मे भार्गवि जन्मजन्मानि ॥ १० ॥
समस्तविघ्नौघविनाशकारिणी समस्तविघ्नोद्धरणे विचक्षण।
अनन्तसौभाग्यसुखप्रदायिनी हिरणमये मे वदने प्रसन्ना ॥ ११ ॥

इसके पश्चात् आचार्य संग्रहित उपचारों से लक्ष्मीजी का विधिवत् पूजन यजमान से करावें। उपरान्त यथा संख्या श्रीसूक्त का पाठ आचार्य सहित सभी ब्राह्मण करें।

संकल्पः

उपर्युक्त कर्म की समाप्ति के पश्चात् निम्न संकल्प यजमान करें-

देशकालौ सङ्कीर्त्य-मम धन-पुत्र-पौत्रादि-समृध्यर्थ नानारोगदूरीकरणार्थं नवग्रहदेवताप्रसन्नार्थं च षोडश-दश-पञ्च-

शतादिसंख्याकान् स्वयं ब्राह्मणद्वारा पाठान् कारयिष्ये

पश्चात्-

ॐ गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मद् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादन् महेश्वरि॥

इस श्लोक द्वारा महालक्ष्मी का जप करके और श्रीसूक्त का पाठ करके

'श्रीमहालक्ष्मीः भगवती प्रीतताम्' यह कहकर जल भूमि पर छोड़ें।

ततः-उसी स्थान पर आचार्यादि को दक्षिणा देकर यजमान प्रार्थना करें-

ॐ यत्पादपद्मामृतसेवनेन मूढोऽपि सद्यः प्रकरोति काव्यम्।
साऽनेकदेवादिगणैः संपूज्या समस्तविघ्नक्षयमातनोतु॥

प्रदक्षिणा त्रयं देवि प्रयत्नेन मया कृता।
क्षम्यतां देव देवेशि पापानां क्षालनं कुरु॥
प्रयच्छ पुत्रपौत्राश्च पिष्णुवक्षःस्थलेऽनधे।
श्रियं देहि यशो देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे॥
धनं धान्यं धरां धर्म कीर्तिमायुर्यशः श्रियम्।
तुरगान् दन्तिनः पुत्रान् महालक्ष्मि प्रयच्छ मे॥
विष्णोर्वक्षसि पद्मे च शङ्खे चक्रे तथाम्बरे।
लक्ष्मि नित्या यथासि त्वं मयि नित्या तथा भव॥
यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु।
न बाध्यन्तां कुकर्माणि सङ्कटान्मे निवारय॥

यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावद्देवा वसुन्धरा।
तावन्मय गृहे देवि अचला सुस्थिरा भव॥
यावत्तारागणाकाशे यावदिन्द्रादयोऽमराः।
तावन्मम गृहे देवि अचला सुस्थिरा भव॥
पङ्कजं देवि सन्त्यज्य मम वेश्मनि संविश।
यथा सदारपुत्रोऽहं सुखस्यां त्वत्प्रसादतः।
भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे॥
अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे-पदे।
कोऽपरः क्षमते लोके केवलं मातरं विना॥
साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मयाचरितं शिवे।
तव कृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥

प्रार्थना के उपरान्त आचार्य को स्वर्ण, अन्न, वस्त्र तथा स्वर्णशृंगादियुत गाय देकर यजमान इस श्लोक का उच्चारण करके देवी के समक्ष अपने दाएं हाथ के जल को भूमि में छोड़ देवें–

करिष्यामि व्रतं देवि त्वद्भक्तस्त्वत्परायणः।
तदविघ्नेन मे यातु समाप्तिं त्वत्प्रसादतः॥

उलूकपूजनम्

इस क्रम से आचार्य उलूक पूजन यजमान से करावे–

ॐ अग्नये कुटरूनालभते वनस्पतिभ्यऽ उलूका-

नग्नीषोमाभ्यांञ्चाषानश्शिवब्भ्यां मयूरान्मित्रावरु-णाभ्याङ्कपोतान्॥

ॐ वर्षाहूर्ऋतूनामाखुः कशो मान्थालस्ते पितृणां बलायाजगरो वसूनां कपिञ्जलः कपोतऽ उलूकः शशस्ते निर्ऋत्यै वरुणायारण्यो मेषः॥

ॐ उलूकाय नः उलूकं पूजयामि।

हस्तिपूजनम्

इस क्रम से आचार्य हस्ति पूजन यजमान से करावें–

ॐ प्रजापतये च वायवे च गोमृगो वरुणायारण्यो मेषो यमाय कृष्णो मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहिदृषभाय गवयी क्षिप्रश्येनाय वर्त्तिका नीलं गोः क्रिमिः समुदाय शिशुमारो हिमवते हस्तो॥

ॐ हस्तिने नमः हस्तिनं पूजयामि।

कामदेवादिऋतुपूजनम्

निम्नक्रम से आचार्य कामदेवादि ऋतु पूजन यजमान से करावें–

उलूकाग्रे कामदेवं तरुणं वर्णं रक्तवस्त्राभरण-माल्यानुलेपनं वामदक्षिणयोरतिप्रीतिभ्यां शोभितं पुष्पवाणेक्षुधर्नुर्धरं वसन्तादिसहितं ध्यायेत्–

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूनाᳬ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।

ॐ कामदेवाय नमः कामदेवं पूजयामि। तद्वामेरतिं गौरवर्णां सर्वालङ्कारभूषितां रक्तवस्त्रपरीधानां पद्मद्वयकरां ध्यायेत्–

ॐ इह रतिरिहरमध्वमिहधृतिरिहस्वधृतिः स्वाहा। उपसृजन्धरुणं मात्रे धरुणो मातरन्धयन्। रायस्पोष-मस्मासुदीधरत्स्वाहा॥

ॐ रत्यै नमः रतिं पूजयामि।

कामस्य दक्षिणभागे प्रीतिश्यामवर्णां सर्वाभरणभूषितां रक्त वस्त्रपरीधानां तांबूलकरां ध्यायेत्–

ॐ प्रैषेभिः प्रैषानाप्नोत्याप्रीभिराप्रीर्यज्ञस्य।
प्रयाजेभिरनुयाजान्वषट्कारे-भिराहुतीः।

ॐ प्रीत्यै नमः प्रीतिं पूजयामि।

उपरान्त आचार्य कामदेव के अग्र में वसन्तादिक ऋतुओं का पूजन यजमान से करावें–

ॐ वसन्तेनऽ ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः।
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः॥
ॐ वसन्तऋतवे नमः वसन्तऋतुं पूजयामि।
ॐ ग्रीष्मेणऽ ऋतुना देवा रुद्राः पञ्चदशे स्तुताः।
बृहता यशसा बलꣳ हविरिन्द्रे वयो दधुः॥
ॐ ग्रीष्मऋतवे नमः ग्रीष्मऋतुं पूजयामि।
ॐ वर्षाभिर्ऋतुना दित्या स्तोमे सप्तदशे स्तुताः।
वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः॥

ॐ वर्षाऋतवे नमः वर्षाऋतुं पूजयामि।

ॐ शारदेनऽ ऋतुना देवाऽ एकविर्ठ० शऽ ऋभवस्तुताः।
वैराजेन श्रिया श्रियर्ठ० हविरिन्द्रे वयो दधुः॥

ॐ शरदऋतवे नमः शरदऋतुं पूजयामि।

ॐ हेमन्तेनऽ ऋतुना देवास्त्रिणवे मरुतस्तुताः।
बलेन शक्वरीः सहो हविरिन्द्रे वयो दधुः॥

ॐ हेमन्तऋतवे नमः हेमन्तऋतुं पूजयामि।

ॐ शैशिरेणऽ ऋतुना देवास्त्रयस्त्रिर्ठ० शे मृतास्तुताः।
सत्येन रेवतीः क्षत्रर्ठ० हविरिन्द्रे वयो दधुः॥

ॐ शिशिरऋतवे नमः शिशिरऋतुं पूजयामि।

आचार्य लब्धोपचारों से पूजन करवाके पुष्पांजलि यजमान से प्रदान करावें–

ॐ वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्मय कलविङ्कां- वर्षाभ्यस्तित्तिरीञ्छरदे वर्तिका हेमन्ताय ककराञ्छिशिराय विकरान्।

कामदेव के दिक्षु-विदिक्षु और देवताओं की पूजा करें–

पञ्चवर्णैः चन्दने वा अष्टदलं कृत्वा बहिश्चतुरस्त्रं तद्बहिर्वर्तुलत्रयं तद्बहिर्वृत्तं चतुरस्त्रं कृत्वा ॐ भस्म शरीराय नमः ॐ भस्मशरीरं पूजयामि।

ॐ अनङ्गाय नमः अनङ्गं पूजयामि।

ॐ मन्मथाय नमः मन्मथं पूजयामि।

ॐ वसन्तसखाय नमः वसन्तसखं पूजयामि।

ॐ स्मराय नमः स्मरं पूजयामि।

ॐ इषुचापाय नमः इषुचापं पूजयामि।

ॐ पुष्पास्त्राय नमः पुष्पास्त्रं पूजयामि।

ॐ कन्दर्पाय नमः कन्दर्प पूजयामि।

लब्धोपचारों से पूजन करे के इसका उच्चारण करें–

ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पवाणाय धीमहि। तन्नोऽनङ्गः प्रयोदयात्।

इस श्लोक का उच्चारण करके नमस्कार करें–

नमोऽस्तु पुष्पवाणाय जगदानन्दकारिणे।
मन्मथाय जगन्नेत्रे रतिप्रीतिप्रियाय च॥

कुमारीपूजा के लिए यजमान से इस संकल्प को आचार्य करावें–

अद्य श्रीलक्ष्मीपूजनसाङ्गतासिद्धये कुमारीपूजनं करिष्ये–

तत्पश्चात् निम्न मंत्रों के द्वारा एवं श्लोकों के द्वारा कुमारी पूजा करें–

ॐ नृत्ताय सूतङ्गीताय शैलूषन्धर्माय सभाचरन्नरिष्ठायै भीमलन्नर्माय रेभर्ठ० हसाय कारिमानन्दाय स्त्रीषखम्प्रदे कुमारी पुत्रं मेधायै रथकारन्धैर्याय तक्षाणम्।

ॐ कन्याऽइव वहतुमेतवाऽ उऽ अञ्ज्यञ्जानाऽअभि-चाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धाराऽ अभितत्पवन्ते॥

ॐ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम्॥
ॐ कुमार्यै नमः कुमारीं पूजयामि।

कुमारी पूजा के पश्चात् वटुक पूजा इस क्रम से करें सर्वप्रथम बटुक पूजा के लिए यजमान से यह संकल्प करावें-

अद्य श्रीलक्ष्मीपूजनकर्मणि साङ्गफलप्राप्तये वटुकपूजनं करिष्ये।

ॐ अनुते शुष्मन्तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुन्नमातरा।
विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि॥

ॐ वटुकाय नमः वटुकं पूजयामीत्यावाहना-दिराजोपचारैः संपूजयेत्।

वटुकपूजा के पश्चात् सुवासिनी पूजा इस क्रम से करें-

ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यः आयुर्मेदाः पुत्रवती दक्षिणत इन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः। सुखदा पश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मेदाऽ आश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मेदाः। विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्यऽ ओजो मेदा विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि।

ॐ या देवि सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै - नमस्तस्यै - नमस्तस्यै नमो नमः॥

इस प्रकार से पूजा करके-

ॐ बालायै नमः। ॐ कामेश्वर्यै नमः। ॐ गणेश्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ कलाभ्यो नमः।

इस प्रकार लक्ष्मी देवी के रूप का ध्यान कर वस्त्र एवं अलंकार उन्हें समर्पित कर यह प्रार्थना करें–

ॐ बन्धूकपुष्पसंकाशे त्रिपुरे भयनाशिनी।
भाग्योदयसमुत्पन्ने प्रसन्नवरदेति वै॥
जय देवि जगद्धात्रि त्रिपुरे च त्रिदैवते।
भक्तेभ्यो वरदे देवि महिषघ्नि नमोऽस्तु ते॥
जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये जगन्मोहनविधायिनि।
सर्वविघ्नहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

सुवासिनीपूजा के पश्चात् निधि पूजन इस क्रम से करें–

ॐ धन्वनागा धन्वनाजिञ्जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम। धनुः शत्रोरपकामङ्कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम॥

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथाप्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः॥

ॐ स्वर्णधर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा॥

अथवा–ॐ कुबेराय नमः इस नाम मंत्र से पूजन कर यह प्रार्थना करें–

ॐ धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च।
भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादिसम्पदः॥

ततः—षोडशसंख्याकान् गोधूमनिर्मितान् सधृतादिसतहितान् अपूपान् षोडशलडडूकान् षोडशऋतुफलानि नानापक्वापक्वसाकादीनि दक्षिणां च श्रीमहालक्ष्मी पूजायाः साद्गुण्यार्थमिद-माचार्याय दास्ये।

इसप्रकार उपर्युक्त संकल्प यजमान करके इस श्लोक का उच्चारण करके ब्राह्मण को दे दें—

ॐ इन्दिराप्रतिगृह्णाति इन्दिरा वै ददाति च।
इन्दिरातारकोभाभ्यामिन्दिरायै नमो नमः॥

पश्चात् उस चरणोदक को लेकर दूसरे पात्र में लेकर इस श्लोक का उच्चारण करके पिये—

ॐ गङ्गापुष्करनर्मदा च यमुनागोदावरीगोमती।
गङ्गाद्वार गया-प्रयाग-बदरी-वाराणसी सिन्धुषु॥
रेवासेतुसरस्वतीप्रभृतिषु ब्रह्माण्डभाण्डोदरे।
तीर्थस्नानसहस्त्रकोटिफलदं श्रीमूर्तिपादो दकम्॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः चरणोदकं पिबामि। ततः—

ॐ तां मऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्॥

इस मंत्र से पूजित पुष्पमाला को सूँघ कर गले में धारण करें।

ततः—'अनेन यथाशक्तअर्चनप्रकारेण श्रीमहालक्ष्मीः प्रीयताम्'

उपर्युक्त वाक्य 'अनेन से प्रियताम्' तक पढ़कर भूमि या दूसरे पात्र जल में छोड़ें। पूजा के पश्चात् चढ़ाये हुए जल पुष्पादि को तुलसी आदि में छोड़ देवें।

यजमान को इन श्लोकों द्वारा ब्राह्मण आशीर्वाद प्रदान करें–

ॐ भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु।
रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्प्रदः सन्तु सर्वदा॥
स्तुवन्तु ब्राह्मणा नित्यं दारिद्र्यं न च बाधते।
सर्वपापहरालक्ष्मीः सर्वसिद्धिप्रदायिनी॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीपते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥

त्रिनयनमभिमुखनिः सृतामिमां य इह पठेत्प्रयतश्च सदा द्विजः।
स भवति धनधान्यपशुपुत्रकीर्तिमानतुलं च सुखं समस्नुते दिवीति दिवीति॥

सम्भव हो तो उस रात्रि में उत्सव पुराण कथा–कीर्तन आदि करके बन्धु–बान्धवों सहित रात्रि जागरण करें, प्रातः काल ब्राह्मण भोजनादि करवायें।

होमादिविसर्जनान्तकर्म

यजमान यथास्थान बैठकर प्राणायाम, शान्ति सूक्त का उच्चारण करके यह संकल्प करें–

देशकालौ-संकीर्त्य गोत्रः, शर्मा अस्मिन् सनवग्रहमखहवनात्मक महालक्ष्मीयागकर्मणि गणेशाम्बिकयोः, वरुणस्य, सगणपानां षोडशमातृणां, सप्तमातृणां, वास्तुपीठस्थदेवानां, मण्डपदेवतानां, सर्वतोभद्रपीठस्थदेवतानां, प्रधानस्य सपरिवारस्य मेखला-देवानामग्नेः शान्तिकलशदेवस्य, नवग्रहाणां सपरिवाराणां, योगिनीनां, क्षेत्रपाला-नामाचार्यादिऋत्विजां च पूजनं करिष्ये।

आचार्य उपरोक्त संकल्प से सम्बन्धित सभी विधि को करके यजमान से गणेश जी का ध्यान करावें-

इस श्लोक से यजमान अपनी शिखा बाधे-

ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते॥

इस श्लोक का उच्चारण कर प्रार्थना करें-

ॐ सहस्त्राणि सहस्त्रसो बाह्वोस्तव हेतयः।
तासामीसानो भगवः पराचीना मुखा कृधि॥

इस मंत्र से आसन पर स्थापित करें-

ॐ यऽएतावन्तश्चभूयाठं॰सश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे।
तेषांठं॰ सहस्त्रयोजने वधन्वा नितन्मसि॥

ततः-ॐ अवेष्टा दन्दशूकाः प्राचीमारोह गायत्री त्वावतु रथन्तरठं॰ साम त्रिवृत्स्तोमो वसन्तऽ ऋतुर्ब्रह्मद्रविणम्॥ ॐ पूर्वायै नमः॥

ॐ दक्षिणामारोह त्रिष्टुप्त्वावतु बृहत्साम पञ्चदशस्तोमो ग्रीष्मऽ ऋतुः क्षत्रन्द्रविणम्॥ ॐ दक्षिणायै नमः॥

ॐ प्रचीचीमारोह जगती त्वावतु वैरूपठं॰ साम सप्तदशस्तोमो वर्षाऽ ऋतुर्विड्द्रविणम्॥ ॐ पश्चिमायै नमः॥

ॐ उदीचीमारोहा-नुष्टुप्त्वावतु वैराजठं॰ सामैकविंठं॰ शस्तोमः शरद् ऋतुः फलन्द्रविणम्॥ ॐ उत्तरायै नमः॥

इन श्लोकों का उच्चारण कर दिग्बन्धन करें–

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
उपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वतोदिशम्।
सर्वषामविरोधेन हवनं च समारभे॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषांर्ठ० सहस्त्रयोजने वधन्वा नितन्मसि॥

इस प्रकार से दिग्बन्धन करके ग्रहों का हवन समाप्त करके उस दिन व दूसरे दिन प्रधान न्यास करें उपरान्त इन श्लोकों का उच्चारण कर ध्यान करें–

ॐ त्वं परा प्रकृतिः साक्षाद् ब्रह्मणः परमात्मनः।
त्वत्तो जातं जगत्सर्वं त्वं जगज्जननी शिवे॥
महदाद्यणुपर्यन्तं यदेतत्सचराचरम्।
त्वयैवोत्पादितं भद्रे त्वदधीनमिदं जगत्॥
त्वमाद्या सर्वविद्यानामस्माकमपि जन्मभूः।
त्वं जानासि जगत्सर्वं न त्वां जानासि कश्चन॥
त्वं काली तारिणी दुर्गा षोडशी भुवनेश्वरी।
धूमावती त्वं वगला भैरवी छिन्नमस्तका॥
त्वमन्नपूर्णा वाग्देवी त्वं देवी कमलालया।
सर्वशक्तिस्वरूपा त्वं सर्वदेवमयी तनुः॥
त्वमेव सूक्ष्मा स्थूला त्वं व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणी।
निराकारापि साकारा कस्त्वां देदितुमर्हति॥

उपासकानां कार्यार्थ श्रेयसे जगतामपि।
दानवानां विनाशाय धत्से नानाविधास्तनूः॥
चतुर्भुजा त्वं द्विभुजा षड्भुजाऽष्टभुजा तथा।
तमेव विश्वरक्षार्थं नानाशस्त्रास्त्रधारिणी॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

ततः-ॐ महालक्ष्म्यै नमः-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ विष्णुवामाङ्कसंस्थितायै नमः-तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सौभाग्यजनन्यै नमः-मध्यमाभ्यां नमः। ॐ सुखदायै नमः-अनामिकाभ्यां नमः। सौभाग्यकर्त्र्यै नमः-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ समस्तभूतान्तर-संस्थितायै नमः-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः।

इसके पश्चात् श्रीसूक्त के पूर्व न्यासों को पुनः करके इन श्लोकों से यजमान ध्यान करें-

ॐ अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा,
कमलधृतेष्टाभीति युग्मांबुजा च।
मणिमुकुटविचित्रालङ्कृतिः पद्ममाला भवतु।
भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥

ततः प्रधानहोमः। आवरणादिस्थापितदेवानां होमः।
सतिसं भवेलक्ष्मीसहस्त्रमन्त्रैनामर्होमः।

निम्न श्लोकों का उच्चारण कर प्रार्थना करें-

ॐ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलान्तर्गतशुभगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरे प्रसीद मह्यम्॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्॥
पद्मानने पद्मउरु पद्माक्षीपद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
विष्णुप्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥

लक्ष्मी गायत्री—

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियपुत्राश्च मयि श्रीर्देवीदेवता॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥

अथोत्तरपूजनम्

उत्तर पूजन के लिए निम्न संकल्प यजमान करें-

ततः-कृतस्य लक्ष्मीयागकर्मणः साङ्गतासिद्धये आवाहित देवानामुत्तरपूजां करिष्ये॥

इसप्रकार संकल्प करके गणपत्यादि देवताओं की पूजा करें-

स्विष्टकृत्-कर्म

आचार्य इस वैदिक मंत्र से यजमान से अग्नि का पूजन करवायें-

ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽ अस्म्मान् विश्श्वानि देवव्वयुनानि व्विद्वान्। युयोद्ध्यस्म्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं व्विधेम।

अग्नि पूजन के उपरान्त आचार्य बड़े पात्र बायें हाथ से शाकल को ग्रहण कर दाहिने हाथ से घी भर कर स्रुव को ले दाहिनेपैर की जांघ को मोड़कर ब्रह्मा से स्पर्श कर इस मन्त्र से स्विष्टकृत संज्ञक आहुति देवें-

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥

व्याहृतिहोमकर्म

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए नौ व्याहृति आदि की आहुति यजमान से घृत द्वारा प्रदान करवायें-

ॐ भूः स्वाहा-इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा-इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा-इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम॥

ॐ स त्त्वं नो ऽअग्नेऽवमो भवोती ने दिष्ठोऽअस्या-ऽउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणꣳ रराणोव्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न ऽएधि स्वाहा॥ इदं मग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वम-याऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशाः वितता महान्तः। ते भिर्न्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमꣳ श्रथाय। अथाव्वयमादित्य व्व्रते वानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यायादितये न मम॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये न मम॥

॥ इति व्याहृतिहोमकर्म॥

दशदिक्पालबलिकर्म

आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करें-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे-हवे सुहवर्ठ० शूर मिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिनोर्ठ० स्वस्ति घमन्द्रवा धात्विन्द्रः॥

पश्चात् आचार्य पुष्प, अक्षत और जल यजमान के दाऐं हाथ में देकर यह उच्चारण करवायें-

ॐ इन्द्राय नमः इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिभाष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो इन्द्र! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य, सपरिवारस्य, आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता, वरदो भव अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम्।

पूर्वाभिमुख होकर आचार्य पुष्प-अक्षत और जल भूमि में डलवायें-

'ॐ त्वन्नो ऽअग्ने अग्नये' साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधि माष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो अग्ने ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनने बलिदानेन अग्निः प्रीयताम्।

दक्षिणे 'ॐ यमाम त्त्वा' ॐ यमाय नमः यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधि माषभक्त बलिं समर्पयामि।

भो यम! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम्।

नैऋत्याम्–'ॐ असुन्वन्त' ॐ निर्ऋत्ये नमः निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति काय इमं सदीप दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो निर्ऋते! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता, क्षेमकर्ता, शांतिकर्ता, पुष्टिकर्ता तुष्टि कर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम्।

पश्चिमे–'ॐ तत्वा यामि' ॐ वरुणाय नमः वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधिभाष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो वरुण! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम्।

वायव्याम्–'ॐ आनो नियुद्भिः' ॐ वायवे नमः वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधि माष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो वायो! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्

उत्तरे 'ॐ वयर्ठ० सोम' ॐ सोमाय नमः सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो सोम! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम्।

ईशान्याम्–'ॐ तमीशानं जगतः' ॐ ईशानाय नमः ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि।

भो ईशान! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम्।

ईशान पूर्वयोर्मध्ये–'ॐ अस्मे रुद्रा मेहना' ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि।

भो ब्रह्मन्! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता-तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम्।

निर्ऋति पश्चिमयोर्मध्ये–'ॐ स्योना पृथिवि' ॐ अनन्ताय नमः, अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिभाषभक्त बलिं समर्पयामि।

भो अनन्त! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव अनेन बलि दानेन अनन्त प्रीयताम्॥

एकतन्त्रेण दिक्पालबलिदानम्

आचार्य निम्न मन्त्रादि का क्रम से उच्चारण करते हुए यजमान के द्वारा इन्द्रादि-दशदिक्पालों के लिए बलि समर्पण करावें-

ॐ प्राच्च्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्च्यैदिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा र्व्वाच्यैदिशे स्वाहा प्रतीच्च्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्यै दिशे स्वाहो दीच्च्यै दिशे स्वाहा र्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहो दृर्ध्वायै दिशे स्वाहा र्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा र्वाच्च्यै दिशे स्वाहा र्वाच्च्यै दिशे स्वाहा॥ इन्द्रादिभ्योदशेभ्यो दिक्पालेभ्यो नमः।

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्य सपरिवारेभ्य सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमान् सदीपदधिभाषभक्तबलीन् समर्पयामि।

भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः! स्वां स्वां दिशं रक्षता बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः, वरदाः भवत। अनेन बलिदानेन इन्द्रादयोदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।

नवग्रहबलिकर्म

आचार्य निम्न मन्त्रादि का उच्चारण करते हुए यजमान से सूर्यादि नवग्रह बलि को समर्पित करावें-

'ॐ आकृष्णेन' ॐ सूर्याय नमः, सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराग्नि रूपाधि देवता प्रत्यधिदेवता सहिताय इमं सदीपमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो सूर्य! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन सूर्यः प्रीयताम्।

'ॐ इमन्देवाः' ॐ सोमाय नमः, सोमाम साङ्गा० उमा आपोरूपाधिदेवता सहिताय इमं सदीप०। भो सोम! इमं बलि० अ० सोमः प्रीयताम्।

'ॐ अग्निर्मूर्द्धा' ॐ भौमाय नमः, भौमाय साङ्गाय स्कन्दभूमिरूपाधि देवता प्रत्यधिदे०। भो भौम! बलिं० अ० भौमः प्रीयताम्।

'ॐ उद्बुध्यस्व' ॐ बुधायः नमः, बुधाय साङ्गाय नारायणविष्णु रूपाधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहि०। भो बुध! इमं बलिं भक्ष० अ० बलिं बुधः प्रीयताम्।

'ॐ बृहस्पतेऽअति' ॐ बृहस्पते नमः, बृहस्पतये साङ्गा० ब्रह्मेन्द्ररूपाधि देवता प्रत्यधिदेव०। भो बृहस्पते! दिशं रक्ष० अ० बलिदानेन बृहस्पतिः प्रीयताम्।

'ॐ अन्नात्परि' ॐ शुक्राय नमः, शुक्राय साङ्गाय इन्देन्द्राणी रूपाधि देवता प्रत्यधिदेवता। भो शुक्र! इमं ब० अ० ब० शुक्रः प्रीयताम्।

'ॐ शन्नोदेवीः' ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय यम प्रजापतिरूपाधि देवताप्रत्यधिदेव०। भो शनैश्चराय! अनेन ब० शनैश्चरः प्रीयताम्।

'ॐ कयानश्चित्र' राहवे साङ्गा० कालसर्प रूपाधि देवदिभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्य सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपदधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि। भो सूर्यादयो देवाः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारो वरदाः भवत। अनेन बलिदानेन साङ्गाः सूर्यादिनवग्रहा प्रीयन्ताम्।

'अथवा'

एकतन्त्रेणग्रहबलिकर्म

आचार्य निम्न मंत्रादि का उच्चारण करते हुए यजमान से ग्रहपीठस्थ-अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, पञ्चलोकपाल, यज्ञसंरक्षक इन्द्रादि दशदिक्पालों सहित सूर्यादि सपरिवार और आयुध सशक्तियों के लिए दधि-उड़द युक्त बलि यजमान से समर्पित करावें-

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जा हुतयोव्वयन्तो व्विप्प्रायमतिम्। तेषां विशिप्प्रिया-णांव्वोहमिषमूर्ज्जꣳ० समग्ग्रभमुपया मगृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषत यो निरिन्द्रा यत्वाजुष्टतमम्॥

ग्रहपीठ स्थेभ्यःसूर्यादिनवग्रहेभ्यः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता पञ्चलोकपाल क्रतु संरक्षक दशदिक्पाल सहितेभ्यो देवेभ्यो नमः। सुर्यादिभ्यः सांगेभ्य सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपदधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि। भो सूर्यादयो नवग्रह इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः वरदाभवत अनेन बलिदानेन सांगाः सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम्।

षोडशमातृकाबलिकर्म

आचार्य निम्न मन्त्रादि का उच्चारण करते हुए यजमान से क्रमानुसार गणेश–गौरी आदि सोलहमाताओं के लिए बलि समर्पण करावें–

ॐ समख्ये देव्याधियासन्दक्षिणयारु चक्षसा। मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहन्तववीरंव्विदेयतवदेविसन्दृशि।

सगणेश गौर्यादि मातृभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः इमं सदीप माषभक्त बलिं समर्पयामि।

गणेशपूर्वकषोडसमातृकाभ्यो नमः।इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्याभ्युदयकर्त्र्यः आयुःकर्त्र्य क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदाः भवत।

अनेन बलिदानेन सगणेशगौर्यादिमातरः प्रीयन्ताम्।

प्रधानबलिकर्म

आचार्य निम्न मन्त्रादि का उच्चारण करते हुए यजमान से विष्णु-गरुण सहित सर्वतोभद्रमण्डलस्थब्रह्मादि देवताओं को नमस्कार करावें और इन देवों को उड़द और दही मिश्रित बलि को यजमान से ही समर्पित करावें-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳ सुरे।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्श्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्व्वलोकं म इषाण।

ॐ सुपर्णोऽसिगरुत्माँस्त्रिवृत्तेशिरोगायत्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम ऽआत्माच्छन्दाꣳसि यजूꣳषिनाम। सामतेतनूर्व्वामदेव्व्यंयज्ञायज्ञियं पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसिगरुत्मान्दिवङ्गच्छस्वः पत।

महाविष्णु-महालक्ष्मी-सुपर्णदेवतापूर्वक अनेन बलिदानेन महाविष्णुमहालक्ष्मीसुपर्णपूर्वकब्रह्मादिसर्वतोभद्र देवताः प्रीयन्तताम्।

वास्तुबलिकर्म

आचार्य निम्न मंत्रादि का क्रम से उच्चारण कर यजमान से नमस्कार वास्तुबलि समर्पित करावें

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानिह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥

सवास्तोष्पतिशिख्यादिभ्यो नमः। वाष्तोष्पतये शिख्यादिभ्यश्च सांगेभ्यः सशक्तिकेभ्यः सायुधेभ्यः इमान् सदीपदधिमाषभक्त बलीन् समर्पयामि।

भो वास्तोष्पतिशिख्यादिदेवताः इमं बलि गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदाः भवत। अनेन बलिदानेन सवास्तोष्पतिशिख्यादयः प्रीयन्ताम्।

योगिनीबलिकर्म

आचार्य निम्न मंत्रादि का क्रम से उच्चारण करते हुए चौंसठ योगीनियों के लिए बलि यजमान से ही समर्पित करावें-

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ श्रीश्श्च ते लक्ष्मीश्श्च पत्न्यावहोरात्त्रे पार्श्वे नक्षत्त्राणि रूपमश्श्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण॥

ॐ पावकानः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। यज्ञंव्वष्टुधियावसुः॥

ॐ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती पूर्वक चतुषष्ठियोगिनीभ्यो नमः। चतुः षष्ठियोगिनीभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपदधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो भो महाकाली-महालक्ष्मी- महासरस्वती पूर्वक चतुःषष्ठि योगिनी देवता! इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः, क्षेमकर्त्र्यः, शान्तिकर्त्र्यः, पुष्टिकर्त्र्यः, तुष्टिकर्त्र्यः वरदाभवतः। अनेन बलिदानेन महाकाली- महालक्ष्मी- महासरस्वती पूर्वक योगिन्यः प्रीयन्ताम्॥

क्षेत्रपालबलिकर्म

आचार्य सूर्प आदि में चारमुँखवालादीपक, उड़द, दधिमिश्रितचावल, पान, दक्षिणा, कूष्माण्डपात्र में जल, हलदी, रोली, सिन्दूर, पताका और 'लालपुष्पयुक्तबलि' को रख कर यजमान से इस वाक्य का उच्चारण करवायें- ॐ क्षेत्रपालादिभ्यो नमः इसके उपरान्त इन श्लोकों का क्रम से उच्चारण करते हुए आचार्य यजमान से यह प्रार्थना करवायें-

आवाहयामि देवेशं भैरवं क्षेत्रपालकम्।
दिव्यतेजं महाकायं नानाभरण भूषितम्॥ १॥
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं गृह्णन्नमोऽस्तु ते।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः॥ २॥
शाकिन्यो यक्ष-वेतालाः योगिन्यःपूतनाःशिवाः।
जृम्भकाःसिद्धगन्धर्वा नानाविद्याधरा नगाः॥ ३॥
दिक्पालाः लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः।
जगतां शांतिकर्तारौ ब्रह्माद्याश्च महर्षयः॥ ४॥
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः॥ ५॥

आचार्य इन मन्त्रादि का उच्चारण करके निम्न क्रम से ही वेतालादि परिवार सहित, क्षेत्रपालादि समस्तपरिवारभूतों के लिए यजमान से इस बलि को समर्पित करवायें-

ॐ नहिस्प्पशमविदन्नन्यम स्म्माद्वैश्श्वानरात्पुरऽए-तारमग्नेर्ठ०। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्त्यं व्वैश्श्वा नरङ् क्षैत्रजित्त्याय देवाः॥

वेतालादि परिवारयुत क्षेत्रपालादिसर्वभूतेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-शाकिनी सहितेभ्यः कुंकुमारक्तपुष्पा-दियुतं सदीपं सदक्षिणं बलिं समर्पयामि॥

भो भो क्षेत्रपालादयः इमं बलिं गृह्णीत यजमानस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः, निर्विघ्नकर्तारः, वरदाः भवत॥

अनेन सार्वभौतिक बलिप्रदानेन क्षेत्रपालादयः प्रीयन्ताम्॥

इस बलि को शूद्र या दूर्ब्राह्मण एक बार शिर पर से घुमाकर ले जाए और वह पीछे की ओर कदापि न देखे और उसे लेजाकर नैऋत्यकोण में पड़ने वाले चौराहे पर रख आवे। उस समय आचार्य अपने यजमान के साथ उस स्थान पर जावे तथा यजमान से ही अक्षत एवं जल छिड़कवाकर इन मंत्रों का स्वयं उच्चारण करें-

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्क्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्घ्राताय स्वाहा निविष्ट्टाय स्वाहो पविष्ट्टाय

स्वाहा सन्दिताय स्वाहा व्वल्गते स्वाहाऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृताय स्वाहासर्ठ० हानाय स्वाहो पस्थिताय स्वाहा यनाय स्वाहा प्प्रायणाय स्वाहा॥

इसके पश्चात् अपने हाथ-पैर को शुद्ध जल से धोकर अपने आसन पर बैठ जावे।

पूर्णाहुतिः

आचार्य पूर्णाहुति कर्म के लिये अपने यजमान से इस संकल्प को करावें-

लक्ष्मीयागकर्मणः सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं 'मृडनामाग्नौ' पूर्णाहुतिं होष्ये।

उपरोक्त संकल्प के पश्चात् चार अथवा बारहबार घी को यज्ञीयपात्र स्रुव के द्वारा स्रुचि नामक पात्र में ग्रहण कर शिष्टाचार से उस स्रुचि पर सुपारी, पान, पुष्प, रेशमीवस्त्र से वेष्टित कर पुष्पमालाओं से सुशोभित तथा सुगन्धयुक्तद्रव्य सिन्दूर आदि द्रव्य से सुसज्जित कर उसे स्रुचि पर रखकर आचार्य इस वैदिक मंत्र से उसका पूजन यजमान से करावें-

ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापत सुपूर्ण्णा पुनरापत। व्वस्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जर्ठ० शतक्रतो॥

उपरोक्त कर्म के पश्चात् अधोमुख स्रुव को रख स्रुचि को हाथों से यथोचित रूप से पकड़ के तथा आचार्य व सभी ब्राह्मण खड़े होकर इन वैदिक मंत्रों का उच्चारण करें-

ॐ समुद्द्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२॥ उदारदुपाꣳ शुना सममृतत्वमानट्। घृतस्यनामगुह्यं यदस्ति जिह्वादेवाना-ममृतस्य नाभिः।

ॐ व्वयन्नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञेधारयामा-नमोभिः। उपब्रह्माशृणवच्छस्यमानञ्चतुः शृङ्गोवमीद्-गौरऽएतत्।

ॐ चत्वारिशृङ्गात्त्रयोऽअस्य पादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽ-अस्य। त्रिधाबद्धोव्वृषभोरोरवीति महो-देवोमर्त्त्याँ२। ऽआविवेश।

ॐ त्रिधाहितं पणिभिर्गुह्य मानङ्ग विदेवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्रऽएकꣳ सूर्य्य ऽएकञ्जजान-व्वेनादेकꣳ स्वधयानिष्टतक्षुः

ॐ एताऽअर्षन्तिहृद्यात् समुद्द्राच्छत व्रजारि-पुणानावचक्षे। घृतस्यधाराऽ अभिचाकशी मिहिरण्य-योव्वेतसोमध्य-ऽआसाम्॥

ॐ सम्म्यक्स्त्रवन्ति सरितोन धेनाऽअन्तर्हृदा-मनसापूयमानाः। एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्यमृगा-ऽइवक्षिपणो- रीषमाणाः॥

ॐ सिन्धोरिवप्राध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्यधारा ऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः॥

ॐ अभिप्प्रवन्तसमनेवयोषाः कल्याण्यः स्मयमानासो-ऽअग्निम् ॥ घृतस्यधाराः समिधो न सन्तता-जुषाणो हर्य्यतिजातवेदाः ॥

ॐ कन्याऽइवव्वहतु मेतवाऽउऽअञ्ज्यञ्जा नाऽअभि- चाकशीमि। यत्रय सोमः सूयतेयत्र-यज्ञोघृतस्यधारा अभित त्पवन्ते ॥

ॐ अभ्यर्षतसुष्टुतिङ्गव्यमाजिमस्म्मासुभद्द्राद्द्र विणानिधत्त। इमं यज्ञन्नयत देवता नो घृतस्यधारा मधुमत्पवन्ते ॥

ॐ धामन्ते व्विश्श्वम्भुवनमधिश्रिश्रतमन्तः समुद्रेहद्युन्त- रायुषि। अपामनीकेसमिथेयऽआभृतस्त मश्याम मधुमन्तन्त ऽऊर्म्मिम् ॥

ॐ पुनस्त्वा दित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धतांपु न र्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः। घृतेनत्वन्तन्वं व्वर्धयस्वसत्याः सन्तुयज मानस्यकामाः ॥

ॐ सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्त धाम प्प्रियाणि ॥ सप्त होत्राः सप्तधा त्त्वा यजन्ति सप्त योनीराप्टणस्व घृतेन स्वाहा ॥

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्या व्वैश्श्वानरमृत-ऽआ जातमग्निम्। कविंठ० सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥

ॐ पूर्णादर्व्विपरापत सुपूर्णापुनरापत। व्वस्ने-वव्विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्जं शतक्क्रतो स्वाहा॥ १५॥

उपरोक्त मंत्रों के पश्चात् स्रुचि में स्थित नारिकेल को अग्निकुंड में यथोचित् रूप से सीधा रख दे। उपरान्त श्रुचि स्थित घी के शेष भाग को इस वाक्य का उच्चारण कर प्रोक्षणी पात्र में छोड़ देवें-**इदमग्नये वैश्वानराय न मम॥**

वसोर्धाराहोम:

आचार्य इस संकल्प को वसोर्धाराहोम के निमित्त यजमान से करावें-

कृतस्य लक्ष्मीयागकर्मण: साङ्गता सिध्यर्थं वसोर्द्धारां होष्यामि।

संकल्प के उपरान्त अग्नि के ऊपर दो स्तम्भों में धारण की हुई, उदुम्बर की सीधी मनोहर बाहुमात्र प्रमाण की वसोर्धारा को प्रागग्र रख, उसके ऊपर शृंखला से परिपूर्ण निर्मल घी से ताम्र आदि द्वारा नीचे यवमात्र छित्र द्वारा आज्य को छोड़ते हुए अग्नि के ऊपर ही वसोर्धारा गिरावे। उसके मुख में सोने की जिह्वा बाँधें, श्रुचिपात्र द्वारा नाली से अग्नि में गिरती हुई जो धारा है, अत: उस समय आचार्य एवं सभीब्राह्मण इन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से वसोर्धाराकर्म के निमित्त हवन करावें-

ॐ सप्तेऽअग्ने समिध: सप्तजिह्व्वा: सप्तऽऋषय: सप्तधामप्प्रियाणि। सप्तहोत्रा: सप्तधात्वायजन्तिसप्तयोनी-रापृणस्वघृतेन स्वाहा॥

ॐ शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्ज्योतिष्म्माँश्च शुक्कश्चऋतपाश्चात्यर्ठ० हाः॥

ॐ ईदृङ्चान्या दृङ्च सदृङ्चप्प्रति सदृङ् च। मितश्च्च सम्मितश्च्चसभराः॥

ॐ ऋतश्श्च सत्यश्श्च ध्रुवश्श्चधरुणश्श्च। धर्त्ता चव्विधर्त्ता च व्विधारयः॥

ॐ ऋतजिच्चसत्य जिच्चसेनजिच्च सुषेणश्श्च। अन्तिमित्रश्च दूरेऽअमित्रश्च गणः॥

ॐ ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊषणुः सदृक्षासः प्प्रति सदृक्षासऽएतन। मितासश्च सम्मितासोनोऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञेऽअस्मिन्॥

ॐ स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्त पनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चो ज्जे षी। इन्द्रन्दैवीर्व्विशोमरुतो नुवर्त्मानो ऽभवन्न्यथेन्द्रन्दैवी व्विशोमरुतोऽनुवर्त्मानो ऽभवन्। एवमिमं यजमानंदैवीश्श्चव्विशोमानुषीश्श्चा नुवर्त्मानो भवन्तु॥

ॐ इमंर्ठ० स्तनमूर्ज्जस्वन्तंधयापां प्रपीनमग्ग्ने सरिरस्य मद्ध्ये। उत्संजुषस्वमधुमन्तमर्व्वन्तसमुद्रियर्ठ० सदनमाविशस्व।

ॐ व्वसोः पवित्रमसिशतधारं व्वसोः पवित्रमसिसहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा॥

हवन के उपरान्त जो घृतादि शेष हो उसे प्रोक्षणीपात्र में इस वाक्य का उच्चारण करके छोड़ देवें-

'इदमग्नये वैश्वानराय न मम'

अग्निप्रदक्षिणादिकर्म

यजमान अग्नि देव की प्रदक्षिणा कर अग्नि के पीछे पश्चिमदेश में पूर्वाभिमुख बैठे पश्चात् आचार्य स्त्रुव के द्वारा कुंड से भस्म लेकर इनचार मन्त्रों द्वारा क्रम से यजमान के ललाट-गले-दाहिने बाहु और हृदय में भस्म लगावें-

१. **ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः** -ललाट् पर इस मन्त्र से लगावें।

२. **ॐ कश्यपश्यत्र्यायुषम्** -गले पर इस मन्त्र से लगावें।

३. **ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषम्** -दाहिने बाहु पर इस मन्त्र से लगावें।

४. **ॐ तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्** -हृदय में इस मन्त्र से लगावें।

उपरोक्त कर्म के पश्चात् प्रोक्षणी में स्थित घृत का यजमान प्राशन करें व आचमन भी करें। पुनः प्रणीता में स्थित पवित्री ग्रन्थि को अलग कर उन पवित्रीयों से प्रणीता जल को अपने शिर पर छिड़क कर उन दोनों पवित्र कुशों को अग्नि में छोड़ देवें।

पूर्णपात्रदानम्

आचार्य दक्षिणायुक्त पूर्णपात्र का यह संकल्प यजमान से करावें-

अद्य कृतस्य लक्ष्मीयागकर्मणः साङ्गतासिद्धये तत्सम्पूर्ण फलप्राप्तये च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे।

पश्चात्-ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रति गृह्णातु।

प्रणीताजलेन संस्कारादि

आचार्य अग्नि के पीछे जलयुक्तपात्र को लेकर रख दे, तत्पश्चात् उसे उलट दें, पुनः उस जल को निम्न मन्त्र द्वारा 'उपयमनकुशा' आदि से यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी तथा पुत्रादि के शिर पर सेचन करें-

ॐ आपः शिवा शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्॥

उपयमन कुशा को अग्नि में फेक देवें तथा दोनों हाथों को जल से धोवें।

तत्पश्चात् अंजलि में फूल लेकर विभिन्न देवताओं के पूजामन्त्रों से उनकी तथा आवरण पूजा को देवी के वाम हस्त की ओर पूजा समर्पित करके देवी के चरणकमलों में स्थित जीवात्मा सहित श्रीदेवी को अपने अंजलिगत पुष्पों के द्वारा पूजितकर चन्दनादि से पंचोपचार समर्पित कर बार-बार पंचोपचार मुद्रा प्रदर्शित करें-

लक्ष्मी देवी के-

नासिका में	गन्ध देवता
कर्ण में	पुष्प देवता
नाँभि में	धूप देवता
नेत्रों में	दीप देवता
जिह्वा में	नैवेद्य देवता

इस क्रम से सबको मग्न होकर मूल मंत्र का जाप करें-

श्रेयोदानम्

यजमान से यह संकल्प श्रेयोदान के निमित्त आचार्य करावें-

देशकालौ संकीर्त्य-लक्ष्मीयागकर्मणः श्रेयोदानं करिष्ये।

निम्न वाक्यों का उच्चारण यजमान करें-

ॐ शिवा आपः सन्तु-ॐ सौमनस्यमस्तु। अक्षतं चारिष्टं चास्तु। दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु॥

उपर्युक्त वाक्यों का क्रमानुसार उच्चारण कर जल, पुष्प, अक्षत, सुपारी नारिकेल आदि लेकर पुनः निम्न संकल्प करें। एवं संकल्प के पश्चात् फल आदि यजमान को दे देवें, यजमान उसे सुगुप्तस्थान पर रख दे, एवं अवसर मिलने पर भक्षण करें।

भवन्नियोगेन मया अस्मिन् लक्ष्मीयागकर्मणि तदुत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत्तुभ्यमहं सप्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव।

आचार्य कर्तृक श्रेयोदानम्

आचार्य अपने दायें हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प करें-

भवन्नियोगेन मया एभि ब्राह्मणैः सहकृतं यदाचार्यत्वं ब्रह्मत्वं सदस्यत्वं गाणपत्यमुपद्रष्टृ त्वं जप होमादिकं च बहूत्पन्नं यच्छ्रेयस्तदमुना फलादिना तुभ्यमहं संप्रददे।

पश्चात् आचार्य अपने हाथ के जल को भूमि पर छोड़ देवें।

अभिषेककर्म

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण उत्तर दिशा की ओर मुख करके पूर्वाभिमुख बैठे सपत्नीक यजमान तथा उसके परिवार के सभी

सदस्यों का पूर्व स्थापित समस्तकलशोंकेजल को चौड़े मुख के पात्र में जरा-जरा सा लेकर दूर्वा व पंचपल्वादि के द्वारा इन वैदिक मंत्रों व श्लोकों का उच्चारण कर अभिषेक करें-

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्व्वाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्तिये दधामि बृहस्प्पतेष्ट्वा साम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ १॥

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्व्वाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि॥ २॥

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्व्वाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। अश्विनौर्भैषज्ज्येन तेजसे ब्ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥ ३॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥ १॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥ ३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सिताऽर्कजा ॥ ५ ॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः ॥ ६ ॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥ ८ ॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु-यजमान कहें।

तथास्तु-ब्राह्मण कहें।

पश्चात् अभिषेक कर्म के लिए निम्न संकल्प करके दक्षिणा देवें-

ततः-कृतस्याभिषेक कर्मणः समृद्धयर्थं दक्षिणां दातुमह उत्सृज्ये।

दक्षिणा प्रदान करने के पश्चात् यजमान की धर्मपत्नी एक बार आचमन करे, एवं अपने पति के दाहिने बैठ जावें।

आचार्यादिनां दक्षिणा संकल्पः

इस संकल्प को यजमान करें-

कृतस्य लक्ष्मीयागकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो, महर्त्विगभ्यः, सूक्तपाठकेभ्यो, मन्त्रजापकेभ्यो, हवनकर्तृभ्योऽन्येभ्यो देवयजनमागतेभ्यश्च दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

पीठदानादिसंकल्पः

आचार्य इस संकल्प को यजमान से करावें–

कृतस्य लक्ष्मीयागकर्मणः समृद्ध्यर्थमिमानि सोपस्करसहितानि प्रधानपीठादीनि आचार्याय संप्रददे। कृतैतत्पीठदानकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं यथाशक्तिदक्षिणामाचार्याय संप्रददे।

ध्वजापताकादिदानसंकल्पः

आचार्य इस संकल्प को यजमान से करावें–

कृतस्य लक्ष्मीयागकर्मणः समृद्ध्यर्थमिमं मण्डपं ध्वजपताकाद्युपस्करयुतामाचार्याय संप्रददे।

कृतस्य मंडपदान सांगतासिद्ध्ये यथाशक्ति द्रव्यमाचार्याय संप्रददे।

कृतस्य लक्ष्मीयागकर्मणः समृद्ध्यर्थमिमानि यज्ञपात्राणि यज्ञपूजोपकरणानि आचार्याय संप्रददे।

ब्राह्मणभोजन संकल्पः

ब्राह्मणभोजन के निमित्त इस संकल्प को आचार्य यजमान से करावें–

कृतस्य लक्ष्मीयागकर्मसमृद्ध्ये यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि।

भूयसीदक्षिणासंकल्पः

भूयसीदक्षिणा के निमित्त निम्न संकल्प करे–

"कृतेऽस्मिन् लक्ष्मीयागकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोष-परिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नटनर्तक गायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्तिभूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये"

क्षमापनम्

आचार्य इन श्लोकों का क्रम से यजमान से उच्चारण करवाके क्षमापन कर्म करावें–

चतुर्भिश्च-चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च।
हूयते न पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥ १ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर!।
यन्मम त्रुटितं देव! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥ ३ ॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर! ॥ ४ ॥
जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतुमेऽछिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥ ५॥
काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ॥ ६॥
सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥ ७॥

अज्ञानात् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
विपरीतं तु तत्सर्व क्षमस्व परमेश्वर! ॥ ८ ॥
न्यूनातिरिक्तं यत्कर्म जपहोमार्चनादिकम्।
कृतमज्ञानतोदेव! तन्ममक्षन्तु मर्हषि ॥ ९ ॥
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः ॥
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष! सर्वपापहरो - हरिः ॥ १० ॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ ११ ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्य तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं संपूर्णतां याति सद्योवन्देतमच्युतम् ॥ १२ ॥

पश्चात् निम्न वाक्य का तीन बार उच्चारण करें-

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

आशीर्वादः

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण इन श्लोकों का उच्चारण करके यजमान एवं उनके परिवार के सभी सदस्यों को आशीर्वाद प्रदान करें-

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु,
गोहस्तिवाजि धन - धान्य समृद्धिरस्तु।
ऐश्वर्यमस्तु विजयोऽस्तु रिपुक्षयोऽस्तु,
कल्याणमस्तु सततं हरिभक्तिरस्तु ॥ १ ॥
त्रिनयनमभिमुख निः सृतामिमां,
यः इह पठेत्प्रयतश्च सदाद्विजः।
स भवति धनधान्य पशु पुत्रकीर्तिमामनुतलं च,
सुखं समश्नुते दिवीति दिवीति ॥ २ ॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ ३ ॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तुमनोरथाः।
शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥ ४ ॥

देवविसर्जनकर्म

आचार्य देवताओं के विसर्जन कर्म के निमित्त इस संकल्प को यजमान से करावें-

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशुर्भवासचा॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

इस वैदिक मंत्र एवं श्लोक का उच्चारण कर अग्नि का विसर्जन करें-

ॐ यज्ञयज्ञ्ङ्गच्छयज्ञपतिङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा। एषते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वर!।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥

पश्चात् यजमान धारण की हुई पवित्रि का कर्मान्त में त्याग करें, अवशिष्ट जल को तुलसी आदि में छोड़ दें, तथा इष्ट-मित्र आदि व प्रिय बान्धवों के साथ उत्साह पूर्ण भोजन करें।

॥ लक्ष्मीयाग समाप्तः॥

होमात्मको [1]लक्ष्मीनारायणयाग

यज्ञ मुहूर्त से पूर्वदिन यथाशक्ति सर्वप्रयाश्चित करके सपत्नीक यजमान मांगलिक स्नान कर तिलक लगाकर एवं अपनी शिखा का बन्धन कर कम्बलादि के शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, रक्षादीप प्रज्वलित कर हाथ में पवित्री धारण कर स्मार्त विधि से दो बार आचमन एवं प्रणाम करके पूजन सामग्री एवं स्वयं को पवित्र जल छिड़क कर पवित्र करे, तत्पश्चात् अपने दाँये हाथ में अक्षत और पुष्प लेवें, उस समय आचार्य सहित अन्य ब्राह्मण [2]शांति पाठ करें।

शान्तिपाठ के पश्चात् यजमान के दाऐं हाथ में जल, अक्षत, पुंगीफल यथा शक्ति द्रव्य देकर इस संकल्प को आचार्य करावें—

प्रधान संकल्पः

देशकालौ सङ्कीर्त्य—सपत्नीकोहंसर्वेषां भारतवर्षीय-द्विजात्यादिस्त्रीपुंसानां नित्यकल्याणप्राप्त्यर्थम्, कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक चतुर्विधपापक्षयपूर्वक-माध्यात्मिकाधिदैहिकादि भौतिक त्रिविधतापोय शान्तिसकल दुःखशेषनिवृत्तिपुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिपूर्वकजन्म वर्षमासकुण्डली-स्थविषमस्थानस्थितसूर्याद्यन्यतमग्रह सूचितसूचयिष्यमाणै तज्जन्मान्तरोपार्जित सकलबाधा-निवृत्तये जगद्बीजपुरु-

---

१-लक्ष्मीनारायणं यागं पुत्र पौत्र विवर्धनम्।
सर्वारिष्टहरं पुण्यमेत युक्तं मनीषिभिः॥ [कर्मविपाके]

२. शान्तिपाठ के लिए इस पुस्तक की पृष्ठ सं. ७५ देखें।

षोत्तमलक्ष्मीनारायण प्रीत्यर्थं पुरुषसूक्तेन लक्ष्मीसूक्तेन च प्रत्यृचं [1]षष्टिसहस्त्राधिकैकलक्ष संख्यं सनवग्रहमखहोमात्मकं श्रीलक्ष्मी नारायणयागमेभिर्द्विजैः शमदमादिनिखिल-गुणगणभरितैः सहाद्यारभ्य करिष्ये। तदङ्गत्वेन [2]स्वस्तिपुण्याहवाचनं, मातृकापूजनं, वसोर्द्धारापूजनं, आयुष्यमन्त्रजपं, नान्दीश्राद्धमाचार्यावरणानि च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता-सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये॥

संकल्प के पश्चात्-अगर मण्डप निर्माण किया गया हो तो मण्डप प्रवेश, वास्तुपूजन, मण्डपपूजन कुण्ड में अग्निस्थापन, ग्रहस्थापन, असंख्यातरुद्रस्थापन, विष्णुयाग के सदृश्य ही करें।

उसके पश्चात् [3]सर्वतोभद्रपूजन आचार्य करावें-यजमान मध्य वेदी के पश्चिम की ओर कुशा के आसन पर बैठकर आचमन व प्राणायाम एवं शान्तिपाठ करें, पश्चात् हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प देश और कालका स्मरण करते हुए करें-

---

१. नागरकृतविष्णुयागे प्रामाण्यलवे कल्पस्मृत्यन्तरे ज्येष्ठनारदपञ्चरात्रे च। यत्र होमात्मको यागो वैष्णवः पापनाशनः। तत्र लक्षं सहस्त्राणि षष्टिश्चाहुतयो मताः॥ लक्षत्रयं सहस्त्राणं विंशतिं जहुयाद्यदा। तं महाविष्णुयागं वै प्रवदन्ति विपश्चितः॥ यत्राशीतिसहस्त्राणि तथा लक्षचतुष्टयम्। आहुतीनां मताः सङ्ख्या अतिविष्णुं ब्रुवन्ति तम्॥ तत्रैव-

एकलक्षं द्विलक्षं च त्रिलक्षं च ततः परम्। मोक्षार्थीक्रमतो जप्त्वा द्वादशाक्षरसंयुतम्॥ अर्काक्षरयुक्तेन पुरुषसूक्तं समाचरेत्। तथैव चाहुतिर्दिया ग्रहयज्ञपुरः सरम्॥

२. गणेशम्बिकापूजन, स्वस्तिुण्याहवाचन, मातृकापूजन, वसोद्वारापूजन, आयुष्यमंत्रजप, नांदीश्राद्धआदि वैदिककर्म विष्णुयाग अथवा ग्रहशांति से करें।

३. सर्वतोभद्रपूजन के लिए इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या देखें-

ततः देशकालौ सङ्कीर्त्य–अस्मिन् सनवग्रहमखहवनात्मकलक्ष्मीनारायणयागकर्मणि लक्ष्मी[1] नारायणपूजां करिष्ये। तदङ्गत्वेन आसनविधिं विघ्नोत्सारणं दिग्बन्धनं शिखाबन्धनं सर्वतोभद्रदेवतास्थापनं तत्र कलशस्थापनं यन्त्रविलेखनमधः पीठादौ लक्ष्मीनारायणप्रतिमा–स्थापनम्, मण्डपादिध्यानं द्वारपालपूजां, स्वशरीरे लक्ष्मीसूक्तपुरुष- सूक्तादिन्यासं पूजाकलशार्चनं शङ्खार्चन भूम्यर्चा पुरुषसूक्तलक्ष्मीलूक्ताभ्यां स्वशरीरे मार्जनं अधमर्षणम्, उपस्थानं स्वात्मनि भगवत्पूजां पाद्यार्घ्याचमनीयमधुप–र्कद्रव्याद्यभिमन्त्रणं पूजाद्रव्योपकल्पनं पीठपूजाम्, अग्न्युत्तारणम्, आवाहनंप्रतिष्ठापनं, देवशरीरे लक्ष्मी सूक्तपुरुषसूक्तयोर्न्यासम्, आसनाद्यर्पणं लक्ष्मीसूक्तपुरुष-सूक्ताभ्यां मूर्त्यभिषेकं जलाद्देवं बहिर्निष्काष्य यन्त्रे समुपवेशन वस्त्राभरणोपवीतोपवस्त्रगन्धाक्षतपुष्पमाला- तुलसीदलार्पणं गन्धाक्षतपुष्पैरावरणपूजां धूपादिपुष्पा–ञ्जल्यन्तपूजनं न्याससहितं लक्ष्मीसूक्तपुरुषसूक्तयोर्जपं द्वादशाक्षरमन्त्रजपं प्रसादोदकपानं प्रसादनैवेद्यभक्षणं 'ॐ जितन्त' इति स्तवनं च करिष्ये।

---

१. कर्मविपाके–लक्ष्मीनारायणौ कार्यौ संयुक्तौ दिव्यरूपिणौ। दक्षिणस्था विभोमूर्तिर्लक्ष्मीमूर्तिस्तु वामगा। दक्षिणः कण्ठलग्नोऽस्य वामो हस्तः सरोजधृक। विभोर्वामकरो लक्ष्म्याः कुक्षिभागस्थितः सदा॥ सर्वावयवसम्पूर्णा सर्वालङ्कारशोभिता। सिद्धिः कार्या समीपस्था चामरग्राहणी शुभा॥ उक्तप्रकारा कर्तव्या पलेनार्धार्धमानतः। सौवर्णी प्रतिमा सूत राजती वा यथोक्तवत्। तन्मन्त्रेण च सम्पूज्य षोडशैरुपचारकैः। देया वेदविधिज्ञाय सर्वकार्यप्रसाधिनी॥ योऽर्चयेन्नित्यमव्यक्तं लक्ष्मीनारायणं विभुम्। मन्त्रैः पुरुषसूक्तैश्च स याति परमाङ्गति॥ हिरण्मयं च यो दद्याल्लक्ष्मीनारायणं त्विह। सम्पूज्य विधिवद्देयं मन्त्रैस्तल्लिङ्गजैरलम्॥ वातपित्तोद्भवाद्रोगान्मुच्यते नात्र संशयः। लक्ष्मीनारायणं दानं पुत्रपौत्रविवर्धनम्। सर्वारिष्टहर पुण्यमेतदुक्तं मनीषिभिः॥

संकल्प में सभी आये हुए वैदिक कर्मों को विष्णुयाग प्रयोग द्वारा करके ही गणेश जी का पूजन कर इस श्लोक व नाम मंत्रों से आसन की पूजा करें-

ॐ पृथ्वि! त्वया धृतालोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

ॐ अनन्तासनाय नमः। ॐ विमलासनाय नमः। ॐ परमसुखासनाय नमः।

इस श्लोक का उच्चारण कर भैरव जी की आज्ञा ग्रहण करें-

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पानत दहनोपम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यनुज्ञां दातुमर्हसि॥

इस मंत्र से दिग्बन्धन करके- **ॐ ये भूतानाम्।**

इस नाम मंत्र से भूमि में तीन बार बायें पैरको रखें-

ॐ भैरवाय नमः

इस मन्त्र से शिखा बाँधे- **ॐ उर्ध्वकेसी विरूपाक्षि०**

सर्वतोभद्रपीठ पर ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन एवं स्थापन करें। वेदी के मध्य में कलश स्थापन विधि से कलश की स्थापना कर उस पर सोना, चाँदी या ताँबे के पात्र या रेशमी वस्त्र पर लक्ष्मीनारायण यंत्र लिखे।

लक्ष्मीनारायण यंत्र लिखने का प्रकार

अष्टगन्ध अथवा चन्दन से एक बिन्दू बनावें, उसके बाहर एक त्रिकोण लिखें, त्रिकोण के बाहर एक अष्टकोण बनावें, उसके बाहर एक वृत्त बनावें फिर अष्टदल बनावे, फिर शोडषदल बनावें, फिर तीन वृत्त देवें। फिर चतुस्र बनावे, फिर चारों ओर तीन रेखा चारों दिशाओं में द्वार युक्त बनावे, इस प्रकार 'श्री यन्त्र' लिखने के बाद पीढादि पर स्वर्णमयी 'लक्ष्मीनारायणप्रतिमा' चन्दनादि से

लिख उसके सम्मुख, गरुण प्रतिमा को प्रत्यङ्गमुख स्थापित कर, स्वर्णमयचतुरद्वारविमलसुशोभित मण्डप का ध्यान कर उसमें नानारत्नखचित मुक्ता अलंकृत सिंहासन का स्मरण करें।

पूर्व दिशा में– **ॐ गं गणपत्ये नमः।**

दक्षिणदिशा में– **ॐ वां वटुकाय नमः**

पश्चिम दिशा में– **ॐ क्षां क्षेत्रपालय नमः**

उत्तर दिशा में– **ॐ यां योगनीभ्यो नमः।**

मण्डपकेदाहिने– **ॐ गां गंगायै नमः।**

बाँयी ओर– **ॐ यं यमुनायै नमः।**

ऊपर की ओर– **ॐ सं सरस्वत्यै नमः।**

तथा नीचे की ओर– **ॐ अस्त्राय फट्।**

इस प्रकार से पूजा कर गंधाक्षत, पुष्प चढ़ावें, तथा अपने शरीर में निम्न प्रकार से न्यास करें।

न्यासविधिः

सर्वप्रथम हाथ में जलादि लेकर निम्न विनियोग पढ़ते हुए अन्त में जल भूमि में छोड़े–

अस्य श्रीलक्ष्मीनारायणपूजामन्त्रस्य श्रीशिव ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः लक्ष्मीनारायण देवता, श्री बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, भोगापवर्ग सिद्ध्यर्थे लक्ष्मीनारायणपूजायां न्यासे विनियोगः।

गायत्रीमंत्र–

ॐ लक्ष्मीनारायणाय विद्महे परब्रह्मणे धीमही। तन्नः परमात्मा प्रचोदयात्॥

ॐ शिवऋषये नमः—शिरसि।

ॐ त्रिष्टुप्छन्दसे नमः—मुखे।

ॐ लक्ष्मीनारायण देवतायै नमः—हृदि।

ॐ श्रीं बीजाय नमः—गुह्ये।

ॐ ह्रीं शक्तये नमः—पादयोः।

ॐ कीलकाय नमः—सर्वाङ्गेषु।

ततः—

ॐ ह्रां श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं श्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रैं श्रैं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः श्रः करतलरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां श्रां हृदयाय नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रूं श्रूं शिखायै वौषट्।

ॐ ह्रैं श्रैं स्वः कवचाय हुम्।

ॐ ह्रौं श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रः श्रः अस्त्राय फट्।

पुनः—ॐ कामरूप पीठाय नमः—अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं जालन्धरपीठाय नमः—तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रः सौः पूर्णगिरिपीठाय नमः—मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं अवन्तीपीठाय नमः—अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ श्रीं सप्तपुरीपीठाय नमः—कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं हः सौः ह्रीं श्रीं वाराणसी पीठाय नमः—
करतलपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ कामरूप पीठाय नमः—हृदयाय नमः।

ॐ ह्रीं जालन्धर पीठाय नमः—शिरसे स्वाहा।

ॐ हः सौः पूर्णगिरि पीठाय नमः—शिखायै वषट्।

ॐ ह्रीं अवन्ती पीठाय नमः—स्वः कवचाय हुम्।

ॐ श्रीं सप्तपुरी पीठाय नमः—नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रीं हसौः ह्रीं श्रीं वाराणसीपीठाय—अस्त्राय फट्।

न्यास करने के पश्चात् विष्णुयाग के सदृश्य 'लक्ष्मीनारायण' न्यास करके अपने वामभाग में पूजा कलश स्थापित करें।

पश्चात् [1]इमम्मेवरुण इस मंत्र के द्वारा वरुण का पूजन कर गायत्री से दस बार अभिमंत्र करे और तीर्थो का आवाहन करें—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धुकावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥ १॥
सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदानदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ २॥
'ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः'

इस प्रार्थना के द्वारा विष्णु जी का आवाहन करें फिर आवरण पूजा के पश्चात् के सभी वैदिक कर्मो को विष्णुयाग के सदृश्य ही करें।

१-इमं मे वरुण श्रधी हवमद्या च मृडया त्वामवस्युरा चक्रे॥ ऋ० १।२५।१६

[1]लक्ष्मीनारायणपूजनयन्त्रमारभेत्

बाह्यद्वारेषु पूर्वादिक्रमेण—ॐ वज्राय नमः वज्रमा०। ॐ शक्तये० शक्तिमा०। ॐ दण्डाय० दण्डमा०। ॐ खड्गा० खड्गमा०। ॐ पाशाय० पाशमा०। ॐ यष्टिने० यष्टिमा०। ॐ ध्वजाये० ध्वजमा०। ॐ शूलाय० शूलमा०।

पुनस्तत्रैव—ॐ इन्द्राय० इन्द्रमा०। ॐ अग्नये० अग्निमा०। ॐ यमाय० यममा०। ॐ नैर्ऋतये० नैर्ऋतिमा०। ॐ वरुणाय० वरुणमा०। ॐ सोमाय० सोममा०। ॐ कुबेराय० कुबेरमा०। ॐ ईशानाय० ईशानमा०। ॐ ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा०। ॐ अनन्ताय० अनन्तम०।

आग्नेय—ॐ हृदयाय नमः। ईशाने—ॐ शिरसे स्वाहा। नैर्ऋतये-ॐ शिखायै वषट्। वायव्ये-ॐ कवचाय हुम्। पुनराग्ने-ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वदिक्षु-ॐ अस्त्राय फट्। ततः प्राग्दले-ॐ वासुदेवाय०। दक्षिणे-ॐ सङ्कर्षणाय०। पश्चिमे-ॐ प्रद्युम्नाय०। उत्तरे-ॐअनिरुद्धाय०। आग्नेयादिविदिक्षु-ॐ शङ्खाय०। ॐ चक्राय०। ॐ गदायै०। ॐ पद्माय०। पूर्वादिक्रमेण—ॐ कौस्तुभाय०। ॐ खड्गाय०। ॐ मुसलाय०। ॐ बनमालायै०। प्रागदिक्—ॐ ध्वजाय०। ॐ गरुडाय०। ॐ शङ्खनिधये०। ॐ पद्मनिधये०। ॐ गणपतये०। ॐ आचार्याय०। ॐ दुर्गायै०। ॐ विश्वक्सेनाय०। प्रागदिक०।

---

१. पुत्रकामश्चेदष्टदले अशक्तौ शालग्रामशिलायां वा पूजनम्। तत्र अष्टदलपक्षे आवरण देवताः।

ॐ इन्द्राय०। ॐ अग्नये०। ॐ निर्ऋतये०। ॐ वरुणाय०। ॐ वायवे०। ॐ कुबेराय०। ॐ ईशानाय०। ऊर्ध्वम् ब्रह्मणे०। अधः—अनन्ताय०। प्रागादिक०- ॐ वज्राय०। ॐ शक्तये०। ॐ दण्डाय०। ॐ खड्गाय०। ॐ पाशाय०। ॐ अकुशाय०। ॐ ध्वजाय०। ॐ शूलाय०। ॐ पद्माय०। ॐ चक्राय०। देवस्य दक्षे-ॐ अर्जुनाय०। ॐ प्रह्लादाय०। ॐ नारदाय०। ॐ पुण्डरीकाय०। ॐ पराशराय०। ॐ व्यासाय०। ॐ शुकाय०। ॐ अम्बरीषाय०। ॐ वसिष्ठाय०। ॐ दालभ्याय०। ॐ शौनकाय०। ॐ बलये०। ॐ विभीषणाय०। ॐ भीष्माय०। ॐ रुक्माङ्गदाय०। ॐ मार्कण्डेयाय०। ॐ भृगवे०। देवस्य वामे- ॐ सनकाय०। ॐ सनन्दनाय०। ॐ वसुदेवाय०। ॐ शुकाय० इति पूजयेत्।

वृत्तत्रये—ॐ स्वगुरुभ्यो० स्वगुरुमा०। ॐ परमगुरुभ्यो० परमगुरुमा०। ॐ परापरगुरुभ्यो० परापरगुरुमा०। ॐ असिताङ्गाय० असिताङ्गमा०। ॐ हंसकेतवे० हंसकेतुमा०। ॐ वंशपाणिने० वंशपाणिामा०।

षोडशारे—उत्तरक्रमेण—ॐ केशवाय० केशवम०। ॐ माधवाय० माधवमा०। ॐ कृष्णाय० कृष्णमा०। ॐ गोविन्दाय०। गोविन्दमा०। ॐ मधुसूदनाय० मधुसूदनमा०। ॐ गङ्गाधराय० गङ्गाधरमा०। ॐ शङ्खधराय० शङ्खधरमा०।

ॐ चक्रपाणिने० चक्रपाणिमा०। ॐ चतुर्भुजाय० चतुर्भुजमा०। ॐ पद्मायुधाय० पद्मायुधमा०। ॐ कैटभारिणे० कैटभारिणमा०। ॐ धोरदंष्ट्राय० धोरदष्ट्रमा०। ॐ जनार्दनाय०। जनार्दनमा०। ॐ बैकुण्ठाय० बैकुण्ठमा०। ॐ वामनाय० वामनमा०। ॐ गरुडध्वजाय० गरुडध्वजमा०।

अष्टदले–ॐ संहाराय० संहारमा० १ ॐ रुरुकाय रुरुकमा० २ ॐ चण्डाय० चण्डमा० ३ ॐ भूतेशाय० भूतेशमा० ४ ॐ कालभैरवाय० कालभैरवायमा० ५ ॐ कपालाय० कपालमा० ६ ॐ भीषणाय० भीषणमा० ७ श्मशानाय० श्मशानमा० ८

वसुकोणे–ॐ लक्ष्मीविष्णवे० लक्ष्मीविष्णुमा०। ॐ लक्ष्मीवासुदेवाय० लक्ष्मीवासुदेवमा०। ॐ लक्ष्मीदामोदराय० लक्ष्मीदामोदरमा० ॐ लक्ष्मीनृसिंहाय० लक्ष्मीनृसिंहमा०। ॐ लक्ष्मीमहादेव्यै० लक्ष्मीमहादेवीमा०। ॐ लक्ष्मीसङ्कर्षणाय० लक्ष्मीसङ्कर्षणमा०। ॐ लक्ष्मीत्रिविक्रमाय० लक्ष्मीत्रिविक्रममा०। ॐ लक्ष्मीविश्वक्सेनाय० लक्ष्मीविश्वक्सेनमा०।

त्रिकोणे–ॐ गङ्गायै० गङ्गामा० १ ॐ यमुनायै० यमुनामा० २ ॐ सरस्वत्यै० सरस्वतीमा० ३।

विन्दौ–ॐ लक्ष्मीनारायणाय० लक्ष्मीनारायणमा०। ॐ महालक्ष्म्यै० महालक्ष्मी०। ॐ राज्यलक्ष्म्यै० राज्यलक्ष्मीमा०।

ॐ सिद्धलक्ष्म्यै० सिद्धलक्ष्मीमा०। ॐ शङ्खाय० शङ्खमा०। ॐ चक्राय० चक्रमा०। ॐ गदायै० गदामा०। ॐ पद्मायै० [1]पद्मामा०।

अथ छन्दः पुरुषन्यासः

(१) ॐ तिर्यग्बिलाय छन्दः पुरुषायोर्ध्वबुध्नाय छन्दः पुरुषाय नमः–शिरसि।

(२) ॐ गौतमभरद्वाजाभ्यां नमः–नेत्रयोः।

(३) ॐ विश्वामित्रयमदग्निभ्यां नमः– श्रोत्रयोः।

(४) ॐ वसिष्ठकश्यपाभ्यां नमः–नासापुटयोः।

(५) ॐ अत्रये नमः–वाचि।

(६) ॐ गायत्र्यै छन्दसे नमः अग्नये नमः–शिरसि।

१–यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशासिद्धिदं परम्। सर्व सम्मोहनं यन्त्रं-वाञ्छितैकप्रदायकम्॥ बिन्दुत्रिकोण वस्वश्रं वृत्ताष्टदलमण्डितम्। शोडषारं वृत्तत्रयं भूगृहेणोपशोभितम्॥ लक्ष्मीनारायणस्यैतच्छ्रीश्चक्रं परमार्थदम्। लयाङ्ग देवि वक्ष्यामि भोगयोगफलप्रदम्॥ वेदागमरहस्याढ्यं पूजाकोटिफलप्रदम्। वज्रशक्तिदण्डखङ्ग-पाशयष्टिध्वजास्ततः॥ शूलं पूज्यां शिवे चैते बाह्यद्वारेषु सर्वदा। इन्द्राग्नियममांसा-दवरुणानिलवित्तदाः॥ सेश्वराः साधकैः पूज्या ब्रह्मानन्तादयस्ततः। तत्रार्ययेन्महादेवि मन्त्रो गुरुचतुष्टयम्॥ असिताङ्गं हंसकेतुं वशपाणिं च पूजयेत्। वृत्तत्रयेषु देवेशि साधको गन्धपुष्पकैः॥ केशवं माधवं कृष्णं गोबिन्दं मधुसूदनम्। गङ्गाधरं शङ्खधर चक्रपाणिं चतुर्भुजम्॥ पद्मायुधं कैटभारिं घोरदंष्ट्रं जनार्दनम्। वैकुण्ठं वामनं चैव पूजयेद्गरुडध्वजम्॥ षोडशारेषु देवेशि वामावर्तेनसाधकः। संहारं रुरुषु चण्ड भूतेशं कालभैरवम्॥ कपालं भीषणं चैव तथा श्मशानभैरवम्। पूजयेत्साधकः सिद्ध्यै वसुपत्रे महेश्वर॥ विष्णुं च वासुदेवं च देवं दामोदरं तथा नृसिंहं च महादेवि देव सङ्कर्षणं तथा॥ त्रिविक्रमं चानिरुद्धं विश्वक्सेनं च साधकः। लक्ष्मीशब्दाङ्कितं देवि वसुकोणेषु पूजयेत॥ गङ्गां च यमुनां चैव त्र्यश्रे सरस्वती तथा। पूजयेदग्रवह्नीशक्रमयोगेन पार्वती॥ लक्ष्मीनारायणं देवं पूजयेद्बिन्दुमण्डले। महालक्ष्मी राज्यलक्ष्मी सिद्धलक्ष्मीं च पूजयेत्॥ शङ्ख चक्रं गदां पद्मं पूजयेद् विन्दुमण्डले।

(७) ॐ उष्णिहे छन्दसे नमः सवित्रे नमः– ग्रीवायाम्।

(८) ॐ बृहत्यै छन्दसे नमः बृहस्पतये नमः–अनूके।

(९) ॐ बृहद्रथन्तराभ्यां नमः द्यावापृथिवीभ्यां नमः– बाह्वोः।

(१०) ॐ त्रिष्टुभे छन्दसे नमः इन्द्राय नमः–मध्ये।

(११) ॐ जगत्यै छन्दसे नमः आदित्याय नमः–श्रोत्योः।

(१२) ॐ अतिछन्दसे नमः प्रजापतये नमः–लिङ्गे।

(१३) ॐ यज्ञायज्ञियाय छन्दसे नमः–वैश्वानराय नमः गुदे। उदकोपस्पर्शः।

(१४) ॐ अनुष्टुभे नमः विश्वेभ्यो नमः–ऊर्वोः।

(१५) ॐ पङ्क्त्यै छन्दसे नमः मरुद्भ्यो नमः–जान्वोः।

(१६) ॐ द्विपदायै छन्दसे नमः विष्णवे नमः– पादयोः।

(१७) ॐ विच्छन्दसे नमः वायवे नमः–नासापुटस्थप्राणेषु।

(१८) ॐ न्यूनाक्षराय छन्दसे नमः अद्भ्यो नमः।

॥ इति हस्तद्वयविपर्यासेन मस्तकादिपादान्तम् ॥

अथ गोविन्दादिकरन्यासः

(१) ॐ गोविन्दाय नमः अङ्गुष्ठाग्रे।

(२) ॐ महीधराय नमः तर्जन्याम्।

(३) ॐ हृषीकेशाय नमः मध्यमायाम्।

(४) ॐ त्रिविक्रमाय नमः अनामिकायाम्।

(५) ॐ विष्णवे नमः कनिष्ठिकायाम्।

(६) ॐ माधवाय नमः करतलमध्ये।

अथ देहन्यासः

(१)	ॐ केशवाय नमः	मस्तके।
(२)	ॐ नारायणाय नमः	भाले।
(३)	ॐ माधवाय नमः	कर्णयोः।
(४)	ॐ गोविन्दाय नमः	अक्ष्णोः।
(५)	ॐ विष्णवे नमः	नासयोः।
(६)	ॐ मधुसूदनाय नमः	मुखे।
(७)	ॐ त्रिविक्रमाय नमः	कण्ठे।
(८)	ॐ वामनाय नमः	बाह्वोः।
(९)	ॐ श्रीधराय नमः	हृदि।
(१०)	ॐ हृषिकेशाय नमः	नाभौ।
(११)	ॐ पद्मनाभाय नमः	कट्याम्।
(१२)	ॐ दामोदराय नमः	पादयोः।

अथ [1]पुरुषसूक्तन्यासः

(१)	ॐ सहस्त्रशीर्षा०	वामकरे।
(२)	ॐ पुरुषऽएव०	दक्षिणकरे।

---

१. करयोः पादयोर्जान्वोः कठ्योर्नाभौ हृदि क्रमात्।
कण्ठे बाह्वोर्मुखे नेत्रे मूर्ध्नि वामादितो न्यसेत्॥
ॐकारपूर्वकैर्मन्त्रैः षोडशभिः पृथक्-पृथक्।
न्यासेनैव भवेत्सोऽपि स्वयमेव जनार्दनः॥
यथात्मानि तथा देवे न्यासं च परिकल्पयेत्।
(संस्कारगणपतौ मु० पृष्ठ० ८३४)

(३)	ॐ एतावानस्य	वामपादे।
(४)	ॐ त्रिपादूर्ध्व०	दक्षिणपादे।
(५)	ॐ ततो विराट्०	वामजानौ।
(६)	ॐ तस्माद्य० सर्वहु०	दक्षिणजानौ।
(७)	ॐ तस्माद्य० सर्व० ऋ०	वामकट्याम्।
(८)	ॐ तस्मादश्वा०	दक्षिणकट्याम्।
(९)	ॐ तं यज्ञं बर्हि०	नाभौ।
(१०)	ॐ यत्पुरुषं व्य०	हृदि।
(११)	ॐ ब्राह्मणोऽस्य मु०	कण्ठे।
(१२)	ॐ चन्द्रमा मन०	वामबाहौ।
(१३)	ॐ नाभ्याऽआसी०	दक्षिणबाहौ।
(१४)	ॐ यत्पुरुषेण ह०	मुखे।
(१५)	ॐ सप्तास्यासन्प०	नेत्रयोः।
(१६)	ॐ यज्ञेन यज्ञम०	मूर्ध्नि।

अथ [1]पञ्चाङ्गन्यासः

(१)	ॐ चन्द्रमा मन०	हृदयाय नमः।
(२)	ॐ नाभ्याऽआसीदन्त०	शिरसे स्वाहा।
(३)	ॐ यत्पुरुषेण हवि०	शिखायै वषट्।
(४)	ॐ सप्तास्यसन्परिध०	कवचाय हुम्।
(५)	ॐ यज्ञेन यज्ञमय०	अस्त्राय फट्।

१. पंचाङ्गन्यासपक्षे नेत्रन्यासाभावः इत्यन्तमते। अत्र पक्षद्वयमपि प्रामाणिकमित्यस्मन्मते।

अथवा

(१)	ॐ ब्राह्मणोऽस्य मु०	हृदयाय नमः।
(२)	ॐ चन्द्रमामनसो०	शिरसे स्वाहा।
(३)	ॐ नाभ्याऽआसीदन्त०	शिखायै वषट्।
(४)	ॐ यत्पुरुषेण हवि०	कवचायहुम्।
(५)	ॐ सप्तास्यासन्परिधय०	नेत्रत्रयाय वौषट्
(६)	ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त०	अस्त्राय फट्।

अथ लक्ष्मीसूक्तन्यासः

(१)	ॐ हिरण्यवर्णां हरि०	वामकरे।
(२)	ॐ ताम्मऽ आवह०	दक्षिणकरे।
(३)	ॐ अश्वपूर्वां रथम०	वामपादे।
(४)	ॐ कांसोस्मितां हिर०	दक्षिणपादे।
(५)	ॐ चन्द्रां प्रभासां	वामजानौ।
(६)	ॐ आदित्यवर्णे तम०	दक्षिणजानौ।
(७)	ॐ उपैतु मां देव०	वामकटच्याम्।
(८)	ॐ क्षुत्पिपासामलां०	दक्षिणकटच्याम्।
(९)	ॐ गन्धद्वारां दुरा०	नाभौ।
(१०)	ॐ मनसः कामका०	हृदि।
(११)	ॐ कर्दमेन प्रजा०	कण्ठे।
(१२)	ॐ आपः स्रृजन्तु०	वामबाहौ।
(१३)	ॐ आर्द्रां पुष्करणीं०	दक्षिणबाहौ।
(१४)	ॐ आर्द्रां यष्करणीं०	मुखे।

(१५) ॐ तां मऽआवह जात० नेत्रयोः।

(१६) ॐ यः शुचिः प्रयतो भू० मूर्ध्नि

अथ पञ्चाङ्गन्यासः

(१) ॐ आपः सृजन्तु० हृदयाय नमः।

(२) ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं० शिरसे स्वाहा।

(३) ॐ आर्द्रां यष्करिणीं० शिखायै वषट्।

(४) ॐ ता मऽआवह० कवचाय हुम्।

(५) ॐ यः शुचिः प्रयतो० अस्त्राय फट्।

अथ षडङ्गन्यासः

(१) ॐ अतो देवाऽ अवन्तु नो यतो विष्णुविचक्रमे। पृथिव्याः सप्तधामभिः॥ हृदयाय नमः॥

(२) ॐ इदं विष्णुविचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पार्ठ०सुरे॥ शिरसे स्वाहा॥

(३) ॐ त्रीणिपदार्विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽ अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥ शिखायै वषट्॥

(४) ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥ कवचाय हुम्॥

(५) ॐ तद्विष्णोः परमं पदर्ठ० सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्॥ नेत्रत्रयाय वौषट्॥

(६) ॐ तद्विप्रासौ विपन्यवो जागृवार्ठ० सः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥ अस्त्राय फट्॥

अथात्मरक्षान्यासः

(१) त्रातारमिन्द्रस्य गर्गऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता प्राच्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः। ॐ त्रातारमिन्द्रमवि०। ॐ केशवाय नमः। ॐ प्राच्यै नमः।

(२) त्वन्नो ऽअग्ने इत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गिरसऋषिर्जगतो छन्दोऽग्निर्देवता आग्नेयां दिशि सम्पुटीकरण नमस्कारे च विनियोगः। ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव०। ॐ मधूसूदनाय नमः। ॐ आग्नेय्यै नमः।

(३) यमायत्वेत्यस्य प्रजापतिऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः यमो देवता दक्षिणस्यां दिशि सं० न० वि०। ॐ यमायत्वा०। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ दक्षिणायै न०।

(४) अशुन्वन्तमित्यस्य प्रजा० त्रि० निऋतिर्देवता नैऋत्यां सं० न० वि०। ॐ असुन्वन्तमयज० ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः।

(५) तत्वायामीत्यस्य शुनः शेषऋषिः त्रिष्टुप्छ० वरुणो देवता प्रतीच्यां प्रतीच्यै नमः।

(६) आनोनियुद्भिरित्यस्य वसिष्ठऋ० त्रिष्टु० वायुर्दे० दि० स० न० वि०। ॐ आ नो नियुद्भिः श०। ॐ विष्णवे नमः। ॐ वायव्यै नमः।

(७) वयर्ठ० सोमेत्यस्य बन्धुऋषिर्गायत्री छ० सोमो देवता उदीच्यां० सं० न० वि०। ॐ वयर्ठ० सोमन्न०। ॐ पद्मनाभाय० उदीच्यै नमः।

(८) तमीशानमित्यस्य गौतमऋषिर्जगती छन्दः ईशानो देवता ईशान्यां दि० स० न० वि०। ॐ तमीशानं जग०। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ ईशान्यै नमः।

(९) अस्मे रुद्रा इत्यस्य प्रगाथऋषिः त्रिष्टु० ब्रह्मा देवता ऊर्ध्वायां स० न० वि०। ॐ माधवाय नमः ॐ ऊर्ध्वायै नमः।

(१०) स्योनापृथिवीत्यस्य मेधातिथिऋषिः गायत्रीछन्दः, अनन्तो देवता अधो दिशि सं० न० वि०। ॐ स्योना पृ० ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ धरायै नमः।

अथ गायत्रीन्यासः

ॐ भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ धियो यो नः प्रयोदयात् करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ भूः हृदयाय नमः। ओं भुवः शिरसे स्वाहा। ओं स्वः शिखाये वषट्। ओं तत्सवितुर्वरेण्यम्-कवचाय हुम्। ओं भर्गोदेवस्य धीमहि-नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्-अस्त्राय फट्।

अथाष्टाक्षरन्यासः

ओं नमो मूर्ध्नि। ओं न नमो नासिकायाम्। ओं नमो ललाटे। ओं नां नमो मुखे। ओं रां नमः कण्ठे। ओं यं नमः हृदये। ओं णां नमः वामदक्षिणहस्तयेः। ओं यं नमः नाभौ।

इस प्रकार से यजमान उपरोक्त न्यास को करके लक्ष्मीनारायण का ध्यान करें–

ध्यानम्–

पूर्णेन्दुवदनं पीतवसनं कमलासनम्।
लक्ष्म्याश्रितं चतुर्बाहुं लक्ष्मीनारायणं भजे॥ १॥
किरीटिनं कुण्डलहारमण्डितं पद्मासनं श्याममुखं चतुर्भजम्।
पीताम्बरं शंखगदाब्जचक्रपाणि पुराणं पुरुषं भजे विभुम्॥ २॥

इस प्रकार न्यास करके प्रतिदिन लक्ष्मीसूक्त व पुरुषसूक्त से हवन[1] करके, संभव हो तो अन्तिम दिन लक्ष्मीनारायणसहस्रनाम-मंत्रों से भी हवन करें तथा विष्णुयागवत् पूर्णाहु[2] त्यादि पर्यन्त सभी कर्म करें।

॥ होमात्मको लक्ष्मीनारायणयाग समासः॥

---

१. 'दीर्घायुराराग्यैस्वर्याभिवृध्यर्थमष्टोत्तरसहस्रसंख्याकं महामृत्यञ्जयमन्त्रेण पायसहवनं कुर्यात्'। आज्यभागानन्तरं 'ओं तस्माद्यमज्ञात्सर्वहुतंऽऋचः' इत्यारभ्य ओं यज्ञेन यज्ञनम' इत्यन्तं प्रतिमन्त्रेण स्वाहान्तेन आज्यप्लुतमश्वस्थसमिधया होमः कार्यः। एवम् ओं उपैतु मां देवसखः, इत्यारम्भ 'ओं यः शुचिः प्रयतो' इत्यन्तं प्रतिमन्त्रेण पूर्ववत् द्रव्येण होमः कार्यः। ततः स्रुवेणैव पूर्वोक्तविशतिमन्त्रेणाज्याहुतयो होतव्याः, सहस्रनामाहुतिश्च समसंख्याकं जुहुयात्। इति विष्णुदीपके। 'इच्छाचेत्तदा-कर्मसमृध्यर्थं जपादिहोम करिष्ये।' प्रयोगसारे 'वसन्ते लभते पुत्रं ग्रीष्मे सम्पत्तिरुत्तमा। वर्षायां च महत्सौख्यं शारदे धनवर्धनम्। हेमन्ते लभते सर्वं शिशिरे च पराङ्गतिम्। इति॥

२. पूर्णाहुत्यादि पर्यन्त सभी कर्म करने के लिए इस पुस्तक की पृष्ठ सं २५३ से सभी पृष्ठों को देखें, किन्तु संकल्प के स्थानों पर होमात्मको लक्ष्मीनारायणयाग लगेगा।

गणेश-याग

यजमान पूर्वाभिमुख शुद्धआसन पर बैठकर रक्षादीप प्रज्वलित करे, तथा यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी का ग्रंथिबन्धन आचार्य स्वयं करें, उपरान्त आचार्य इस वैदिक मंत्र का उच्चारण करके यजमान को पवित्रि धारण करवाये।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसव ऽउत्पुनाम्य च्छिद्द्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

इनतीन नामों का उच्चारण करके यजमान आचमन करें-

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः।

इस श्लोक से शुद्धि करण हेतु स्वयं के ऊपर एवं समस्त यज्ञसामग्री पर यजमान जल छिड़कें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

तीन बार उच्चारण करें-

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

फिर हाथ में पुष्पादि लेकर आचार्य सहित सभी ब्राह्मण [1]शांतिपाठ करें। शांतिपाठ की समाप्ति के पश्चात् आचार्य गणेशयाग को प्रारम्भ करवाने के हेतु इस प्रधान संकल्प को यजमान से करवायें-

देशकालसंकीर्तनान्ते-गोत्रः शर्मा (वर्मा, गुप्त, दास) श्री मन्विनायकोपसर्ग निवृत्ति पूर्वक श्रीमहागणपति प्रीतये

---

१. शांतिपाठ के लिए इस पुस्तक में पृष्ठसंख्या के पृष्ठों को देखें।

गणनांत्वेति मंत्रेण सहातून इति सूक्तस्य लक्षसंख्याकरण हवनातात्मक गणेशयागं तथा मूलमंत्रेण सहाथर्वशीर्षस्य पुरश्चरणात्मकयागं च सहैक तंत्रेण ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये। तदंगत्वेन [1]स्वस्तिपुणयाहवाचनं, मातृकापूजनं, आयुष्यमंत्रजपं, नान्दीश्राद्धं आचार्यदिवरणानि कर्म करिष्ये। तत्रादौ निर्विध्नता सिद्धयर्थं, गणेशाम्बिकयोःपूजनं च करिष्ये॥

पश्चात् पंचाङ्गपूजन से मण्डपप्रवेश पर्यन्त सभी कर्म विष्णुयाग प्रयोग से करके गण पतिभद्र अथवा सर्वतोभद्रीपीठ की रचना कर कर उसमें ब्रह्मादिदेवताओं का आवाहन एवं पूजन कर मंडल के मध्य में कलश का स्थापना एवं पूजन करें, उपरान्त कलश के ऊपर स्वर्ण, रजत अथवा ताम्र पत्र पर 'गणेशयंत्र' की विधिवत् स्थापना आचार्य करें।

यंत्र के मध्य में ॐ कार, फिर त्रिकोण, फिर षट्कोण, पुनः अष्टदलादि फिर चतुस्त्र, भूगृह, लाल चंदन से बनावें।

गणेश० यंत्रस्य इह प्राणा इह प्राणः।

गणेश० जीव इह स्थितः।

गणेश० सर्वेन्द्रियाणि।

गणेश० वाङ्मनः प्राणाः इहायां तु स्वाहा।

इति प्रतिष्ठा विधाय द्वारस्य दक्षवाम शाखयो रूर्ध्वभागो च-

श्रीं ह्रीं क्लीं-इस बीज का सर्वत्र प्रयोग करें।

१. भद्रकाल्यै नमः।

---

१. स्वास्तिुपुण्याहवाचन, मातृकापूजन, नान्दीश्राद्ध, आचार्यवरणादि कर्म 'विष्णुयाग प्रयोग' अथवा ग्रहशांतिप्रयोग पद्धति के द्वारा करावें॥

२. भैरवाय नमः।

३. लम्बोदराय नमः।

श्रीं ह्रीं क्लीं आधार शक्तिं कमलासनाय नमः।

इस प्रकार से द्वार देवताओं की पूजा कर अन्दर प्रवेश कर पूजन सामग्री को अपने दायें भाग की ओर रख कई दीपक या एक ही दीपक जलाकर "**ॐ गं गणपतये नमः**" इस मूल मंत्र द्वारा बारह बार मंत्रित जल से प्रोक्षित आसन में इस वाक्य का उच्चारण करके–पूर्वाभिमुख पद्म आसनादि किसी एक आसन से बैठकर निम्न कार्य करें–

ॐ वक्रतुण्डाय हुम्-इति पुष्पाञ्जलिं भूमौ विकीर्य श्रीगुरुपादुकेभ्यो नमः-इति मुर्ध्निबद्धाञ्जलिः। एवं स्ववाम-दक्षिणपार्श्वयोः–ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं, गं गणपतये वरवरदसर्वजनमेवशमानय स्वाहा।

इत्यष्टाविंशत्यक्षरमनुना देवं प्रणम्य स्वस्यतदैक्यं भावयन्।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं अपसर्पन्तु० शिवाज्ञया–

इस मंत्र का एक ही बार उच्चारण करके अपने बायें पैर को भूमि पर तीन बार पटके तथा सामने, बायें, दाएँ, तिरछे देख कर तीन बार ताली बजाकर भौम अन्तरिक्ष व दिव्य देवताओं का उत्सारण यजमान करें–

ततः–'**ॐ नमः**' इस मंत्र से शिखा में कुशा बाधें, भूत शुद्धि करे अथवा न करें।

करणपक्षे प्राणप्रतिष्ठान्ते विभूतिधा षोडशधा दशधा सप्तधा वा मूलेन २८ प्राणायामः।

ततः तेजो रूपं देवानन्यं भावयन् आत्मनं ऐं ह्रः अस्त्राय फट्।

इत्यावृत्यांगुष्ठादिकरतलान्तं कपूरयोश्च विन्यस्य देहे च व्यापकं कृत्वा मातृकान्यासे।

श्रीं ह्रीं क्लीं इति बीजत्रयं प्रथम योज्यमिति विशेषः।

ततः ॐ गां श्रीं गीं २ ह्रीं गूं ३ क्लीं गैं ४ ग्लौं गौं ५ गंगा ६ इत्यंगुष्ठादिकषरादि च न्यस्य मूलेन २८ त्रिर्व्यापकं कुर्यात्।

उपरान्त् हृदय में विघ्नों को हरण करने वाले गणेशजी का ध्यान कर मानसोपचारों से पूजन कर सामान्य व विशेषार्घ्य देवें।

ॐ ३ अं अग्निमण्डलाय द्वादशकलात्मनेऽर्घ्यपा-त्राधाराय नमः

ॐ ३ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मन-ऽर्घ्यपात्राय नमः।

ॐ ३ मं सोमण्डलाय षोडशकलात्मने ऽर्घ्यमृताय नमः- इति मन्त्रत्रयेणाधारपात्रार्घस्थजलं पूजनम्। देवगायत्र्या गणानां त्वेतित्यर्कगणेश यत्रं विशेषार्घबिन्दुभिः पूजासामग्रीं संप्रोक्षणं ततः-

नवरत्नमयं द्वीपं स्मरेद्दिक्षु रसाम्बुधा।
तद्बबांधोतपर्यन्तं मन्दमारुत सेवितम्॥
उदभासितरत्नछायाभिररूणीकृभूतलम्।
उद्यद्दिनकरेन्दुभ्यामुद्भासितदिगन्तरम्॥
राज्यमध्ये पारिजातं नवरत्नमयं स्मरेत्।
क्रतुभिः सेवितं षडखिरनिसं प्रीतिवर्द्धनैः॥

तस्याधस्तान्महापीठे रचिते मातृकाम्बुजे। षट्कोणान्तस्त्रिकोणाढ्य महागणपतिं स्मरेत्–इत्येवं पीठं ध्यात्वा अक्षतैः पुष्पैर्वा पीठपूजा॥

ॐ सर्वत्र मूलप्रकृत्यै० १ आधारशक्तयै० २ कूर्माय० ३ अनन्ताय ४ वराहाय० ५ पृथिव्यै० ६ क्षीरार्णवाय० ७ श्वेतद्वीपाय० ८ रत्नोज्वलित-स्वर्णमण्डलाय० ९ कल्पवृक्षाय० १० स्वर्णवेदिकायै० ११ सिंहासनाय० १२।

पादेषु-आग्नेयादि-धर्माय० १ ज्ञानाय० २ वैराग्याय० ३ ऐश्वर्याय ४।

गात्रेषु प्रागादि-अधर्माय १ अज्ञानाय० २ अवैराग्याय० ३ अनैश्वर्याय० ४।

कार्णिकायाम्-अनन्ताय० १ पद्माय० २ आनन्दकन्दाय० ३ संविन्नालाय० ४ प्रकृतिमयपत्रभ्यो० ५ विकारमयकेसरेभ्यो० ६ पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकायै-सूर्यमण्डलाय० ७ चन्द्रमण्डलाय० ८ अग्निमण्डलाय० ९ सत्याय० १० रजसे० ११ तमसे० १२ आत्मने० १३ अन्तरात्मने० १४ ज्ञानात्मने १५ मायातत्वाय० १६ कलातत्वाय १७ विद्यातत्वाय० १८ परतत्वाय० पूर्वादि–तीव्रायै १ ज्वालिन्यै० २ नन्दायै ३ भोगायै० ४ कामरूपिण्यै० ५ उग्रायै० ६ तेजोवत्यै ७ सत्यायै० ८ मध्ये-विघ्ननाशिन्यै० १ सर्वशक्तिकमलासनाय नमः २।

इस प्रकार कर्णिका में पुष्पाजलि देवें–

ॐ सत्यज्ञानानन्तानन्दरूपं परं धामैव सकलं पीठम् इति चिन्तयेत्।

इक्कीस पल स्वर्ण की गणेश प्रतिमा तर्द्ध से भी अर्ध प्रमाण की सिद्धि बुद्धि लक्ष लाभ समंत्रित्र मूषकवाहन सहित का [1]अग्न्युत्तारण आचार्य करें।

ध्यात्वा—

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशांकुशधरं देवं मोदकान्वितं च करैः॥
रक्तपुष्पमयी मालां कंठे हस्ते परांशुभाम्।
भक्तानां वरदां सिद्धिबुद्धिभ्यां सेवितं सदा॥
तथा च लक्षलाभाभ्यां लक्षलाभप्रदंसदा।
ब्रह्मरुद्रहरीन्द्राद्यैः संस्तुतं परमार्षिभिः॥
सिद्धिबुद्धिप्रदातृणां धर्माथकाममोक्षदम्॥

गणेशगायत्री—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रयोदयात्॥

गणनात्वा०—इति मन्त्राभ्यां मूलेनचावाह्य महागणपते ससुपुत्राभ्यामन्वितायासुवाहनयुताय नमः इति। ततः आवाहनस्थापनासन्निधापनसन्निरोधनसम्मुखीकरण-वगुष्ठनानि कृत्वा।

ॐ गां हृदयाय नमः। श्रीं गीं शिरसे०। ह्री गूं शिखायै व०। क्लीं गैं कव०। ग्लौं गंनेत्र०। गंगः अस्त्राट फट् इति।

---

१. अगन्युत्तारण के लिए इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या १३७ देखें।

सभी प्रकार से वन्दना करके धेनुयोनिमुद्रा प्रदर्शित कर पुरुषसूक्त व गणानान्त्वा. इसके द्वारा आचार्य पूजा करें।

तत्र विशेषः गजास्याय नमः—आवाहयामि।

विघ्नराजाय०—आसनं० १ लम्बोदराय०—पाद्यं० ३ शिवात्मजाय०—अर्घं ४ वक्रतुण्डाय०—आचमनीयं० ५ शूर्पकर्णाय—पञ्चामृतस्नानं० ६ कुब्जाय०—स्नानं० विनायकाय०—वस्त्रं ७ विघ्ननाशिने—उपवस्त्रं ८ यज्ञोपवीतं च ९ विकटाय—अक्षतान् १० वामनाय० गन्धं० ११ सर्वविघ्न-विनाशिने०—पुष्पं० १२।

अथावरणार्चनम्—कर्णिकायां पूर्वादि गणाधिपतये० गणेशाय० गणनाथकाय० गणक्रीडाय०।

केसरेषुपूर्वादि हृदयाय० शिरसे। शिखायैवषट् कवचायहुम्। नेत्रत्रयाय वौषट् इत्याग्नेये अस्त्राय फट् इतीशान्ये। नमोन्ता पूजनीयाः।

पत्रेषु-पूर्वादि वक्रतुंडाय० १ एकदन्ताय० २ महोदराय० ३ गजाननाय० ४ लम्बोदराय० ५ विकटाय० ६ विघ्नराजाय० ७ धूम्रवर्णाय० ८ दलाग्रेषु।

ब्रह्मादिक, इन्द्रादिदेवता औ उनके अस्त्रों के एकाक्षर मूल मंत्र एवं गंणपत्यअर्थवशीर्ष के अन्तर्गत आवरणदेवता इस प्रकार हैं—

अथाष्टाविंशत्यक्षरमूलमन्त्रस्यावरण देवताः

त्र्यस्त्रषडस्त्रयोरन्तराले प्रागादि क्रमेण बिल्ववृक्षस्याधस्थितां लक्ष्मीं पद्महस्तां चक्रशंखहस्तं वासुदेवं ध्यात्वा–

लक्ष्मीवासुदेवाभ्यां नमः–इति सम्पूज्य एवं दक्षिणे वटवृक्ष० तां पाशांकुशधरां गौरीं टङ्कशूलधरं हरम्–इति ध्यात्वा–गौरीगौरीपतिभ्यां०।

पश्चिमे पिप्पलवृक्ष० तामुत्पलद्वयहस्तां रतिथिइक्षुकोदण्डवाडधरं रतिपतिं ध्यात्वा रतिरतिपतिभ्यां। उत्तरे–प्रियंगुवट्० तांशुकव्रीहिबल्लिधरां भूमिं गदाचक्रधरं वराहम् ध्यात्वा महीवराहाभ्यां०। इतिप्रथमावरणम्। षडस्त्रेषु–गं ऋद्धि० मोदाभ्यां० गं समृद्धिप्रमोदाभ्यां० गं कान्तिसु–मुखाभ्यां० गे मदनावतीदुर्मुखाभ्यां० गं देपामद्रविघ्नाभ्यां० गं द्राविणीविघ्नकर्तृभ्यां० इति। दक्षपार्श्वे–वसुधारा–शङ्खनिधिभ्यां०। वामपार्श्वे वसुमती–पद्मनिधिभ्यां० इतिद्वि०। केसरेषु षडस्त्रसन्धिषट्केष्वित्यर्थः। ॐ गांहृदयाय० श्रींगींशिर० हूं गुंशिखा० क्लीं कव० ग्लौंगौनेत्रत्रया० गंगः अस्त्रा० इतितृ० अष्टपेत्रेषु पश्चिमादि आंब्राह्मयै० ईंमाहेश्वर्यै० ॐ कौमार्यै० ऋं वैष्णव्यै० ४ वायव्यादि लृंवाराह्यै० ऐंमाहेन्द्यै० औंचामुण्डायै० अःमहालक्ष्म्यै० इतिचतु०।

पत्राग्रेषु चतुरस्त्ररेखायाम्–इन्द्राय नमः इत्यादि ८ दिक्पालान् तदस्त्राणि च वज्राय० शक्तये० दण्डाय० खड्गाय० पाशाय० ध्वजाय० शङ्खाय० त्रिशूलाय० इतिपञ्च०।

सभी आवरण देवता भी देव के सम्मुख स्थापित करके ही उन देवताओं का पूजन करें।

अथाङ्गपूजाः

गणेश्वराय० पादौ पू० १ विघ्नराजाय० जानुनींपू० २ अखूवाहनाय नमः उरूंपू० ३ हेरम्बाय० कटिंपू० ४ कण्ठहारिसूनवे० नाभिं पू० ५ लम्बोदराय० उदरं पू० ६ गौरीसुताय० पू० ७ गणनायकाय० हृदयं पू० ८ स्थूलकण्ठाय० कंठं पू० ९ स्कन्दाग्रजाय० स्कन्धौ १ पाशहस्ताय० हस्तौ०। गजवक्त्राय० वक्त्रंपू० विघ्नहन्त्रे० ललाटं पू० सर्वेश्वराय० शिरः पू० गणाधिपाय० सर्वाङ्गपू०। अथैकविंशतिपत्रार्पणम् गणाधिपाय० दूर्वाप० ३ लम्बोदराय० बदरीप० ४ हरसूनवे० मधुप० ५ इभवक्त्राय० तुलसीप० ६ गुहाग्रजाय० अपामार्गप० ७ एकदन्ताय० बृहतीप० ८ शमीप० १० विकटाय० ९ करवीरप० विनायकाय अश्वत्थप० कपिलाय० अर्कप० वटपा० चंपकप० अभदाय० अर्जुनप० पत्नीहिताय० विष्णुक्रान्ताप० सुराधिपतये० देवदारुप० भालचन्द्राय० अगरुप० हेरम्बाय० श्वेतदूर्वाप० शूर्पकर्णा० जातीप० सुरनाथाय० धत्तूरप० एकदन्ता० केतकोपत्रं समर्पयामि।

अथ नामपूजाः

गन्धाक्षतपुष्पैः—गजाननाय० विघ्नराजाय० लम्बोदराय० शिवात्मजाय० वक्रतुण्डाय० शूर्पकर्णाय० कुब्जाय० विनायकाय० विघ्ननाशनाय० विकटाय० वामनाय ४ सर्वार्त्तिनाशिने न० भगवते० विघ्नहर्त्रे० धूम्रकाय०

सर्वदेवाधिदेवाय० एकदन्ताय कृष्णपिङ्गाय० भालचन्द्राय० गणेश्वराय० गणपाय०।

ततः—

हरिता श्वेतवर्णावा पञ्चत्रिपत्रसंयुताः।
दूर्वांकुरान् मया दत्ता एकविंशतिसमिताः॥

गंगाधिपाय० दूर्वांकुरान्समर्पयामि। एवं सर्वत्र—उमापुत्राय० अभयप्रदाय० एकदन्ताय० मूषकवाहनाय० विनायकाय० ईशपुत्राय० मोदकप्रियाय० विघ्नविध्वं सकर्त्रे० विश्ववन्द्याय० अमरेशाय गजकर्णाय० नाग-यज्ञोपवीतिने० भालचन्द्राय० विश्वाधिपाय० विद्याप्रदाय० २१ ततः भगवते नमः धूपं० विघ्नहर्त्रे०।

दीपं नैवेद्ये त्रिकोणवृत्तचतुरस्त्रमण्डलकरणं मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रयाऽमृतीकत्य मूलेन सप्तबाराभिमन्त्र्यधूम्र-काय नमः। नैवेद्यं सर्वदेवाधिदेवाय० आचमनीयं एकदन्ताय० फलं० कृष्णपिङ्गाय० ताम्बूलं०।

न्यूनातिरिक्त पूजायां सम्पूर्ण फलहेतवे।
दक्षिणां काञ्चनीं देव स्थापयामि तवाग्रतः॥

भालचन्द्राय० दक्षिणां समर्पयामि अत्र वा एकविंशतिदूर्वार्पणम्—

सितपीतैस्तथार्केर्जलजैः कुसुमैः शुभैः।
ग्रथितां सुन्दरां मालां गृहाण परमेश्वर॥

श्रीमहागणपतये० मालां समर्प्य दूर्वाभिरर्चयेदिति-विशेषः गणेश्वराय०-इति हृदि ध्यात्वा एकविंशतिप्रदक्षिणाः कार्याः। ततः पञ्चार्त्तिपञ्चदीपैः कृत्वा यज्ञेनयज्ञं० देवाः गणेशाय नमः-

इस मन्त्र से पुष्प-प्रदक्षिणा नमस्कार करके अपने आसन पर पुनः बैठकर यह स्तुति करें-

स्तुत्वा-

दीनानाथ दयानिधेपुरगणेः सं सेव्यमानो।
द्विजैर्ब्रह्मेशानमहेन्द्रशेषगिरिजा गन्धर्व सिद्धैस्तुतः॥
सर्वारिष्टनिवारणै कनिपुणस्त्रैलोक्य नाथप्रभो।
भक्तिं मे सफलां कुरुष्व सकलां क्षत्वा पराधान्मम॥

अस्य श्रीमहागणपतिमन्त्रस्य गणकऋषिः निचृद् गायत्रीछन्दः महागणपतिर्दे० गं बीजं स्वाहा शक्तिः ग्लां कीलकं सकलाभीष्टसिद्धयें जपे विनियोगः। ॐ गां हृ० श्रींगींशिर० ह्रीं गूँ शि० क्लीं रौं कव० ग्लोंगौं नेत्र गं गः अस्त्राय फट्।

दक्षिणाधःकरमारभ्य पूरगदेक्षुकार्मुकपरशुचक्राणि-ध्येयानि। वामोपरितनमारभ्यांकुरपाशांकुशशकलकर्मा-ग्रस्वविषाणकलशानि ध्येयानि एवं दशभुजात्मको गणपतिः।

अथ ध्यानम्-

बीजापागदे २ क्षुकर्मुकरुजा ३ चक्रा ४ ब्जपाशा-ऽङ्कुशब्रीह्यग्रस्वविषाण ३ रत्नकलश ४ प्रोद्यत्करांभोरु।
ध्येया वल्लभयाचपद्मकरयाश्लिष्टोज्वलद्भूषया।
विश्वोत्पत्ति विनाशसंस्थितिकरोविघ्नोविशिष्टार्थदः॥

गण्डपाली-गलद्दान-पूरमान्-सलाकसान्।
द्विरेफान्कण तालाभ्यां वारयन्तं मुहुर्मुहुः॥
कराग्रधृत माणिक्यं कुम्बवक्त्रविनिसृतैः।
रत्नवर्षैः प्रीणयन्तं साधकान्मदविह्वलम्॥

इस प्रकार से यजमान ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके मूल मंत्र का एक सौ आठ बार जाप करें।

इत्थं पूजां विधाय सूक्तजपपक्षे गणानांत्वा० आतूनइन्द्र इति सूक्ताभ्यां च दशलक्षं जपः। मूलमन्त्रस्य द्वादश-सहस्राधिकैकलक्षं जपः।

गणपत्यर्थवशीर्षस्य मोदकहवनद्रव्ये दशसहस्रं जपः। दशांशहोमः। मोदकैः पृथुकैर्लाजैः सक्तुभिश्चेक्षुपर्वभिः। नारिकेलैस्तिलैः शुद्धैः सुपक्कैः कदलीफलौ-इत्यष्ट-द्रव्यैर्मूलेन होमः। ११२००

मोदकैः सहस्रसंख्याको होमोऽथर्वशीर्षस्य। अनयोर्होमदशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशेन विप्रभोजनमिति।

नित्य जाप के अंग होने से बलिदान या होम में से किसी भी पक्ष में बलिदान का प्रकार इस प्रकार है। अपने सम्मुख, अपने वामभाग में त्रिकोणवृत्त और चतुरस्रयुक्त मण्डल करके-

ॐ ऐं व्यापकमण्डलाय नमः-

गन्धादि से पूजा कर भात या घृताक्त, चिउड़ा अथवा दूध व जल से पूर्ण तीन पात्र वहाँ रखें-

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं स्वाहा। इतित्रिः पठित्वा दक्षकरार्पितं वामकरतत्वसंस्पृष्टं क्षीरं बल्युपरि दत्वा बाणमुद्रया बलिं भूतैर्ग्राहितं विभाव्य प्रणमेदिति।

उपरान्त अपने हाथ, पैर धोकर आचमन कर गणेशदेव के समक्ष अंजलि बांधकर इन श्लोकों का उच्चारण करें–

श्रीगणेशस्तवं वक्ष्ये कला झटितिसिद्धिदम्।
न न्यासो न च संस्कारो न होमो न तर्पणम्॥
न मार्जनं च पञ्चाशत्सहस्त्रजपमात्रतः।
सिध्यत्यर्चनतः पञ्चशतब्राह्मणभोजनात्॥

विनियोगः–

अस्य भगवान् श्रीसदाशिवऋषिः उष्णिक् छन्दः गणपतिदेवता तत्प्रसादसिध्यर्थे जपे विनियोगः।

कर्ता ध्यान करे–

चतुर्भुज रक्ततनुं त्रिनेत्रं पाशांकुशा मोदकपात्रदन्ता।
करैर्दधानं सरसीरुहस्तं गुह्याधिनाथं शशिचूडमीडे॥

विनायकैक भावनासमर्चना समर्पितं,
प्रमोदकैः प्रमोदकैः प्रमोदमोदमोदकम्।
यदर्पित सदर्पित नवान्य धान्यनिर्मितं,
न कण्डितं न खण्डितं न खण्डमण्डनं कृतम् ॥ १ ॥
सजाति कृद्विजाति कत्स्वनिष्ठभेदवर्जितं,
निरञ्जनं च निर्गुणं निराकृतिप्रनिष्क्रयम्।
सदात्मकं चिदात्मकं सुखात्मकं परं पदं,
भजामि तं गजाननं स्वमाययाऽत्तविग्रहम् ॥ २ ॥

गणाधिप त्वमष्टमूर्त्तिरीशसूनुराश्वर,
स्वम्बरं च शेखरं धनंजयः प्रभञ्जनः।
त्वमेव दीक्षितः क्षितिर्निशाकरः प्रभाकरश्च,
राचरप्रजारहेतुरन्तराय शान्तिकृत् ॥ ३ ॥
अभेकदं तमालनीलमेकदन्तसुन्दरं,
गजाननं नमोऽगजाननामृताब्धि मन्दिरं
समस्तवेदवाद सत्कलाकलापमन्दिरं,
महान्तरायकृत्तमोर्क माश्रितेन्दुसुन्दरं ॥ ४ ॥
सरत्नहेम घण्टिकानिनादनू पुरस्वनै,
मृदङ्ग तालनादभेदसाधनानुरूपतः।
धिमिद्धिमित्तथोङ्गथोङ्गथेयि शब्दतो विनायकः,
शशाङ्कशेखरोऽग्रतः प्रनृत्यति ॥ ५ ॥
प्रहृष्य नमामि नाकनायकैकनायकं,
विनायकं कलाकलापकल्पनानिदानमादिपूरुषम्।
गणेश्वरं गुणेश्वरं महेश्वरात्मसम्भवं,
स्वपादपद्मसेविनामपारवैभवप्रदम् ॥ ६ ॥
भजे प्रचण्डतुं दिलं सदंदशूकभूषणं,
सनन्दनादिवन्दितं समस्तसिद्धसेवितम्।
सुरासुरौधयोः सदा जयप्रदं भयप्रदं भगप्रदं,
समस्तविघ्न घातिनं स्वभक्तपक्षपातिनम् ॥ ७ ॥

कराम्बुजातकङ्कणः पदाब्जकिङ्किणीगणो,
गणेश्वरो गुणार्णवः फणीश्वराङ्गभूषणः।
जगत्त्रयान्तराय शान्तिकारकोऽस्तु तारको,
भवार्णवस्थ घोरदुर्ग्रहा चिदेकविग्रहः ॥ ८ ॥
यो भक्तिप्रणवः परात्परगुरोः स्तोत्रं गणेशाष्टकं,
शुद्धः संयतचेतसा यदि पठेन्नित्यं त्रिसन्ध्यं पुमान्।
तस्य श्रीरतुला स्वसिद्धिसहिता श्रीशारदा सर्वदा,
स्यातां तत्परिचारिके किलतदाकाः कामनानां कथाः ॥ ९ ॥

इस सदाशिवप्रोक्तअष्टक से स्तुति कर शीघ्र कामनाओं की पूर्ति के लिए प्रतिदिन एक सधवा स्त्री व एक बटुक की पूजा कर उन्हें भोजन करावें। इस क्रम से पूजा करके सूक्तजप पक्ष में न्यास पूर्वक लक्षसंख्या जप कर्म के अन्तर्गत यथांश संख्या में जप करूँगा, ऐसा उच्चारण करें:

इति प्रतिज्ञाप्यैक विंशतिब्राह्मणाः प्रत्यहं यथा लक्षसंख्यापूर्त्तिः, स्याद्यावत्कालेन तथा विभज्य जपेयुः। नात्रजपदशांशहोमः। लक्षसंख्याहुनेत्सूक्तं गणानां त्वेति वा सहेति वचनात्। अतएवागमसिद्धान्तिकायां जपसम एव होम उक्तः। जपसंख्या-प्रमाणस्तु होमः संपूर्ण उच्यते। जपकर्मफलावाप्त्यै कर्त्तव्यो मुख्य संमत इति।

मूलमन्त्रस्याष्टाचत्वारिंशत्सहस्राधिकं चतुर्लक्षं पुरश्चरणमितिमन्त्राधनदीपिकायाम्। नित्योत्सवनिबन्धे तु अष्टाविंशतिसहस्रसंख्याकं पुरश्चरणजपं प्रकृते कलियुगात्तच्च-तुर्गुणितमिति। मूलमन्त्रं न्यासध्यानपूर्वकं पूर्वमुक्तम्।

ततः–ॐ नमस्तेगणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि। इत्त्यादिदशखण्डानि वरदमूर्त्तये नमः, इत्यन्तोजपः। यो मोदक सहस्रेण यजति इत्यनेन मोदकहोमे दशहसस्त्रिको जपः। कलौचतुर्गुण प्रोक्तामितिवचनात्–

चत्वारिंशत्सहस्त्रको जपः। अस्य गणपत्यथर्वशी-र्षस्योपनिषद्रू पत्वात् ऋष्यादिकं नास्त्येव।

ब्राह्मणभागत्वे मन्त्रत्वभावात्। तन्मनस्कजपेत्सदा इति वचनाद्देवमनस्कृत्वमावश्यकम्। अद्य यद्यत्कृतं कर्म मया च स्वाम्यनुज्ञया॥ सर्वगणपदे वेश सं गृहाण नमोस्तु ते॥

इस प्रकार जप करके पंचोंपचारों से पूजन कर आरती कर गणेशजी को पुष्पांजलि प्रदान करें, इस कार्य को प्रतिदिन ही करें, अगर पहले मण्डप न बनाया गया हो तो होमसंख्या के अनुसार मण्डप बनाकर होम करें, मध्य भाग में चतुरस्त्र वेदी या एक कुण्ड बनाकर होम करें, अगर मध्य भाग में कुण्ड बनावे तो ईशान कोण में दो वेदी प्रधान नवग्रह की बनेगी, सर्वकामप्रद होने से पद्माकार या चतुरस्त्र कुण्ड बन सकते हैं।

कर्ता–गोत्रः शर्मा मत्पूर्वप्रतिज्ञाकर्मसमृध्यै श्रीमन्महागणा-धिराजप्रीतयेहवनाख्यं कर्म करिष्ये। ब्राह्मणद्वारा वा कारयिष्ये। तदङ्गत्त्वेन स्वस्तिवाचनम् श्राद्धानि करिष्ये। इत्याद्यङ्गसङ्कल्पः पूर्वमकृतश्चेत् कौस्तुभे दर्शनात्। तत्रादौ निर्विघ्नकर्मपरिसमाप्त्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजां करिष्ये।

इस प्रकार उपरोक्त संकल्प करके गणेशाम्बिकापूजन कर आचार्यादिवरण एवं प्रार्थना करके जलयात्रा के पश्चात्, यदि

मण्डप निर्माण किया गया हो तो, यज्ञीय मण्डप विधि से मण्डप प्रवेश करें, अन्यथा केवल 'सर्षपविर्किर्ण' से पंचगव्य से भूमि का प्रोक्षणान्त कर्म करके सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर, अग्निप्रतिष्ठापन, ग्रहों के होम, प्रधानवेदी पर अग्न्युत्तारण पूर्वक स्वर्णप्रतिमा प्रतिष्ठित कर चरु, श्रपण, आज्यभागान्त आहुति देकर ग्रह होम के पश्चात् ऋत्विक या स्वयं न्यास करके आहुति देवें। इन सभी वैदिक कर्मो को आचार्य विष्णुयाग प्रयोग से ही करावें।

विनियोगः—गणानां त्वातूनस्त्वमिंद्रानुत इति मन्त्राणां प्रजापतिवा-मदेवनृमिधाऋषयः यजुर्गायत्रीपंक्त्याबृहती-सतोवृहत्यश्छ-न्दांसि गणपतिर्देवता न्यासादौ विनियोगः।

न्यासः

ॐ गणानान्त्वागणपतिर्ठ० हवामहे अंगुष्ठाभ्यां०
प्रियाणान्त्वाप्रियपतिर्ठ० हवामहे तर्जनीभ्यां०
निधिनान्त्वानिधिपतिर्ठ० हवामहे मध्यमाभ्यां०
व्वसोममअनामिकाभ्यां०।
आहमजानिगर्भधम् कनिष्ठिकाभ्यां०
मात्वमजासि गर्भधम् करतलकरपृ० एवं हृदयादि।
आतूनइन्द्रवृत्रहन् आमोदाय नमः शिरसि
अस्माकमर्द्धभागहिप्रमोदाय० शिखायाम्
महान्महीभिरूतिभिः संमोदाय० भुजद्वये
त्वमिन्द्रप्प्रतूर्त्तिषुगणाधिपाय० भ्रूमध्ये
अभिविश्वाऽअसिस्पृधः गणक्रीडाय० चक्षुषोः
अशस्तिहाजनिताविश्वरसिगनायकाय० नासिकायाम्

त्वन्तूर्यतरुर्यतरुष्यतः गणक्रीडाय० हृदिचित्तस्थानम्
अनुतेशुष्मन्तुरयन्तमीयतुः सर्वसिद्धये० वदने
क्षोणीशिशुन्नमातरासुमुखाय० जिह्वायाम्।
विश्वास्तेस्पृधः श्रथयन्तमन्यवे दुर्मुखाय ग्रीवायाम्
वृत्रं यदिन्द्रतूर्वसि-विघ्नेशाय० हृदि
आतूनइन्द्रवृत्रहन् विघ्ननाशाय० वक्षासि
अस्माकमर्द्धभागहिगणनाथाय० बाह्वोः
महान्महीभिरूतिभिः विघ्नकर्त्रे० उदरे
त्वमिन्द्रप्रतूर्त्तिषु विघ्नहर्त्रेलिङ्गे
अभिविश्वाऽअसिस्पृधगजवक्त्राय० कट्योः
अशस्तिहाजनिताव्विश्वतूरसिएकदन्ताय० नितम्बे
त्वन्तूर्यतरुष्यतः लम्बोदराय० गुह्ये
अनुतेशुष्मन्तुरयन्तमीयतुः व्यालयज्ञोपवीतिने० पादयोः
क्षोणाशिश्रुन्नमातरा० गणाधिपाय० जान्वोः
विश्वास्तेस्पृधः श्रथयन्तवेहारिद्राय० जङ्घयोः
वृत्रंयदिन्द्रतूर्वसिगणेश्वराय० सर्वाङ्गे

अत्र गणनांत्वा० अयं मन्त्रः सर्वत्रन्यासादौ योज्यः। यथा गणानां० आतूनइंद्रइत्यादि।

अथ ध्यानम्–

सिन्दूराभं त्रिनेत्रं पृथुतररजठरं हस्तपद्मैर्दधानं।
दन्तं पाशां कुशेटाभयकर विलसद्बीजपूराभिरामम्।
बालेन्दुद्योतमलिं करिपतिवदनं दानपूरार्द्रगंडम्।

भोगीन्द्रावर्द्धभूषं भजतगणपतिं रक्तवस्त्राङ्गरागम्।

इतिमूलमन्त्रजापिनस्तु पूर्वोक्तन्यासादिकं कृत्वोक्त-संख्याकं जपं कृत्वा तद्दशांशं जुहुयूः।एवं गणपत्यथ-र्वशीर्षस्यापि रक्ताक्षतामोदकसमिच्चरव इति सूक्तहोम-द्रव्याणि। अथवा शाकलैस्तिलैर्वा सर्पिषान्वितैः केवलैः मोदकैर्वाअतिप्रीतिकरत्वाद्गणेशस्य मूलमन्त्र-द्रव्याणि तु पूर्वमुक्तम्। तत्राष्टद्रव्याणां प्रमाणम्। यथा-मोदका अखण्डिताग्रासमिताः पृथुकलासक्तवो मुष्टिपरिमिताः।इक्षुप्रमाणं पर्वमात्रं तस्यैव॥

नारिकेलमष्टधाखंडितम्। तिलाश्चुलुकप्रमाणाः शत-संख्याका वा। कदलीफलमल्पं यद्यखण्डितम्। पृथुचेद्य-थारुचिखण्डितम्, अमीषां द्रव्याणां प्रत्येकं होमसंख्यापि-ण्डाष्टमभागमिता वा श्लोकपाठक्रमेण। गणपत्यथर्वशीर्ष-होमद्रव्याणिकामनापरत्वेन तत्रैव यो दूर्वांकुरैर्यजतीत्यादि।

॥ अथ होमः॥

ॐ गणानांत्वागण० धम् स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ आतूनइन्द्रवृत्त० स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ त्वमिन्द्रप्रतू० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ अनुतेशूष्मन्तू० स्वाहा ॥ ४ ॥

अट्ठाईस अक्षर का मूल मंत्र पूर्व में ही बता दिया गया है। अथर्वशीर्ष के प्रतिखण्ड का होम होता है। उसके दशखण्ड इस प्रकार से हैं-

ॐ नमस्ते गणपतये इत्यादि त्वं साक्षादात्मासि नित्यं १ स्वाहा।

ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि २ स्वाहा।

अव त्वं मां० पाहि समन्तात् ३ स्वाहा।

त्वं वाङ्मय० विज्ञानमयोसि ४ स्वाहा।

सर्वं खल्विदं त्वं चत्वारि वाक्यदानि ५ स्वाहा।

त्वं गुणत्रया० वः स्वरोम् ६ स्वाहा।

गणादीं पूर्व० गं गणपतये ७ स्वाहा।

एकदन्ताय० दद्यात् ८ स्वाहा।

एकदन्तं चतुर्हस्तं० योगिनां वरः ९ स्वाहा।

नमो व्रातपतये० वरमूर्त्तये नमः १० स्वाहा।

एवं सहस्रावृत्तिः। अथवा समाग्राथर्वशीर्षस्यैक एव मन्त्रो वरमूर्त्तये नम इत्यन्तः। होमसमये सूक्तजपोप्यावश्यको द्वारपालाभावेऽपि तन्त्रर्त्विजो निवेशनीयाः।

प्रधानहोमान्ते सिद्धिबुद्धिभ्यां स्वाहा-इति लक्षार्द्ध होमः। एवं लक्षलाभाभ्यां स्वाहा इति होमः।

मूषकाय स्वाहा-इति सहस्रहोमः। ततः पीठावरण-मण्डलदेवतानां होमः। ततोऽग्निपूजाद्यु[1]त्तरतन्त्रं पूर्णाहुतिसहितम्।

सङ्कल्पः-

अस्य सांगगणेशयागकर्मणः समृध्यर्थमितिदक्षिणा-दानादौ।

१-सर्वप्रायश्चित् से अग्निपूजन के पूर्व तक के वैदिक कर्म को पूर्वतन्त्र एवं अग्निपूजन से पूर्णाहुति तक के वैदिक कर्मो को उत्तर तन्त्र कहते हैं।

अभिषेकान्तेऽवभृथस्नाने कृते देवं संपूज्य स्तुवीत-

जयदेव गजानन प्रभोजयसर्वासुरगर्व भेदक।
जयसङ्कटपाशमोचनप्रणवाकार विनायकवमाम्।
जय सङ्कटसर्पदर्पभिद्गरुड श्रीगणनायकावमाम् ॥ १ ॥
तवदेव जयन्ति मूर्त्तयः कलितागण्यसुपुण्यकीर्त्तयः।
मनसा भजतांहतार्तयः कृतशीघ्राधिककामपूर्त्तयः ॥ २ ॥
तवरम्यकथास्वनारदः सनरोजन्मलयैकमन्दिरम्।
न परत्र न चेह सौख्यभाङ्निजदुष्कर्मवशाद्विमोहभाक् ॥३ ॥
गजवक्त्रतवांघ्रिपङ्कजेध्वजवज्राङ्कयुते सदा भजे।
तवमूर्तिमहं परिष्वजेत्ववयिहृन्मेऽस्तु सुमूषकध्वजे ॥ ४ ॥
त्वद्दृतेहि गजाननप्रभो नहि भक्तौघसुखौघदायकः।
सुदृढाममभक्तिरस्तुते चरणाब्जेबिबुधेशविश्वपाः ॥ ५ ॥
फलपूरगदेक्षुकार्मुकै युतरुक्चक्रधराब्जपाशधृक्।
अववारिजशालिमंजरीरदधृरत्नघटाढ्यशुण्डमाम् ॥ ६ ॥
करयुग्मसहेमशृङ्खलद्विजराजाढ्यकतुन्दिलोदर।
शशिसुप्रभविद्यायायुतस्तलभारानमितेडचरक्षमाम् ॥ ७ ॥
शशिभास्करवीतिहोत्रदृक् शुभसिन्दूररुचेद्विनायक।
द्विपवक्त्रमहाहि भूषणत्रिदिवेशसुरवन्द्य पाहिमाम् ॥ ८ ॥
सृणिपाशवरद्विजैर्युतद्विजराजार्धकमूषकध्वज।
शुभलोहित चदनोक्षितश्रुतिवेद्याभयदायकावमाम् ॥ ९ ॥
स्मरणात्तवशंभुविध्यजेन्द्विनशक्रादिसुराः कृतार्थताम्।
गणपाऽऽपुरद्याधभंजनद्विपराजास्यसदैवपाहिमाम् ॥ १० ॥

शरणंभगवान्विनायकः शरणं मे सततंचसिद्धिका।
शरणं पुन रेवताबुभा शरणं नान्यदुपैमिदैवतम् ॥ ११ ॥
गलद्दानगंडंमहाहस्ति तुण्डं
सुपर्बप्रचण्डंधृतार्द्धेन्दु खण्डम्।
करास्फोटिताण्डं महाहस्तदण्डं
हृताढ्यारि-मुण्डंभजेवक्रतुण्डम् ॥ १२ ॥
गणनाथनिबन्धसंस्तवाकृपयाङ्गाकुरुमत्कृताविभा।
इदमेव सदाप्रदीयताङ्करुणामय्यतुलाऽस्तु सर्वदा ॥ १३ ॥

स्तुति के उपरान्त गणेश जी के गजाननादि नामों द्वारा इक्कीस ब्राह्मणों की पूजा करके, उन्हें अलग-अलग वायन प्रदान करें।

पश्चात्-होमाङ्ग व भूयसी दक्षिणा का संकल्प करके अपने द्वारा किये गये सभी कर्मो को ईश्वर को अर्पण करें।

देशकालौसंकीर्त्य-महागणपति मन्त्रस्याथर्वशीर्षस्य च होमदशांशेन तर्पणं करिष्ये।

विस्तीर्णपात्रेशुद्धजलं प्रक्षिप्य तत्र चतुरस्त्रं मण्डलं परिगृह्य सूर्यमभ्यर्च्य ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैस्पृष्टानि ते रवे। ते सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥

गङ्गां प्रार्थना-

आवाहयामि त्वां देवि तर्पणायेह सुन्दरि।
एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विता॥

इस प्रकार से कर्ता गंगा हजी की प्रार्थना करें-

हाँ हीं ह्रूँ ह्रैं ह्रा हः-यह कहें।

'क्रों' इत्यंकुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य वं-इति।

सप्तवारमभिमन्त्र्य तत्र चतुरस्राष्टदलषट्कोणत्रिको-णात्मकं यन्त्रं विचिन्त्य स्वदेहे अस्य-श्रीमहागणपतिमहा-मन्त्रस्य गणकायर्षतये नमः-शिरसि।

निचृद्गायत्र्यैछन्दसे मुखे। महागणपतये देवतायै हृदि। गं बीजाय गुह्ये। स्वाहा शक्तये० पादयोः। ग्लौं कीलकाय० नाभौ। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थं तर्पणे विनियोगः-इति कृताञ्जलिर्वदेत्। ॐ गां अंगु०। हृद० श्रीं गीं तर्ज० शिर० ह्रींगूमध्य० शिखा० क्लीं गै अना० कव० ग्रौं गों कनि० ने० गंगः करत० अस्त्रा०। एवं हृदयादि॥

ततो हृदब्जे शोणाङ्गं वामोत्सङ्गविभूषया।
सिद्धलक्ष्म्यासमाश्लिष्टं पार्श्वमर्द्धेन्दुशेखरम् ॥ १ ॥
वामाधः करतो दक्षाधः करान्तेषु पुष्करे।
परिष्कृतं मातुलिङ्गं गदापुण्ड्रेक्षुकार्मुकैः ॥ २ ॥
भूवनेन चक्र-शंखाभ्यां पाशोत्पलयुगेन च।
शालिमुञ्जरिकास्वीयदन्तानालमणीघटैः ॥ ३ ॥
स्रवन्मदं च सानन्दं च श्री श्रीपन्यादिसंवृतम्।
अशेषविघ्नविध्वंसनिघ्नं विघ्नेश्वरं स्मरेत् ॥ ४ ॥

एवं मूर्तिं ध्यात्वा यन्त्रे आधारशक्त्यादिपरतत्वान्त-पीठ देवताभ्यो नमः-इति।

पीठं संपूज्य तत्र साङ्गं सावरणं महागणपतिमावा-हयामीत्यावाह्य-श्रीं ह्रीं क्लीं महागणपतये लं पृथिव्यात्मकं गन्धमित्यादिमानसोपचारैरभ्यर्च्य यथाशक्त्युपचारैः पूजयेत्। ततो

२८ मूलमुच्चार्य महागणपतिं तर्पयामीतिहोम-दशांशेन सन्तर्प्याभ्यर्च्यात्मिन्युद्वासयेदितितर्पणविधिः।

मत्प्रतिज्ञातमहागणपतिमूलमन्त्रस्य गणपत्यथर्व-शीर्षस्य च तर्पणदशांशेन मार्जनं करिष्ये।

आवाहनम्-

विमार्जनायेह सुन्दरि। हृदयादिन्यासांते,
मुक्तकाञ्चनीलकुंदघुसृणाछायं त्रिनेत्रान्वितं।
नागाष्यं हरिवाहनं शशिधर हे रम्बमर्कप्रभम्।

ध्यानम्-

दृप्तंदानमभीतिमोदकरदान कण्ठं शिरोऽब्जात्मिकां।
मालामुद्गरमंकुशं त्रिशिखकंदोभिर्द्दधानं भजे॥

मूल मंत्र के पाठ के पश्चात् ''अभिषिञ्चामि'' इस प्रकार कह कर दशांश संख्या का मार्जन करें, अन्य सब कृत्य तर्पण की तरह ही करें।

संकल्पः-ततः मत्प्रतिज्ञातगणेशयजनकर्मणि मार्जन-दशांशेन ब्राह्मणान् यथा संपन्नेनान्नेनाहं भोजयिष्येतेभ्यः ताम्बूल दक्षिणां च दास्ये इति सङ्कल्प्य सद्यस्तान्भोजयेत्।

ततः गणेशयाग कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यये सहस्त्राधिक-ब्राह्मणभोजनम्। महायागावसाने च येन तर्पयतिद्विजान्। निरर्थकं तस्य कर्म प्रयासफलमात्रकमिति भविष्ये दोष-श्रवणादावश्यकम्।

दशांश मार्जन कर ब्राह्मणभोजन पुरश्चरण के अन्तर्गत करें, सभी किये हुए कर्मो को गणेश जी को अर्पण कर, स्वस्तिवाचन के पश्चात्, पारिवारिकजनों, इष्ट-मित्रों के साथ गणेश जी के प्रसाद को यजमान व उनकी धर्मपत्नी ग्रहण करें।

॥ गणेशयाग समाप्तः॥

शिवशक्ति-याग

सपत्नीकयजमान मंगलस्नान कर तिलकादि से अलंकृत हो शिखा का बन्धन कर यज्ञस्थल अर्थात् मंडप या मन्दिर में सपत्नीक आकर अपने-अपने आसन पर बैठे, रक्षादीप जलाकर पवित्र धारण कर प्राणायाम करके 'पर्षद्‌ावेशेन सर्व प्रायश्चित' कर यज्ञसामग्री एवं अपने शरीर पर पवित्रता हेतु जल छिड़के उस समय आचार्य यजमान को तिलक करे तथा ब्राह्मण शान्तिपाठ करें। शान्तिपाठ के पश्चात् यजमान से यह संकल्प आचार्य करावें-

ततः देशकालौ संकीर्त्य-सर्वेषां स्त्रीपुंसानां त्रिविधतापोपशान्तिसकलदुःखशेषनिवृत्तिपुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिपूर्वक जन्म-जन्मांतरसकलबाधानिवृत्तये षष्ठि- सहस्राधिकलशसख्याकं सनवग्रहमखं हवनात्मकं शिवशक्तियज्ञं [1]करिष्ये तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणानि च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

ततः मण्डपप्रवेशः, वास्तुपूजनम्, मण्डपपूजनम्, ग्रहपूजनम्, असंख्यात पूजनम्। मेरे द्वारा लिखित विष्णुयाग से करे पश्चात् प्रधानवेदी के समीप बैठकर लिङ्गतोभद्र मण्डल में ब्रह्मादि देवताओं की स्थापना कर कलश स्थापन विधि द्वारा कलश स्थापित कर शिवशक्ति यंत्र लिखे।

---

(१) रुद्रादिदेवताः सर्वास्तथा बैकुण्ठवासिनः।
परिवारगणैर्युक्ता भद्रं कुर्वन्तु नित्यशः॥
शिवयागे विष्णुयागे वास्तुकर्मणि सर्वदा।
इष्टापूर्ते महादाने तान्देवान् संस्मरेच्चिरम्॥
ततस्तु कर्मारम्भः स्यान्निर्घ्नेन विशेषतः।
ये चैव स्मरन्येतान् तेषां नैवफलं भवेत्॥

पीठपूजा

पीठस्याधोभागे–

ॐ आधारशक्त्यै नमः १ कूर्माय नमः २ अनन्ताय नमः ४ वराहाय नमः ४ पृथिव्यै नमः ५ विचित्रदिव्यमण्डनाय नमः ६ मण्डपपरितः–ॐ कल्पवृक्षेभ्यो नमः १ सुवर्णवेदिकायै नमः २ रत्नसिंहासनाय नमः ३ सिंहासनपादेषु–आग्नेयकोण–ॐ धर्माय नमः १ नैऋत्यकोणे-ज्ञानाय नमः २ वायव्यकोणे–वैराग्याय नमः ३ ईशानकोणे-ऐश्वर्याय नमः ४ गात्रेषु पूर्वदिशि–ॐ अधर्माय नमः १ दक्षिणे–अज्ञानाय नमः २ पश्चिमे अवैराग्याय नमः ३ उत्तरे-अनैश्वर्याय नमः ४ सिंहासनोपरि– तत्प्राकारायानन्ताय नमः १ पद्माय नमः २ आनंदकन्दाय नमः ३ संविन्नालाय नमः ४ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ५ विकारमयकेसरेभ्यो नमः ६ पञ्चाशद्वर्णा-द्यकर्णिकायै नमः ७ पद्मदलकेसरकर्णिकासु ॐ सं सत्वाय नमः ८ कर्णिकासु-ॐ मं तमसे नमः १ ॐ द्वादशकलात्मने अर्क-मण्डलाय नमः २ ॐ उं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः ३ ॐ मं दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः ४ ॐ अं ब्रह्मणे नमः ५ ॐ विं विष्णवे नमः ६ ॐ मं महेश्वराय नमः ७ ॐ जां आत्मने नमः ८ ॐ अं अन्तरात्मने नमः ९ ॐ मं परमात्मने नमः १० ॐ ज्ञानात्मने नमः ११ सर्वपद्मार्चनम्। अथ पूर्वादियन्त्रेषु–ॐ वामायै नमः १ ज्येष्ठायै नमः २ रौद्रयै नमः ३ काल्यै नमः ४ कलविकरण्यै नमः

५ बलविकरण्यै नमः ६ बलप्रमथियै नमः ७ सर्वभूतदमन्यै नमः ८ ॐ मनोन्मन्थै नमः ९ ॐ इति कर्णिकायाम्। ततः-ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानन्ताय योगपीठात्मने नमः। इति कर्णिकायां पुष्पाञ्जलिना पीठं संपूज्य–'सत्यज्ञानन्तानन्दरूपं परं धामैव सकलं पीठम्' इति चिन्तयेत्।

॥ इति पीठपूजा ॥

इसके पश्चात् इस पुस्तक की पृष्ठसंख्या १ पर दिये गए शिवपूजन को आचार्य सविधि यजमान से करावें।

आवरणम्–

(१) विन्दौ–शिवशक्तिभ्यां नमः। (२) त्रिकोणे–पार्वत्यै नमः १ अप्रर्णायै नमः २ दुर्गायै नमः ३ (३) षट्कोणे–मृडायै नमः १ अम्बिकायै नमः २ चण्डिकायै नमः ३ गंगायै नमः ४ जयायै नमः ५ विजयायै नमः ६ (४) विंशतिपीठले–असिताङ्ग भैरवाय नमः १ रुरुक भैरवाय नमः २ चण्ड भैरवाय नमः ३ क्रोध भैरवाय नमः ४ उन्मत्त भैरवाय नमः ५ काल भैरवाय नमः ६ भीषण भैरववाय नमः ७ संहार भैरवाय नमः ८ उमायै नमः १ सत्यै नमः २ ललितायै नमः ३ अश्वदायै नमः ४ ज्येष्ठायै नमः ५ जगन्मङ्गलायै नमः ६ आत्मायै नमः ७ परायै नमः ८ अघोराय नमः ९ पशुपतये नमः १० शर्वाय नमः ११ बिरूपाक्षाय नमः १२ विश्वरूपिणे नमः १३ त्र्यम्बकाय नमः १४ कपर्दिने नमः १५ भैरवाय नमः १६ शुलपाणये नमः १७ ईशानाय नमः १८ महेश्वराय नमः १९ धनाध्यक्षाय नमः २० द्वाविंशतिदले–

अनन्ताय नमः १ सूक्ष्माय नमः २ शिवाय नमः ३ एकपदे नमः ४ एकभद्राय नमः ५ त्रिमूर्तये नमः ६ एकरुद्राय नमः ७ श्रीकण्ठाय नमः ८ वामदेवाय नमः ९ ज्येष्ठाय नमः १० रुद्राय नमः ११ कालाय नमः १२ कलविकरणाय नमः १३ बलाय नमः १४ बलविकरणाय नमः १५ बलप्रमथनाय नमः १६ (५) दशदले– श्रुत्यै नमः १ स्मृत्यै नमः २ कल्याण्यै नमः ३ मंगलायै नमः ४ प्रीत्यै नमः ५ लक्ष्म्यै नमः ६ अपराजितायै नमः ७ ब्राह्म्यै नमः ८ वागीश्वर्यै नमः ९ देव्यै नमः १० द्वादशदले–बुध्यै नमः १ विद्यायै नमः २ सरस्वत्यै नमः ३ दानायै नमः ४ भद्रायै नमः ५ सुभगायै नमः ६ सौम्ये नमः ७ वरदायै नमः ८ भयवाशिन्यै नमः ९ अजितायै नमः १० जयायै नमः ११ शान्त्यै नमः १२ (६) चतुर्दशदले–सावित्र्यै नमः १ परमेश्वर्यै नमः २ कामायै नमः ३ रूपायै नमः ४ ध्रुवायै नमः ५ वृत्यै नमः ६ सुरूपायै नमः ७ विश्वरूपायै नमः ८ प्रकृत्यै नमः ९ व्याधिन्यै नमः १० सूक्ष्मायै नमः ११ सिनीवाल्यै नमः १२ कूलायै नमः १३ गुह्यायै नमः १४ (७) षोडशदले–कात्यायन्यै नमः १ अन्नपूर्णायै नमः २ ईश्वर्यै नमः ३ रक्षायै नमः ४ विन्ध्यवासिन्यै नमः ५ भगवत्यै नमः ६ शच्यै नमः ७ कुमार्यै नमः ८ ब्रह्मचारिन्यै नमः ९ माहेश्वर्यै नमः १० गणाध्यक्षायै नमः ११ भवान्यै नमः १२ शिवायै नमः १३ शर्वाण्यै नमः १४ नियतायै नमः १५ (८) अष्टादशदले– शान्तायै नमः १ ईशान्यै नमः २ त्रिदशेश्वयै नमः ३ महाभुजायै

नमः ४ महादेव्यै नमः ५ महानादायै नमः ६ विशालाक्ष्यै नमः ७ असुरभक्ष्यै नमः ८ महादेवायै नमः ९ कराल्यै नमः १० ज्वालिन्यै नमः ११ काल्यै नमः १२ भद्रकाल्यै नमः १३ कपालिन्यै नमः १४ चामुण्डायै नमः १५ भैरव्यै नमः १६ भीमायै नमः १७ शुष्क्यै नमः १८ भवाय नमः १९ शर्वाय नमः २० ईशानाय नमः २१ पशुपतये नमः २२ रुद्राय नमः २३ उग्राय नमः २४।

(११) चतुर्विंशतिदले—भीमाय नमः १ महते नमः २ शेषाय नमः ३ अनन्ताय नमः ४ वासुकये नमः ५ तक्षकाय नमः ६ कुलीराय नमः ७ कर्कोटकाय नमः ८ शंखपालाय नमः ९ कंबलाय नमः १० चैतन्याय नमः ११ पृथवे नमः १२ हैहयाय नमः १३ अर्जुनाय नमः १४ शाकुन्तलाय नमः १५ भरताय नमः १६ नलाय नमः १७ रामाय नमः १८ हिमवते नमः १९ निषधाय नमः २० विन्ध्याय नमः २१ माल्यवते नमः २२ पारिजाताय नमः २३ मलयाय नमः २४ हेमकूटाय नमः २५ (१२) ततश्चतुर्कोणं भूगृहंकृत्वा—दशदिक् पालानां स्थापनम्—इन्द्राय नमः १ अग्नये नमः २ यमाय नमः ३ नैर्ऋत्ये नमः ४ वरुणाय नमः ५ वायवे नमः ६ कुबेराय नमः ७ ईशानाय नमः ८ ब्रह्मणे नमः ९ अनन्ताय नमः १० एवम् वज्राय नमः १ शक्तये नमः २ दण्डाय नमः ३ खड्गाय नमः ४ पाशाय नमः ५ अंकुशाय नमः ६ गदायै नमः ७ त्रिशूलाय नमः ८ ।। इत्यावरणम् ।।

आवरण पूजा के उपरान्त धूपादि मूर्ति के समक्ष प्रज्ज्वलित कर दिखा देवें।

अथ न्यासः

पवित्रधारणम्—

ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते॥

विनियोगः—

सद्योजातमित्यस्य सद्योजातऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मादेवता, वामदेवायेत्यस्य वामदेवऋषिः, जगतीछन्दः, विष्णुर्देवता, अघोरेभ्य इत्यस्य अघोरऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता, तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुषऋषिः, गायत्रीछन्दः, रुद्रोदेवता, ईशान इत्यस्य ईशानऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, रुद्रो देवता सर्वेषां भस्म परिग्रहणे विनियोगः।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवेनाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ १ ॥

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मना नमः ॥ २ ॥

---

(१) बिल्वपत्र, बिल्वफल, बिल्वमूल, इक्षु, दधि, दुग्ध, मधु, शर्करा, पायस, गुड, गुग्गुल, सर्षप, स्वकृपत्र, जातीपत्र, चन्दन, रक्तचन्दन, पलाश, पुष्पार्क, मधुक, पुष्प, धत्तूरपुष्प, कदम्बपुष्प, वकुलपुष्प, कमलपुष्प, शंखपुष्पी पुष्प, पनसफल, आम्रफल, कदलीफल, प्रियाफल अलक्ष्वृक्षफल, जम्बू पील, बदरराज, आमफल, जातीफल, लवंग, एल, करवीरफल, केसर, नागकेसर, यक्षकर्दम, सोमवल्ली, शिवलिङ्गी शतावरी, कमलिनी, द्राक्षावल्ली, नागवल्ली, गडूची, इत्यादीनि शिवहोमद्रव्याणि यथा संभवं जुहुयात्। सर्वकामः पायसेनाज्येन वा जुहुयात्। इति रुद्रकल्पद्रुमे।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व-सर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ ३ ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ४ ॥

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति-ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवाम् ॥ ५ ॥

दक्षिणहस्तेन आच्छादनम्—

अग्निरित्यादिभस्माभिमन्त्रणमन्त्रणां पिप्पलाद ऋषिः, गायत्री छन्दः, कालाग्निरुद्रो देवता, भस्माभिमन्त्रणे विनियोगः।

ॐ अग्निरितिभस्म, वायुरितिभस्म, जलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वं हवा इदं भस्म मन इत्येतानि चक्षूंषि भस्मानि तस्माद् व्रतमेत्पाशुपतं यद् भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत्तस्माद् व्रतमेतत्पाशुपतं पशुपाशविमोक्षाम्। आपोज्योतिरित्यस्य प्रजापतिऋषिः यजुश्छन्दः, ब्रह्माग्निवायुसूर्योदेवता भस्मानि अप आसेचने विनियोगः।

इस मंत्र से जल सेचन करें—

ॐ आपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्। 'ॐ नमः शिवाय' इति संमर्दनम्।

ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता शिरसि भस्मोद्धूलने विनियोगः।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां। ब्रह्माधिपति-र्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम्-शिरसि।

तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः, गायत्रीछन्दः, रुद्रो देवता मुखे भस्मोद्धूलने विनियोगः।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ मुखे॥

अघोरेभ्य इत्यस्य अघोरऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता हृदये भस्माद्धूलने विनियोगः।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ हृदये॥

वामदेवायेत्यस्य वामदेवऋषिः, जगतीछन्दः, विष्णु-र्देवता गुह्ये भस्माद्धूलने विनियोगः।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमो कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। गुह्ये॥ उदकोपस्पर्शः।

सद्योजातमित्यस्य सद्योजातऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, ब्रह्मादेवता पादयोर्भस्मोद्धूलने विनियोगः।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भव नातिभवे भवस्व त्वां भवोद् भवाय नमः॥ पादयोः। प्रणवेन मस्तकादिपादान्तम्।

मनस्तोक इत्यस्य कुत्सऋषिः जगतीछन्दः, एको रुद्रो देवता भस्मोद्धरणे विनियोगः।

ॐ मानस्तोक तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मानोऽ अश्वेषुरीरिषिः ।। मानो वीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।।

त्र्यम्बकमित्यस्य वसिष्ठऋषिः अनुष्टुपछन्दः त्र्यम्बको रुद्रोदेवता त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः आशीर्देवता भस्मना त्रिपुण्ड्रधारणे विनियोगः।

यास्य प्रथमा रेखा सा गार्हपथ्यश्चाकारो रजो भुर्लोकश्चात्मा क्रियाशक्तिऋग्वेदः प्रातः सवनं महादेवो देवता, यास्य द्वितीयारेखा सा दक्षिणाग्निरुकारः सत्वमन्तरिक्षमन्तरात्माचेच्छाशक्तिर्यजुर्वेदो माध्यन्दिनं सवनं महेश्वरोदेवता, यास्य तृतीयारेखा साऽऽहवनीयो मकारस्तमोद्यौः परमात्मा ज्ञानशक्तिः सामवेदस्तृतीयं सवनं शिवो देवता–

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।
ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्ययस्य त्र्यायुषम्।

यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽ अस्तु त्र्यायुषम्। त्रिपुण्ड्रधारणम्। 'ॐ नमः शिवाय' इति रुद्राक्षमालाधारणम्।

(१) त्रातारमित्यस्य गर्गऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, इन्द्रो देवता प्राच्यां दिशि संपुष्टीकरणे नमस्करे च विनियोगः।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ० हवे हवे सुहवꣳ० सूरमिन्द्रम्।। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ० स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।। पूर्वे- इन्द्राय नमः।।

(२) 'त्वन्नो अग्ने' इत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिः, जगतीछन्दोग्निर्देवता आग्नेय्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः। अग्निकोणे—ॐ त्वन्नोऽ अग्ने० अग्नये नमः।

(३) सुगन्नुपन्थामित्यस्य प्रजापतिऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, वैवस्वतो देवता दक्षिणस्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः। ॐ सुगन्नुपन्थां प्रति० दक्षिणदिशि यमाय नमः।

(४) असुन्वस्तमित्यस्य प्रजापतिऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः नैर्ऋत्यां दिशि सपुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः।

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्ते नस्येत्यामन्विहितस्करस्य॥अन्यमस्मदिच्छसातऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ निर्ऋतिकोर्ण-निऋतये नमः॥

(५) तत्वायामीत्यस्य शुनःशेषऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः वरुणो देवता प्रतीच्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः। ॐ तत्वा यामि० पश्चिमदिशि—वरुणाय नमः।

(६) आ नो नियुद्भिरित्यस्य वसिष्ठऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, वायुदेवता वायव्यां दिशि संपुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः। ॐ आ नो नियु० वायुकोणे—वायवे नमः।

(७) वयर्ठ० सोमेत्यस्य बन्धुऋषिः, गायत्रीछन्दः सोमो देवता उदीच्यां दिशि संपुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः। ॐ वयर्ठ० सोम० उत्तरे—सोमाय नमः।

(८) तमीशानमित्यस्य गोतमऋषिः, जगतीछन्दः, ईशानो देवता ईशान्ययां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः। ॐ तमीशानं जगतस्त० ईशानदिशि—ईशानाय नमः।

(९) अस्मे रुद्रा इत्यस्य प्रगाथऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, ऊर्ध्वायां दिशि संपुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः। ॐ अस्मे रुद्रा० ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मणे नमः।

(१०) स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथिऋषिः, गायत्रीछन्दः अनन्तो देवता अधोदिशि संपुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः। ॐ स्यो पृ० अधोधिशि—अनन्ताय नमः।

अथ शिवसंकल्पन्यासः

विनियोगः—

यज्जाग्रत इति षण्णां ऋचां शिवसंकल्पऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः मनोदेवता श्रीशिवप्रीतये न्यासे होमे च विनियोगः।

(क) (१) ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति—शिरसि।
(२) दैवं तदुसुप्तस्य तथैवैति—ललाटे।
(३) दूरं गमज्जोतिषां ज्योतिरेकम्—नेत्रयोः।
(४) तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु—श्रोत्रयोः।

(ख) (५) येन कर्माण्यपसो मनीषिणो—नासापुटयोः।
(६) यज्ञे कृण्वन्ति विदथे षुधीराः—मुखे।
(७) यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानाम्—ओष्ठयोः।
(८) तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु—कण्ठे।

(ग) (९) यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्च—ग्रीवायाम्।
(१०) यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु—बाह्वोः।
(११) यस्मान्नऽ ऋते किञ्चन कर्म क्रियते—प्रकोष्ठयोः।
(१२) तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु—हस्तयोः।

(घ) (१३) येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्–हृदये।

(१४) परिगृहीतममृतेन सर्वम्–नाभौ।

(१५) येन यज्ञस्तायते सप्त होता–श्रोत्योः।

(१६) तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु–लिङ्गे। उदकोपस्पर्शः।

(ङ) (१७) यस्मिन्नृचः सामयजूꣳषि यस्मिन्–गुह्ये। उदकोपस्पर्शः।

(१८) प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः–जङ्घयोः।

(१९) यस्मिंश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानाम्–ऊर्वोः।

(२०) तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु–जान्वोः।

(च) (२१) सुषारथिरश्वा निवयन्मनुष्यान्ने–तृतीयनेत्रम्।

(२२) नीयते भीशुभिर्व्वाजिनऽ इव–पादयोः।

(२३) हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठम्–प्राणेषु।

(२४) तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु–मस्तकादिपादान्तम्।

मनोजूतिरित्यस्याङ्गिरसबृहस्पतिऋषिः यजुश्छन्दः विश्वेदेवा देवता हृदय न्यासे विनियोगः मनो जूतिः। अबोऽध्यग्निरित्यस्य बुधगविष्ठियऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता शिरसि न्यासे विनियोगः।अबोध्यग्निः।मूर्धानमित्यस्य भरद्वाजऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वैश्वान-रोऽग्निर्देवता शिखायां न्यासे विनियोगः। मूर्द्धानम्। मर्माणि त इत्यस्य विवस्वान् ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः लिङ्गोक्तादेवता कवचन्यासे विनियोगः। मर्माणि त। विश्वतश्चक्षक्षुरित्यस्य विश्वकर्माभौवनऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः विश्वकर्मदेवता नेत्रन्यासे

विनियोगः। विश्वतश्चक्षुः मानस्तोक इत्यस्य कुत्सऋषिः एको रुद्रो देवता अस्त्रन्यासे विनियोगः। मानस्तोके।

अथ षडङ्गन्यासः

१-यज्जाग्रतोः-अंगुष्ठाभ्यां नमः। २-येन कर्माण्यपसो-तर्जनी० ३-यत्प्रज्ञानम्-मध्या० ४-यनेदम्-अनामिका० ५-यस्मिन्नृचः-कनिष्ठिका० ६-सुषारथिः-करतलकर०।

ध्यानम्—

ॐ मन्दारमालाङ्कुलितालकायै कपालमालाङ्कत शेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय॥

अथ शक्तियाग प्रारम्भः

देवीभागवते अध्याय १३ स्क० तृतीये—

श्रुत्वा विष्णुकृतं यागमम्बिकायाः समाहितः।
यज्ञं कर्तुं मनश्चक्रे अम्बिकाया रमापतिः॥
उत्तीर्य भुवनात्तस्मात्समाहूय महेश्वरम्।
ब्रह्माणं वरणं शक्रं कुबेरं पावकं यमम्॥
वसिष्ठं कश्यपं दक्षं वामदेवं बृहस्पतिम्।
संभारं कल्पयामास यज्ञार्थं चातिविस्तरम्॥
महाविभवसंयुक्तं सात्विकं च मनोहरम्।
मण्डपं विततं तत्र कारयामास शिल्पिभिः॥
ऋत्विजो वरयामास सप्तविंशतिसुव्रतान्।
चितिं च कारयामास वेदीश्चैव सुविस्तरा॥

प्रजेपुर्ब्राह्मणा मन्त्रान् देव्यां बीजसमन्वितान्।
जुहुवुस्ते हविः कामं विधिवत्परिकल्पिते॥
कृते तु वितते होमे वागुवाचाशरीरिणी।

देवीभागवते तृतीयस्कन्धे अ० १४—जनमेजय उवाच—

श्रुतो वै हरिणावलृप्तो यज्ञो विस्तरतो द्विजः।
महिमानं तथाम्बाया वद विस्तरतो मम॥

सप्तमस्कन्धे—हिमालय उवाच—अ० ४०

देव देवि महेशानि! करुणासागरेऽम्बिके।
ब्रूहि पूजाविधिं सम्यग् यथावदधुना निजम्॥
आवाहयेत्ततः पीठे प्राणस्थापनविद्यया।
आसनावाहने चार्घ्यं पाद्याद्याचमनं तथा॥
स्नानं वासोद्वयं चैव भूषणानि च सर्वशः।
गन्धपुष्पं यथायोग्यं दत्वा देव्यै स्वभक्तितः।
यन्त्रस्थानामावृत्तीनां पूजनं सम्यगाचरेत्।
प्रतिवारमशक्तानां शुक्रवारो नियम्यते॥
मूलदेवीप्रभारूपाः स्मर्तव्या अङ्गदेवताः।
मत्प्रभापटलव्याप्तं त्रैलोक्यं च विचिन्तयेत्॥
पुनरावृत्तिसहितां मूलदेवीं च पूजयेत्।
गन्धादिभिः सुगन्धैस्तु तथा पुष्पैः सुवासितैः॥
नैवेद्यैस्तर्पणैश्चैव ताम्बूलैर्दक्षिणादिभिः।
तोषयेन्मां त्वत्कृतेन नाम्नां सहस्त्रकेण च॥
कवचेन च सूक्तेनाहं रुद्रेभिरितिप्रभो!।

देव्यथर्वशिरो मन्त्रैर्हल्लेखोपनिषद्भवैः।
महाविद्यामहामन्त्रैस्तोषयेन्मां मुहुर्मुहुः॥
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं प्रेमार्द्रहृदयो नरः।
पुलकाङ्कितसर्वाङ्गै र्बाष्परुद्धाक्षिनिःस्वनः॥
नृत्यगीतादिघोषेण तोषन्येन्मां मुहुर्मुहुः।
वेदपारायणैश्चैव पुराणैः सकलैरपि॥
प्रतिपाद्रा यतोऽहं वै तस्मात्तैस्तोषयेच्च माम्।
निजं सर्वस्वमपि मे सदेहं नित्यशोऽर्पयेत्॥
नित्यहोमं ततः कुर्याद् ब्राह्मणांश्च सुवासिनी।
बटुकान पामरानन्यान्देवी बुध्य तु भोजयेत्॥
गुरुं संपूज्य भूषाद्यैः कृतकृत्यत्वभावहेत्।
य एवं पूजयेद्देवी श्रीमद्भुवनसुन्दरी॥
न तस्य दुर्लभं किञ्चित् कदाचित् क्वचिदस्ति हि।
देहान्ते तु मणिद्वीपं मम यात्येव सर्वथा॥
ज्ञयो देवीस्वरूपोऽसौ देवा नित्यं नमन्ति तम्।
इति कथितं राजन्! महादेव्याः प्रपूजनम्॥

देवीभागवते स्कन्धे—१२

कुरु अम्बामखं राजन्! स्वपित्रोद्धारणाय वै।
अम्बायज्ञं चकाराऽऽशु वित्तशाठ्यविवर्जितः॥
अम्बामखं सदा भक्त्या कुरु नित्यमतन्द्रितः।
अनायासेन तेन त्वं मोक्ष्यसे भवबन्धनात्॥

विद्येश्वरसंहितायाम्—अ० १६

कर्कटे सोमवारे च नवभ्यां मृगशीर्षके।
अम्बां यजेत् भूमिकामः सर्वभोगफलप्रदाम्॥

ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वरयै च धीमहि। तन्नोऽन्नपूर्णा प्रचोदयात्।

ध्यानम्—

तप्तस्वर्णनिभाशशांकमुकुटारत्नप्रभाभासुरा,
नानावस्त्रविराजिता त्रिनयना भूमीरमाभ्यां युता।
दर्वीहाटकभाजनं च दधतीं रम्योच्चपीनस्तनी,
नित्यं तं शिवमाकलय्य मुदिता ध्येयान्नपूर्णेश्वरी॥

अथ शक्तिन्यासः

(१) अम्बेऽ अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभाद्रिकां कां पीलवासिनीम्॥

अपर्णायैः नमः—शिरसि।

(२) ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पन्त्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाण सर्वलोकं मऽ इषाण॥

गौर्यै नमः—नेत्रयोः।

(३) ॐ शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्चश्मश्रुणि। राजा मे प्राणोऽअमृतर्ठ० सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्॥

भगवत्यै नमः—श्रोत्रयोः।

(४) ॐ तं पत्नीभीरनुगच्छेम देवा: पुत्रैर्भ्रातृभि रुतवा-हिरण्यै:। नाकं गृभ्णाना: सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽ अधिरोचने दिव:।

शक्त्यै नम: नासापुटयो:॥

(५) ॐ तेऽआचरन्ती समनेवयोषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे॥ अपशत्रून्विण्यताॅठ० संविदानेऽआर्त्नीऽ इमे विष्पुरन्तीऽअभित्रान्॥

कान्तायै नम:—मुखे।

(६) ॐ समख्ये देव्याधिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा॥ मामऽआयु: प्रमोषीर्मोऽअहन्तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि।

शिवायै नम:—कण्ठे।

(७) ॐ श्रीणामुदारो धरुणोरयीणां मनीषाणां प्रार्पण: सोमगोपा:॥ वसु: सूनु: सहसोऽअप्सुराजा विभात्यग्रऽ उषसाभिधान:॥

बालग्रहविनाशिन्यै नम:— बाह्वो:।

(८) ॐ देवीरापोऽअपान्नपाद्योवऽऊमिर्हविष्यऽ इन्द्रियावान्मदिन्तम:॥ तन्देवेभ्यो देवत्रा दत्तशुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ स्वाहा॥

त्रिनेत्रायै नम:—हस्तयो:।

(९) ॐ अपो देवीरुपसृजमधुमतीर यक्ष्याय प्रजाब्भ्यः॥ तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः॥

गायत्र्यै नमः–हृदये।

(१०) ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमांवदानिजनेब्भ्यः। ब्रह्मराजन्याब्भ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वायचारणा च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादो नमतु।

सुमेधायै नमः–नाभौ।

(११) ॐ दुरो देवीर्दिशो महीर्ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः॥ पङ्क्तिश्छन्दऽइहेन्द्रियं तुर्यवाङ्गौर्वयो दधुः॥

विद्यायै नमः–श्रोण्योः।

(१२) ॐ दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे देवश्रीः श्रीमनाः शतपयाः॥ परिगृह्य देवा यज्ञमायन्देवा देवेभ्योऽश्रवर्यन्तोऽअस्थुः॥

सामगायिन्यै नमः–जङ्घयोः।

(१३) ॐ द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रताददन्तेऽ अग्नेः। उरु व्यचसोधाम्ना पत्यमानाः॥

अम्बिकायै नमः–ऊर्वोः।

(१४) ॐ देवीरापः शुद्धावोद्वर्ठ०सुपरिविष्टा देवेषु सुपरिविष्टा वयं परिवेष्टारो भूयास्म॥

विश्वमोहार्तिनाशिन्यै नमः–जान्वोः।

(१५) ॐ सीद त्वं मातुरस्या उपस्थे विश्वान्यग्ने वयुनानि विद्वान्। मैनं तपसा मार्चिषाभिशोचीरन्तरस्यार्ठ० शुक्रज्योतिर्विभाहि॥

सुरोत्तमायै नमः—पादयोः।

(१६) ॐ पुत्रमिव पितरावश्विनो भेन्द्रा वथुः काव्येर्दर्ठ० सनाभिः। यत्सुराम व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक्॥

विशारदायै नमः—प्राणेषु।

अथ षडङ्गन्यासः

(१) ॐ दुरो देवीः	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
(२) ॐ दैव्याय धर्त्रे	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
(३) ॐ द्वारोदेवीः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
(४) ॐ देवीरापः	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्।
(५) ॐ सीदत्वं मा	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्।
(६) ॐ पुत्रमिव	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

अथ पूजनम्

कर्ता से आचार्य निम्न क्रम से विधिवत् देवी पूजन संकल्पादि करवाने के पश्चात् करावे–

आवाहनम्–

देवि देवि समागच्छ प्रार्थयेहं जगत्पते।
इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तमे॥

आसनम्—

भवानि त्वं महादेवि सर्वसौभाग्यदायिके।
अनेकरत्नसंयुक्तमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

पाद्यम—

सुचारुशीतलं दिव्यं नानागन्धसुवासितम्।
पाद्यं गृहाण देवेशि महादेव नमोऽस्तु ते॥

अर्घ्यम्—

श्रीपार्वति महाभागे शङ्करप्रियवादिनी।
अर्घ्यं गृहाण कल्याणि भर्त्रा सह पतिव्रते॥

आचमनीयम्—

गङ्गातोयं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्।
आचम्य तां महाभागे भवेन संहिते नदे॥

स्नानीयम्—

गङ्गासरस्वतीरेवाका वेरीनर्मदाजलैः।
स्नापितासि महादेवि तथा शातिं कुरुष्व मे॥

पञ्चामृतम्—

पयोदधिघृतं चैव माक्षिकं शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं ते स्नानार्थमर्पये भक्तवत्सले॥

शुद्धोदकम्—

मन्दाकिन्याः समानीतं हेमाम्भोरुहवासितम्।
स्नानार्थं जलमानीतं गृहाण जगदम्बिके॥

वस्त्रम–

कौशेयं वसनं दिव्यं कञ्चुक्या च समन्वितम्।
उपवस्त्रेण संयुक्तं गृहाण परमेश्वरि॥

गन्धम्–

कर्पूरकुङ्कमैयुक्तं हरिद्रादिसमन्वितम्।
कस्तूरिका समायुक्तं चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

अक्षतान्–

रञ्जिताः कुङ्कुमौघेन अक्षताश्चातिशोभनाः।
भक्त्या समर्पितास्तुभ्यं प्रसन्ना भव पार्वती॥

सौभाग्यद्रव्यम्–

कज्जलं चैव सिन्दूरं हरिद्राकुङ्कुमानि च।
भक्त्यार्पितानि मे गौरि सौभाग्यानि गृहाण मे॥

रक्ताक्षतान् समर्पणम्–अणिमायै नमः १ महिमायै नमः २ लघिमायै नमः, ३ गरिमायै नमः, ४ प्राप्त्यै नमः, ५ प्राकाम्यै नमः, ६ ईशित्वायै नमः, ७ वसित्वायै नमः ८।

पुष्पाणि–

सेवन्तिकाबकुलचम्पकपाटलाब्जैः
पुन्नागजातिकर-वीररसालपुष्पैः।
बिल्वप्रवालतुलसीदलमालतीभिस्त्वां
पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद॥
ॐ उमाशक्त्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ शंकरप्रियायै नमः पुष्पं समर्पयामि।

ॐ पार्वत्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ कालिन्द्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ कोटर्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ विश्वधारिण्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ गंगादेव्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।

ॐ उमायै नमः	पादौ पू. १	लोकवन्दिनायै०स्तनौ ८	
गौर्यै नमः	जंघे पू. २	काल्यै०	कण्ठं ९
पार्वत्यै नमः	जानुनी पू ३	शिवायै०	मुखं १०
जगद्धात्र्यै नमः	ऊरू पू. ४	भवान्यै०	नेत्रे ११
जगत्प्रतिष्ठायै नमः	कटी पू. ५	रुद्राण्यै०	कर्णौ १२
शान्तिरूपिण्यै नमः	नाभि पू. ६	शर्वाण्यै	ललाटं १३
देव्यै नमः	उदरं पू. ७	मङ्गलदात्र्यै० शिरः पू. १४	

ॐ उमायै न० बिल्वपत्रं सम० १ गौर्यै० न० अपामार्ग० २ पार्वत्यै मालतीपत्रं ३ दुर्गायै० दूर्वाप० ४ काल्यै० चम्पकप० ५ भवान्यै० करवीरप० ६ रुद्राण्यै० बदरीप० ७ शर्वाण्यै० अर्कप०८ चण्डिकायै० तुलसीप० ९ ईश्वर्यै० मुन्निप० १० शिवायै दाडिमीप० ११ अपर्णायै० धत्तूरं १२ धात्र्यै० जातीप० १३ मृडान्यै० अगरपत्रं १४ गिरिजायै० बकुलपत्रं १५ अम्बिकायै० अशोकपत्रं स० १६।

धूपम्—

धूपं मनोहरं दिव्यं सुगन्धं देवता प्रियम्।
दशांगसहितं देवि मया दत्तं गृहाण मे॥

दीपम्—

तमोहरं सर्वलोकचक्षुः संबोधकं सदा।
दीपं गृहाण मातस्त्वमपराधशतापहे॥

नैवेद्यम्—

नानाविधानि भक्ष्याणि व्यञ्जनानिदरप्रिये।
गृहाण देवि नैवेद्यं सुखदं सर्वदेहिनाम्॥

आचमनीयम्—

गङ्गोदकं समानीतं मयाचमनहेतवे।
तेनाचम्य महादेविं वरदा भव चण्डिके॥

सिन्दूरम्—

सिन्दूररूपवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया।
अतो दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

कुङ्कुमम्—

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामनीकामसंभवम्।
सुखदं मोहनं चैव कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम्॥

भूषणानि—

रत्नस्वर्णविकारं च देहसौख्यविवर्धनम्।
शोभाधारं श्रीकरं च भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥

मंगलसूत्रम्—

माङ्गल्यममिसंयुक्तं मुक्ताफलसमन्वितम्।
दत्तं मङ्गलसूत्रं ते गृहाण सुखवल्लभे॥

फलानि—

रम्भाफलं दाडिमं च मातुलिङ्गं च खर्जुरम्।
नारिकेरं च जम्बीरं फलान्येतानि गृह्यताम्॥

ताम्बूलम्—

ताम्बूलं च वरं रम्यं कर्पूरादि सुवासितम्।
जिह्वाजाढ्यच्छेदकरं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

दक्षिणा—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनन्तपुण्य फलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

नीराजनाम—

नीराजयामि देवेशि कर्पूराद्यैश्च दीपकैः।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं गृह्ण देवि नमोऽस्तु ते॥

नमस्कारः—

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वरि॥

पूजन हवन की समाप्ति के पश्चात् [1]पूर्णाहुति से आशीर्वाद तक के वैदिक कर्मो को करें।

॥ शिवशक्तियाग समाप्तः॥

---

१. पूर्णाहुति से आशीर्वाद तक के वैदिक कर्मों के लिए इस पुस्तक में लक्ष्मीयाग को देखें, किन्तु जहाँ-जहाँ संकल्प आयेगा वहां 'शिवशक्तियाग' का ही उच्चारण होगा।

यज्ञों में गणेशआदि का अर्चन प्रकार

अथ गणेशाम्बिका पूजनम्

गणानां त्वा गणपतयेन०	आवाहनम्	त्वाँ गन्धर्वा	गन्धम्
अम्बेऽ अम्बिके अम्बिकायै नमः		अक्षन्नमीमदन्त	अक्षतान्
मनो जूतिः, अस्यै प्राणाः	प्रतिष्ठापनम्	ओषधीः प्रतिमोदध्वम्	पुष्पमालाम्
पुरुषऽएवेदम्	आसनम्	काण्डात्काण्डात्	दुर्वाङ्कुरान्
एतावानस्य	पाद्यम्	सिन्धोरिव	सिन्दूरम्
त्रिपादूर्ध्व	अर्घ्यम्	अहिरिव	नानापरिमलद्रव्याणि
ततो विराडजायत	आचमनम्	धूरसि	धूपम्
तस्माद्यज्ञात्	स्नानम्	अग्निर्ज्योतिः	दीपम्
पञ्चनद्यः	पञ्चामृतस्नानम्	अन्नपतेन्नस्य	नैवेद्यम्
पयः पृथिव्याम्	पयः स्नानम्	अꣳठ० शुनाते	करोद्वर्तनम्
दधिक्राव्णः	दधिस्नानम्	यत्पुरुषेण	ताम्बूलम्
घृतं मिमिक्षे	घृतस्नानम्	याः फलिनीः	फलम्
मधु वाता	मधुस्नानम्	हिरण्यगर्भः	दक्षिणाम्
अपाँरसम्	शर्करास्नानम्	इदꣳठ हविः	नीराजनम्
शुद्धबालः	शुद्धोदकस्नानम्	यज्ञेन यज्ञमयजन्त	पुष्पाञ्जलिम्
युवा सुवासाः	वस्त्रम्	ये तीर्थानि	प्रदक्षिणाम्
सुजातो ज्योतिषा	उपवस्त्रम्	रक्ष रक्ष	विशेषार्घ्यम्
यज्ञोपवीतं परमम्	यज्ञोपवीतम्	विघ्नेश्वराय	प्रार्थना

अथ कलशस्थापनम्

महीद्यौः	भूमिस्पर्शः	त्वां गन्धर्वा	गन्धप्रक्षेपः
धान्यमसि	धान्यविकरणम्	या ओषधीः	सर्वौषधिप्र०
आजिघ्र	कलशस्थापनम्	काण्डात्काण्डत्	दूर्वाङ्कुरप्र०
वरुणस्योत्तम्भ	कलशे जलप्रक्षेपः	अश्वत्थेवः	पञ्चपल्लवप्र०

पवित्रेस्थः पवित्रप्र०
स्योना पृथिवि सप्तमृत्तिका प्र०
याः फलिनीः पूगीफल प्र०
परिवाजपतिः पञ्चरत्नप्र०
हिरण्यगर्भः हिरण्यप्रक्षेपः
सुजातो ज्योतिषा वस्त्रवेष्टनम्
पूर्णादर्वि पूर्णपात्रन्यासः

या फलिनीः नारिकेलफलस्थापनम्
तत्त्वा यामि वरुणावाहनम्
ॐ अप्पतये नमः वरुणपूजनम्
कलाः कला हि गङ्गाद्यावाहनम्
मनो जूतिः वरुणाद्यावाहितदेवता
प्रतिष्ठापनम्। ततः षोडशोपचारैः पू०
देवदानसंवादे प्रार्थना

अथ पुण्याहवाचनम्

दीर्घानागा, त्रीणिपदा-आशिषः प्रार्थना
अपां मध्ये, शिवा आपः सन्तु जलम्
लक्ष्मीर्वसति, सौमनस्यमस्तु पुष्पम्
अक्षतं चास्तु, अक्षतं चारिष्टं चास्तु-
अक्षतान्
गन्धाः पान्तु गन्धम्
अक्षताः पान्तु अक्षतान्
पुष्पाणि पान्तु पुष्पाणि
सफलताम्बूलानिपान्तु सफलताम्बूलम्
दक्षिणां पान्तु दक्षिणाम्
पुनरत्रापः पान्तु पुनर्जलम्
दीर्घमायुः प्रार्थना

सागरस्य, सत्रस्य ऋद्धिः-ॐ ऋध्यताम्।
स्वस्तिऽस्तु, स्वस्ति नः
ॐ आयुष्मते स्वस्ति।
समुद्रमथनाज्जाता, श्रीश्च ते ॐ अस्तुश्रीः
मृकण्डसूनो, शतमिन्नु
ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः
शिवगौरीविवाहे, मनसः कामम्
ॐ अस्तु श्रीः
प्रजापतिर्लोक प्रजापतेनत्वं
आयुष्मते स्वस्ति प्रतिपन्थाम्
ॐ आयुष्मते स्वस्ति

द्रविणो दाः, सविता त्वा न तद्रक्षाँसि, उच्चाते, उपास्मै गायता मन्त्रपाठः व्रतजपनियम प्रार्थना ततो यजमानः शान्तिरस्तु-इत्यादि पठेत् निकामेनिकामे, शुक्राङ्गारकबुध-पठनम् ब्राह्मं पुण्य, पुनन्तु मा-ॐ पुण्याहम् पृथिव्याम्, यथेमां-ॐ कल्याणम्

अथाभिषेकः

पयः पृथिव्याम्। पंचनद्यः। वरुणस्योत्तम्भम्। देवस्य त्वा। देवस्य त्वा। विश्वानि देव। धामच्छदग्निः। त्वं यविष्ट। अन्नपतेन्नस्य। द्यौः शान्तिः। यतो यतः-कोऽसि कतमोऽसि। शिरो मे। जिह्वा मे। बाहू में। पृष्टीर्मे। नाभि में प्रतिक्षत्रे। त्रयादेवाः। प्रथमाद्वितीयैः।

अथ मातृकापूजनम्

गणनां त्वा	गणपतये नमः	स्वाहा प्राणेभ्यः	स्वाहायै
आयङ्गौः	गौर्यै	आपोऽअस्मान्	मातृभ्यः
हिरण्यरूपा उषसः	पद्मायै	रयिश्च मे	लोकमातृभ्यः
निवेशनः सङ्गम	शच्यै	यत्प्रज्ञानम्	धृत्यै
मेधाम्मे	मेधायै त्रयम्बकं	यजामहे	पुष्ट्यै
सविता	त्वा सावित्र्यै	अङ्गान्यात्मन्	तुष्ट्यै
विज्यन्धनुः	विजयायै	प्राणाय स्वाहा -आत्मनः	कुलदेवतायै
वह्नीनां पिता	जयायै	गौरी पद्मा शची मधा	प्रार्थना
इन्द्रऽआसान्नेता	देवसेनायै	ॐ गणपत्यादिकुल	देवतान्तमातृभ्यो
पितृभ्यः स्वधायिभ्यः	स्वधायै	नमः इति षोडशोपचारैः पूजयेत।	

अथ वसोर्धारापूजनम्

वसो पवित्रम्	सप्तधाराकरणम्	आयङ्गौः	प्रज्ञायै
(ॐ कामधुक्षः	गुडेनैकीकरणम्)	पावकानः	सरस्वत्यै
मनसः कामम्	श्रियै नमः	मनोजूतिः	प्रतिष्ठापनम्
श्रीश्च ते लक्ष्म्यै	यथोपचारैः	पूजयेत्	
भद्रं कर्णेभिः	धृत्यै	श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा	प्रार्थना
मेधाम्मे	मेधाय	यज्ञङ्गत्वेन भो देव्यः	प्रार्थना
प्राणाय स्वाहा	स्वाहायै		

अथायुष्यमन्त्रजपः

आयुष्यं वर्चस्यम्। न तद्रक्षाँसि। यदाबध्नन् मन्त्रपाठः

अथ नान्दीश्राद्धप्रयोगः

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः पाद्यम्
ॐ मातृपितामहीप्रपितामह्यः
ॐ पितृपितामहप्रपितामहाः
ॐ मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमा तामहाः
ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः आसनदानम्
[इदं युग्मब्राह्मणभोजननि०]
सक्षीरयवमुदकदानम्–
सत्य० विश्वेदेवा:नान्दीमुखाः प्रीय०
अधोराः पितरः सन्तु जलधारादानम्
गोत्रन्नो वर्धताम् प्रार्थना

ॐ मातृपितामहीप्रपितामह्यः
ॐ पितृपितामहप्रपितामहाः
ॐ मातामहप्रमातामहवृद्ध प्र०
गन्धादिदानम्–
[सत्य० इदं गन्धाद्यर्चनं स्वा०]
भोजननिष्क्रयदानम्
सत्यवसु० कृतस्य नानदीश्राद्ध– दक्षिणादानम्
उपास्मै गा, इडामग्ने पाठमात्रम् वाजे
वाजे वत विसर्जनम्
आमा वाजस्य अनुव्रजनम्

अथाचार्यादिवरणम्

ततो यजमानो गन्धादिना आचार्या दिब्राह्मणान् सम्पूज्य वृणुयात्।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति–रक्षसूत्रबन्धनम्
ब्राह्मणाः सन्तु शास्तारः प्रार्थना

क्षमा सत्यं दया दानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
देवपूजाग्निहवनं सन्तोषः स्तेयवर्जनम् ॥ १ ॥
उपवीती बद्धशिखो धीरो मौनी दृढव्रतः।
धौतवासाः पञ्चकच्छो द्विराचाम् कृताह्निकः ॥ २॥
नैकयस्त्रो नान्तराले न द्वीपे नार्द्रवाससा।
न कुर्यात्कस्यचित्पीडां कण्डून्मीलनवर्जितः॥ ३ ॥

अवैधं नाभ्यधः स्पर्शं कर्मकाले न कारयेत्।
न पदा पादमाक्रम्य न चैव हि तथा करौ ॥ ४ ॥
न चासमाहितमना न च संश्रावयन् जपेत्।
न च क्रमन्न च हसन्न पार्श्वानवलोकयन् ॥ ५ ॥
जपकाले न भाषेत नान्यानि प्रेक्षयेद् बुधः।
न कम्पयेच्छिरो ग्रीवं दन्तानैव प्रकाशयेत्॥ ६॥
न द्रुतं नापि विश्रान्तं क्रमान्मन्त्रं जपेत्सुधीः।
क्रोधं मोहं क्षुतं निद्रां निष्ठीवनविजृम्भणे ॥ ७ ॥
दर्शनं च श्वनीचानां वर्जयेज्जपकर्मणि।
पादप्रसारणं नैव कांस्यपात्रे भोजनम् ॥ ८ ॥
श्रद्धोत्साहौ मनःस्थैर्य त्रिकालं देवतार्चनम्।
जपहोमार्षु नरमन्यं नाकारणात् स्पृशेत् ॥ ९ ॥
अनालस्यं सौमनस्यमहिंसा शान्ति रेव च।
मन्त्रा-धिष्ठातृदेवाना ध्यानं धारणमर्थतः ॥ १० ॥
पवित्रपाणिस्तिलकी ताम्बूलपरिवर्जनम्।
असूया-द्वेषद्रोहेर्ष्या-प्रहासपरिवर्जनम् ॥ ११ ॥
मञ्चखट्वादिशयनं प्रातराहरवर्जनम्।
परस्परमनिन्दां च न क्षौरं नातिभोजनम् ॥ १२ ॥
निरर्थकं न संलापो नाङ्गानां चालनं मुधा।
स्नानं त्रिषवणं चैव गुरुदेवद्विजार्चनम् ॥ १३ ॥
वैश्वदेवं तथातिथ्यमथैवः सनसंस्थितिः।
प्रिया वाणी प्रसन्नत्वं तत्तन्मन्त्रार्थचिन्तनम् ॥ १४ ॥

आचार्य कथने स्थेयान्न प्रतिग्रहमाचरेत्।
हविष्याशी मिताहारी लोभदंभविवर्जितः ॥ १५ ॥
अत्वरः सकलान् मन्त्रान् जपे होमे प्रयोजयेत्।
दूरतः सन्त्यजेत्सर्वं मादकद्रव्यसेवनम् ॥ १६ ॥
न यज्ञमण्डपे हस्तपादप्रक्षालनंकक्वचित्।
नान्य प्रतिनिधिं कुर्यान्न पर्युषितभुग्भवेत् ॥ १७ ॥
वर्तमाने जपादौ च लघुशङ्कादिकं त्यजेत्।
कृतेऽपि तत्क्षणवस्त्रमन्यद् धृत्वासनं जपेत्॥ १८ ॥
सृगीमुद्रामुपाश्रित्य यथार्थ हुतमाचरेत्।
न स्यूतवासा वीष्णीषी नापि पारक्यवस्त्रभृत् ॥ १९ ॥
अभ्यङ्गोन्मर्दने नैव सदा साधुमना भवेत्।
अकौ-टिल्यं च स्वाध्यायं तितिक्षामार्जवं भवेत॥ २०॥
आदिष्ट समये कुर्याद् गमनागमने बुधः।
जृम्भा-दीनाभ्यधःस्पर्शे निमित्तेऽप उपस्पृशेत् ॥ २१ ॥
यद्वा सर्वोपघातेषु संस्मरेद्विष्णुमव्ययम्।
पालये-द्यज्ञभाग्विद्वान् द्रढिम्ना नियमानिमान् ॥ २२ ॥
अज्ञानादथवा मोहात्प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ २३ ॥

(आ मध्याह्नं जपं कुर्यात्तीर्थादौ निर्जने स्थले। क्षीराहारी फलाहारी शाकाहारी हविष्यभुक्। नृत्यगीते द्विभुक्तं च दुःसंवासं प्रमत्तताम्। श्रुतिस्मृतिविरुद्धं च जपं रात्रौ विवर्जयेत्।) अस्मिन्कर्मणि ये ये तु प्रार्थना।

अथ पश्चिमद्वारेण मण्डपादिप्रवेशः

चतुर्भुजा	शुक्लवर्णा-भूमिध्यानम्	देवा आयान्तु	
आगच्छ देवि, उद्धृतासि	प्रणामः	इयं वेदिः सुभू	महावेदिसमीपे
ब्रह्मणा निर्मिते भूम्यै	अर्धदानम्	भूविर्भूमिमवागात्	दध्यकुण्ड-
यमेन पूजिते		प्रार्थना	समीपे वा पाठमात्रम्
स्वस्ति न इन्द्रो	पाठः		

आचार्यो वामहस्ते गौरसर्षपान् गृहीत्वा दिग्रक्षणं कुर्यात्। तत्र मन्त्राः–

रक्षोहणं बलगहनम्। रक्षोहणो वो बलगहनः। रक्षसां भागोसि। रक्षोहा विश्वचर्षणिः। यदत्र संस्थितम्। अपसर्पन्तु ते भूताः। भूतानि राक्षसा वापि। इति।

अथ पञ्चगव्यकरणम्

तत्सवितुर्वरेण्यम्	गोमूत्रम्	तेजोसि	आज्यम्
गन्धाद्वाराम्	गोमयम्	देवस्य त्वा	कुशोदकम्
आप्यायस्व	पयः	'ॐ' प्रणवेन- आलोडनम् (कुशैरापो	
दधिक्राव्णः	दधि	. रापोहिष्ठेति कर्मभूमि प्रोक्षेत्)	

अथ मण्डपाङ्गवास्तुपूजनम्

विशन्तु भूतले–आग्नेयादिचतुर्दिक्षुलोहशंकुरोपणम्।

अग्निभ्योऽप्यथ, नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव, वायव्याधिपतिश्चैव, रुद्रेभ्यश्चैव–भाषमभक्त–बलिदानम्।

वेद्यु परि सुवर्णशलाकया प्रागग्रा द्व्यङ्गुलान्तराला नव रेखाः कार्या।

तत्र मन्त्राः–ॐ लक्ष्म्यै नमः १ यशोवत्यै नमः २ कान्तायै नमः ३ सुप्रियायै नमः ४ विमलायै नमः ५ शिवायै नमः ६ सुभगायै नमः ७ सुमत्यै नमः ८ इडायै नमः ९। ततः उदगग्रा नवरेखाः कार्याः–

ॐ धान्यायै नमः १ प्राणायै नमः २ विशालायै नमः ३ स्थिरायै नमः ४ भद्रायै नमः ५ जयायै नमः ६ निशायै नमः ७ विरजायै नमः ८ विभवायै नमः ९

अथ शिख्यादिवास्तुमण्डलस्थदेवाना-मावाहनं पूजनं च

तमीशानम्	शिखिने नमः	द्वे विरूपे	दौवारिकाय
शन्नो वातः	पर्जन्याय	नीलग्रीवाः	शितिकण्ठादि-सुग्रीवाय
मर्माणि ते	जयन्ताय	नमो गणेभ्यः	पुष्पदन्ताय
आयात्विन्द्रो वसः	कुलिशायुधाय	इमम्मे	वरुणाय
बण्महाँऽअसि	सूर्याय	यमश्विना	असुराय
व्रतेन दीक्षाम्	सत्याय	शन्नो देवीः	शोषय
आत्वाहार्षम्	भृशाय	एतत्ते	पापाय
यावाङ्कशा	आकाशाय	द्रापेऽअन्धसस्पते	रोगाय
वायो ये ते	वायवे	अहिरिव भोगैः	अहये
पूषन्तव	पूष्णे (पूषणम्)	अवतत्य धनुष्ट्वम् मुख्याय	
तत्सूर्यस्य	वितथाय	इमा रुद्राय	भल्लाटाय
अक्षन्नमीमदन्त	गृहक्षताय	सोमर्ठ० राजानम्	सोमाय
यमाय त्वाङ्गिरस्वते	यमाय	नमोऽस्तु सर्पेभ्यो सर्पेभ्यः	
गन्धर्वस्त्वा	गन्धार्वाय	इडऽएहि	अदित्यै
सौरीबलाका	भृङ्गराजाय	अदितिर्द्यौः	दित्यै
मृगो न भीमः	मृगाय	अप्स्वग्ने	अद्भ्यः
उशन्तस्त्वा	पितृभ्यो	हस्तऽआघाय	सावित्राय
आषाढं युत्सु	जयाय	यस्यास्ते	पापराक्षस्यै
नमस्ते	रुद्राय	यदक्रन्दः अर्यम्णे (अर्यमणम्)	
यदद्य	अर्यम्णे	यदद्यसूर	स्कन्दाय

विश्वानि देव	सवित्रे	हिङ्काराय स्वाहा	जृम्भकाय
विवस्वन्नादित्यै	विवस्वते	कास्विदासीत्	पिलिपिच्छाय
सबोधि	विबुधाधिपाय	त्रातारमिन्द्रम्	इन्द्राय
मित्रस्य चर्षणी	मित्राय	त्वन्नोऽअग्ने	अग्नये
नाशयित्री	राजयक्ष्मणे	यमाय त्वा	यमाय
स्योना पृथिवि	पृथ्वीधराय	असुन्वन्तमयज	निर्ऋतये
आ ते वत्सो म	आपवत्साय	तत्त्वा यामि	वरुणाय
ब्रह्म यज्ञानम्	ब्रह्मणे	आ नो नियुद्भिः	वायवे
वास्तोष्पते प्रति	वास्तोष्पतये	वयठं० सोम	सोमाय
यन्ते देवी	चरक्यै	तमीशानम्	ईशानाय
अक्षराजाय	विदार्यै	अस्मे रुद्रा	ब्रह्मणे
इन्द्रस्य क्रोडः	पूतनायै	स्योना पृथिवी	अनन्ताय

ततः-मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य षोणशोपचारैः पूजयेत्। तत्र कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य। तदुपरि स्वर्णमयीं वास्तुप्रतिमामग्न्युत्तारणप्राणप्रतिष्ठापूर्वकं स्थापयेत् पूजयेच्च। तत्र मन्त्राः-समुद्रस्य त्वा। हिमस्यत्वा। उपज्मन्नु। अपामिदन्नयय। अग्ने पावक। स नः पावक। पावकया यश्चि। नमस्ते हरसे। नृषदेवेडप्सु। ये देवा देवानाम्। प्राणदाऽअपानदा। ये देवा देवेष्वधि।

ततः 'ॐ शिखिने एष पायसबलिर्न मम' एवं भूतैः पूर्वोक्तनाम मन्त्रै। शिख्यादिवास्तु-मण्डलस्थदेवताभ्यः पायसबलिदानम्। ततां 'ॐ वास्तुपुरुषाय एष बलिर्न मम' इति मन्त्रेण प्रधानवास्तुपुरुषाय बलिं दद्यात्। ततः त्रिसूत्र्या मण्डपवेष्टनं जलदुग्धधारादानं च। तत्र मन्त्राः कृणुध्वपाजः। तव भ्रमासः। प्रतिस्पशो विसृज। उदग्ने तिष्ठ। ऊर्ध्वो भव। पुनन्तु मा पितरः। अग्नऽ आयूठं०षि। पुनन्तु मा देयजनाः। पवित्रेण पुनीहि। यत्ते पवित्रम्। पवमानः सोऽअद्य नः। उमाभ्यां देव। वैश्वदेवी पुनती।

अथ मण्डपपूजनम्

तत्र ईशानकोणादारभ्य मध्ये
चतुरः स्तम्भान् पूजयेत्–
(१) ब्रह्म यज्ञानम्–ब्रह्मणे नमः
(सावित्र्यै, वास्तुदेवतायै,
ब्राह्मे, गङ्गायै)
ऊर्ध्वऽऊषुण ऊतये–नागमात्रे नमः

ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतोयतः
(३) यमाय त्वा यमाय नमः
(पूर्वसंध्यायै, अञ्जन्यै, क्रूरायै, नियंत्र्यै
ऊर्ध्वऽ ऊषु आयङ्गौः यतो यतः
(४) नमोऽस्तु सर्पे–नागराजाय नमः
(मध्यमसन्दायै, धरायै पद्मायै,
महापद्मायै)

आयङ्गौः शाखाबन्धनम्
यतो यतः स्तम्भाभिमन्त्रेणम्
(ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः
(एवं सर्वत्र)

(५) यदक्रन्दः स्कन्दाय नमः
(पश्चिमसन्ध्यायै)

(२) इदं विष्णुः विष्णवे नमः
(लक्ष्म्यै, अदित्यै, वन्दायै,
ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः वैष्णव्यै)
(६) वायो येते वायवे नमः
ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः (वायव्यै गायत्र्यै, मध्यमसन्धायै)
(३) नमः शम्भवाय च शम्भवे नमः ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः यतो यतः (गौर्यै, माहेश्वर्यै, शोभनायै, भद्रायै)
(७) आप्यायस्व सोमाय नमः ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः
(सावित्र्यै, अमृतकलायै,
विजयायै, पश्चिमसंन्ध्यायै)
(४) त्रातारमिन्द्रम् इन्द्राय नमः
(इन्द्राण्यै, आनन्दायै, विभूत्यै, ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः आदित्यै)
(८) इमम्मे वरुणाय नमः
ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः (वारुण्यै, पाशधारिण्यै, वृहत्यै)
ततो मण्डपाद् बहिः ईशानादारभ्य ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः

द्वादशस्तम्भान् पूजयेत–

(१) आ कृष्णेन, सूर्याय, नमः

(सौर्यै, भूत्यै, सावित्र्यै, मङ्गलायै)

ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः

(२) गणानां त्वा गणपतये नमः

(सरस्वत्यै, विप्रहारिण्यै, जयायै)

ऊर्ध्वऽ ऊषु आयङ्गौः, यतो यतः

(११) बृहस्पते अति–बृहस्पतये नमः

(पौर्णमास्यै, सावित्र्यै, वास्तुदेवतायै)

(६) वसुभ्यस्त्वा अष्टवसुभ्योनमः

(विनतायै, अणिमायै,

भूत्यै, गरिमायै)

ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः यतो यतः

(१०) सोमोधेनुर्ठ०–धनदाय नमः

(आदित्यायै, लघिमायै सिनीवाल्यै)

(१२) विश्वकर्मन्ह–विश्वकर्मणे नमः

(सिनीवाल्यै, वास्तुदेवतायै सावित्र्यै)

ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः।

ऊर्ध्वऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः

अथ पूर्वादिक्रमेण तोरणपूजा

ॐ अग्निमीडे तोरणनिधानम्। 'ॐ सुदृढतोरणाय नमः' इति पञ्चोपचारैः पूजयेत्। दक्षिणे–ॐ राहवे नमः। वामे–ॐ बृहस्पतये नमः। तत्र कलशस्थापनविधिनैकं कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशे। ध्रुवाय नमः–इत्यावाह्य पूजयेत। ॐ इषे त्वा–इति तोरणं निधाय ॐ सुभद्रतोरणाय नमः, पूजयेत्। दक्षिणे–ॐ सूर्याय नमः। ॐ अङ्गारकाय नमः कलशं संस्थाप्य ॐ धरायै नमः–इत्यावाह्य पूजयेत। ॐ अग्न आयाहि इति तोरणनिधानम्। ॐ सु (भीम) शर्मतोरणाय नमः। दक्षिणे–ॐ शुक्राय नमः वामे–ॐ बुधाय नमः। कलशं संस्थाप्य ॐ वाक्पतये नमः–इत्या०। ॐ शन्नो देवी० ॐ तोरणाय नमः। ॐ सुहोत्रतोरणाय नमः। दक्षिणे–ॐ सोमाय नमः। वामे–ॐ केतुशनिभ्यां नमः। कलशं संस्थाप्य तत्र ॐ विघ्नेशाय नमः इति पञ्चोपचारैः पूजयेत्।

अथ द्वारपूजा

पूर्वद्वारे–कलशद्वयं संस्थाप्य तत्र
ॐ ऐरावताय नमः–इति पूजयेत्। ऊर्ध्व–द्वारिश्रयै नमः। अधः–देहल्यै नमः। वामदक्षिणस्तम्भयोः–गणेशाय नमः। स्कन्दाय नमः। कलशद्वये–गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः–इत्यावाह्य पूजयेत्। ऋग्वेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा ॐ अग्निमीडे इति गन्धादिना पूजयेत्। द्वारकलशयोः–ॐ त्रातारमिन्द्रमिति इन्द्रं पूजयेत् 'ॐ आशुः शिशानः' इति पीतां पताकां पीतं ध्वजं च समुच्छ्रयेत्। इन्द्राय बलिदानं च। तत आग्नेयीं गत्वा कलशं संस्थाप्य तत्र अमृताय नमः, पुण्डरीकाय नमः–इत्यावाह्य पूजयेत। कलशे–अग्नये नमः इत्याग्निमावाह्य पूजयेत्। ॐ अग्निं दूतम्' इति रक्तां पताकां रक्तं ध्वजं च समुच्छ्रयेत्। ॐ त्वन्नोऽअग्ने–इत्यग्निं पूजयेत्। बलिदानं दक्षिणद्वारे–कलशद्वयं स्थापयित्वा तत्र वामननामकदिग्गजाय नमः इति पूजयेत्। ऊर्ध्व–द्वारश्रियै नमः। अधः–देहल्यै नमः। स्तम्भयोः–पुष्पदन्ताय नमः। कपर्दिने नमः। कलशद्वये–गोदावर्यै नमः, कृष्णाय नमः। यजुर्वेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा 'ॐ इषे त्वोर्ज्जेत्वा' इति पूजयेत्। पुनः कलशद्वये यमाय नमः इति यमं सम्पूज्यार्घ्यं दत्त्वा 'आयङ्गौ' इति कृष्णौ पताकाध्वजौ समुच्छ्रयेत्। यमाय बलिदानं च। नैर्ऋतिं गत्वा कलशं स्थापयित्वा वरुणं सम्पूज्य कुमुदाय नमः, दुर्जयाय नमः इति नीलवर्णौ पताकाध्वजौ समुच्छ्रयेत्। निर्ऋतये सघृतकृष्णव्रीह्यन्नदानं च। पश्चिमद्वारे–गत्वा कलशद्वयं स्थापयित्वा तत्र 'अञ्जनाख्यदिग्गजाय नमः–इति पूजयेत्। ऊर्ध्व–द्वारिश्रयै नमः। अधः–देहल्यै नमः। स्तम्भ्योः–नन्दने नमः। चण्डाय नमः। कलशद्वयै–रेवायै नमः। ताप्यै नमः।' सामवेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा 'ॐ अग्न आयाहि' इति पूजयेत्। द्वारकलशयोः–वरुणाय नमः–इति वरुणं सम्पूज्यार्घ्यं दत्त्वा 'ॐ इमम्मे' इति श्वेतां पताकां श्वेतं

ध्वजं च समुच्छ्रयेत्। वरुणाय नवनीतौदनबलिदानं च। वायुकोणे गत्वा कलशं संस्थाप्य वरुणं पूजयित्वा पुष्पदन्ताय नमः। सिद्धार्थाय नमः—इति पुष्पदन्तसिद्धार्थौ वायवे नमः इति वायुं च सम्पूज्य 'ॐ वायो येते' इति धूम्रां पताकां धूम्रं ध्वजं च समुच्छ्रयेत्। 'ॐ तववायबृहस्पते' इति वायुं सम्पूज्य यवौदनबलिं दद्यात्। उत्तरद्वारि गत्वा कलशद्वयं संस्थाप्य वरुणं पूजयित्वा सार्वभौमनामकदिग्जाय नमः—इति पूजयेत्। ऊर्ध्व—द्वारश्रियै नमः। अधः—देहल्यै नमः। वामदक्षिणस्तम्भ्योः—महाकालाय नमः भृङ्गिणे नमः। द्वारकलशयोः— वाण्यै नमः। वेण्यै नमः। अथर्ववेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा ॐ शन्नो देवी० इति पूजयेत्। पुनः द्वारकलशयोः—सोमाय नमः—इति सोमं सम्पूज्य 'ॐ आप्यायस्व' इत्यर्घ दद्यात्। 'ॐ वयर्ठ० सोम' इति हरितां पताकां हरितं ध्वजं च समुच्छ्रयेत् सोमाय प्रैयङ्गवबलिं दद्याच्च। ईशानकोणे गत्वा पूर्ववत्कलशं स्थापयित्वा वरुणं सम्पूज्य सुप्रतीकाय नमः। मङ्गलाय नमः—इति सुप्रतोकमङ्गलौ पूजयेत्। कलशे—ईशानाय नमः इति ईशानं सम्पूज्य 'ॐ तमीशानम्' श्वेतां पताकां ध्वजं च समुच्छ्रयेत्। 'ॐ आयङ्गौः' इत्यनन्तं सम्पूज्य माषभक्तबलिं दद्यात्। पश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्ये—ब्रह्मणे नम इति ब्रह्माणमावाह्य 'ॐ ब्रह्म यज्ञानम् इति रक्तां पताकां ध्वजं च समुच्छ्रयेत्।' अनेनैव मन्त्रेण ब्रह्माणं सम्पूज्य माषभक्तबलिं दद्यात्। ततो मण्डपमध्ये—पञ्चवर्ण महाध्वजम् 'ॐ इन्द्रस्य वृष्णो' इति मन्त्रेण रोपयेत्। 'ॐ ब्रह्मयज्ञनाम्' महाध्वजाय नम इति पूजयेच्च।

अथ प्रधानवेद्यां सर्वतोभद्रदेवतानामावाहनं पूजन च

ब्रह्मयज्ञानम्	ब्रह्मणे नमः	यदक्रन्द्रः	स्कन्दाय
वयर्ठ० सोम	सोमाय	आशुःशिणानः	नन्दीश्वराय
तमीशानम्	ईशानाय	यत्ते गात्रा	शूलाय
त्रातारमिन्द्रम्	इन्द्राय	ॱवरुद्र मदीमही	महाकालाय

त्वन्नो अग्ने अग्नये अदितिर्द्यौः दक्षादिसप्तगणेभ्यः
यमायत्वाङ्गि यमाय अम्बेऽअम्बिके दुर्गायै
असुन्वन्तमयज निर्ऋतये इदं विष्णुः विष्णवे
तत्त्वा यामि वरुणाय पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधायै
आ नो नियुद्भिः वायवे परं मृत्यो मृत्युरोगेभ्यः
सुगावो देवाः अष्टवसुभ्यः गणानां त्वा गणपतये
रुद्राः सर्ठ० सृज्य- एकादशरुद्रेभ्यः शन्नो देवीः अद्भ्यः
यज्ञो देवानाम् द्वादशादित्येभ्यः मरुतो यस्य मरुद्भ्यः
यावाङ्कशा अश्विभ्यां स्योना पृथिवि पृथिव्यै
ओमाश्चर्ष- सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः पञ्चनद्यः गङ्गादिनदीभ्यः
अभित्यन्देवर्ठ० सप्तयक्षेभ्यः इमम्मे सप्तसागरेभ्यः
नमोऽस्तु सर्पे भूतनागेभ्यः
ऋताषाडऋ० गन्धर्वाप्सरोभ्यः परित्वा मेरवे

अतोऽग्रे नाममन्त्रेणैव स्थापनमुपलभ्यते—ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय। ॐ वज्राय। ॐ शक्तये। ॐ दण्डाय। ॐ खड्गाय। ॐ पाशाय। ॐ अंकुशाय। ॐ गौतमाय। ॐ भरद्वाजाय। ॐ विश्वामित्राय। ॐ कश्यपाय। ॐ जमदग्नये। ॐ वसिष्ठाय। ॐ अत्रये। ॐ अरुन्धत्यै। ॐ ऐन्द्र्यै। ॐ कौमार्यै। ॐ ब्राह्म्यै। ॐ वाराह्यै। ॐ चामुण्डायै। ॐ वैष्णव्यै। ॐ माहेश्वर्यै। ॐ वैनायक्यै। एता देवताः षोडशोपचारैः सम्पूज्य मध्ये कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य तदुपरि स्थाप्यदेव प्रतिमामग्न्युत्तारणप्राणप्रतिष्ठापूर्वकं संस्थाप्य षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्। ततो ब्रह्मादिदेवेभ्यः 'ॐ ब्रह्मणे नमः' पायसबलिं समर्पयामि। एवं भूतैर्नाममन्त्रैः पायसबलिं दद्यात्।

लिंगतोभद्रे विशेषः–

ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः	ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः
ॐ रुरुभैरवाय नमः	ॐ कपालभैरवाय नमः
ॐ चण्डभैरवाय नमः	ॐ भीषणभैरवाय नमः
ॐ क्रोधभैरवाय नमः	ॐ संहारभैरवाय नमः

एतत् अतिरिक्तानां देवानां रुद्रकल्पद्रुमादिषु निबन्धेषु न स्थापनमिति निर्विवादम्।

अथाग्निस्थापनम्

तत्रादौ पञ्चभूसंस्कारान् कुर्यात्। तद्यथा त्रिभिः कुशैः प्राक्संस्थमुदक्संस्थ वा भूमिं त्रिः परिसमुह्य गोमदयोदकाभ्यां प्राक्सस्थमुदक्संस्थं वा भूमिं त्रिरुपलिप्य, स्रुवेण प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिखय्, अनामिकाङगुष्ठेन प्रथमरेखातः पांसूनुद्घृत्य वामहस्ते घृत्वा तथैवव द्वितीयरेखातः पांसूनुद्घृत्य तानपि वामहस्ते कृत्वा तथैव तृतीयरेखातः समुद्धृत्य वामहस्ते कृत्वा तत्सर्वं दक्षिणहस्तेन ईशान्यां प्रक्षिप्य, उदकेन नीचेन हस्तेनाभ्युक्ष्य तैजसेन पात्रयुग्मेन सम्पुटीकृतं प्रदीप्तं बह्वङ्गारमग्निं स्वाभिमुखं मध्ये वाग्यतः–'ॐ अग्निं दूतम्' इति मन्त्रेण स्थापयेत्। तदुपरि तद्रक्षार्थं किञ्चित्काष्ठं निदध्यात्। मेखलासु–

इदं विष्णुः	विष्णवे नमः
ब्रह्म यज्ञानम्	ब्रह्मणे नमः
इमा रुद्राय	रुद्राय नमः
योन्याम्–अम्बे अम्बिके	गौर्यै नमः
नाभौ–नाभिर्मे	नाभ्यधिष्ठातृदेवतायै नमः
कण्ठे–नीलग्रीवाः शितिकण्ठा	

इत्यावाह्य यथोपचारैः सम्पूजयेत। 'ॐ चत्वारिशृङ्गा' इत्यग्निं पञ्चौपचारैः पूजयेत्।

अथ ग्रहाणामावाहनं पूजनं च

ऐशान्यां वस्त्राच्छादिते पीठे नवग्रहमण्डलं विलिख्य सूर्यादिननवग्रहान् अधिदेवता–प्रत्यधिदेवता–पञ्चलोकपाल–वास्तोष्पति–क्षेत्रपाल–दशदिक्पालसहितानावाहयेत् तद्यथा–

आ कृष्णेन	सूर्याय नम:	अदित्यै रास्ना	इन्द्राण्यै
इमन्देवा	चन्द्रमसे	प्रजापतेनत्व	प्रजापतये
अग्निमूर्द्धा	भौमाय	नमोऽस्तु	सर्पेभ्य:
उदबुध्यस्वाग्ने	बुधाय	ब्रह्मयज्ञानम्	ब्रह्मणे
बृहस्पतेऽअति	बृहस्पतये	लोकपालानां स्थापनं ग्रहाणामुत्तरे–	
अन्नात्परिस्रुत:	शुक्राय	गणानां त्वा	गणपतये
शन्नो देवी:	शनैश्चराय	अम्बेऽ अम्बिके	अम्बिकायै
कयानश्चित्र	राहवे	वायोयेते	वायवे
केतुं कृण्वन	केतवे	घृतं घृतपावा	आकाशाय
ततोऽधिदेवतास्थापनं		ग्रहदक्षिणापार्श्वे	
यावाङ्कशा		अश्विभ्यां	
त्र्यम्बकं यजामहे ईश्वराय		वास्तोष्पते	वास्तोष्पतये
श्रीश्च ते	उमायै	नहिस्पश	क्षेत्रा धिपतये
यदक्रन्द्र:	स्कन्दाय		
विष्णो रराटमसि	विष्णवे		
मण्डलस्य ब्राह्ये	इन्द्रादिदश दिक्पा–		
आ ब्रह्मन्	ब्रह्मणे	नामावाहनम्–	
स योषा इन्द्र	इन्द्राय	त्रातारमिन्द्र	इन्द्राय
यमायत्वाङ्गि	यमाय	त्वन्नो अग्ने	अग्नये
कार्षिरसि	कालाय	यमायत्वाङ्गि	यमाय
चित्रावसो	चित्रगुप्ताय	असुन्वन्त	निर्ऋतये

प्रत्यधिदेवतास्थापनं ग्रहवामपार्श्वे–

तत्त्वा यामि वरुणाय अग्निन्दूतम् अग्नये
आ नो नियुद्भिः वायवे आपो हि अद्‌भ्यः
वयर्ठ० सोम सोमाय स्योना पृथिवि पृथिव्यै
तमीशानम् ईशानाय इदं विष्णुः विष्णवे
अस्मे रुद्रा ब्रह्मणे इन्द्र आसाने इन्द्रायस्योना
पृथिवि अनन्ताय

मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः संपूजयेत्। ततो ग्रहवेदीशाने कलशस्थापनविधिना रुद्रकलशं संस्थाप्य तत्र 'ॐ असंख्याता' इति मन्त्रेण असंख्यरुद्रानावाह्य पूजयेत्।

खण्डदीक्षितकृतपद्धती शेषादीनामप्यावाहनं तच्च सति संभवे एव कार्यरुद्रकल्पद्रु मे तु नोक्तम्–ॐ शेषाय नमः रवे पूर्वे १ ॐ वासुकये नमः सोमस्याग्रे २ ॐ कर्कोटकाय नमः बुधोत्तरे ३ ॐ पद्माय नमः बृहस्पत्यग्रे ४ ॐ महापद्माय नमः शुक्रोत्तरे ५ ॐ शङ्खपालाय नमः शनिपश्चिमे ६ ॐ कालाय नमः राहुपुरतः ७ ॐ कुलीशाय नमः केतपुरतः ८ बहिः पूर्वे ॐ अश्विन्यादिसप्तनक्षत्रेभ्यो नमः ९ तत्रैव ॐ विष्कुम्भादिसप्तयोगेभ्यो नमः १० तत्रैव–ॐ ववबालवकरणाभ्यां नमः ११ तत्रैव–ॐ सप्तद्वीपेभ्यो नमः १२ तत्रैव ॐ ऋग्वेदाय नमः १३ बहिर्दक्षिणे–ॐ पुष्यादिसप्तनक्षत्रेभ्यो नमः १४ दक्षिणे एव ॐ धृत्यादिसप्तयोगेभ्यो नमः १५ तत्रैव ॐ कौलवतैतलकरणाभ्यां नमः १६ तत्रैव ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः १७ तत्रैव–ॐ यजुर्वेदाय नमः १८ पश्चिमे–ॐ स्वात्यादिसप्तनक्षत्रेभ्यो नमः १९ तत्रैव–ॐ वज्रादिसप्तयोगेभ्यो नमः २० तत्रैव–ॐ गरवणिजकरणाभ्यां २१ तत्रैव–ॐ सप्तपातालेभ्यो नमः २२ तत्रैव–ॐ सामवेदाय नमः २३ अथोत्तरे–ॐ अभिजिदादि-सप्तनक्षत्रेभ्यो नमः २४ ॐ साध्यदिषड्योगेभ्यो नमः २५ ॐ विशिष्टकरणाय नमः २६ ॐ भूरादिसप्तलोकेभ्यो नमः २७ ॐ

अथर्ववेदाय नमः २८ अथ वायव्याम्-ॐ ध्रुवाय नमः २९ ॐ सप्तऋषिभ्यो नमः ३०।

अथ यथावकाशम्-ॐ गङ्गादिनदीभ्यो नमः ३१ ॐ सप्तकुलाचलेभ्यो नमः ३२ ॐ अष्टवसुभ्यो नमः ३३ एकादशरुद्रेभ्यो नमः ३४ ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः ३५ ॐ एकोनप-ञ्चाशन्मरुद्भ्यो नमः ३६ ॐ षोडशमातृभ्यो नमः ३७ ॐ षड्ऋतुभ्यो नमः ३८ ॐ द्वादशमासेभ्यो नमः ३९ ॐ द्व्ययनाभ्यां नमः ४० ॐ पञ्चदशतिथिभ्यो नमः ४१ ॐ षष्टिसंवत्सरेभ्यो नमः ४२ ॐ सुपर्णेभ्यो नमः ४३ ॐ नागेभ्यो नमः ४४ ॐ सर्पेभ्यो नमः ४५ ॐ यक्षेभ्यो नमः ४६ ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः ४७ ॐ विद्याधरेभ्यो नमः ४८ ॐ अप्सरेभ्यो नमः ४९ ॐ अक्षोभ्यो नमः ५० ॐ मनुष्येभ्यो नमः ५१ इति संपूज्य प्रार्थयेत्-यत्कृतं पूजनं देव भक्तिश्रद्धाविवर्जितम्। परिगृह्णन्तु तत्सर्वं सूर्याद्याग्रहनायकाः १ "आदित्यदिग्रहाः सर्वे नानावर्णाः पृथिग्विधाः। सुप्रसन्नाः प्रयच्छन्तु सौभाग्यं मम सर्वदा" इति।

अथ योगिनीपूजनम्

आग्नेय्यां पीठे रक्तवस्त्राच्छादिते पूर्वभागे त्रीणि त्र्यस्त्राणि विलिख्य तेषु कलशत्रयं विधिना संस्थाप्य तदुपरि सौवर्णीस्तिस्त्रः प्रतिमाः कृताग्न्युत्तारणाः संस्थाप्य महाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वतीरावाह्य षोडशोपचारैः संपूजयेत्। तदग्रे कोष्ठेषु वक्ष्यमाणा देवीरावाहयेत्-

तमीशानम् गजाननायै नमः अग्ने ब्रह्म स्वदंष्ट्रायै
आ ब्रह्मन् सिंहमुख्यै भग प्रणेतः वानराननायै
महाँ इन्द्रः गृधास्यायै सुपर्णोऽसि ग ऋक्षाक्ष्यै
सद्यो जातः काकतुण्डिकायै पितृभ्यः स्वधा केकराक्ष्यै
आदित्यं उष्ट्रग्रीवायै याते रुद्र शिवातनूर वहतुण्डायै
स्वर्णधर्मः हयग्रीवायै वरुणः प्राविता सुराप्रियायै

सत्यश्च मे वाराह्यै	हठंसः शुचि	कपालहस्तायै
भायैदार्वाहा शरभाननायै	सुसन्दृशन्त्वा	रक्ताक्ष्यै
जिह्वा मे उलूकिकायै	प्रतिपदसि	शुक्यै
हिङ्कराय स्वाहा	शिवारावायै देवीरापो अश्येन्य	
(शिवारावाम्)	हविष्मतीरिमा	कपोतिकायै
अग्निश्च मे धर्म मयूरायै	श्रीश्च ते	पाशहस्तायै
पूषन्तव विकटाननायै	भुवो यज्ञस्य	दण्डहस्तायै
वेद्या वेदिः अष्टवक्त्रायै	कदाचनस्त	प्रचण्डायै
अयमग्निः सहस्त्रिणः	कोटराक्ष्यै	भद्रं कर्णेभिः
चण्डविक्रमाय		
इम्मे कुब्जायै	इषे त्वोर्जेत्वा	शिशुघ्न्यै
यमाय त्वा मखाय	विकटलोचनायै देवीद्यावापृ	
पापहन्त्र्यै		
यमेन दत्तं शुष्कोदर्यै	विश्वानि देव	काल्यै
मित्रस्य चर्ष ललजिह्वाम्	असुन्वन्तमय	रुधिरपायिन्यै
(ललजिह्वाम्)	अग्निश्च म आ	वसोधयायै
बह्वीनां पिता गर्भमक्षायै	विष्णो रराटमसि	तापिन्यै
नमस्ते रुद्र शवहस्तायै	ब्रह्मणमद्य	शोषणीदृष्ट्यै
ऋतञ्च मे आन्त्रमालिन्यै	आ नो भद्राः	कोटर्यै
ते आचर स्थूलकेश्यै	एका च मे स्थूलनासिकायै	
वेद्या वेदिः बृहत्कुक्ष्यै	ब्रह्माणि मे	विद्युत्प्रभायै
पावकानः सर्पात्यायै	असङ्ख्याता	बलाकास्यै
अस्कन्नमद्य प्रेतवाहिन्यै	अहिरिव	मार्जायै
तीव्रान्वो दन्तशूककरायै	तिस्रस्त्रेधा	कटपूतनायै
महीद्यौः	क्रौञ्च्यै	
उपयामगृहीतोसि सावि	मृगशीर्षायै	
सरस्वती योन्या	अट्टाट्टहासायै	

आप्यायस्व वृषानन यै इदं विष्णुः कामाक्ष्यै
कार्षिरसि व्यात्तास्यायै कृष्णऽऊर्मि मृगाक्ष्यै
त्र्यम्बकं यजामहे धूमनिश्वासायै मृगो न भीमः मृगलोचनायै
अम्बेऽअम्बिके व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे
इत्यावाह्य षोडशोपचारैः संपूजयेत्।

वायव्यां श्वेवस्त्राच्छादिते पीठे चतुरस्त्रं विलिख्य तिर्यङ्मान्यां पार्श्वमान्यां च सूत्रद्वन्द्वं समान्तरालं दद्यात्। एवं समानि नव कोष्ठानि सम्पद्यन्ते। मध्ये कोष्ठे अष्टदलं विलिख्य कलशं संस्थाप्य पूर्णपात्रे कृताग्न्युत्तारणं सौवर्णं क्षेत्रपालं। 'ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यः' इत्यावाह्य स्थापयेत्। पूर्वादिकोष्ठेषु षट्सु षट्दलानि सम्पाद्य, उत्तरेशानयोः कोष्ठयोस्तु सप्तदलानि कुर्यात्–

पूर्वकोष्ठेषट्सु दलेषु– स न इन्द्राय वरुणाय
इमौ ते पक्षा अजराय नमः बाहू मे वटुकाय
(अजरम्) मुञ्चन्तु मा विमुक्ताय
प्रथमा वाम् व्यापकाय कुर्वन्नेवेह लिप्तकाय
इन्द्रस्य वज्रः इन्द्रचौराय सन्नः सिन्धु नीललोकाय
एवेदिन्द्रम् इन्द्रमूर्तये नमो गणेभ्यः एकदंष्ट्राय
उक्षा समुद्रः उक्ष्णे (उक्षाणम्) दक्षिणषट्के–
यद्देवा देव कूष्माण्डाय अर्मेभ्यो हस्ति एरावताय
आग्नेयषट्सु दलेषु– ओषधीः प्रति ओषधीध्नाय
त्र्यम्बकं यजामहे बन्धनाय वनस्पते वीड्व सुधापाय
देवसवितः दिव्यकराय सुपर्ण वस्ते वैनाय (वैनम)
सीसेन तन्त्रम् कम्बलाय अग्ने अच्छा पवनाय
आशुः शिशानो भीषणाय भद्रं कर्णेभिः ढुण्ढकरणाय
नैर्ऋत्यषट्के– उत्तरादिकोष्ठे सप्तसु दलेषु–

इमर्ठं साहस्रम्-गवयाय (गवयम्) अपां फेनेन स्थविराय

कुम्भो वनिष्ठुः घण्टाय वातं प्राणेना दन्तुराय

आक्रन्दयबल व्यालाय इदठं० हविः धनदाय

इन्द्रा याहि अंशवे खड्गो वैश्व नागकर्णाय

चन्द्रमा अप्स्व चन्द्रवारणाय मृगो न भीमः महाबलाय

(चन्द्रवारणम्) इन्दुर्दक्षः फेत्काराय

गणानात्वा घटाटोपाय जीमूतस्येव वीरकाय

ईशानादिसप्तसु दलेषु क्रमेण-

पश्चिमे षट्सु दलेषु- तीव्रान्धोषान् सिंहाय

उग्रं लोहि जटिलाय अग्निन्दूतम् मृगाय

पवित्रेण पुनीहि क्रतवे आदित्यास्त्वा यक्षाय

आजिघ्र घण्टेश्वराय द्यौस्ते पृथि मेघवाहनाय

वायोशुक्रः धिकटाय सबर्हिरङ्क्ता तीक्ष्णाय

दैव्या होतारा मणिमानाय पवमानः सोऽअद्य अमलाय

त्रीणि त आहुः गणबन्धाय अभ्यर्षत शुक्राय

वायव्यादिकोष्ठे षट्सु दलेषु क्रमेण-

इत्यजरादिक्षेत्रपालानावाह्य मनो

प्रतिश्रुत्काया मुण्डाय

जूतिरिति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः

शुद्धबालः सर्व बर्बूकराय सम्पूजयेत्।

अथ कुशकण्डिकादिप्रयोगः

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। तत्र ब्रह्मोपवेशनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रागग्रैः कुशैः प्रणीतासंस्कारार्थ-मेकमासनम्, प्रणीताप्रणयनार्थं च द्वितीयमासनं कज्पयित्वा, प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य दर्भैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य प्रथमासने निधाय द्वितीयासने

निदध्यात्। ततो-ऽग्न्यायतनस्य समन्नाद्-द्वादशांगुलं स्थलंत्यक्त्वा प्रागग्रैरुदगग्रैश्च त्रिभिस्त्रिश्चतुर्भिर्वा कुशैरग्नेः परिस्तरणम्।

तद्यथा-आग्नेयादीशानान्तम्। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम् नैर्ऋत्याद्वा-यव्यान्तम्। अग्नितःप्रणीतापर्यन्तम्।इतरथावृत्तिः।ततः पात्रासादनार्थं कुशानास्तीर्य तत्रः अर्थवन्ति वस्तूनि अग्नेः पश्चिमतः प्राक्संस्थानि प्राग्विलानि उदग्राणि, उत्तरश्चेत् उदक्संस्थानि उदग्विलानि प्रागग्राणि कार्यक्रमेणासादयेत्। पवित्रच्छेदनानि त्रीणि कुशवरुणानि, द्वे पवित्रे साग्रे अनन्तर्गर्भे, प्रोक्षणीपात्रम्, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जनकुशास्त्रयः पञ्च वा, उपयमनकुशाः सप्त नव वा, समिधस्तिस्त्रः, स्रुवः, आज्यम्, पूर्णपात्रम्, कर्मोपयोगिनी दक्षिणा एतान्यासादयेत्। अन्येषां चोपकल्पनीयानां द्रव्याणामासादनम्। द्वौ कुशौ वामहस्ते कृत्वा तत्र कुशत्रयं निधाय कुशद्वयं कुशत्रयस्योपरितः प्रदक्षिणीकृत्य दक्षिणहस्तेन गृहीत्वा कुशत्रयं च वामेन गृहीत्वा छिन्द्यात् कुशत्रयं त्येजेत् एवं प्रच्छिद्य प्रादेशमात्रे पवित्रे कुर्यात्। तत्र ग्रन्थिं कुर्यादविश्लेषाय। प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासमीपे निधाय तत्र सपवित्रेण करेण प्रणीतोंदमासिच्य हस्तद्वयस्यानामि-माङ्गुष्ठाभ्यां धृतपवित्राभ्यामप उत्पूय पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय तत्पात्रं वामस्ते कृत्वा दक्षिणहस्ते नोदिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणम्। पवित्राभ्यां प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रो०। तिसृणां समिधां प्रो०। स्रुवस्य प्रो०। पूर्णपात्रस्य प्रो०। दक्षिणायाः प्रो०। उपकल्पनीयानां द्रव्याणां प्रोक्षणम्।ततः सपवित्रं प्रोक्षणीपात्रम् अग्निप्रणीतयोर्मध्येस्थापयेत्। आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेवपूर्व-कंतण्डुलप्रक्षेपः। अग्नौ दक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। अर्धश्रिते चरौ ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। उल्मुकं वह्नौ प्रक्षिप्य इतरथावृतिं कुर्यात्। दक्षिणहस्तेन अधोबिलं स्रुवं प्राञ्चं प्रतप्य सव्ये पाणौ उत्तानं कृत्वा दक्षिणेन सम्मार्जनकुशानाममग्रैर्मूलतो-ऽग्रपर्यन्तं प्राञ्चं सम्मृज्य

कुशमूलैरधस्ताद्भागे स्रुवपुष्करस्य अग्रमारभ्य मूलपर्यन्तं प्रत्यञ्चं सम्मृज्य सम्मार्जनकुशान अग्नौ प्रक्षिपेत्। ततः प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य आत्मनो दक्षिणतो निदध्यात्। आज्यमुत्तार्य उत्तरतः स्थापयित्वा अग्नेः पश्चाद् आनयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्य प्रदक्षिणी कृत्य आज्यस्योत्तरतश्चरु स्थापयेत्। अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्राभ्यामाज्य मुत्पूय, अवेक्ष्य, अपद्रव्यनिरंसनं कृत्वा प्रोक्षणीश्च पूर्ववत् उत्पूय तासु धृत्वा उपयमनकुशानादाय वामकरे कृत्वा तिस्रो घृताक्ताः प्रागग्राः समिधी मूलमध्ययोर्मध्यभागेन धृत्वा आदध्यात्। ततः प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रेण दक्षिणचुलुकगृहीतेन ईशानाद्युत्तरपर्यन्तं संप्रोक्ष्य इतरथावृतिं च कृत्वा पवित्रे प्रणीतासु निदध्यात्। ततोऽमुकनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो भव-इति प्रतिष्ठाप्य 'ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे' इत्यादि श्लोकैर्ध्यायेत्। ततः, ॐ चत्वारि शृङ्गा, इति मन्त्रेणाग्निं संपूज्य आधाराज्यभागौ हुत्वा त्यागं कृत्वा सूर्यादिग्रहाणाम-धिवताप्रत्यधिदेवता-पञ्चलोकपाल-दशदिक्पालदेवतानां च समित्तिलचर्वाज्य-द्रव्यैष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा जुहुयात्। ततः चतुःषष्टियोगिनीनां क्षेत्रपालानां च ब्रह्मादिमण्डलदेवतानां च तत्तन्मन्त्रैराज्यहोमः। अग्निपूजनम्। स्विष्टकृद्धोमः। ततो भूरादिनवाहुतयः। इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः सूर्यादिनवग्रहेभ्यश्च बलिदानम्। क्षेत्रपालबलिदानम्। ततः 'ॐ पूर्णाहुत्यै नमः' इति संपूज्य पूर्णाहुतिं जुहुयात्। तत्र मन्त्रः-ॐ समुद्रादूर्मिः वयन्नाम। चत्वारि शृङ्गा। त्रिधा हितम्। एता अर्षन्ति। सम्यक् स्रवन्ति। सिन्धोरिव अभिप्रवन्त। कन्या इव। अभ्यर्षत्। धामन्ते। पुनस्त्वा। सप्त ते। मूर्द्धानन्दिवः। पूर्णादर्वि। ततो वसोर्द्धारां जुहुयात्। तत्र मन्त्राः-सप्त ते। शुक्रज्योतिश्च। ईदृङ्चाण्न्यादृ। ऋतश्च सत्यश्च। ऋतंजिच्च। ईदृक्षा। स एता। स्वतवाँश्च। इन्द्रन्दैवीः। इमठ० स्तन। घृतम्मिमिक्षे वसोः पवित्रम्। वाजश्चेत्यारभ्य वेट् स्वाहा। ॐ अग्ने

नय-इत्याग्निं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमदिशि उपविश्य प्रार्थयेत्–
ॐजितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन। नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज १ नमो हिरण्यगर्भाय प्रधानाध्यक्षरुपिणे। ॐ नमो वासुदेवाय शुद्धज्ञानस्वरुपिणे २ देवानां दानवानां च सामान्यमधिदैवत। सर्वदा चरणद्वन्द्वं व्रजामि शरणं तव ३ एकस्त्वमसि लोकस्य स्रष्टा संहारकस्तथा। अध्यक्षश्चानुमन्ता च गुणमाया समाकृतः ४ संसारसागरं घोरमनन्तक्लेशभाजनम्। त्वामेवशरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः ५ न ते रूपं न चाकारो नायुधानि न चास्पदम्। तथामि पुरुषाकारो भक्तानां त्वं प्रकाशसे ६ नैवकिञ्चित्परोक्षं ते प्रत्यक्षोऽपि न कस्य चित्। नैव किञ्चिदसाध्यं ते न च साध्योऽसि कस्य चित् ७ नैव किञ्चिदसिद्धं ते न च सिद्धोऽसि पावकः। कार्याणां कारणं पूर्व वचसां वाक्यमुतमम् ८ योगिनां परमासिद्धः परमं ते परं विदु। अहं भीतोऽस्मि देवेश संसारेऽस्मिन् भयप्रद ९ त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष न जाने परमं पदम्। कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत १० शरीरे जगतौ वापि वद्धते मे महद्भयम्। त्वत्पादकमलादन्यत् मम जन्मान्तेरेष्वपि ११ विज्ञानं यदिदं प्राप्तं यदिदं स्थानमर्चितम्। जन्मान्तरेऽपि मे देव माभूदस्य परिग्रहः १२ दुर्गता वपि जातस्य त्वद्गतो मे मनोरथः। यदि नाशं न विन्देय तावदस्मि कृती सदा १३ अकालकलुषं चित्तं मम ते पादयोः स्थितम्। कामये विष्णुपादौ तु सर्वजन्मसु केवलम् १४ इति स्तवनं कुर्यात्। ततः स्रुवेण भस्मानीय त्र्यायुषञ्जमदग्नेः इति ललाटे। 'कश्यपस्य त्र्यायुषम्' इति ग्रीवायाम्। 'यद्देवेषु त्र्यायुषम्' दक्षिणांसे। 'तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' इति हृदि। संस्रवप्राशनम्। आचमनम्। पवित्राभ्यां मार्जनम्। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः। ब्रह्मणे पूर्णापात्रदानम्। अग्ने पश्चिमतः प्रणीताविमोक। 'आपः शिवा' इत्युपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। ततः आचार्यः 'कृतस्य सग्रहमखामुकयागस्य कर्मणो यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये' इति संकल्प्य यजमानहस्ते 'शिवा आप सन्तु'

इति जलम्। 'सौमनस्यमस्तु' इति पुष्पम्। 'अक्षतं चारिष्टं चास्तु' इत्यक्षतान्। आचार्यः जलाक्षतपूगीफलमादाय भवन्नियोगेन मया अस्मिन् सग्रहमखामुकयागे कर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं तथा एभिर्ब्रह्मणैः सह यत्कृतं ब्रह्मत्वं गाणपत्याद्युत्पन्नं श्रेयस्तदमुना साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं संप्रददे। तदुत्पन्नेन श्रेयसा त्व श्रयोवान् भव। ततो यजमान आचार्यादीन् ब्राह्मणान् संपूज्य तेभ्यो दक्षिणां दद्यातु। ततो गन्धाद्युपचारैः प्रधानादिदेवानामुत्तरपूजां कुर्यात्। तत आचार्यादयो ब्राह्मणाः प्रधानादिकलशोदकेन दूर्वाकुशाम्र-पल्लवैः सपरिवारं यजमानमभिषिञ्चेयुः। तत्र मन्त्रः:- द्यौः शान्तिः। शिरो मे। जिह्वा मे। बाहू मे। पृष्ठीमे। नाभिमे। प्रतिक्षत्रे। देवस्य त्वा। विश्वानि देव। शिष्ठाचारादत्रावभृथस्नानमिति केचित्। ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः। भूयसीदानम्। आवाहितदेवानां विसर्जनम्। तत्र मन्त्राः:- उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते। यज्ञयज्ञङ्गच्छ। यान्तु देवागणाः। गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ। चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च। अन्यथा शरणं नास्ति। आवाहनं न जानामि। जपच्छिद्रम्। प्रामादात्कुर्वताम्। यस्य स्मृत्या। ॐ विष्णवे नमो विष्णवे नमो विष्णवे नमः।

तिलकाशीर्वादः-

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशु बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥

महत्वपूर्ण यज्ञों के स्वाहाकार

विष्णुयागस्वाहाकारमन्त्राः

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिर्ठं० सर्व्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥
पुरुषऽ एवेदर्ठं० सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥
त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽ अभि ॥ ४ ॥
ततो विराडजायत विराजोऽ अधि पूरुषः।
स जातोऽ अन्त्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दार्ठं०सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥
तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽ अजावयः ॥ ८ ॥

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ ६ ॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किंबाहू किमूरू पादाऽ उच्येते ॥ १० ॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याठं० शूद्रोऽ अजायत ॥ ११ ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽ अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥
नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्षठं० शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽ अकल्पयन् ॥ १३ ॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽ अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥

(शुक्ल यजुर्वेद ३१/१-१६)

विश्वशान्तियज्ञस्वाहाकारमन्त्राः

ॐ ऋचं व्वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये। व्वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥ १ ॥

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्म्मे तद्दधातु। शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥ २ ॥

भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥

कया नश्चित्रऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥ ४ ॥

कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳ हिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढ़ा चिदारुजे व्वसु ॥ ५ ॥

अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्। शतं भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥

कया त्वं नऽ ऊत्याभि प्र मन्दसे व्वृषन्। कया स्तोतृभ्य ऽआ भर ॥ ७ ॥

इन्द्रो व्विश्वस्य राजति। शं नोऽ अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ८ ॥

शं नो मित्रः शं व्वरुणः शं नो भवत्वर्यमा। शं नऽ इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरूक्रमः ॥ ९ ॥

शं नो व्वातः पवतार्ठ० शं नस्तपतु सूर्यः । शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो ऽ अभि वर्षतु ॥१० ॥

अहानि शं भवन्तु नः शर्ठ० रात्रीः प्रति धीयताम् । शं नऽ इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं नऽ इन्द्रावरुणा रातहव्या।

शं नऽ इन्द्रापूषणा व्वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ॥११॥

शं नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥१२ ॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म स प्रथाः ॥१३ ॥

आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥१४ ॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥१५ ॥

तस्माऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥१६ ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरे व शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१७ ॥

दृते दृ꣡ꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ १८ ॥

दृते दृꣳह मा । ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम् ॥ १९ ॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽ अस्त्वर्च्चिषे । अन्याँस्तेऽ अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽ अस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥ २० ॥

नमस्तेऽ अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे । नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥ २१ ॥

यतोयतः समीहसे ततो नोऽ अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ २२ ॥

सुमित्रिया नऽ आपऽ ओषधयः सन्तु दुर्म्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च व्वयं द्विष्मः ॥ २३ ॥

तच्चक्षुर्द्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ २४ ॥

[शुक्लयजुर्वेद ३६।१-२४]

रुद्रयागस्वाहाकारमंत्राः

ॐ गणनांत्वा० धम् स्वाहा।

ॐ अम्बे अम्बिके० स्वाहा । इति हुत्वा–

ॐ यज्जाग्रतो० (६ मन्त्राः) मस्तु स्वाहा।

ॐ सहस्त्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ आशुः शिशानो० (१२ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ बिब्भ्राड् बृहत्पिवतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्यवऽउतो तऽ इषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते व्विभर्ष्यस्तवे शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हिंठ०सीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिञ्जगदयक्ष्मठं० सुमनाऽ असत् स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्त्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक। अहींश्च सर्व्वाञ्चम्भयनसर्व्वाश्च्च यातुधान्योधराचीः परा सुव स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽ अरुणऽ उत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चनर्ठ० रुद्द्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोवैषार्ठ० हेडऽ ईमहे स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽ अस्य सत्वानोहन्तेब्भ्योकरन्नमः स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ प्र मुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्कर्न्योर्ज्याम्। याश्च्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ऽ उत। अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ परि ते धन्वना हेतिरस्मान्वृणक्तु व्विश्श्वतः। अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्म्मन्निधेहि तम् स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीय शल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ नमस्तेऽ आयुधायानातताय धृष्णवे। उमाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्वने स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ मानो महान्तमुत मा नोऽ अर्ब्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम्। मानो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मानः प्प्रियास्तन्वोरुद्द्ररीरिषः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ मा नस्तोकेतनये मानऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्श्वेषु रीरिषः। मानोव्वीरानूरुद्द्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे स्वाहा ॥ १६ ॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा ॥ १७ ॥

ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ १८ ॥

ॐ नमो शष्प्पिञ्जराय त्त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ १९ ॥

ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २० ॥

ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २१ ॥

ॐ नमो भवस्य हेत्त्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ॥ २२ ॥

ॐ नमो रुद्द्रायातताविने क्षेत्त्राणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २३ ॥

ॐ नमो सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २४ ॥

ॐ नमो रोहिताय स्त्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २५ ॥

ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायोपधीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २६ ॥

ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २७ ॥

ॐ नमऽ उच्चैर्ग्घोषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २८ ॥

ॐ नमो कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २९ ॥
ॐ नमः सहमानाय निव्व्याधिनऽ आव्व्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३० ॥
ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्त्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३१ ॥
ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्ण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३२ ॥
ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३३ ॥
ॐ नमो निषङ्गिणोऽइषुधिमने तस्क्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३४ ॥
ॐ नमो सृकायिब्भ्यो जिघाꣳसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३५ ॥
ॐ नमो सिमद्भ्योनक्तञ्चरद्भ्यव्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३६ ॥
ॐ नमऽ उष्णीर्षिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३७ ॥
ॐ नमऽ इषुमद्भ्यो धन्वायिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३८ ॥
ॐ नमऽ आतन्त्वानेब्भ्यः प्प्रतिदधानेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ३९ ॥
ॐ नमऽ आयच्छद्भ्योस्यद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४० ॥
ॐ नमो व्विसृजद्भ्यो व्विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४१ ॥
ॐ नमः स्वपद्भ्य जाग्ग्रद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४२ ॥
ॐ नमः शयानेब्भ्यऽ आसीनेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४३ ॥
ॐ नमस्तिष्ठ्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४४ ॥
ॐ नमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४५ ॥
ॐ नमोंश्श्वेब्भ्योऽ श्स्वपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४६ ॥
ॐ नमऽ आव्व्याधिनीब्भ्यो व्विविद्ध्यन्तीब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४७ ॥
ॐ नमऽ उगणाब्भ्यस्तृꣳहतीब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ४८ ॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४९ ॥

ॐ नमो व्रातभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५० ॥

ॐ नमो गृत्सभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५१ ॥

ॐ नमो विश्‍वरूपेभ्यो विश्‍वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५२ ॥

ॐ नमः सेनाभ्य सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५३ ॥

ॐ नमो रथिभ्योऽ अरथेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ५४ ॥

ॐ नमः क्षतृभ्यः सडग्रहीतभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५५ ॥

ॐ नमो महद्भ्योऽ अर्भकेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥ ५६ ॥

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५७ ॥

ॐ नमः कुलालेभ्य कर्म्मारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५८ ॥

ॐ नमो निपादेभ्य पुञ्जिष्ट्ठेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५९ ॥

ॐ नमः श्‍वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ६० ॥

ॐ नमः श्‍वभ्यः श्‍वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ६१ ॥

ॐ नमो भवाय च रुद्द्राय च स्वाहा ॥ ६२ ॥

ॐ नमः शर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥ ६३ ॥

ॐ नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥ ६४ ॥

ॐ नमः कपर्द्दिने च व्व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥ ६५ ॥

ॐ नमः सहस्त्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ॥ ६६ ॥

ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्ट्टाय च स्वाहा ॥ ६७ ॥

ॐ नमो नमोदुष्ट्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥ ६८ ॥

ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा ॥ ६९ ॥
ॐ नमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा ॥ ७० ॥
ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ॥ ७१ ॥
ॐ नमोऽग्राय च प्प्रथमाय च स्वाहा ॥ ७२ ॥
ॐ नमोऽ आशवे चाजिराय च स्वाहा ॥ ७३ ॥
ॐ नमः शीग्घ्र्याय च शीभ्भ्याय च स्वाहा ॥ ७४ ॥
ॐ नमः ऊर्म्म्याय चावस्वन्न्याय च स्वाहा ॥ ७५ ॥
ॐ नमो नादेयाय च द्द्वीप्प्याय च स्वाहा ॥ ७६ ॥
ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥ ७७ ॥
ॐ नमः पूर्व्वजाय च परजाय च स्वाहा ॥ ७८ ॥
ॐ नमो मद्ध्यमाय च पगल्भाय च स्वाहा ॥ ७९ ॥
ॐ नमो जघन्न्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा ॥ ८० ॥
ॐ नमः सोभ्भ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च स्वाहा ॥ ८१ ॥
ॐ नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा ॥ ८२ ॥
ॐ नमः श्श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च स्वाहा ॥ ८३ ॥
ॐ नमऽ उर्व्वर्य्याय च खल्लाय च स्वाहा ॥ ८४ ॥
ॐ नमो व्वन्याय च कक्क्ष्याय च स्वाहा ॥ ८५ ॥
ॐ नमः श्श्रवाय च प्प्रतिश्श्रवाय च स्वाहा ॥ ८६ ॥
ॐ नमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥ ८७ ॥
ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ॥ ८८ ॥

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च स्वाहा ॥ ८९ ॥
ॐ नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा ॥ ९० ॥
ॐ नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥ ९१ ॥
ॐ नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च स्वाहा ॥ ९२ ॥
ॐ नमो धृष्णवे च प्प्रमृशाय च स्वाहा ॥ ९३ ॥
ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥ ९४ ॥
ॐ नमस्तीक्क्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ॥ ९५ ॥
ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा ॥ ९६ ॥
ॐ नमः सुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा ॥ ९७ ॥
ॐ नमः काट्टचाय च नीप्प्याय च स्वाहा ॥ ९८ ॥
ॐ नमः कुल्लाय च सरस्याय च स्वाहा ॥ ९९ ॥
ॐ नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा ॥ १०० ॥
ॐ नमः कूप्प्याय चावट्टचाय च स्वाहा ॥ १०१ ॥
ॐ नमो व्वीद्ध्याय चातप्प्याय च स्वाहा ॥ १०२ ॥
ॐ नमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्त्याय च स्वाहा ॥ १०३ ॥
ॐ नमो व्वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा ॥ १०४ ॥
ॐ नमो व्वात्त्याय च रेष्म्याय च स्वाहा ॥ १०५ ॥
ॐ नमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा ॥ १०६ ॥
ॐ नमः सोमाय च रुद्द्राय च स्वाहा ॥ १०७ ॥
ॐ नमस्ताम्म्राय चारुणाय च स्वाहा ॥ १०८ ॥

ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा ॥ १०६ ॥

ॐ नमऽ उग्ग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥ ११० ॥

ॐ नमोऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥ १११ ॥

ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥ ११२ ॥

ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः स्वाहा ॥ ११३ ॥

ॐ नमस्त्ताराय स्वाहा ॥ ११४ ॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा ॥ ११५ ॥

ॐ नमः शङ्कराय च मयस्क्कराय च स्वाहा ॥ ११६ ॥

ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥ ११७ ॥

ॐ नमः पार्य्याय चा वार्य्याय च स्वाहा ॥ ११८ ॥

ॐ नमः प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ॥ ११६ ॥

ॐ नमः मस्त्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा ॥ १२० ॥

ॐ नमः शष्प्याय च फेन्न्याय च स्वाहा ॥ १२१ ॥

ॐ नमः सिकत्त्थाय च प्प्रवाह्याय च स्वाहा ॥ १२२ ॥

ॐ नमः किर्ठ० शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥ १२३ ॥

ॐ नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ॥ १२४ ॥

ॐ नमऽ इरिण्ण्याय च प्प्रपत्थ्याय च स्वाहा ॥ १२५ ॥

ॐ नमो व्व्रज्जाय च गोष्ट्ठ्याय च स्वाहा ॥ १२६ ॥

ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥ १२७ ॥

ॐ नमो हृदयाय च निवेष्प्याय च स्वाहा ॥ १२८ ॥

ॐ नमः काटठ्य च गह्वरेष्टठाय स्वाहा ॥१२६॥

ॐ नमः शुष्क्क्याय च हरित्त्याय च स्वाहा ॥१३०॥

ॐ नमः पार्ठ० सव्व्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥१३१॥

ॐ नमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च स्वाहा ॥१३२॥

ॐ नमऽ ऊर्व्वाय च सूर्व्याय च स्वाहा ॥१३३॥

ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा ॥१३४॥

ॐ नमऽ उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च स्वाहा ॥१३५॥

ॐ नमऽ आखिदते च प्प्रखिदते च स्वाहा ॥१३६॥

ॐ नमऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृदभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥१३७॥

ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवानार्ठ० हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१३८॥

ॐ नमो व्विचिन्वत्केभ्यो देवानार्ठ० हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१३६॥

ॐ नमो व्विक्षिणत्केभ्यो देवानार्ठ० हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१४०॥

ॐ नमऽ आनिर्हतेभ्यो देवानार्ठ० हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१४१॥

ॐ द्रापेऽ अन्धपस्पते दरिद्द्र नीललोहित आसाम्प्रजानामेषा-
न्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत् स्वाहा ॥१४२॥

ॐ इमा रुद्द्रायतवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीरायप्प्रभरीमहेमतीः
यथाशमसद् द्विपदेचतुष्पदे व्विश्श्वम्पुष्ट्टङ्ग्रामेऽ अस्स्मिन्ननातुरम्
स्वाहा ॥१४३॥

ॐ या ते रुद्रद् शिवा तनूः शिवा व्विस्श्वाहा भेषजी शिवा रुतस्य
भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा ॥१४४॥

ॐ परि नो रुद्द्रस्य हेतिर्व्वृणक्क्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः।
अव स्त्थिरा मघवद्भ्भ्यस्त्तनुष्व मीडद्वस्तोकाय तनयाय मृड
स्वाहा ॥ १४५ ॥

ॐ मीढुष्ट्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव परमे व्वृक्षऽ
आयुधन्निधाय कृत्तिं व्वसानऽ आचर पिनाकम्बिब्भ्रदागहि
स्वाहा ॥ १४६ ॥

ॐ व्विकिरिद्द्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः।
यास्त्ते सहस्त्रर्ठ० हेतयोन्न्यमस्म्मन्निवपन्तु ताः
स्वाहा ॥ १४७ ॥

ॐ सहस्त्राणि सहस्त्रशो बतह्वोस्त्तव हेतयः।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि
स्वाहा ॥ १४८ ॥

ॐ असङ्ख्याता सहस्त्राणि ये रुद्द्राऽ अधि भूम्म्यायम्।
तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १४९ ॥

ॐ अस्मिन्न्महत्यण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि।
तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥ १५० ॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवर्ठ० रुद्द्राऽ
उपश्श्रिताः।
तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥ १५१ ॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ
अधःक्षमाचराः।

तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५२ ॥
ॐ ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः।
तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५३ ॥
ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः।
तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५४ ॥
ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलवृदाऽ आयुर्ग्युधः।
तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५५ ॥
ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५६ ॥
ॐ येन्नेष व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।
तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५७ ॥
ॐ यऽ एतावन्तश्च्च भूयार्ठ०सश्च दिशो रुद्द्रा व्वितस्त्थिरे।
तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५८ ॥

ॐ नमोस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः। तेब्भ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽ अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च्चनो षिटद्वेष्ष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥ १५९ ॥

ॐ नमोस्तु रुद्द्रेब्भ्यो येन्तरिक्षे येषां व्वातऽइषवः। तेब्भ्योदश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोद्ध्र्वाः।

तेब्भ्यो नमोऽ अस्तु ते नवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो यश्च्च नो द्वेष्टिट तमेषाञ्जम्भे दध्म्यः स्वाहा ॥ १६० ॥

ॐ नमोस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये पृथिव्व्यां य्वेषामन्नमिषवः। तेब्भ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो यश्च्च नो दद्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दष्टिटयः स्वाहा ॥ १६१ ॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ। ॐ व्वयर्ठ० सी० (८ मन्त्राः) (पाठमात्रम्)

ॐ उग्रश्च (७ मन्त्राः) स्वाहा (पाठमात्रम्)

ॐ व्वाजश्च० (४ मन्त्राः) कल्पन्ताम् स्वाहा।

ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ सत्यञ्च० (४ मन्त्राः) कल्पन्ताम् स्वाहा।

ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ ऊर्क् च० (४ मन्त्राः) कल्पन्ताम् स्वाहा।

ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ अश्मा च० (३ मन्त्राः) कल्पन्ताम् स्वाहा।

ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ अग्निश्च ऽ इन्द्रश्च० (३ मन्त्राः) कल्पन्ताम् स्वाहा।

ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ अर्ठ० शुश्च० (३ मन्त्राः) कल्पन्ताम् स्वाहा।

ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ अग्निश्च मे धर्मश्च० (२ मन्त्रो) कल्पन्ताम् स्वाहा।

ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ एका च० (१ मन्त्रः) कल्पन्ताम् स्वाहा।

ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ चतस्रश्च० (१ मन्त्रः) कल्पन्ताम् स्वाहा।

ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ त्र्यावश्च० (२ मन्त्रौ) कल्पन्ताम् स्वाहा।

ॐ यज्जाग्रता० (६ मन्त्राः) मस्तु स्वाहा।

ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ अद्भ्यः सम्भृत० (६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ आशुः शिशान० (१२ मन्त्राः) स स्वाहा।

ॐ बिभ्राड् बृहत् पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ व्वाजाय स्वाहा० ॥ १ ॥ आयुर्य्यज्ञेनकल्पताम्।

ॐ ऋचं वाचं० स्वाहा।

ॐ यन्मे छिद्रं० स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः० यात् स्वाहा।

ॐ कया नश्चित्र० स्वाहा।

ॐ कस्त्वा सत्यो० स्वाहा।

ॐ अभी षु णः० स्वाहा।

ॐ कया त्वन्न० आभर स्वाहा।

ॐ इन्द्रो विश्वस्य० स्वाहा।

ॐ शं नो मित्रः० स्वाहा।

ॐ शन्नो व्वातः० स्वाहा।

ॐ अहानि शं० शयोः स्वाहा।

ॐ शन्नो देवी० न्तु नः स्वाहा।

ॐ स्योना पृथिवि० प्रथाः स्वाहा।

ॐ आपो हि ष्ठा० स्वाहा।

ॐ यो वः शिव० स्वाहा।

ॐ द्यौः शान्ति० स्वाहा।

ॐ दृते दृ॑ठ० ह मा० स्वाहा।

ॐ दृते दृ॑ठ० ह मा० स्वाहा।

ॐ नमस्ते हरसे० शोचिषे स्वाहा।

ॐ नमस्ते ऽअस्तु० व्विद्युते स्वाहा।

ॐ यतोयतः० समीहसे० स्वाहा।

ॐ सुमित्रिया नः ऽआयः० स्वाहा।

ॐ तच्चक्षुदर्देवाहितम् स्वाहा।

ॐ सद्योजातं० (५ मन्त्राः) (पाठमात्रम्)।

इसके पश्चात् षडङ्गन्यास सविधि करें।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

गणेशयाग स्वाहाकारमन्त्राः

ॐ आ तू नऽ इन्द्र व्वृत्रहन्नस्माकमर्द्धमा गहि। महान्महीभिरूतिभिः स्वाहा ॥ १ ॥

त्वमिन्द्र प्प्रतूर्तिष्ष्वभि व्विश्श्वाऽ असि स्पृधः। अशस्तिहा जनिता व्विश्वतूरसि त्वन्तूर्य तरुष्ष्यतः स्वाहा ॥ २ ॥

अनु ते शुष्ष्मन्तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुन्न मातरा। व्विश्श्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्न्यवे व्वृत्रं यदिन्द्र तूर्व्वसि स्वाहा ॥ ३ ॥

यज्ञो देवानां प्रत्त्येति सुम्म्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आ वोऽर्व्वाची सुमतिर्व्ववृत्त्यादर्ठ० होश्श्चिद्या व्वरिवोवित्तरासत् स्वाहा ॥ ४ ॥

अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वर्ठ० शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्। हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षामाकिर्न्नोऽ अघशर्ठ० सऽ ईशत स्वाहा ॥ ५ ॥

प्रवीरया शुचयो दद्रिरे वामद्ध्वर्युभिर्म्मधुमन्तः सुतासः। व्वह व्वायो नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय स्वाहा ॥ ६ ॥

गावऽ उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्ण्णा हिरण्यया स्वाहा ॥ ७ ॥

काव्ययोराजानेषु क्क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे। रिशादसा सधस्त्थऽ आ स्वाहा ॥ ८ ॥

[शुक्लयजुर्वेद ३३ ६५ ७२]

सूर्ययागस्वाहाकारमन्त्राः

ॐ व्विब्भ्राड् बृहत्पिबतु सोम्म्यं मद्धायुर्द्दधद्यज्ञ-पतावविह्रुतम्। व्वातजूतो योऽ अभिरक्षति त्मना प्प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विराजति ॥ १ ॥

उदु त्त्यं जातवेदसं देवं व्वहन्ति केतवः। दृशे व्विश्वाय सूर्य्यम् ॥ २ ॥

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२ऽ अनु। त्वं व्वरुण पश्यसि ॥ ३ ॥

दैव्व्यावद्ध्वर्य्यू ऽआ गतꣳ रथेन सूर्य्यत्वचा॥ मद्ध्वा यज्ञꣳ समञ्जाथे॥ तं प्रत्नथाऽयं व्वेनश्चित्रं देवानाम् ॥ ४ ॥

तं प्रत्नथा पूर्व्वथा व्विश्वथेमथा ज्ज्येष्ठतातिं बर्हिषदꣳ स्वर्व्विदम्॥ प्रतीचीनं व्वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु व्वर्द्धसे ॥ ५ ॥

अयं व्वेनश्चोदयत्त्पृश्निगर्ब्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने॥ इममपाꣳ सङ्गमे सूर्यस्य शिशुं न व्विप्प्रा मति भी रिहन्ति ॥ ६ ॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुण-स्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी ऽअन्तरिक्षꣳ सूर्य्यऽ आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ७ ॥

आ न ऽइडाभिर्व्विदथे सुशस्ति व्विश्वानरः सविता देव ऽएतु। अपि यथा युवानो मत्सथा नो व्विश्वं जगदभिषित्वे मनीषा ॥ ८ ॥

यदद्य कच्च व्वृत्रहन्नुदगाऽ अभि सूर्य्य। सर्व्वं तदिन्द्र ते व्वशे ॥ ९ ॥

तरणिर्व्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य। व्विश्वमा भासि रोचनम् ॥ १० ॥

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्नमहित्वं मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततꣳ सञ्जभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री व्वासस्तनुते सिमस्मै ॥ ११ ॥

तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे। अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥ १२ ॥

बण्महाँ२ ऽअसि सूर्य्य बडादित्य महाँ२ऽ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२ऽ असि ॥ १३ ॥

बट् सूर्य्य श्रवसा महाँ२ऽ असि सत्रा देव महाँ२ऽ असि। मन्हा देवानामसुर्य्यः पुरोहितो व्विभुज्ज्योतिर-दाभ्यम् ॥ १४ ॥

श्रायन्तऽ इव सूर्य्यं व्विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। व्वसूनि जाते जनमानऽ ओजसा प्प्रति भागं न दीधिम ॥ १५ ॥

अद्या देवा ऽउदिता सूर्य्यस्य निरठं० हसः पिपृता निरवद्यात्। तन्नो मित्रो व्वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽ उत द्यौः ॥ १६ ॥

आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ १७ ॥ [शुक्ल यजुर्वेद-३३/३०-४३]

विशेष-सूर्यग्रहदेव को प्रसन्न करने के लिए सूर्ययज्ञ में इन्हीं मंत्रों के द्वारा अग्नि में आहुति प्रदान की जाती है।

नवग्रहयागस्वाहाकारमन्त्राः

ॐ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्न मृतञ्चमर्त्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथे ना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥ १॥

ॐ इमं देवाऽअसपत्नठं० सुवद्ध्वम्महतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणानाठं० राजा स्वाहा॥ २ ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाठं०रेताठं०सि जिन्वति स्वाहा॥ ३ ॥

ॐ उद्‌बुध्यास्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ॰ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा॥ ४ ॥

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋृतप्प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्त्रम् स्वाहा॥ ५ ॥

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्त्यमिन्द्रियं व्विपानर्ठ॰ शुक्क्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा॥ ६ ॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः स्वाहा॥ ७ ॥

ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता स्वाहा॥ ८ ॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा॥ ९ ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा॥ १ ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्वलोकं म ऽइषाण स्वाहा॥ २ ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्त्यं महि जातं ते ऽअर्वन् स्वाहा॥ ३ ॥

ॐ विष्णो रराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रे स्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि व्विष्णवे त्त्वा स्वाहा॥ ४ ॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स बुद्ध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः स्वाहा॥ ५ ॥

ॐ सजोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिव वृत्रहा शूर व्विद्वान्। जहि शत्रूँ१ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि व्विश्वतो नः स्वाहा॥ ६ ॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा धर्मः पित्रे स्वाहा॥ ७ ॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि। समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा॥ ८ ॥

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा॥ ९ ॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ ऽआसादयादिह ॥ १ ॥

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऽऊर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे स्वाहा॥ २ ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः स्वाहा॥ ३ ॥

ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाᳬसुरे स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रᳬ हवे हवे सुहवᳬ शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳬ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥ ५ ॥

ॐ आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः। पूषासि धर्माय दीष्व स्वाहा॥ ६ ॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो व्विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु व्वयᳬ स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यो नमः स्वाहा॥ ८ ॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः स्वाहा॥ ९ ॥

लक्ष्मीयागस्वाहाकारमन्त्राः

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह ॥ १ ॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रीयं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ ३ ॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्दां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ४ ॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मींमे नश्यतां त्वां वृणोमि॥ ५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्त्व वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः ॥६
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्ति मृद्धिं ददातु मे॥ ७ ॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ ८ ॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ १० ॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११ ॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ १२ ॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह॥ १३ ॥
आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह॥ १४॥
तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्
यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् स्वाहा॥ १६॥

प्रजापतियागस्वाहाकारमन्त्राः

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहूमस्तन्नोऽ अस्तु वयठं० स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १ ॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिय सतश्च व्विवः ॥ २ ॥

ब्रह्म क्षत्रं पवते तेज ऽइन्द्रियर्ठ० सुरया सोमः सुत ऽआसुतो मदाय। शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि रसेनान्नं यज्ञमानाय धेहि ॥ ३ ॥

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमर्ठ० सरः। इन्द्रः पृथिव्यै व्वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ॥ ४ ॥

ब्रह्माणि मे मतयः शर्ठ० सुतासः शुष्म ऽयर्ति प्रभृतो मे ऽअद्रिः। आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी ब्वहस्ता नो ऽअच्छ ॥ ५ ॥

ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व। व्विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम व्विदथे सुवीराः। य ऽइमा व्विश्वा व्विश्वकर्मा यो नः पितान्नपते-ऽन्नस्य नो देहि ॥ ६ ॥

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी ऽअनेहसा। पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नो ऽअघशर्ठ० स ऽईशत ॥ ७ ॥

ब्रह्मण ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो व्वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय व्वीरहणं पाप्मने ल्कोवमाक्रयाया ऽअयोगू कामाय पुँश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम् ॥ ८ ॥

ॐ ब्राह्मणमद्य व्विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषि-मार्षेयर्ठ० सुधातुदक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छ प्रदातारमाविशत ॥ ९ ॥

मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्निर्ठ० स्वे योनावभारुखा। तां व्विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानं प्रजापतिर्व्विश्वकर्म्मा व्विमुञ्चतु ॥ १० ॥

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ११ ॥

'महत्वपूर्ण यज्ञों के न्यास'

विष्णुयागमंत्र न्यास विधिः

पुरुषसूक्तन्यासः

विनियोगः-सहस्रशीर्षेत्यादिषोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायण ऋषिः आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप्छन्दः यज्ञेन यज्ञमित्यस्य त्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीजं नारायणपुरुषो देवता, न्यासे हवने च विनियोगः।

१. ॐ सहस्रशीर्षा० वामकरे।

२. ॐ पुरुष ऽएव० दक्षिणकरे।

३. ॐ एतावानस्य० वामपादे।
४. ॐ त्रिपादूर्ध्व० दक्षिणपादे।
५. ॐ ततो विराडजायत० वामजानौ।
६. ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः० दक्षिणजानौ।
७. ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः० वामकट्याम्।
८. ॐ तस्मादश्वा० दक्षिणकट्याम।
९. ॐ तं यज्ञं बर्हिषि० नाभौ।
१०. ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः० हृदये।
११. ॐ ब्राह्मणोऽस्य० वामबाहौ
१२. ॐ चन्द्रमा मनसः० दक्षिणबाहौ।
१३. ॐ नाभ्या ऽआसीदन्त० कण्ठे।
१४. ॐ यत्पुरुषेण हविषा० मुखे।
१५. ॐ सप्तास्यासन्० अक्ष्णोः।
१६. ॐ यज्ञेन यज्ञम् मूर्ध्नि।

पुनः–

१. ब्राह्मणोऽस्य० हृदयाय नमः।
२. चन्द्रमा मनसः० शिरसे स्वाहा।
३. नाभ्या ऽआसीदन्त० कवचाय हुम्।
४. यत्पुरुषेण हविषा० नेत्रत्रयाय वौषट्।
५. सप्तास्यासन्० शिखायै वषट्।
६. यज्ञेन यज्ञम्० अस्त्राय फट्।

ध्यानम्–

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती।
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥१॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ २ ॥

॥ इति पुरुषसूक्तन्यासः॥

रुद्रयागमंत्र न्यास विधिः

रुद्रसूक्तन्यासः

विनियोगः—नमस्त इति षोडशर्चस्य परमेष्ठी ऋषिः, नमस्त इत्यस्य गायत्रीछन्दः, यात इति त्रयाणामनुष्टुप्छन्दः, अध्यवोचदिति त्रयाणां पङ्क्तिश्छन्द, नमोऽस्तु नीलग्रीवायेति सप्तानामनुष्टुप्छन्द, मा नो महान्तमिति द्वयोः कुत्स ऋषिर्जगतीछन्दः, सर्वेषामेको रुद्रो देवता, न्यासे हवने च विनियोगः।

१. ॐ नमस्ते०	वामकरे।
२. ॐ याते रुद्र शिवा०	दक्षिणकरे।
३. ॐ यामिषु गिरिशन्त०	वामपादे।
४. ॐ शिवेन वचसा०	दक्षिणपादे।
५. ॐ अध्यवोचदधिवक्ता०	वामजांनौ।
६. ॐ असौ यस्ताम्रः०	दक्षिणजानौ।
७. ॐ असौ योऽवसर्पति०	वामकट्याम्।
८. ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय०	दक्षिणकट्याम।
९. ॐ प्रमुञ्च०	नाभौ।
१०. ॐ विज्यन्धनु०	हृदये।
११. ॐ या ते हेतिः०	वामबाहौ।
१२. ॐ परि ते धन्वनः०	दक्षिणबाहौ।
१३. ॐ अवतत्त्यधनुष्ट्वम्०	कण्ठे।

१४. ॐ नमस्ते ऽआयुधाय० मुखे।
१५. ॐ मा नो महान्तम्० नेत्रयोः।
१६. ॐ मा नस्तोके० मूर्ध्नि।

पुनः-

१. या ते हेतिः० हृदयाय नमः।
२. परि ते धन्वनः० शिरसे स्वाहा।
३. अवतत्त्य धनुष्ट्वम्० शिखायै वषट्।
४. नमस्ते ऽआयुधाय० कवचाय हुम्।
५. मा नो महान्तम्० नेत्राभ्यां वौषट्।
६. मा नस्तोके० अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- **ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतं स**
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।

॥ इति रुद्रसूक्तन्यासः॥

लक्ष्मीयागमंत्र न्यास विधिः

[१]श्रीसूक्त न्यासः

विनियोगः-हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द-कर्दमचिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः, आद्यानां तिसृणामनुष्टुप्छन्दः चतुर्थ्याः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, पञ्चमी-

---

१. हिरण्यवर्णामिति पंचदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य आनंदकर्दमचिक्कलेतिन्दिरासुता ऋषयः आद्यत्रयस्यानुष्टुप्छन्दः, कां सोऽस्मीत्यस्य बृहतीछन्दः, चन्द्रां प्रभासामिति द्वयोस्त्रिष्टुप्छन्दः उपैतुमाम् देवसखः इत्यष्टकस्यानुष्टुप्छन्दः, अन्त्यस्य प्रस्तारपंक्तिश्छन्द, श्रीरग्निश्च देवते व्यंजनानि बीजानिः, स्वराः शक्तयः, बिन्दुः कीलकं महालक्ष्मी प्रीत्यर्थं न्यासे हवने च विनियोगः।

षष्ठचोस्त्रिष्टुप्छन्दः, ततोऽष्टानामनुष्टुप्छन्दः अन्त्यायाः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, श्रीरग्निश्च देवते न्यासे हवने च विनियोगः।

१.	ॐ हिरण्यवर्णाम्०।	वामकरे।
२.	ॐ तां मऽआवह०।	दक्षिणकरे।
३.	ॐ अश्वपूर्वाम्०।	वामपादे।
४.	ॐ कां सोऽस्मिताम्०।	दक्षिणपादे।
५.	ॐ चन्द्रां प्रभासाम्०।	वामजानौ।
६.	ॐ आदित्यवर्णे०	दक्षिणजानौ।
७.	ॐ उपैतु माम्०	वामकट्याम्।
८.	ॐ क्षुत्पिपासामलाम्०	दक्षिणकट्याम।
९.	ॐ गन्धद्वाराम्०	नाभौ।
१०.	ॐ मनसः काममाकूतिम्०	हृदये।
११.	ॐ कर्दमेन प्रजा भूता०	वामबाहौ।
१२.	ॐ आपः सृजन्तु०	दक्षिबाहौ।
१३.	ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्०	कण्ठे।
१४.	ॐ आर्द्रा यष्करिणीम्०	मुखे।
१५.	ॐ तां मऽआवह०	नेत्रयोः।
१६.	ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०	मुर्ध्नि।

पुनः-

१.	कर्दमने प्रजा भूता०	हृदयाय नमः।
२.	आपः सृजन्तु०	शिरसे स्वाहा।
३.	आर्द्रां पुष्करिणीम्०	शिखायै वषट्।
४.	तां म ऽआवह०	कवचाय हुम्।
५.	तां मऽआवह०	नेत्राभ्यां वौषट्।
६.	यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०	अस्त्राय फट्।

ध्यानम्-

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्त्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।

लक्ष्मीर्दिव्यैर्गन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भै-
र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता॥ १॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा
करकमलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च।
मणिमुकुटविचित्राऽलङ्कृताऽऽकल्पजालैः
सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नमः॥ २॥

॥ इति श्रीसूक्तन्यासः॥

गणेशयागमन्त्र न्यास विधिः

गणपतिसूक्तन्यासः

विनियोगः-आ तू न इत्यष्टऋचात्मकस्य गणपतिसूक्तस्य वामदेव-नृमेधकुत्सभरद्वाज - वसिष्ठ - पुरुमीढाजमीढदक्षा ऋषयः, प्रथमा गायत्री, द्वितीयतृतीये पत्थ्याबृहतीसतोबृहत्यौ, चतुर्थी त्रिष्टुप, पञ्चमी जगती, षष्ठी त्रिष्टुप् सप्तम्यष्टम्यौ गायत्र्यौ, आद्यास्तिस्त्र ऐन्द्र्यः, चतुर्थ्यादित्या, पञ्चमी, सावित्री, षष्ठी, वायवी, सप्तमी ऐन्द्री, अष्टमी मैत्रावरुणी, सर्वाषां न्यासे होमे च विनियोगः।

ॐ आ तू न ऽइन्द्र वृत्रहन् शिरसि।
अस्माकमर्द्धमा गहि शिखायाम्।
महान् महीभिरूतिभिः वामभुजे।
त्वमिन्द्र प्रतूर्त्तिषु दक्षिणभुजे।
अभि विश्वा ऽअसि स्पृधः वामनेत्रे।
अशस्तिहा जनिता व्विश्वतूरसि दक्षिणनेत्रे।
त्व तूर्य तरुष्यतः भ्रूमध्ये।
अनु ते शुष्मन्तुरयन्तमीयतुः मुखे।
क्षोणी शिशुन्न मातरा जिह्वायाम्।
व्विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे ग्रीवायाम्।
व्वृत्रं यदिन्द्र तूर्व्वसि हृदि।

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नम् वक्षसि।
आदित्यासो भवता मृडयन्तः वामबाहौ।
आ वोऽर्व्वाची सुमतिर्व्ववृत्यादम् दक्षिणबाहौ।
अंहोश्चिद्या व्वरिवो व्वित्तरासत् उदरे।
अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वम् लिङ्गे।
शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम् वामकट्याम्।
हिण्यजिह्वाः सुविताय नव्यसे दक्षिणकट्याम्।
रक्षा माकिर्न्नो ऽअघशर्ठ० स ऽईशत नितम्बे।
प्रवीरया शुचयो दद्रिरे वाम् गुह्ये।
अध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः वामपादे।
व्वह व्वायो नियुतो याह्यच्छा दक्षिणपादे।
पिबा सुतस्यान्धसो मदाय जान्वोः।
गाव ऽउपावतावतम् वामजङ्घायाम्।
मही यज्ञस्य रप्सुदा दक्षिणजङ्घायाम्
उभा कर्ण्णा हिरण्यया नाभौ।
काव्ययोराजानेषु ललाटे।
क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे स्तनयोः।
रिशादसा सधस्य ऽआ सर्वाङ्गेषु।

ध्यानम्–

गजाननं भूतगणादिसेवितं
कपित्थजम्बू फलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्।
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥ १ ॥
उद्यद्दिनेश्वररुचिं निंजहस्तपद्मे
पाशाङ्कुशाभयवरान् दधतं गजास्यम्।
रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं
ध्यायेत् प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥ २ ॥

॥ इति गणपतिसूक्तन्यासः॥

विश्वशान्तियागमन्त्र न्यासः विधिः

विश्वशान्तियज्ञमन्त्र न्यासः

विनियोगः-ऋचं वाचमिति चतुर्विंशतिमन्त्राणां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्द, विष्णुर्देवता, शान्त्यर्थं होमे विनियोगः।

१. ॐ दृते दृंठ० ह मा ज्योक्ते० हृदयाय नमः।
२. ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे० शिरसे स्वाहा।
३. ॐ नमस्तेऽअस्तु विद्युते शिखायै वषट्।
४. ॐ यतोयतः० कवचाय हुम्।
५. ॐ सुमित्रिया नः० नेत्रत्रयाय वौषट्।
६. ॐ तच्चक्षुः० अस्त्राय फ़ट्।

ध्यानम्-

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

॥ इति विश्वशान्तियागमन्त्र न्यासः॥

नवग्रहयागमन्त्र न्यास विधिः

[1]नवग्रहयाग मन्त्र न्यासः

विनियोगः-आ कृष्णेनेति हिरण्यस्तूपाङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुछन्दः सविता देवता, इमन्देवा इति वरुण ऋषिः अत्यष्टिश्छन्दः

---

१. सर्वाविधप्रतिष्ठापद्धतिषु नवग्रह्यणां न्यासस्त्विथं प्रदर्शित :- रविचन्द्राभ्यां-नेत्रयोः, भौमाय-हृदये, बुधाय-स्कन्धे, बृहस्पतये-जिह्वायाम्, शुक्राय-लिङ्गे, शनैश्चराय-ललाटे, राहवे-पादयो-केतवे-केशेषु।

सोमो देवता, अग्निर्मूर्ध्देति विरूपाक्षऋषिर्गायत्री छन्दः भौमो देवता, उद्बुध्यस्वेति परमेष्ठी ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः बुधो देवता, बृहस्पत गृत्समद ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः बृहस्पतिर्देवता, अन्नात्परिस्रुत इति प्रजापत्यश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयः अतिजगतीछन्दः शुक्रो देवता, शन्नो देवीरिति दध्यङ्गाथर्वण ऋषि-र्गायत्रीछन्दः शनिर्देवता, कयानश्चित्र इति वामदेवऋषिर्गायत्री छन्दः राहुर्देवता, केतुं कृण्वन्निति मधुच्छन्दा ऋषिगार्यत्रीछन्दः केतुर्देवता, सूर्यादिनवग्रहाणां जपे होमे च विनियोगः।

१.	ॐ आ कृष्णेन०	हृदये।
२.	ॐ इमन्देवाः०	उदरे।
३.	ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः०	नाभौ।
४.	ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने०	कट्याम्।
५.	ॐ बृहस्पते०	ऊर्वोः।
६.	ॐ अन्नात्परिस्रुतः०	जान्वोः।
७.	ॐ शन्नो देवीः०	जङ्घयोः।
८.	ॐ कया नश्चित्रः०	पादयोः।
९.	ॐ केतुं कृण्वन्०	सर्वाङ्गेषु।

पुनः-

१.	ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने०	हृदयाय नमः
२.	ॐ बृहस्पते ऽअति०	शिरसे स्वाहा।
३.	ॐ अन्नात्परिस्रुतः०	शिखायै वषट्।
४.	ॐ शन्नो देवी०	कवचाय हुम्।
५.	ॐ कया नश्चित्रः०	नेत्रत्रयाय वौषट्।
६.	ॐ केतुं कृण्वन्०	अस्त्राय फट्।

ध्यानम्-

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

॥ इति नवग्रहयागमन्त्र न्यासः॥

तृतीय अंश

कुण्ड व ग्रहकुण्डों का निर्माण

कुण्डनिर्माण में आवश्यक बातें

कुण्ड-मण्डप बनाने वाले की परीक्षा आवश्यक-

परशुराम मत से मण्डप और कुण्ड बनानेवाले से सतिसंभव में निम्नलिखित बातों की जानकारी कर लेनी चाहिये। सत्य बोलनेवाला हो। सदाचारी हो। विवेक से कार्य करने में अति कुशल हो। स्थिर, साहसी हो। कुंण्ड मण्डप आदि शास्त्र के तत्व को जानने वाला हो। देवी-देवताओं में श्रद्धा हो। इन्द्रियों में विकार की भावना से परे हो। मैले कपड़े धारण करनेवाला न हो। रोगी न हो। बेकार के आडम्बरों को करनेवाला न हो। बहुत बोलने वाला न हो। किसी अन्य मतों पर कलह करनेवाला न हो।

मण्डपभूमि विभाग विचार

तीन हाथ से सात हाथ के मण्डप का विभाग नहीं होता है। आठ हाथ से अठारह हाथ तक तीन भाग करे। बीस हाथ से अट्ठाइस हाथ तक पाँच भाग करे। तीस हाथ से पचहत्तर हाथ तक सात भाग करे। सौ हाथ मण्डप में दस भाग करे।

मण्डप में स्तम्भ विचार

सात हाथ के मण्डप में चार स्तम्भ लगते हैं। आठ हाथ मण्डप से लेकर अट्ठारह हाथ तक के मण्डप में सोलह स्तंभ लगते हैं। तीस हाथ मण्डप से लेकर पचहत्तर हाथ के मण्डप में चौसठ स्तंभ लगते हैं। सौ हाथ के मण्डप में एक सौ इक्कीस स्तंभ लगते हैं।

मण्डप भूमि का नाम कथन

सात हाथ के मण्डप को 'एकभू' कहते हैं। आठ हाथ मण्डप से लेकर अट्ठारह हाथ के मण्डप को 'द्विभू' कहते हैं। बीस हाथ से अट्ठाइस हाथ के मण्डपको 'त्रिभू' कहते हैं। तीस हाथ से पच़हत्तर हाथ के मण्डप को 'चतुंर्भू' कहते हैं। सौ हाथ के मण्डप को 'दशभू' कहते हैं। उसमें भी मध्यकोष्टचतुष्टय का एकीकरण से 'पञ्चभू' कहा जा सकता है।

अंगुलादि ज्ञान

आठ परमाणु का–एक त्रसरेणु आठत्रसरेणु का एक रथरेणु–आठ रथरेणु का–एक बालाग्र आठबालाग्रका–एक लिक्षा आठ लिक्षा का–एक यूका, आठयूका का–एक यव आठ यव का–एक अंगुल, चौबीस अंगुलका–एक हाथ और पांच हाथ का–एक पुरुष होता है।

यज्ञीयभूमि का विचार

अग्निकोण प्लवाभूमि–विद्वेष मरण और व्याधिको देती है। किसी के मत से पुत्र, आयु और धन का नाश करती है। दक्षिणप्लवाभूमि निश्चय ही मृत्यु को देती है। नैर्ऋत्यप्लवाभूमि घर का नाश करती है। पश्चिमप्लवाभूमि धन का नाश करती है। वायुकोणप्लवाभूमि उद्वेगको करनेवाली होती है। ईशानकोणप्ल–वाभूमि शीघ्र ही लक्ष्मी को देनेवाली होती है। पूर्वप्लवाभूमि कार्यो को सिद्ध करती है। उत्तरप्लवाभूमि वरदायिनी होती है। पूर्वोत्तरप्लवा भूमि सब कार्यो की सिद्धि करनेवाली होती है।

परकीयादि भूमि में मण्डप का विचार

मण्डप बनाने के लिए अपनी भूमि ही अति उत्तम होती है। पर–कीय भूमि में स्वामी की आज्ञा बिना मण्डप बनाकर जो कार्य किया जाता है–वह निष्फल हो जाता है। अपने निजी घर में मण्डप और कुण्ड बना सकते हैं। नदीतीरादि में मण्डप और कुण्ड बनाने पर परकीयत्व दोष नहीं होता है। जहाँ मण्डप बनाना उचित समझते हों–उस भूमि में बारह अंगुल लम्बा एक गढ़ा खोदकर (प्रयोगसार)।

विशेष–

दानमयूखमतसे आठ यव का एक अंगुल उत्तम कहा है।
मध्य–सात यव और अधम ६ यवका एक अंगुल होता है।
कुण्डार्कादौ–सूत्रस्याधौ विलीयन्ते यूकालिक्षादयस्तया।
मरीचिकायाम्–यवादून प्रमाणं तु मण्डपादौ न चिन्तयेत्।

घर में मण्डप बनावे तो घर की पूर्वदिशा को ही मण्डपादि में ग्रहण करें।

यज्ञीयस्थल का विचार

भस्म निकलने से यजमान का नाश होता है। जहाँ यज्ञ हो वहाँ चूँटी आदि के निकलने से उस गाँव का नाश होता है। गिली मिट्टी बालू आदि निकलने से राष्ट्र का नाश होता है। केश के निकलने से स्त्री की मृत्यु होती है। मुष के निकलने से पुत्र की मृत्यु होती है। कपाल के निकलने से ऋत्विक को भय होता है। ईटों के टुकड़े निकलने से बन्धु बान्धवों से वियोग होता है। तृण के निकलने से कर्म का क्षय होता है। आद्रसिकता निकलने से विद्याभय होता है।

दिक्साधन विचार अत्यावश्यक

दिक्साधन बिना कुण्डों को बनाने से मृत्यु होती है। कुण्ड दर्पण दिशाओं की जानकारी में मूर्ख हो तो कुल का नाश होता है—यह वृद्धनारद का मत है। दिशा के अज्ञान में धन का नाश होता है, (कुरुते दिङ्मूढमर्थक्षयम्) कुण्डप्रदीप दिशाओं की भ्रान्ति-भ्रांतिमान होता है—विधानमाला। पर्वतपर नदी के किनारे पर विशेषकर घर आदि में तथा रुद्रायतन भूमि में दिक्साधन नहीं होता है।

मण्डपारम्भ में विचार

तीन तरह के अधम, मध्यम और उत्तम मण्डप में ऋत्विक् सदस्य तथा समाज के लोग अच्छी तरह से बैठ जाँय ऐसा मण्डप बनावे। विद्यार्णवतन्त्र। मण्डप के निर्माण के समय में 'धूप' आदि

विशेष—

'प्रारभात्पूर्ववत: कुर्यात्यखननं कर्मसिद्धये।
जलान्तं प्रस्तरान्तं वा पुरुषान्तमथापि वा॥
पुन: संपूरयेत् खातं तत्र कर्म समारभेत्।
गृहेकुण्डे हस्तमितं खात्वा श्वभ्रं प्रपूनितम्।'

(कुण्डमरीचिकायाम्)

निकलने की व्यवस्था का विचार अवश्य करे–कुण्डनारदपञ्चरात्र। पवित्र–शुद्ध और चौकोर भूमिमें मण्डप बनाना चाहिये ।

कुण्डों में नाभि विचार

नाभि के न रहने से बन्धुओं की मृत्यु होती है। नाभि के नाप की कमीऔर अधिकता होनेपर स्वयं यजमान का नाश होता है। 'नाभिहीने स्थाननाश'–विधानमाला मत से नाभि के न रहने से स्थान का नाश होता है। नाभि कुण्ड के उदर में रहती है। नाभि अष्टदला- कार या कुण्ड के अनुरूप होती है।

मेखला विचार

मेखलाओं के छिन्न–भिन्न होने पर यजमान का मरण होता है। 'मरणं हीनमेखले'। 'विधानमाला'। मेखला के अधिक या न्यूनाधिक में व्याधि उत्पन्न होती है और धन का नाश होता है। मेखला कुण्ड के आकार की बनानी चाहिये। 'मेरुतन्त्रमत से' मेखला के जर्जर तथा शृङ्गार हीनता पर यजमान का नाश करती है–

शृंगार रहितं यच्च कुण्डं जर्जरमेखलम्।
यजमानविनाशाय प्रोद्धातः स्फुटिते भवेत्॥
हारीतः मरणं यजमानस्य जायते छिन्न–मेखले।
शोकस्तु मेखलोछ्राये मानाधिकरो भवत्॥

एक, दो, तीन, नौ, सात और दस मेखला का हवन कुण्ड में विधान है। 'शक्तिसंगमतन्त्र' दो, चार, तीन और एक मेखला का विधान है। 'ईश्वर संहिता और बृहद्ब्रह्मसंहिता' एकमेखला का विधान संक्षेप हवन कर्म में है। 'जयाख्यसंहिता' तीन मेखला का विधान है। बड़े हवन में हैं। 'बृहन्नालतन्त्र' दो मेखला शूद्रों के लिए और एक मेखला संकर जातियों के लिये है। मेरुतन्त्र। पाँचमेखला पक्ष में मनोनुकूल रंग लगावे। एक मेखला पक्ष में–

मेखला के नीचे छिद्र होता है। दो मेखला पक्ष में–दूसरी मेखला में छिद्र होती है। तीन मेखला पक्ष में मध्य मेखला में छिद्र होता है और पाँच मेखला में चौथी मेखला में छिद्र होता है। ('कोटिहोमपद्धति')

कुण्ड-विचार

कुण्ड में कण्ठ और ओठ न रहने से पुत्रों का नाश होता है– यह एक मत है। कुण्ड में कण्ठ न रखने में किसी की भी मृत्यु होती है। यह भी एक होम है। कुण्ड में कण्ठ न रहने से स्त्री का नाश होता है–यह भी एक मत है। कुण्ड में कंठ न रखने से किसी की भी मृत्यु होती है। यह भी एक मत है। कंठाधिक्ये भवेनाशः–इस हारीत वचन से कण्ठाधिक्य में भी नाश होता है।

बहिरेकांगलो कंठो द्व्यङ्गुलः कश्चिदागमः
तेनाद्यः प्रथम पक्ष एव श्रेयान् बहुसंमतत्वात्।
'सांप्रदायिकास्तु प्रथम पक्षमेव मन्यन्ते बहुतन्त्रसंमतत्वात्'

[शारदातिलके]

भोक्तुर्भुक्तिः कंठकोऽधः सुखाय चोर्ध्वं तस्मात्सैव दुखं प्रयच्छेत्।
होम्यं तद्वत्कंठतोऽधः सुखाय तस्मादूर्ध्व दुःखदं स्यात्पवन्हे।

कंठ के नीचे तक कुण्ड में शाकल्य की आहुति सुख देनेवाली है और कंठ के ऊपर जो आहुतियाँ कुण्ड में पड़ती है। वह दुःख को देनेवाली होती है।

मण्डपाच्छादन-विचार

जनता की सुविधा के लिए बाँस आदि द्वारा निर्मित जाली से दरवाजों को छोड़कर मण्डप को ढकना चाहिये। कुत्ते, बिल्ली, मूंसा, गो, बकरी, बैल, पागल, शत्रु, भयंकर रोगी, विष देनेवाला, अग्नि लगाने वाला, लड़ाई करनेवाला, नास्तिक दम्भी, वेश्यागामी

आदि का मण्डप में प्रवेश न हो—ऐसा मण्डपाच्छादन करे। मण्डप की हर समय रक्षा होनी चाहिये। रात को आदमी मण्डप के चारों तरफ घूमता रहे जिससे चोर आदि द्वारा मण्डप की सामग्री व मण्डप के नष्ट होने का भय तथा मूर्ति की चोरी का भय न हो।

आचार्य कुण्ड निर्णय

नवग्रह के नौ कुण्ड पक्ष में सूर्य के प्रधान हो जाने से आचार्यकुण्ड मध्य का ही होता है। इन कुण्डों की योनि का स्थान विभक्त, द्विमुख में मध्य गत दो कुण्डों में दक्षिणवाला कुण्ड आचार्य कुण्ड होता है। इनकी योनि पूर्व होती है। शतमुख में विशेष वचन से नैर्ऋत्यकोण का ही कुण्ड आचार्य कुण्ड होता है। इन कुण्डों की योनि पूर्व ही होती है। दशमुख में नैर्ऋत्यकोण का ही कुण्ड आचार्य कुण्ड होता है। इनकी योनि पूर्व में होती है। विष्णु, रुद्र आदि की प्रतिष्ठा मात्र में नौ कुण्डी पक्ष में ईशानकोण और पूर्वदिशा के मध्य वाला कुण्ड आचार्य कुण्ड होता है। पञ्चकुण्डी पक्ष में तो ईशानकोण का ही आचार्य कुण्ड होता है। रामवाजपेयी ने पञ्चकुण्डी पक्ष में भी ईशान और पूर्वदिशा का कुण्ड आचार्य-कुण्ड माना है, पर इसमें कोई मूल नहीं मिलता है। ये कुण्ड–चतुरस्र योनि, अर्धचन्द्र, त्रिकोण, वृत आदि भेद से ही बनते हैं या सब वृत चतुरस्र या पद्म बन सकते हैं। यदि सब एक प्रकार के बने तो भी 'कुण्डत्रयी दक्षिणा योनिः' यह वचन वहाँ भी लगेगा। ऐसा मालूम होता है। प्रतिष्ठा में जहाँ एक कुण्ड का विधान वहाँ ईशान, पूर्व, पश्चिम, उत्तर आदि का कुण्ड आचार्य कुण्ड होता है। प्रतिष्ठा में यदि चार कुण्ड पक्ष को स्वीकार करेंगे तो संभवतः पूर्वदिशा का कुण्ड आचार्य कुण्ड होता है। प्रतिष्ठा में सातकुण्ड पक्ष को ग्रहण करने पर आचार्य कुण्ड पूर्व दिशा का ही निर्विवाद होगा।

त्रयोदशात्र कुण्डानि परितः कारयेद् बुधः। उक्तलक्षणयुक्तानि प्रधानं त्वग्निकोण के अत्र मण्डपे वेद्या परितः दिक्षुद्वे विदिक्षु

चैकेकम् प्रधानं च त्रयोदश कुण्डानि। आदौ पूर्वादि चतुर्दिक्षु एकैककुण्डं कोण चैकं प्रधानकुण्डं पंचकुण्डेभ्यो: बहि: परित अष्ट दक्षु एकैककुण्डम् एवं त्रयोदश कुंडानि मनु-अग्निकोणे एकस्य कुण्डस्य विद्यमानत्वात् कथमत्र प्रधान कुण्डकार्यमाह-अग्निकोणगात् कुंडात् हस्तमात्रमनरत: व्यवस्थाने अग्निकोण एव साक्षात् मुख्यं प्रधानकुंड कारयेत्। [तंत्रसार]

जहाँ हवन प्रधान होगा वहाँ पंचकुंडी और पंचकुंडीपक्ष में मध्य का ही कुंड आचार्य शास्त्रीय मत से होता है। क्योंकि मत्स्यपुराण शारदा तिलक आदि 'आचार्यकुंड मध्ये स्यात् गौरीपतिमहेन्द्रयो:' इत्यादि पञ्चदीक्षा और प्रतिष्ठा आदि को लेकर ही लिखा है। यह बात वहाँ के प्रकरण को देखने से निर्णीत हो जाती है।

कुण्ड विषयक विचार

कुण्ड को परिमाण से हीन बनाने पर व्याधि होती है। कुण्ड को नाप से अधिक बनाने पर शत्रु बढ़ते हैं। कुण्ड निर्माण करने पर पत्थर निकले तो अपमृत्यु होती है। 'विधानमाला मत' से अनेक प्रकार का भय, धन तथा आयु की हानि होती है। कुण्ड बनाने पर हड्डी, केश और अँगार निकले तो धन का नाश होता है। अँगारों के टुकड़े निकलने पर रोग तथा पाषाण के टुकड़ों को देखने पर सौख्य होता है। 'विधानमाला।' शव निकले तो कुल का नाश होता है। कुण्ड के बनाते समय राख निकले तो भय उत्पन्न होता है। कुण्ड के निर्माण समय में तुष निकले तो दरिद्री होता है। कुण्ड में नाप से अधिक खात होने पर धन नाश होता है। कुण्ड के टेढ़ापन होने से दु:ख होता है। कुण्ड के न्यून या अधिक होने से यजमान का स्वयं नाश होता है। कुण्डादिक के अधिक या न्यून होने पर यजमान का स्वयं नाश होता है। कुण्डादिक के अधिक या न्यून होने पर यज्ञाचार्य का मरण होता है। कुण्ड के नाप में कमी रखने

पर दरिद्रता होती है। विशेषज्ञों द्वारा कुण्ड न बनाने पर कुण्ड और मण्डपादि निष्फल होता है। कुण्ड आयु, कलत्र पुत्र और सुख को देनेवाला कहा गया है, कुण्ड को खोदते समय सर्प, वृश्चिक देखने में रोग, मृत्यु तथा भय प्राप्त होता है। 'विधानमाला'। अंगार में स्वामी का नाश, खर्पर में स्त्री और धनक्षय, भस्म में–सन्ततिविच्छेद, सिकताओं में धनक्षय, गजास्थि में स्वामी का मरण, तुरगास्थि में धन मनुष्यों का नाश और पश्वास्थि में पशुओं का मरण होता है। कुण्ड के विस्तार रहित में यजमान का जीवन अल्प समय का हो जाता है। कुण्ड के टेढ़ेपन में और मानहानि में जठराग्नि मन्द हो जाती है। कुण्ड के आधिक्य में सन्ताप होता है। कुण्ड के बिना हवन करने से ऋत्विजों द्वारा मन्त्रों की सिद्धि देनेवाला नहीं होता है। अतः सौत्र या जंगम स्थिर कुण्ड करे, 'जयाख्यसंहिता।' जिस ग्रन्थ से चतुरस्त्र कुण्ड बनावे उसी ग्रन्थ से अन्य पद्म आदि कुण्ड बनावें, ऐसा कोई नियम या विधान नहीं मिलता है।

चतुरस्त्रादि कुण्ड से कामनापरक फल

चतुरस्त्रकुण्ड–शान्ति, विजय, लक्ष्मी, सिद्धि और सम्पूर्ण कार्यो को करनेवाला है। मुमुक्षार्थी वैष्णवों के लिए चतुरस्त्र कुण्ड का विधान है जो विष्णुयागादियज्ञों में आचार्य कुण्ड मंडप के मध्य में प्रधान वेदी तथा दिशाओं में कुण्डों को बनाकर यज्ञ कराते हैं। उनका यह मध्य में मत अशास्त्रीय ही प्रतीत होता है। गृहवास्तु और प्रसादवास्तु में वास्तुवेदी ईशानकोण में होती है, उसके दक्षिण ग्रहवेदी होती है। महारुद्रादि यज्ञों में प्रधानवेदी ईशानकोण में उसके दक्षिण ग्रहवेदी होती है। विष्णुयागादि में प्रधानवेदी दक्षिणदिशा में होती है। साधारण मत से पूर्व में भी प्राप्त होती है। विष्णु आदि प्रतिष्ठा में प्रधानवेदी मध्यम बनती है। शतमुख, द्विमुख, और एकमुख में प्रधानवेदी पूर्वदिशा में बनती है। कोटिहोमात्मक विष्णुयाग में ईशानकोण में ग्रहवेदी उसके दक्षिण प्रधानवेदी होती है।

विविध प्रकार के कुण्डों का निर्माण

चतुरस्त्र कुण्ड बनाने का प्रकार–

द्विघ्नव्यासं तुर्यचिह्न संपाशं सूत्रं शङ्कौ पश्चिमे पूर्वगेऽपि।
दत्वा कर्षेत्कोणयोः पाशतुर्ये स्यादेव वा वेदकोणं समानम्॥

चौबीस अङ्गुल का गज लेकर चारों तरफ (पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर) एक सा नाप द्वारा नापने से मय लेपन द्वारा चतुरस्त्र कुण्ड एक हाथ का तैयार होता है।

योनिकुण्ड बनाने के प्रकार–

क्षेत्रे जिनांशे पुरतः शरांशान् सम्बर्ध्य च रवीयरदांशमुक्तान्।
कर्णाङ्घ्रिमानेन लिखेन्दुखण्डे प्रत्यक् पुरोऽङ्कादगुणतो भगाभम्॥

चौबीस अङ्गुल का चतुरस्त्र बनाकर उस चतुरस्त्र में दक्षिणोत्तर आधे पर एक लम्बी रेखा दे। तदनन्तर पश्चिम भाग के आधे भाग का दो हिस्सा पूर्व और पश्चिम की तरफ करे। फिर उसके आधे में अर्थात् कोने से एक रेखा दे जो टेढ़ी दूसरी कोने में जाकर मिले। इस तरह फिर दूसरे कौने से रेखा दे। इस प्रकार दोनों आधों में चार रेखा टेढ़ी होगी। फिर उस पूर्व निर्मित चतुरस्त्र के ठीक पूर्व दिशा की तरफ मध्य से पाँच अङ्गुल, एक यव और दो यूका बढ़ा दें। फिर चतुरस्त्र के किये हुए ठीक मध्य से अर्थात् दक्षिण दिशा से सटी एक रेखा टेढ़ी दे जो पूर्व के ठीक मध्य में बढ़ी हुई पाँच अङ्गुल एक यव और यूका वाली रेखा के ऊपरी हिस्से में मिल जाय। इसी तरह उत्तर दिशा से एक रेखा दे। अर्थात्–दक्षिणोत्तर रेखा बढ़े हुए पाँच अङ्गुल एक यव और दो यूका की रेखा में मिला दे। तदनन्तर नीचे प्रकाल को दक्षिण की तरफ और उत्तर की तरफ बने हुए दोनों हिस्सों के ठीक मध्य से अर्थात्–अलग–अलग घुमाकर पश्चिम भाग के ठीक मध्य की तरफ मिला दे। इसी तरह उत्तर की तरफ

से प्रकाल द्वारा रेखा पश्चिम दिशा के ठीक मध्य में मिलाने से योनि कुण्ड तैयार हो जाता है।

अर्धचन्द्र कुण्ड बनाने का प्रकार

स्वशतांयुतेषु भागहीनस्वधरिश्रीमितकर्कटेन मध्यात्।
कृतवृत्तदलेऽग्रतश्च जीवां विदधात्विन्दुदलस्य साधु सिद्ध्यैः॥

चौबीस अङ्गुल का चतुरस्र बनाकर उस चतुरस्र के पूर्व दिशा से अढ़ाई अङ्गुल हटाकर (पञ्चकुण्डी पक्ष में उत्तर दिशा के ठीक मध्य की तरफ से अढ़ाई अङ्गुल हटाकर) दक्षिणोत्तर एक रेखा लम्बी दे। उसी रेखा के मध्य से उन्नीस अङ्गुल, एक यव, एक यूका, पाँच लिक्षा और सात बालाग्र (१६ अङ्गुल, १ यव, १ यूका, ५ लिक्षा, ७ बालाग्र) प्रकाल से नाप कर अर्थात् साढ़े उन्नीस अङ्गुल को प्राकल से नाप कर टेढ़ी रेखा देने से अर्धचन्द्र कुण्ड बनता है।

त्रिकोण कुण्ड बनाने का प्रकार

वह्न्यशं पुरतो निधाय च पुनः श्रोण्योश्यतुर्थांशकम्।
चिह्नेषु त्रिषु सूत्रदानत इदं स्यात्यस्त्रिकष्टोज्जितम्॥

चौबीस अङ्गुल के चतुरस्र के बाहर पश्चिम की तरफ से वायव्यकोण और नैर्ऋत्यकोण की तरफ छः छः अङ्गुल और बढ़ा दे। अर्थात् छः अङ्गुल वायव्यकोण में और छः अङ्गुल नैर्ऋत्यकोण में बढ़ा दें। तदनन्तर निर्मित उस चतुरस्र के ठीक पूर्वदिशा के मध्य से आठ अङ्गुल लम्बी रेखा सीधी पूर्व दिशा की तरफ बढ़ा दे। फिर वायव्यकोण में बढ़ी हुई रेखा के अन्तिम हिस्से से एक रेखा टेढ़ी दे, जो पूर्वदिशा में बढ़ी हुई रेखा में मिले। उसी प्रकार नैर्ऋत्यकोण से रेखा देने से त्रिकोण कुण्ड तैयार होता है।

वृत्तकुण्ड बनाने का प्रकार

विश्वांशैः स्वजिनांशकेन सहितै क्षेत्रे जिनांशे कृते।
व्यासार्धेन मितेन मण्डलमिदं स्याद् वृत्तसंज्ञं शुभम्॥

चौबीस अङ्गुल के चतुरस्र के ठीक मध्य से साढ़े तेरह अंगुल (तेरह अङ्गुल, चार यव, दो यूका, पाँच लिक्षा और तीन बालाग्र) का प्रकाल लेकर गोलाकार घुमाने से वृत्तकुण्ड का निर्माण हो जाता है।

विषम षडस्त्रकुण्ड बनाने का सरलप्रकार—

भक्तेक्षेत्र जिनांशैर्घृतिमितलवकैः स्वाक्षिशैलांशयुक्तै,
र्व्यासादर्घान् मण्डले तन्मितघृतगुणके कर्कटे चेन्दुदिक्तः।
षट्चिह्नेषु प्रदद्याद्रसमितगुणकानेकमोकन्तु हित्वा नाशे।
सन्ध्यत्तु दोषामपि च वृतिकृतेर्नेत्ररम्यं षडस्त्रम्॥

चौबीस अङ्गुल का चतुरस्र बनाकर उस चतुरस्र के ऊपर अठारह अंगुल और दो यव का एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस वृत्त में छः निशान बराबर-बराबर के लगा दे। तदनन्तर उन निशानों पर रेखा देने से विषमषडस्त्र कुण्ड बन जायगा।

तात्पर्य यह है कि—एक रेखा टेढ़ी उत्तर दिशा से पूर्वदिशा के समीप दक्षांस में मिला दे। फिर एक टेढ़ी रेखा उत्तर दिशा की पहली रेखा समीप सटी से पश्चिम दिशा के समीप पुच्छ में मिला दे। फिर दक्षिण से एक रेखा टेढ़ी पूर्वदिशा के समीप मुख में मिला दे। फिर एक रेखा टेढ़ी दक्षिण दिशा से पश्चिम दिशा के समीप वाम श्रोणी में मिला देने से विषम षडस्त्र कुण्ड तैयार हो जाता है।

समषडस्त्र कुण्ड बनाने का प्रकार—

अथवा जिनभक्तकुण्डमानत्तिथिभागैः स्वखभूपभागहीनैः।
मितकर्कटोद्भवेतु वृते बिधुदितः समषड्भुजैः षडस्त्रम्॥

चौबीस अंगुल का चतुरस्र बनाकर उस चतुरस्र के ऊपर चौदह अंगुल सात यव और यूका का एक गोलाकार वृत्त बना दे। तदनन्तर

उस वृत्त में बराबर-बराबर के छः चिह्न कर देने से समषडस्रकुण्ड बन जाता है।

स्पष्टीकरण यह है-उत्तर दिशा से टेढ़ी रेखा मुख पर मिला दे, मुख से एक रेखा दक्षांस में मिला दे। दक्षांस से एक रेखा दक्षिण दिशा में दे। दक्षिण दिशा से एक रेखा टेढ़ी पुच्छ में दे। पुच्छ से एक रेखा वामश्रोणी में दे। वामश्रोणी से एक रेखा और दिशा में मिला दे।

पद्मकुण्ड बनाने का सुगमप्रकार-

अष्टांशाच्च यतश्च वृत्तशरके यादिमं कर्णिका
युग्मे षोडशकेशराणि चरमे स्वाष्टत्रिभागोनिते।
भक्ते षोडशधा शरान्तरधृते स्युः कर्कटेऽष्टौ छदाः।
सर्वास्तान्खनकर्णिकां त्यज निजायामोच्चकां स्यात्कजम्॥

चौबीस अङ्गुल का चतुरस्र बनाकर उस चतुरस्र के ठीक मध्य से एक गोलाकार प्रकाल द्वारा तीन अङ्गुल का वृत्त बनावे। तदनन्तर छः अङ्गुल का गोलाकार दूसरा वृत्त उसी के ऊपर बनावे। फिर नव अङ्गुल का वृत्त गोलाकार तीसरा और बारह अङ्गुल का गोलाकार वृत्त चतुर्थ उसी पर बनाने पर चौदह अङ्गुल, सात यव और तीन यूका अर्थात् साढ़े चौदह अङ्गुल का वृत्त गोल पाँचवाँ उसी पर बना दे। तदनन्तर दो वृत्त को छोड़कर अर्थात् प्रारम्भ के दो वृत्त तीन और छः का छोड़कर पश्चिम दक्षिण और उत्तर दिशा में एक एक चिह्न करे। फिर नैर्ऋत्य, वायव्य, ईशान और अग्निकोण में एक-एक चिह्न करे। इस तरह आठ चिह्न वृत्त में हुए-ऐसा निश्चय हो जाने पर उन दिशा और विदिशाओं के मध्य-मध्य में फिर एक-एक चिह्न दे। ये चिह्न सोलह बराबर-बराबर के होंगे। इस तरह सोलह चिह्न (रेखा) हो जाने पर उत्तर दिशा से एक चिह्न रेखा को

छोड़ता हुआ पद्माकार रेखा देने से पद्म कुण्ड का निर्माण हो जाता है। तात्पर्य यह है कि–कुल आठ रेखा (चिह्न) छूटने से पद्म कुण्ड बनने में जरा भी कठिनाई नहीं होगी।

विषम अष्टास्त्र कुण्ड बनाने का प्रकार–

क्षेत्रे जिनांशे गजचन्द्रभागैः स्वाष्टाक्षिभागेन युतैस्तु वृत्ते।
विदिग्दिशोरन्तरतो ऽष्टसूत्रैस्तृतीययुक्तैरिदमष्टकोणम्॥

चौबीस अङ्गुल के चतुरस्त्र के ठीक मध्य से अठारह अङ्गुल, पाँच यव और एक यूका अर्थात् साढ़े अट्ठारह अङ्गुल का एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस निर्मित गोलाकार वृत्त में सोलह चिह्न बराबर करे। तदनन्तर दिशा ओर विदिशा के मध्य की रेखा से। (अर्थात् दिशाओं की और विदिशाओं की रेखाओं को छोड़कर) बनाने से विषम अष्टास्त्र कुण्ड बन जाता है।

तात्पर्य यह है कि–पूर्वदिशा के समीप दक्षांस अंश से एक रेखा सीधी पश्चिम की तरफ पुच्छ अंश में मिला दे। फिर पूर्वदिशा और ईशान के मध्य अर्थात् पूर्वदिशा के समीप मुख अंश से एक रेखा पश्चिम दिशा के समीप वामश्रोणी में मिला दे। उत्तर के वामांश अंश से एक रेखा सीधी दक्षिण दिशा के दक्षवार्श्व में मिला दे। फिर वामपार्व से एक रेखा सीधी दक्षिण दिशा के समीप दक्षश्रेणी में मिला दे। पूर्वस्थित दक्षांस से एक टेढ़ी रेखा वामपार्श्व में मिला दे। फिर ईशान और पूर्व के मध्य मुख से एक रेखा टेढ़ी दक्षश्रोणी में मिला दे। पश्चिम दिशा स्थित पुच्छ से एक रेखा टेढ़ी दक्ष पार्श्व में मिला देने से विषम अष्टास्त्र कुण्ड बन जाता है।

समअष्टास्त्र कुण्ड बनाने का प्रकार–

मध्ये गुणे वेदयभैर्विभक्ते शक्रैर्निजर्ष्यब्धिलवेन युक्तैः।
वृत्ते कृते दिग्विदिशान्तराले गजैर्भुजैः स्यादथवाष्टकोणम्॥

चौबीस अङ्गुल का चतुरस्र बनाकर उस चतुरस्र पर चौदह अङ्गुल, दो यव और तीन यूका का गोलाकार एक वृत्त बनाकर उसमें बराबर-बराबर के आठ चिह्न कर दें। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि-ये चिह्न दिशा और विदिशा में नहीं होने चाहिये। यदि ये चिह्न दिशा और विदिशा में पड़े तो कुण्ड निर्माण में विघ्न आ सकता है। एक रेखा टेढ़ी (क) उसका प्रकार यह है-मुख से प्रारम्भ कर वामांश में मिलावे। (ख) वामां से सीधी रेखा प्रारम्भ कर वामपार्श्व में मिला दे। (ग) वामपार्श्व से एक टेढ़ी रेखा प्रारम्भ कर वाम श्रोणी में मिला दे। (घ) वाम श्रोणी से एक सीधी रेखा पुच्छ में मिला दे। (ङ) पुच्छ से एक टेढ़ी रेखा दक्षश्रोणी में मिला दे। (च) दक्षश्रोणी से एक सीधी रेखा दक्ष पार्श्व में मिला दे। (छ) दक्ष पार्श्व से एक टेढ़ी रेखा दक्षांश में मिला दे। (ज) दक्षांस से एक सीधी रेखा सीधी मुख में मिला दे। इस तरह आठ चिह्न वाला समअष्टास्र कुण्ड तैय्यार हो जाएगा।

नव कुण्डों पर कोटिहोमपद्धति का मत-

ननु एतानि शारदातिलके वेदमुक्त्वा प्रागादिदिक्षु दीक्षाङ्गत्वेनोक्तानि।

अष्टास्वांशासु कुण्डानि रम्याकाराण्यनुक्रमात्। चतुरस्त्रं योनिमर्द्धचन्द्रं त्र्यस्र सुवर्तुलम्। षडस्त्रं पङ्कजाकारमष्टास्त्रं तानि नामतः॥ इति।

तत् एतेषामेव सर्वसिद्धिकरं कुण्डं चतुरस्रमित्यादिना क्रमेण फलानि श्रुतानि। तेनाङ्गभूतानामेव तेषां कुण्डानायैक्त्य तूभयत्वे संयोगपृथकत्वमितिन्यायेन फलार्थत्वमपीत्येवं सति तत्र दीक्षाप्रकरणोक्तानामेषां काम्यानां कथमत्र प्राप्तिः। यदा हि विकृतावपि प्राकृतः काम्यो गुणो न गच्छतीतिन्यायस्तत्राविकृतिभूतेऽत्र

सुतरामप्राप्तिः। किञ्च–वेदेरत्रासत्वात्प्रागादिदिक्षु–उक्तान्यत्र कथं प्राप्नुयुः। कथञ्चित्प्राप्तौ त्वष्टकुण्डी प्राप्नुयात्।

अत्र ब्रूमः–

शारदायां मण्डपं वेदि चोक्त्वा दीक्षाङ्गभूतानि कुण्डान्युक्तानि। तदेत् सर्वसाधारणं न तु दीक्षामात्रविषयम्॥

तदग्रे–अथ दीक्षां प्रवक्ष्यामि इति दीक्षोपक्रमेण। प्राक् तत् प्रकरणाभावात्। होमादेश्चानुपस्थितत्वात्। एवं सति क्रियाविशेषानुपस्थितौ किमाश्रितानां कुण्डानां तत्तत्फलसाधनता बोध्येत्। वाक्येनेव दीक्षाद्याश्रयदाने वाक्यभेदापत्तिः प्रकृतकुण्डामामुपस्थितध्वात्तदाश्रितानां चतुरस्रत्वादीनां फलसम्बन्धे उच्यमानेऽपि कुण्डानामव्यापररूपाणामाश्रयत्वोयोग्यत्वात्तद्योग्याश्च क्रियाया अनुपस्थितत्वात्मागुक्तदोषाननिवृत्तिः। दीक्षादीनामत्रानुपस्थितौ कथमत्रत्य कुण्डमण्डप सम्बन्ध इति चेत्। तत्तत्वकरणस्यवाक्यैरिति ब्रूमाः। दीक्षातुलापुरुषदिप्रकरणे हिं मण्डपाष्टकुण्डद्याद्यङ्गत्वेन श्रुतम्। तत्प्रकारस्त्वयमनारभ्याधीतः सर्वसाधारणः पलाशत्वमिवेष्ट्याग्निहोत्रादिप्रकृतिभावनापन्नहोमसाधनीभूतजुह्वाम्। एतेनात्राप्यष्टकुण्डीप्राप्नुयादिप्यप्यपास्तम्। तदङ्गबोधकप्राकरणिकवाक्याभावात्।

न च दीक्षाया एव तत्र वक्ष्यमाणत्वात्तन्मात्रविषयत्वमस्य न तु साधारणमितिवाच्यम्। साधारणस्यैव स्वयं वक्ष्यमाणदीक्षार्थत्वेनात्र संग्रहमात्रातन्मात्रविषयत्वे मानाभावात्। अत एव हेमाद्र्याादिभिरेतान्येव वाक्यानि तुलापुरुषाद्यङ्गाष्टकुण्डाप्रदर्शनार्थमुदाहृतानि। तस्मात्प्रकरणाभावादाश्रया भावेन गुणफलसम्बन्धासंभवात्। तुलापुरुषादावष्टकुण्ड्या अङ्गत्मेव न तूभयार्थत्वम्। तेन सर्वसिद्धिकरं कुण्डमित्त्यादि सर्वकर्मसाधारण्येनैव व्याख्येयम्। सर्वसिद्धिकरं कर्मणि चतुरस्र कुण्डमिति।

अत एवाग्रे स्पष्टमुक्त वर्तुलं शान्तिकर्मणीतिविज्ञानललिते च। अभिचारोपशान्त्यर्थे होमे इति। कामिके च शान्तिके पौष्टिके इति। सर्वसिद्धिकरं कुण्डमित्यादिसामानाधिकरण्यं च प्रधानद्वारोपपाद-नीयम्। यथा यो वृष्टिकाम इत्यादि वृष्ट्याश्चर्थसौभरे एव हीषिति वृष्टिकामाय निधनं कुथदित्यादिना वृष्टिकामाय यत्सौभरं तत्र हीषिति विशेषविधिर्भवति। एवमिहापि।

विशिष्टोद्देशेऽपि न वाक्यभेदः। उद्देश्यापर्यवसानात् अन्यथा यत्र कापि चतुरस्रादिविकल्प प्रसंगादित्यादिविस्तरभयान्नेहोच्यते। तस्मादेतैर्वाक्यैः साधारण्येन तत्तत्फलविशेषार्थहोमादौ कुण्डविशेष-विधीयन्तेइत्ययुतहोमादौ शान्तिकत्वादिरूपेणानुष्ठीयमानेऽस्त्येषां कुण्डानां प्राप्तिरितिसिद्धम्।

तत्र त्वेतावान् विशेषः। तुलापुरुषादेरपि शान्त्याद्यर्थत्वेन तत्र प्राप्नुवन्त्येतानि कुण्डानि दिग्विशेवेष्वेव भवन्ति। ऐन्द्र्यां स्तंभे चतुःकोणमित्यादिकामिकादिवाक्यैस्तंभाद्यर्थकर्मसु प्राप्तचतुः कोणादिकुण्डेषु वेदितः पूर्वादिनियमात्प्राप्नुवन्ति।

अयुतहोमादौ तु मण्डपमध्यभाग एव भवन्ति। तस्यैव कुण्ड-देशत्वसाधनादित्यलम्।

तुलापुरुषाम्नातस्यापि मण्डपस्थप्राप्तिरत्रौपपादिता। तत्र तुला-रोहणादेः प्रधानवेद्यां कर्तव्यत्वेन वेदैः प्रधानदेशत्वात्तस्याश्च मध्यकार्य त्वोक्त्या मण्डपमध्यदेशस्य प्रधानदेशत्वं गम्यते एवं चात्र तस्मिन् मण्डपे प्रप्ते मध्देशस्य प्रधानदेशत्वमवगतं न त्यक्तुं नाय्यम्। अत्र च प्रधानहोमोऽयुतहोमादिसमाख्यावशात्। तेनापि मण्डपमध्यभागे कुण्डम्।

किञ्च भविष्योत्तरे–अयुतलक्षहोमायुक्त्वा कोटिहमं वदन् मण्डपमध्यभागे कुण्डमाह–मध्ये तु मण्डपस्यापि कुण्डं कुर्यात् विचक्षणं। अष्टहस्तप्रमाणेन आयामेन तथैव च।

तत्र तत्र विशेषविधिबलादेव भविष्यतीति वाच्यम्। लक्षहोमादेव कुंडस्य प्राप्तत्वात्ततविन्न विधेयं येन विशिष्टविधिः स्यात् एवं सति तदनुवादेन मध्यदेशविधानेऽष्टहस्तप्रमाणविधाने च वाक्यभेदः स्यात्। अतोऽस्मदुक्तमार्गेण मध्यदेशप्राप्तकुण्डानुवादेन तत्प्रमाणान्तर-विधिर्लाधवात्। विकृतिगतानुवादेन च प्रकृतावनवगतविशेष-सिद्धिर्न्यार्य्या। यथा सत्रेऽर्धित्वाद्यनुवादेनज्योतिष्टोमे दक्षिणावैषम्यसिद्धिः। तस्मादपि मण्डपमध्यभागे कुण्डम्।

वसिष्ठसंहितायां तु स्पष्टमुक्तम्—मण्डपं प्रकृत्य कुण्डं तन्मध्यभागे तु कारयेच्चतुरस्त्रकम्। वितस्तिद्वयखातं तत्कुण्डं स चतुरङ्गुलम्॥ इति॥

नव कुण्डों पर कुण्डकल्पलता का मत—

कुण्डकल्पतायाम्—अथ वक्ष्यमाणानि कुण्डानि तडोत्सर्गादौ अष्टचतुरत्रादिनानाप्रकाराण्यष्टौ तदसम्भवे चतुरस्राणि वर्तुलानि वा कृत्वा नवममाचार्यकुण्डं वृत्तं चतुरस्त्रं वा पूर्वशानयोर्मध्ये कुर्यात्। तदुक्तं शारदायाम्—

अष्टास्वाशासु कुण्डानि रम्याकाराण्यनुक्रमात्।
चतुरस्त्रं योनिमर्द्धचन्द्रं त्र्यस्त्रं सुवर्तुलम्॥
षडस्त्रं पङ्कजाकारमष्टास्त्रं तानि नामतः।
आचार्यकुण्डं मध्ये स्याद् गौरीपतिमहेन्द्रयो॥

आम्नायरहस्ये—

नवकुण्डविधानेन दिक्षु कुंडाष्टके स्थिते।
नवमं कारयेत्कुण्ड पूर्वेशानदिगन्तरे॥
कुंडानि चतुरस्त्राणि वृत्तनानाकृतानि च।

सोमशंभूः–

शस्तानि तानि वृत्तानि चतुरस्त्राणि वाद सदा।

अन्यत्रापि–

वेदास्त्राण्येव तानि स्युर्वर्तुलाण्यथवा क्वचित्।

पञ्चकुण्डीपक्षे–

कुर्यात्कुंडानि चत्वारि चतुर्दिक्षु विचक्षणः।
पञ्चमं कारयेत्कुंडमीशदिग्गोचरे द्विज॥

स्त्रीणां तु लिङ्गे विशेषः–स्त्रीणां कुंडानि विप्रेन्द्र योग्याकाराणि कारयेत्। अत्र च दर्शपौर्णमासयोः पञ्चदशसामिधेनीरनुब्रूयात् सप्तदश–वैश्यस्यैति। वैश्यकर्तृके सामिधेनीसादृश्यवत्स्त्री–कर्तृकतुलाकुण्डानां यौन्याकारेत्व नयमादाकारान्तरनिवृत्तिः।

यद्यपि लैङ्गे–नवकुण्डीप्रक्रमात् कुडानीति बहुवचने यथा प्राप्तानुवादान्नवकुण्डीपक्षे एव योन्याकारत्वमितिप्रतिभाति। तथाप्यु–द्देश्यगतसंख्याया ग्रहेकत्ववदविवक्षितत्वान्मत्स्यपुराणोक्ते।

चतुःकुण्डीपक्षेऽपि–स्त्रीणां योन्याकारतैव भवति। तथा ब्रह्माण्डादौ तुलापुरुषविकारे एवमेवकुण्ड तस्यामि स्त्रीकर्तृकत्वे योन्यांकारेति।

नव पञ्चाय वैकं वा कर्तव्यं लक्षणान्वितम्–न चात्र वाक्ये पक्षात्रयस्यापि समविकल्पियत्वे नवपञ्चकुंडीपक्षयोरनुष्ठानापतेः। तस्मात्तत् फलस्य कर्मनिष्पत्तेः तेषां लोकवत्परिमाणतः फलविशेषः स्यान्नवपञ्चककुण्डपक्षाणां फलतारतभ्यमेव कल्प्यम्। तानि सर्वाणि दीक्षासु स्थापनादिषु कर्मसु। हस्तमात्राणि चतुरस्त्राणि कार्याणीत्यर्थः।

पुराणोक्ततुलादानादौ तु नवकुंडीपक्षः श्रेष्ठः, पञ्चकुंडीपक्षः मध्यमः, एककुंडीपक्षः कनिष्ठः। रुद्रानुष्ठानायुतहोमलक्षहोमेष्वेकमेव कुण्डमित्युक्तम्॥ इति॥

प्रतिष्ठादि में–मण्डप सोलह हाथ या चौदह हाथ होगा। उसमें स्तंभ बाहर के बारह सात हाथ के होंगे और भीतर मण्डप के चार स्तम्भ साढ़े आठ हाथ के होंगे। इन स्तम्भों का पंचमाश भूमि के भीतर में रहेगा। मध्यवेदी–एक हाथ ऊँची सवा पाँच हाथ आठ अंगुल लम्बी–चौड़ी सोलह हाथ के मण्डप में होगी। चौदह हाथ के मण्डप में चार पाथ सोलह अंगुल की होगी। ऊँची एक हाथ होगी। कुण्ड चौतीस अंगुल का होगा। उसका प्रकार यह है कि–चौतीस अंगुल का जो गज रहेगा उस चौतीस अंगुल के गज में चौतीस अंगुल का चौबीस अंगुल ही बनना चाहिये। उस हिसाब से दो अंगुल की नीचे की पहली मेखला दूसरी तीन अंगुल की मेखला और तीसरी ऊपर की मेखला चार अंगुल की होगी। इनकी लंबाई नव अंगुल की होगी। चौड़ाई प्रथम दो अंगुल और दो अंगुल लंबाई, दूसरी तीन अंगुल चौड़ाई तीन अंगुल लम्बाई और तीसरी चार अंगुल चौड़ाई योनि उसी पूर्व वाले गज से बारह अंगुल लम्बी पश्चिम दिशा के ठीक मध्य से होगी। इसमें एक अंगुल कुण्ड के भीतर, एक अंगुल कण्ठ और दस अंगुल बाहर रहेगी। इनकी चौड़ाई आठ अंगुल होगी। ऊपर और पीछे की तरफ बारह अंगुल ऊँची और कुण्ड के भीतर ग्यारह अंगुल ऊँची होगी। मध्य मेखला में परिन्तरण छिद्र होगा। नाभी दो अंगुल चौड़ी चार अंगुल लम्बी होगी। ध्वजा–दो हाथ चौड़ी पाँच हाथ लम्बी वाहन के साथ होगी। पताका–सात हाथ लम्बी एक हाथ चौड़ी शस्त्र सहित होगी। इनमें गेरु आदि से शस्त्र और वाहन बनेंगे।

शतमुखकुण्डका बनाने का प्रकार द्वैतनिर्णय सिद्धान्त संग्रह के मत से–

शतमुख में अर्थात् सौ हाथ के समचतुरस्त्र मण्डप के तीन भाग पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशा से करे। फ्री भाग (हिस्सा)

तैतीस हाथ आठ अंगुल करे। इस तरह हो जानेपर मण्डप के मध्य नवमांश में दक्षिणोत्तर लम्बी तैतीस हाथ आठ अंगुल की चार रेखा बराबर की दे। प्रत्येक रेखा में पाँच-पाँच कुण्ड निर्मित होंगे। प्रत्येक कुंड का अन्तराल (मध्य) साढ़े चार हाथ सात अंगुल होगा। अर्थात् एक कुण्ड के बन जाने के बाद दूसरा कुण्ड साढ़े चार हाथ सात अंगुल जमीन छोड़कर बनेगा। इस तरह चार दक्षिणोत्तर लम्बी रेखा में सब बीस कुंड बनेगें। उन रेखाओं का अन्तराल सात हाथ आठ अंगुल होगा। सारांश यह है कि-एक रेखा दक्षिणोत्तर लम्बी देने पर दूसरी रेखा देते समय सात हाथ आठ अंगुल जमीन छोड़कर रेखा दे। इस तरह तीन और चार रेखा में व्यवस्था कर लेनी चाहिये।

अब बचे हुए अस्सी कुंडों का अवशिष्ट आठ नवमांशों में विभक्त करें। उसका प्रकार यह है कि प्रत्येक नवमांश में दो-दो कुंड बनेंगे। इस तरह आठ नवमांशों में कुल सोलह कुंड हुए। फिर उन्हीं आठ नवमांशों में क्रम से दिशा और विदिशा में आठ-आठ कुंड बन जाने से सौ कुंडों का निर्माण सुगमतया से हो जायेगा।

(क) कुछ लोग प्रधान वेदी ईशान देश में मानते हैं, पर बहुमत से पूर्वदिशा में ही प्रधान वेदी करना ही उचित है।

(ख) इस मण्डप में स्तंभ मध्य के पचास हाथ के चार होंगे। द्वितीय श्रेणी में-तैतीस हाथ आठ अंगुल के होंगे। तृतीय श्रेणी में-पच्चीस हाथ के स्तंभ होंगे।

(ग) पूजन सोलह ही, स्तम्भ का विशेष चिह्न से चिह्नित करना चाहिये, यही विधान है। बाकी का कोई विधान तथ्य शास्त्रों में न मिलता है न देखने में ही आया है।

(घ) सौ कुण्ड पचीस हाथ के मण्डप में न बनकर पचास हाथ के मण्डप में बन सकते हैं। लेकिन हजारों ब्राह्मण बैठकर इन कुण्डों में हवन नहीं कर सकते।

-पं. दौलतराम गौड़ वेदाचार्य

(क) कुण्डस्य रूपं जानीयात्परमं प्रकृतेर्वपुः।
उदरं कुण्डमित्युक्तं योनिः पादौ तु पश्चिमे॥
(ख) कुण्ड तन्त्रोक्तमार्गेण निर्मायाथ सलक्षणम्।
रक्तमृच्छालिपिष्टाभ्यां भूषयदृक्प्रियं यथा॥
(ग) विधानमालायाम्–
आयुर्वृद्धौ तथा शान्त्यै कोटिहोम चरेन्नृप।
कोटिहोमात्परं नास्ति कर्मारिष्टविनाशने॥
न ततुल्य तथा राज्ञां महोत्पातविनाशनम्।
कोटिहोमे यथाशक्तिर्लक्षे वाऽप्ययुते तथा॥
प्रतिवर्ष प्रकर्तव्यं हवनं पुष्टिवर्धनम्॥

किसी के मत से दूसरा प्रकार–

मध्य नवमांश में दक्षिणोत्तर लम्बी क्रम से चार रेखा दे। इन चार रेखाओं में क्रम से सात कुण्ड बनेंगे। कुल अट्ठाइस कुण्ड होंगे। इनमें प्रत्येक कुण्ड का अन्तराल (मध्य) दो हाथ छः अंगुल का होगा।

अब अवशिष्ठ बहत्तर कुण्डों को आठ नवमांशों में विभक्त करे–

उसका प्रकार यह है कि–आठ नवमांशों में अलग–अलग दो-दो कुण्ड बनाने से सोलह कुण्डों के बाहर परिधि रूप से तीन-तीन कुण्ड फिर बन जाने से चौबीस कुण्ड हो जायेगें। इसी तरह पुनः उसी आठ नवमांशों के परिधि रूप से चार–चार कुण्ड बनने से बत्तीस कुण्डों की व्यवस्था से गिनती में सौ कुण्ड हो जाते है।

इन कुण्डों का अन्तराल दो हाथ छः अंगुल ही होगा। ऐसी परिस्थिति में कुण्डों के समीप बैठने से उन कुण्डों की ज्वाला आदि द्वारा महान् क्लेश होगा। अतः यह पक्ष हेय ही है।

(१) इन कुण्डों में अग्निस्थापन नैर्ऋत्य कुण्ड में सर्वप्रथम करे। वही आचार्य कुण्ड होगा। क्योंकि कोई भी कुण्ड अत्यन्त मध्य स्थित न होने के कारण प्रागुदपवर्ग प्रचारानुरोध से नैर्ऋत्य कुण्ड ही आचार्य कुण्ड स्वीकृत न्यान्य प्राप्त है। यह शान्तिमयूख आदि निबन्धों का जोरदार मत है। प्रयोगपारिजातकार तो किसी तरह मध्य कुण्ड मानकर उसी को आचार्य कुण्ड कह उसी में सर्वप्रथम अग्नि स्थापन करना चाहते है। यह ठीक नहीं। अतः नैऋत्यकुण्ड से ही सर्वप्रथम अग्नि प्रणयन करे।

(२) कुछ आधुनिकों का मत है कि-

कुर्यात्कुण्डानि चत्वारि प्राच्यादिषु विचक्षणः।
पञ्चमं कारयेत्कुण्डमीशानदिग्गोचरे॥

'आचार्य कुण्ड़ मध्ये स्याद् गौरीपतिमहेन्द्रयोः'। इन वचनों से ईशान आदि दिशा का कुण्ड आचार्य कुण्ड हो सकता है। क्योंकि इन वचनों का कोई बाधक वचन नहीं है।

पर यह कहना ठीक नही है। क्योंकि मत्स्यपुराणादि में प्रतिष्ठा आदि प्रकरण में पठित होने से वहाँ ही चरितार्थ होंगे।

शान्तिमयूखोक्त प्रकार से शतमुख कुण्ड निर्माण-

सौ हाथ समचतुरस्त्र मण्डप का त्रिभाग होजाने पर उस त्रिभाग के मध्य नवमांश में पूर्व दिया में-दक्षिण दिशा से उत्तर दिशा में(उदक् संस्थ) पाँच कुण्डों की एक पंक्ति लॅम्बी बनावे। इसी तरह पश्चिम दिशा में उद्क संस्थ-(दक्षिण से उत्तर) तीन पंक्ती और हो जाने पर उनमें भी पाँच-पाँच कुण्ड बनेगें। उस तरह बीस कुण्डों की व्यवस्था हो जायगी।

इन पंक्तियों का अन्तराल आठ हाथ सात अंगुल होगा और प्रत्येक कुण्ड का अन्तराल साढ़े सात हाथ सात अंगुत होगा।

अब अवशिष्ट अस्सी कुण्डोंकी व्यवस्था बतलाते हैं-

उस मण्डप में बचे आठ नवमांशों के फ्री मध्य में दो दो कुण्ड और बनने से सोलह कुण्ड होंगे। फिर उन्ही आठ नवमांशो में बने दो-दो कुंडों के बाहर दिशा और विदिशा में आठ-आठ कुंड और तय्यार हो जाने से अस्सी कुण्डों की सुगमतया व्यवस्था हो जाती है। इस तरह सौ कुंड गिनती में आ जाते हैं।

(१) गौतमः-

कोटिहोमेषु नियमा बहवः सन्ति पार्थिव।
मौनं पद्मासनं ध्यानं हविष्यान्नं च भक्षणम्॥
स्थण्डिले शयनं गन्धताम्बूलादीनि वर्जयेत्।
मन्त्रान्तमुच्चरन् हुत्वा हविरुत्तानपाणिना॥
सन्त्यज्य विविधानेतान् ऋत्विजो वर्तयन्सदा।
दोषाद्क्रियासन्त्यागान् न होमफलमश्नुते॥

(२) कोटिहोमे त्वाचार्य प्रार्थने विशेषः-

त्वं मे यतः पिता माता त्वं गतिस्त्वं परायणः।
त्वत्प्रसादेन विप्रर्षे सर्वं में स्थान्मनोगतम्।
आपद्धिमोक्षाय च मे कुरु यज्ञमनुत्तमम्।
कोटिहोमाख्यमतुलं शान्त्यर्थं सर्वकालिकम्॥

दशमुख में पद्धति मत और किसी निबन्ध का मत-

पचास हाथ के समचतुरस्त्र मण्डप के नव भाग हो जाने पर उन नव भागों में क्रम से-कुंडों का निर्माण होगा। जैसे-मण्डप के निर्ऋतिदेश में-प्रथम कुंड, दूसरा-कुंडपश्चिम देश में, तीसरा कुंड-वायुकोण में, चतुर्थ कुंड-दक्षिण दिशा में, पाचवाँ कुंड-

मध्य के दक्षिण भाग के आधे हिस्से में और छठवाँ कुंड-मध्य के उत्तरार्ध भाग में होगा।

यहाँ यह बात आवश्यक बतला देना चाहिये कि-कुछ भाग पूर्वदिशा से और कुछ भाग पश्चिम दिशा से लेकर ही कुंड द्वय बनवाना चाहिये। अन्यथा कुंड बनने में बाधा पड़ सकती है।

सातवाँ कुंड-उत्तर दिशा में, आठवाँ कुंड-अग्निदिशा में नवमाँ कुंड-पूर्वदिशा में और दशवाँ कुंड ईशानकोण में होगा। इन कुण्डों में आचार्य कुंड नैर्ऋत्य दिशा का ही प्रागुदपवर्गप्रचारानुरोध से होगा। जिसे प्रथम कुंड शब्द से कहा गया है। नवग्रहयाग में तो सर्वप्रधान सूर्य के होने से मध्य का ही कुंड आचार्य कुण्ड होगा, यह शान्तिमयूखोक्ति ठीक है।

दशमुख शान्तिमयूख के मत में-

पचीस हाथ या पचास हाथ के समचतुरस्त्र मण्डप के नवभाग बराबर-बराबर के कर लेने पर पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशा का ज्ञान मात्र हो ऐसे मध्य नवमांश से बिल्कुल सटे चार कुंडों को बनावे। तात्पर्य यह है कि ये दिशाओं के कुंड मध्य नवमांश में ही अधिक रहेंगे और उनके बनाने की व्यवस्था ऐसी हो जिससे ब्राह्मण भी सुख से बैठ जाँय। और पूर्वदिशा के नवमांश में प्रधान वेदी होगी। बाकी बचे ७ नवमांशों में से छः में क्रम से छः कुण्ड बनवा दे। एक नवमांश बिल्कुल ही छोड़ दे। इस तरह दस कुण्डों की व्यवस्था होगी। इसी पक्ष को द्वैतनिर्णयसिद्धान्त संग्रह आदि निबन्धों ने भी लिखा है।

शतमुख मण्डप का निर्माण प्रकार-

सौ हाथ समचतुरस्त्र-पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशा से तैय्यार हो जाने पर उस मण्डप के चारों दिशाओं से सूत्रों द्वारा दस विभाग करने से प्रत्येक दस-दस हाथ परिमित सौ कोष्ठ होंगे। यह कुण्डरत्नावली और शान्तिसार का पक्ष है।

(१) प्राचीसूत्रमुदकसूत्र च दशधा विभज्य दश दश प्रागग्राणि दद्यात्। तेन दशहस्ताः शतं कोष्ठयः सम्पद्यन्ते। तेषां च मध्यं प्रसाध्य द्विहस्तकुण्डानि कुर्यात्। तानि चैकैकस्यां वीथ्यां दश दशेत्येव दशवीथी कुर्यादिति [लिखितकोटिहोमपद्धतौ]।

द्विमुख मण्डप और कुण्ड–

पचीस हाथ के समचतुरस्त्र मंडप का प्री भाग आठ हाथ आठ अंगुल करे। इस प्रकार नवभाग करने पर मध्य नवमांश में–पूर्व दिशा से और पश्चिम दिशा से कुछ हिस्सा लेकर उसके मध्य नवमांश में मिलाकर उसमें दो कुंड दक्षिणोत्तर बना देने से द्विमुख कुंड तैयार हो जायेंगे। इसमें आचार्य कुंड दक्षिण दिशा वाला होगा। वही प्रधान कुंड कहा जायेगा।

(१) क्रियासारे–

नारिकेलदलैर्वापि पल्लवैर्वाथ वेणुभिः।
आच्छाद्या मंडपः सर्वे द्वारवजे तु सर्वतः॥ शारदातिलके
वितानदर्भमाद्यैरलं कुर्वीत मंडपम्।
पुष्पमालाविदानाद्यं सर्वाश्चर्य मनोहरम्॥ गौतमीतन्त्रे
कृतपल्लव मालाद्यं वितानैरुपशोभितम्।
विचित्रवस्त्रसंछन्नं गुल्यस्तंभविभूषितम्॥ सिद्धान्तशेखरे
फलैर्नानाविधैर्भक्ष्यैर्दर्णेश्चारैरपि।
भूषितं मण्डप कुर्याद्रत्नपुष्पसमुज्वलम्॥

(१) मण्डपस्तं भविष्ये–

कालोत्तरेवस्त्रचन्दनपुष्पाद्यं वस्त्रचन्दनभूषिताः।
हयशीर्षपञ्चरात्रेदर्पणैश्चामरैघण्टेः स्तभान् वस्त्रैविभूषयेत्॥

(२) कुंडकल्पलतायाम्—

कोटिहोमं प्रकृत्यहस्तैश्चतुर्भिस्तन्मध्ये कुण्डं कार्य समन्ततः। तस्य चाकारविशेषानुक्तेः।

श्रौत और कर्मों में कुंड तथा मंडप मुख्य हैं या गौण स्मातादि—

श्रौत—स्मार्त और तान्त्रिक ये तीन प्रकार के कर्म हैं। पौराणिक कर्म तान्त्रिक में ही अन्तर्भूत हैं। पौराणिक कर्म को पृथक् मानने वाले चार प्रकार के कर्म मानते हैं।

श्रौत और स्मार्त कर्म के प्रतिपादक आश्वलायन आदि श्रौत सूत्र गृह्यसूत्र मनु आदि स्मृति और गौतमादि धर्मसूत्र भी हैं। इनमें कुंड-मंडप की परिभाषा देखने में नहीं आती है। परन्तु मंडप का यज्ञशाला शब्द से और कुंड का वेदी शब्द से व्यवहार होता है।

वेदं कृत्वा वेदिं करोति वेद्यामिव हुताशनः।
अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः॥

इत्यादि स्थलों में वेदी शब्द से कुंड का ग्रहण है। और यज्ञशाला, पत्नीशाला स्थलों में मंडप के लक्षण से यज्ञशाला आदि का लक्षण भिन्न है। तान्त्रिक तो समचतुरस्र चारद्वार, चारउपद्वार और मध्य में ऊँचा मंडप कहते हैं। वैदिक तो एक द्वार, पताका आदि रहित तथा मध्येन्नति रहित मंडप बनाते हैं। योनी गर्त आदि सहित कुंड तान्त्रिकों को अभिमत है। वैदिको को कुंड में योनि गर्तादि अभिमत नहीं है।

कुण्डमण्डप की आवश्यकता

नित्यं नैमित्तकं हित्वा सर्वमन्यत्समंडपम्—

कोटिहोमपद्धति और मत्स्योक्त वचन से काम्यकर्म में मंडप आवश्यक है। नित्य तथा नैमित्तिक कर्म में ऐच्छिक है। नित्यं नैमित्तिकं होम स्थण्डिले वा समाचरेत्। शारदातिलक मत से नित्य

और नैमित्तिक कर्म स्थण्डिल या कुंड में करें, परन्तु काम्यकर्म को कुंड में ही करें।

कर्मभेद उनके उदाहरण विभिन्न मतों से–

कर्म तीन प्रकार के हैं, नित्य नैमित्तिक और काम्य। अहरहः सन्ध्यामुपासीत पञ्चयत्रान्न हापयेत्। यावज्जीवमग्रिहोत्रं सुहयात्। दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत् इत्यादि नित्यकर्म हैं। षण्णवतिश्राद्धादि नैमित्तवश किये जाते हैं। नित्य और नैमित्तिक कर्म न करने से प्रत्यवाय होता है। जिस कर्म को न करने से प्रत्ययाय न हो और करने से वृद्धि हो उसे काम्य कहते हैं। जैसे–तीर्थयात्रा, व्रत, दान, यज्ञ, शान्तिके तथा पौष्टिक–यह मीमांसक मतानुसारिकर्मकाण्डियों का सिद्धान्त है।

यज्ञो दान तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च॥
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् (भ. गी. अ. १८)

इत्यादि वचन से सिद्ध है कि फलाभिलाषी न होकर क्रियमाण काम्यकर्म भी निष्काम कर्म होते हैं। यह वेदान्तियों का सिद्धान्त है।

कुण्डमण्डप का प्रयोजन–

तीन प्रकार के कर्म होते हैं–दृष्टफल, अदृष्टफल और दृष्टफलक। वृष्टिाकामः करीयां यजेत इत्यादिश्रुतिसे विहित कारोरेष्ट्यादि वृष्टिरूप ऐहिक फल का जनक होने के कारण दृष्टफलक कर्म है। यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहुयात्। इत्यादि विधिबोधित अग्निहोत्रादि अदृष्टफलक कर्म है। दध्नेन्द्रियकामस्य जुहुयात् इत्यादि इन्द्रियकामना के लिये अग्निहोत्रविधि दृष्टादृष्टफलक है। अग्निहोत्रविधि स्वत्वरूप से अदृष्टफल को दधिरूप गुणांश से दृष्ट इन्द्रियफल को भी उत्पन्न करता है। प्रश्न–प्रतियोगी और अभाव

का विरोध होने के कारण दृष्ट और अदृष्ट का एकत्र समावेश कैसे होगा। उत्तर–हम दृष्टादृष्ट का एकत्र समावेश नहीं कहते हैं किन्तु दध्नेन्द्रियकामस्य जुहुयात् यह गुणाविधि दृष्टादृष्टफलक है। इतना ही कहते हैं, यह विरुद्ध नहीं है। घट और घृध्वंश दोनों का कारण जैसा दण्ड है। इसी प्रकार कुण्ड और अदृष्ट उभय फलक हैं। वप्र–र्गतादि अंश से हवि का सम्यक् पाक होता है और होताओं को ज्वाला आदि सम्बन्ध नहीं होता। इसलिये कुण्ड दृष्टफलक है और नहीं भी योनी, कण्ठ आदि अंश से अदृष्टफलक भी है वहाँ दृष्टफल सम्भव नहीं है। विधिबलात् नाभ्यादि निर्माण होता है। अतः स्वर्गादि अदृष्टफल की वहाँ कल्पना की जाती है। स स्वर्गः सर्वान् प्रत्यविष्टत्वात् इत्यादिशास्त्र से अश्रुतफल में स्वर्गफल माना जाता है एवं मण्डप भी आतप वर्षादि का निवारक होने से दृष्टफलक है और स्तम्भपरिमाण, स्तम्भनिवेश का प्रकार विशेष इतर दारु का सन्निवेशप्रकारविशेष इत्यादि नियमांश से अदृष्टफलक भी है। जैसे–ब्रीहीनवहन्ति यहाँ पर अवहनन विधि तण्डुलनिष्पादक होने के कारण दृष्टफलक है और अवहनन से ही निष्पादक करना नखविदलनादिना नहीं करना इत्यादि नियमांश से अदृष्टफल भी है।

मण्डप का लक्षण–

मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः–अमर०। यद्यपि मण्डपशब्द सामान्य जनाश्रयवाची है। तदनुसार उत्सार्थ गृहमण्डपानम्। लतामण्डपः। सभामण्डपः। इत्यादि प्रयोग भी मिलते हैं। तथापि प्रकृतोपयोगी तान्त्रिक परिभाषा सिद्ध मण्डप लक्षण कहते हैं–पञ्चरात्राद्युक्तरचनावत् यज्ञायनत्व मण्डपस्य लक्षणम्। पञ्चरात्राद्युक्त रचनावाला यज्ञ का आयतन मण्डप होता है। विशेषण न कहें तो वैदिक–यज्ञशालादि में अव्याप्ति होगी और विशेष न कहें तो देव प्रसादादि में अतिव्याप्ति है, इसलिये दोनों आवश्यक है।

मण्डप का स्वरूप–

मण्डप दो प्रकार का है–स्थिरस्वास्तुरूप और चलवास्तुरूप। प्रतिष्ठाद्यै कैककर्मोपयुक्तोऽस्थिरद्रव्यनिर्मितश्चलः। शिलेष्टकादिनिर्मितः पर्यायेण बहुकर्मोपयुक्तः स्थिरमण्डप इत्युच्यते। अस्थिर द्रव्य निर्मित चल और स्थिर द्रव्य निर्मित अचल मण्डप होता है। गर्भागारस्य पुरतः सुजनासीति मण्डपः। तत्र नन्दी तु संस्थाप्यो देवस्याभिमुखः स्थितः। तदग्रे नवरङ्गाख्ये मण्डपं रचयेत्सुधीः। तत्पुरो बलिपीठं च तदग्रे ध्वजदण्डकम्। तत ईशानदिग्भागे यागमण्डपमारचेत्। स्थिरतास्तुविधानेन शिवयागादिसिद्धये। नात्र दार्वादिनियमो भविता द्वारमेकमुदीरितम्। तदा-तदा ग्रागकाले तोरणं स्यात् पृथक्-पृथक्। यद् द्रव्यं देवसदनं तद्द्रव्येणैव कारयेत्। नात्रोपयुक्तत्वदोषो भवितात्र स्वतः क्वचित्। तत्तत्कर्मसु पार्थक्याद्-द्वास्तुहोमादिकं चरेत्। (क्रियासार)

मण्डप प्रकार–

तत्तत्कर्मोपयुक्तद्वादशहस्तादि विस्तारवान् प्रान्ते द्वादशभिर्मध्ये चतुर्भिश्चस्तम्भैर्विधृतः मध्योच्छ्रितश्चतुर्दिक्षु क्रमावतीर्णपटलश्चतुरस्यचतुर्दिक्षु द्वार-तोरणवान् यथोक्तदारुसन्निवेशवान् किञ्चिदुच्छ्रितभूत भूमिकस्तान्त्रिकाभिमतो मण्डपः।

कुण्ड स्वरूप–

तत्तत्कर्मानुरूपपरिमाण्वन् मेखला-गर्त-कण्ठ-योनि-नाभिमत् अग्नायतनं तान्त्रिकाभिमतं कुण्डमुच्यते।

स्थण्डिलस्वरूप–

हवनकर्मपर्यासो वालुकादिद्रव्यैरास्तृतश्चतुरेकाद्यङ्गुलोत्सेधो भूभागः स्थण्डिलम्। इसमें कुण्डधर्म मेखलादि कोई मानते हैं कोई नहीं मानते हैं। अतः मेखलादि कृताकृत हैं।

न्यूनाधिकप्रमाण में भी कुण्ड और मण्डप कर्मोपयोगी होते हैं या नहीं–

शास्त्र में कुण्ड का प्रमाण होमसंख्या के अनुसार विहित है। उसमें भी मुष्टि मात्रकितं कुण्ड शतार्धे सम्प्रचक्षते (शारदा०) एकहस्तमिदं कुण्ड शतार्धे सम्प्रचक्षते (शारदा०) यह दो प्रकार विहित है। सिद्धान्तशेखर में त्रिकरं व्यवस्था कोटिहोमपद्धतिकार ने की है–एतत् शीघ्रदाहिघृतादिद्रव्यहोमविषयम्। तिलयवादि-स्थूलद्रव्यहोमे तु होमसंख्याविशेषाम्नातमेव कुण्ड ग्राह्यम्। घृतादि होमद्रव्यमे अल्पपरिमाण और स्थूलद्रव्य में अधिक परिमाण का कुण्ड होता है। यह व्यवस्था विकल्प जहाँ दो वचन का तुल्यवलविरोध हो वहाँ माना जाता है। तुल्यबल विरोध विकल्पः यह शास्त्रसिद्धान्त है। वह विकल्प दो प्रकार का है व्यवस्थि-विकल्प और तुल्यविकल्प। जहाँ व्यवस्थापक कोई हो उसको व्यवस्थित कहते हैं। जहाँ व्यवस्थापक न हो उसको तुल्य कहते हैं। उदिते जुहोति अनुदिते जुहोति। यह दो वाक्य हैं। प्रथमश्रुति से सूर्योदयानन्तर अग्निहोत्र विहित है और द्वितीयश्रुति से सूर्योदयात् प्राक् सिद्ध है। ये दोनों श्रुतियाँ अग्निहोत्र विधायक नहीं है। अग्निहोत्र तो यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहुयात्–इसी से सिद्ध है, किन्तु अग्निहोत्र का अनुवाद करके तनङ्गभूत काल विधायक ये श्रुति हैं। इसीलिये इनको गृणविधि कहते हैं। यद्यपि यहाँ विधिवाचक लिङ्गादि नहीं है। तथापि लट्का लिङ्गत्वेन विपरिणाम होता है इन दोनों श्रुतियों का परस्परविरोध होने पर दोनों तुल्यबल हैं, अतः विकल्प का आश्रयण होता है। वह भी जिनके सूत्र में उदितहोम विहित है उनको उदित होमी होना चाहिये और जिनके सूत्र में अनुदिनहोम विहित है। उनको अनुदित होम करना चाहिये। यह व्यवस्थित विकल्प है। आतरात्रे षोडशिनं गृह्णाति। नातिरात्रे षोडशिनं गृह्णाति। इत्यादि में व्यवस्थापक न होने से तुल्यविकल्प है। अतः अतिरात्रयाग में षोडशिग्रह ग्रहण ऐच्छिक है। प्रकृति में

कुण्ड के विषय में न्यूनाधिक व्यवस्थित परिमाण प्रतिपादक वाक्यों में व्यवस्थापक गुरुलघुद्रव्यादि हैं अतः विकल्प माना जाता है। इस प्रकार यावत्संख्याक होम में यावत्परिमाण कुण्ड विहित है वहाँ उससे न्यूनाधिक परिमाणवाला कुण्ड कहा जाता है। एतादृश न्यूनाधिक परिमाण कुण्ड का भी कहीं कहीं उपयोग होता है। न्यून संख्योदिते कुण्डेऽधिको होमो विधीयते। अनुक्तकुण्डे न्यूनस्तु नाधिके शस्यते क्वचित् (कोटिहोमपद्धतिः) न्यूनसंख्यावाले कुण्ड में अधिक हवन होता है। अधिक संख्यावाले कुण्ड में न्यून हवन नहीं होता है। इस वचन से न्यूनकुण्ड में अधिक होम शास्त्रकारों को अभिमत है यह सिद्ध है। इसी प्रकार अधिक कुण्ड में न्यूनहोम भी कहीं अभिमत है कोटिहोमपद्धति में-

न्यूनसंख्येऽपि स्थूलद्रव्यपरिमाणाधिक्यादावधिकसंख्योक्तमपि कुण्ड भवति। अर्थात्परिमाणम्-इति कात्यायनोक्तेः। न्यूनसंख्याहोम में भी अधिक-होमसंख्यावाला कुण्ड होता है। यह लिखा है। कुण्डरत्नावली में भी आहुति तारतम्य से कुण्डविस्तार कहकर अन्त में कहा है कि-कुण्ड व्यवस्था द्रव्य के स्थूल और सूक्ष्ममान से अपनी बुद्धि से विद्वानों को करनी चाहिये। इससे सिद्ध होता है कि-चर्वादिगुरुद्रव्यहोम में अधिक प्रमाण भी कुण्ड ग्राह्य है। शतोर्धेरत्नि स्यात्-इत्यादि वचन से शताधशत सहस्रादि हवन में कुण्ड परिमाण कितना-कितना हो इस शंका को दूर करने के लिये 'न्यूनसंख्योदिते' यह वचन है। इसलिये नवशत अष्टशतादि अनुक्त कुण्डहोम सहस्रहोमोदित कुण्ड में नहीं करना किन्तु पूर्वकथित-शतसंख्याकहोमकुण्ड में ही करना यह सिद्ध होता है। इस प्रकार 'न्यूनसंख्योदिते' यह वचन अनुक्त कुण्डक आन्तरालिक होम में न्यून कुण्ड का विधायक हुआ। तब यही वचन अधिक कुण्ड में गुरुद्रव्यक न्यून होम का निषेध नहीं कर सकता है। क्योंकि दो कार्य का विधान करने से वाक्य भेद दोष होता है। पूर्वार्द्ध से न्यून कुण्ड

में अधिक होमविधान और उत्तरार्द्ध से अधिक कुण्ड में न्यून होम का निषेध। विधानद्वय करने में अनुक्त कुण्डों न्यूनस्तु यह अनुक्त कुण्ड स्वरूप जो होम का विशेषण है, यह बाधित होता है। कदाचित् कहें कि–

न्यूनानिधिकं न कर्तव्यं कुण्ड कुर्याद्धिनाशनम् परशुरा०) इस वचनान्तर के रहते अधिक कुण्ड उपादेय नहीं हो सकता है, तो इसका उत्तर यह है कि यह वचन भी प्रकृतार्थ साधक नहीं है। किन्तु इस वचन का हो नाधिकाङ्ग लक्षण रहित कुण्ड निषेध में ही तात्पर्य है। इस वचन के पूर्व–

'आयामखातविस्तारायथातथं तथातर्थम्' यह वचन है और 'खातेऽधिके भवेद्रोगी ही ने धेनुधनक्षय' यह उत्तर वचन है। इस प्रकार पूर्वापरपर्यालोचनया अलक्षण कुण्ड का निषेधक ही परशुराम वचन है, कि अधिक कुण्ड में अल्पाहुति का नहीं यह स्पष्ट है।

कोई विद्वान्–अनुक्त कुण्डो न्यूनस्तु नाधिके शस्यते क्वचित्। यहाँ क्वचित् शब्द से अधिक कुण्डमात्र में न्यूनहोम का निषेध करते हैं परन्तु यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि चार हाथ के कुण्ड में जिसमें दो–दो हाथ के चार भुजमान हैं वहाँ पर 'खातं क्षेत्र समं प्राहुः' इत्यादि शास्त्र से दो हाथ के खात करने पर कुण्डावकाशरूप क्षेत्रफल आठ हाथ का होता है, एवं द्वित्रिहस्तादि कुण्ड में सर्वत्र क्षेत्रफल के आधिक्य होने पर भी द्विहस्त त्रिहस्त चतुर्हस्त कुण्ड यही व्यवहार प्रामाणिक कहते हैं, विचार करने पर तत्तद्धोम के प्रति ये भी अधिक कुण्ड हैं। तो क्वचित् शब्द से यदि अधिक कुण्डत्वावच्छिन्न में न्यूनहोमसामान्य निषेध माना जाय तो इन कुण्डों का भी निषेध हो जायेगा। कोटिहोमपद्धति में स्पष्ट कहा है कि–यद्यपि द्विहस्तत्रिहस्तादिकुण्डेषु हस्तमात्रमेव खातं युक्तं अन्यथा क्षेत्रफलाधिक्यात्। तथापि वचनादधिकमपि खातं न दोषाय, आगे चलकर लिखा है–

एतेन कुण्डभूतलमेव क्षेत्रफलमितिवदन्तः परास्ता। गर्तस्य न्यूनाधिक्येऽपि भूतले प्रमाणाधिक्यन्यूनत्वाद्य संभवात्। सिद्धस्य भूतलस्य फलत्वायोगाच्च साध्य। स्त्ववकाशः फलत्वेनाभ्युपगन्तुं युक्तम्॥ न च ज्योतिष्टोमेन स्वर्गकामो यजेतेत्यादौ सिद्धस्यम्। स्वर्गस्य कथं फलत्याभ्युपगम इत्याशङ्कनीयम्॥ तत्रापि साध्यस्य कर्तृस्वर्गसम्बन्धस्यैव फलत्वमिति सन्तोष्टव्यम्।

कुण्डभूतल ही क्षेत्रफल है, यह भी ठीक नहीं है। जिस प्रकार द्वित्रि हस्तादि कुण्ड में क्षेत्रफल के आधिक्य होने पर भी न्यूनहोम वचनबल से होता है। इसी प्रकार चर्वादिगुरुद्रव्यहोम में भी अधिक कुंड ग्रहण शास्त्रकारों को अभिप्रेत है। इससे सिद्ध हुआ कि न्यूनाधिक कुण्ड भी वचनबल से कहीं कर्मोपयोगी होता है।

एवं न्यूनाधिक मण्डप भी कर्मोपयोगी होता है। विशुद्धस्तप्रमाणेन मण्डपंकूटमेव वा (कोटिहोमप०) लक्षणरहित मण्डप को कूटमण्डप कहते हैं। यह कूटमण्डप स्वलक्षण मण्डप के अभाव में है।

सलक्षण मण्डपासम्भवे छायामात्रं कर्तव्यम्। तत्र अपूर्वप्रयुक्तत्वाद्धर्माणां यवेष्विव व्रीहिधर्माः मण्डपपूजादयोऽप्यत्र भवन्ति।

(कोटिहोम प०)।

अलक्षण मण्डप में भी यवों में व्रीहीधर्म के सदृश मण्डप पूजादि होते हैं। तात्पर्य यह है कि–दर्शपूर्णमासयाग में पुरोडाश के

लिये व्रीही संस्कार के लिये-व्रीहीन् प्रोक्षति। व्रीहीन्वहन्ति। इत्यादि श्रुति हैं। व्रीही के अभाव में यव गृहीण होते हैं। वहाँ यवों का भी प्रोक्षणादि संस्कार हो या नहीं इस संशय में 'व्रीहीन् प्रोक्षति' इत्यादि विधिवाक्य में यव का ग्रहण नहीं है। अतः यव का प्रोक्षणादि संस्कार न होना चाहिये ऐसा पूर्वपक्ष प्राप्त हुआ। सिद्धान्त यह है कि ब्रीही प्रतिनिधियों का भी प्रोक्षणादि संस्कार होता है। असंस्कृत द्रव्य याग योग्य नहीं होते हैं और अङ्ग कर्म से जनित अपूर्वप्रधान कर्मसाध्य परमापूर्व को उत्पन्न करते हैं वही परमापूर्व धर्म पुण्य इत्यादि शब्दों से कहा है। यदि अङ्गुजन्य अपूर्व लुप्त कर दिये जाये तो परमापूर्व विकल होगा। परमापूर्व विकल होने से स्वर्गादि इष्ट फल का सार्थक न होगा। इसलिये अङ्गापूर्व के लिये यवों में भी प्रोक्षणादि संस्कार होता है। इसी प्रकार मण्डप-प्रतिनिधित्वेन उपादीयमान् छायामण्डप में भी अपूर्वोत्पत्ति के लिये वास्तुहोम मण्डपपूजादि होते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि छाया मण्डप भी कर्मोपयोगी है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि अलक्षण-मण्डपनिन्दा परक वचन सलक्षण मण्डप सम्भव में अलक्षण मण्डप निषेधपरक हैं।

स्थण्डिल का स्थान-

कुण्डमेवं विधं न स्यात् स्थण्डिले वा समाचरेत्-इत्यादिप्रमाण से स्थानापन्नं स्थण्ड्रिल का भी वही स्थान है जो कुंड का है। तत्स्थानापन्नस्तद्धर्म लभते स्थानधर्माणां स्थाण्यतिदेशः। कुण्ड-स्थानापन्न स्थण्डिल भी कुण्डस्थान में ही होता है स्थानान्तर में नहीं। सीमाभावे पूतीकानभिषुणुयात्-इत्यादि स्थल में सोम स्थानापन्न पूतीकाओं में भी क्रय आप्यायनादि सब धर्म होते हैं। अतः हवन प्रधानकर्म में एक कुण्ड पक्ष में मध्य में कुण्ड होना निश्चित है। तो कुण्डाभाव में स्थण्डिल भी मध्य में ही होगा। यदि

मध्य में कुण्ड है और १००/२०० आहुति भी मण्डप में करना है। तब भी मध्यस्थित कुण्ड में अधिक प्रमाण में भी वह होना उचित है, कुण्डापार्श्व में स्थण्डिल निर्माण कर नहीं।

कुण्डसिद्धि के अनुसार कुण्डों का नाप–

(क) एक हाथ के कुण्ड में चौबीस अंगुल होता है।
(ख) दो हाथ के कुण्ड में चौतीस अंगुल होता है।
(ग) तीन हाथ के कुण्ड में इक्तालीस अंगुल पाँचयव होता है।
(घ) चार हाथ के कुण्ड में अड़तालीस अंगुल होता है।
(ङ) पाँच हाथ के कुण्ड में तिरपन अंगुल पाँच यव होता है।
(च) छः हाथ के कुण्ड में अट्ठावन अंगुल छः यव होता है।
(छ) सात हाथ के कुण्ड में तिरसठ अंगुल चार यव होता है।
(ज) आठ हाथ के कुण्ड में छाछठ अंगुल सात यव होता है।
(झ) नव हाथ के कुण्ड में पचहत्तर अंगुल होता है।
(ञ) दस हाथ के कुण्ड में पचहत्तर अंगुल सात यव होता है।

(१) पौष्कलसंहितायाम्–

ना कुंड हवनं यस्मात्सिद्धिकृन्मन्त्रयाजिनाम्।
तस्माकुण्ड सदा कार्यं सोत्रं वा जङ्गमं स्थिरम्॥

(२) उत्तरतन्त्रे–

नवैकादशकुण्डानि कुर्यादुत्तममण्डपे।
चतुष्कुण्डी मध्यमे स्यात्कानिष्ठेककुण्डकम्॥

पुरश्चर्यार्णवे–

नव पञ्चाथ चैकं वा कर्तव्यं लक्षणान्वितम्।

(३) क्रियासारे–

दिक्षु द्वाराणि चत्वारि कुर्यान्मण्डप मध्यतः।

(४) कुंडकल्पलतायाम्–

वर्जयेन्निम्बकाष्ठानि शकरार्क भवानि च।
अगस्तिशिग्रुवृक्षोभैर्मण्डप नैव कारयेत्॥

(५) यवादूनं प्रमाणं तु मण्डपादौ त चिन्तयेत्।
सूत्रस्याधो विलीयन्ते यूकालिक्षादयस्तथा॥

(६) पञ्चमेखला पक्ष में मेखलाओं को यथारुचि रंग द्वारा सुशोभित करे। कोटिहोमपद्धति।

(७) ध्वजापतादि अधिक भी मण्डप की शोभा बढ़ाने में रख सकते हैं। दश दिक्पालों की ध्वजा और पताकाओं से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है यह कोटिहोम पद्धतिकार लिखते हैं।

(८) पवमानपद्धौ–समुद्रगा नदीतीरे सङ्गमे वा शिवालये। आरामे विष्णुगेहै वा देवखातादिसन्निधौ। गृहस्येशानभागे वा गङ्गातीरे विशेषतः। स्थण्डिले पर्वताग्रे वा गृहाग्रे वा गृहाङ्गणे॥ मण्डपस्तु प्रकर्तव्यः शुभलक्षणलक्षितः। गृहाग्रेयदि कुर्वीत तत्सभा कुंड परित्यजेत्॥

(९) अर्धचन्द्रकुण्ड–चतुरस्रक्षेत्र का चौबीस हिस्सा कर सवा दो अंगुल पूर्व दिशा में सवा दो हाथ पश्चिम दिशा में छोड़कर दक्षिणोत्तर रेखा देने से अर्धचंद्र कुण्ड बन जाता है।

दूसरा प्रकार–चतुरस्र कुण्ड में नव रेखा कर आदि और अन्त में एक–एक भाग को छोड़कर दक्षिणोत्तर रेखा द्वारा देने से तैयार हो जाता है।

(१०) पद्मकुंड–बारह अंगुल चार यव का एक वृत्त बनाकर उसके बाहर पन्द्रह अंगुल एक यव और दो यूका का दूसरा वृत्त बनाकर रेखा द्वारा कुंड बन सकता है। या छः छः अंगुल के पाँच वृत्त बनाकर पद्म बनावे। देखिये–विशेष बात मेरे द्वारा 'कुण्ड–निर्माण स्वाहाकार पद्धतिः' में।

(११) अरणी की लम्बाई चौबीस अंगुल, चौड़ाई छः अंगुल और ऊँचाई चार अंगुल होती है।

(१२) जिस लकड़ी में रज्जू लपेट कर मन्थन किया जाता है। उसका नाम चात्र है। वह बारह अंगुल का होता है।

(१३) चात्र को रोकने के वास्ते छिद्र युक्त जो ऊपर से लगाया जाता है। उसका नाल ओविली है। उसका भी प्रमाण बारह अंगुल होता है।

(१४) जिस रस्सी से मन्थन किया जाता है। उसका नाम नेत्र है।

(१५) चात्र के नीचे के हिस्से में उत्तरार्णि से पृथक कर जो कील लगायी जाती है। वह आठ अंगुल की होती है। उसका नाम प्रमन्थ है।

(१६) मन्थन के समय में अरणी को पृथ्वी पर केवल न रखकर कंबल मृग चर्म आदि के ऊपर रखने का विशेष नियम है।

सूर्यपीठ[1]

(ग्रहों की आकृति बनाने का प्रकार)

एक अंगुल, सात यव और छः यूकाको प्रकाल से नापकर मध्यसे वृत्त बनावे तो द्वादशांगुलात्मक सूर्यका क्षेत्रफल होगा। १ अङ्गुल, ७ यव, ५ यूका और ४ लिक्षा का वृत्त बनावे। यह लघुपीठमाला का मत है।

१-लघुपीठमालायम्-सूर्यस्यार्काङ्गुलं वृत्तमेकाद्रीषुचत्: कृतम्। तद् व्यासार्ध तेन सम्यक् जायते नेत्रसुन्दरम् ॥ १ ॥ एक १ अद्रि ७ इषु ५ चतु ४ र्भि: क्रमेण अंगुल-लिक्षाभिर्व्यासाद्धर्म। तद्विगुणो व्यास: ३।७। चान्द्र सिद्धाङ्गुल वेदकोणं वेदाद्रिपक्षयुक् ॥ २ ॥ वेद ४ आद्रि ७ पक्ष २ बुधिरादृतम् ॥ ३ ॥ त्रि ३ ख० शून्य अम्बुधम ४ श्चत्वारोङ्गुलाद्या: तै आ दृतं भौमस्य चतुरङ्गुलं फलं त्रिकोणं पीठं त्रिकोणे त्रयो-भुजा: समप्रमाणा:। तत्राधस्तना भूमि: उपरितनी भुजौ तन्मानं ३।०।४ चतुयंवान्तरं वेदाङ्गुलं स्यात्त भुजद्वयम्। ऊर्ध्वाधस्तद्वद्धिश्च प्रत्येकं स्याच्चतुर्यवा। भूमि: षडयववेदाभ्यां भुजाभ्यां षट्त्रिकोणम् तद्युक्तं बाणसमयं बुधपीठं प्रचक्षते ॥ ४ ॥ तर्काङ्गुलं गुरौ: पीठ दस्रानलभुजद्वयम्॥ ५॥ दस्रौ द्वयङ्गुलौ द्वौ भुजौ अनली व्यङ्गुलौ द्वौ भुजौ कोटिसंज्ञतत्रैकभुजैककोट्योर्धात: फलं षडुल गुरुपीठम्॥ शुक्रस्य पीठपञ्च स्रं कु न गेषु मि: व्यासेन वृत्ते पूर्वादिसमाज्या: पद मन्धगा। प्राञ्छिते बाह्यतो वृत्ते नवाङ्गुलफल मतम.॥ ६ ॥ वेदा ब्धि वेदा-व्वि भूमिधनु: पीटं शनेभ्रमात मध्यस्थचतुरस्रस्य मानहीनात् षडङ्गुलम। चतुरस्रे त्वपते चतुर्धनु: एकं धनु: फलं ग्राह्यं हीत्वा धनुस्त्रिकम् ॥ ७ ॥

वेदाङ्गुलैर्वेदकोणे पूवतो रेखयोरिह तिर्यग ह्यग्यम्भोधिवृद्धिरधो बाह्वधमानत:। वृत्तेर्द्धे राहुपीठं स्याच्छूपं सिद्धङ्गुलं शुभम् ॥ ८ ॥ प्रथमत एकं चतुरस्र तत्र भुजमानं ४। ०।० तदैव कोटिमानं ४।०।०। यत्र पूर्वयो रेखयो: तिर्यग् दक्षिणोत्तर द्वि २ अग्नय: त्रय: अंभोधय: ४ दक्षिणे अर्धम् १।१।६। उत्तरे अर्धम्-१।१ ।६। अंगुलयवयूकानां वृद्धि:। अधो भूरमर्धं कृत्वा वृत्तद्वयं कार्यम्। चोपरिभूमि: ६। ३। ४ अधोभूमि: ४। ० । ० । अधोवृत्तव्यासार्धम्-१ ।०।०। तद्विगुणौ व्यास: २।०।०। पूर्वापरौ गतौ

चन्द्रपीठ

चार अङ्गुल, सात यव और दो यूका का गज लेकर पूर्वकी तरफ एक लम्बी सीधी रेखा दें। उतनी ही दक्षिण दिशा की तरफ, उत्तर की तरफ तथा पश्चिम दिशा की तरफ देने से चतुरस्त्रपीठ बन जाता है।

रूप नारायण मत से—३ अंगुल, ७ यव, २ यूका और ४ लिक्षाका एक गोलाकार वृत्त बनावे। तदनन्तर उस वृत्त के ठीक मध्य से दक्षिणोत्तर ७ अङ्गुल, छः यव और ५ यूका की एक लम्बी रेखा दे। ऐसा करने से दो वृत्तार्ध होंगे। उसमें से पश्चिम हिस्से के वृत्तार्ध को मिटा देने से चौबीस अङ्गुलात्मक अर्धचन्द्र हो जायगा।

बाहूकोटिरर्द्धाङ्गुला भवेत्। ऊर्ध्वमेकाङ्गुल हित्वा-हित्वा चाधः शरागुंलम्। चतुरेकांगुलयव लग्नास्यं व्यस्त्रभारभ केतोर्ध्वजा कुण्ड स्याद् गजागुऽलमित शुभम् ॥ ६ ॥ यावा भूमिः सप्तविंशाङ्गु-लाब्धियावावृत्तार्द्धावृत्ताऽन्यातिये: स्यात्। त्रयोविंशस्तत्र लम्बाङ्गुलश्च राहोः शूर्पे कुण्डमेत द्विचित्रम्॥ प्रकारान्तरपक्ष:-सिद्धाऽङ्गुलो भवैल्लम्बः पश्चाद् भूमिर्नखाङ्गुला। पूर्वाऽविंशतिः प्रोक्ता शूर्पे स्यात् ऋजु कोणके॥ इत्येनेन पश्चाद् वृत्तं नास्तीति ध्वानितम्।

संग्रहाऽर्द्धे साधरामेण चापेन्तर्ज्याहः स्याद् वृत्तपादो दिगंकात्।
सूत्राद्रोद्राद् बाह्यमौर्व्यर्हमेवं वृत्तं दद्याज्ज्यास्पृगेवं परार्द्धम्॥
इषुवेदमितेन दीर्घदोष्णा गजदोष्णा लघुतापि च त्रिषष्ठिः।
जिनलम्बगणेन वार्द्धषट्त्रि भुप्रचार्धात्पूवदन्ति केतुकुण्डम्॥
एकेन युग्मत्रिभिरङ्गुलीभिः परेणं धृत्या च मिलेन दोष्णा।
सुदीर्घवेदास्त्रमुशन्तिकुण्डं निगद्यतेऽथो द्विविध शराभम्॥

नोट—देखिये-विशेष बिर्णयसिन्धु-सटीक कृष्णभट्टी पृ०१०६१ और लिखित ग्रहपीठमाला की टीका में भी देखें।

मंगलपीठ

तीन अंगुल और चार यूकाको गज से नापकर उत्तर की तरफ एक सीधी रेखा दे। उस रेखाके अन्तिम सिरों से अर्थात् दोनों कोनें से अलग-अलग एक-एक टेढ़ी रेखा उतनी देने से मंगलपीठ बन जाता है या एक यूका, ५ यव और दो अंगुल लम्बी दक्षिणाग्र रेखा दे। (दक्षिणाग्र या उत्तराग्रकरे-यह संस्काररत्नमाला का मत है।)

मंगलपीठ का दूसरा प्रकार—३ अंगुल ४ यव और छः यूका की एक लम्बी रेखा उत्तरदिशा की तरफ दे। तदनन्तर वायव्यकोणसे एक टेढ़ी रेखा २ अंगुल, ४ यव और छः यूका की ठीक दक्षिण दिशामें दे। वैसे ही ईशानकोणसे जो रेखा दे वह भी दक्षिण दिशावाली रेखा में मिलानेसे त्रिकोणपीठ बनेगा।

बुधपीठ

मध्यसे चार यव छोड़कर एक रेखा दक्षिणसे उत्तरकी तरफ चार अंगुल की लम्बी सीधी दें। वैसे ही चार अंगुल की मध्यरेखासे ४ यव छोड़कर उत्तर से दक्षिण की तरफ दे। तदनन्दर उत्तरदिशा की तरफ वाली रेखा के अन्तिम सिरे से दो यव पूर्व दिशा की तरफ और यव पश्चिम दिशा की तरफ बढ़ा दे। वैसे ही नीचे दक्षिणदिशा का दोनों रेखाओं को दक्षिण की तरफ बढ़ा दे। फिर पूर्वदिशा में बड़ी २ यव वाली रेखा के अन्तिम सिरे से दो अंगुल छः यव की एक रेखा टेढ़ी दे जो उत्तर मिले। वैसे ही पश्चिमकी तरफ से रेखा दे। ऐसा करने से बुधपीठ बन जाता है।

रूपनारायण के मत से—एक अंगुल, सात यव और छः यूका का एक गोलाकार वृत्त बनावें। तदनन्तर उस वृत्त के ठीक मध्य में एक लम्बी रेखा दक्षिणोत्तर दे। फिर उस आधे दो वृत्तों में से एक आधे वृत्तको मिटा देने से षडङ्गुलात्मक बुधपीठ बन जाता है।

गुरुपीठ

दो अंगुल चार यव और दो यूकाका एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस वृत्तमें चार अंगुल चार यूका तथा दो लिक्षाका दूसरा वृत्त बनावे। तदनन्तर उस वृत्त में बराबर-बराबर के सोलह चिह्न कर विदिशा के पाँचवे चिह्न से प्रारम्भकर आठ पत्र बनाने से नव अंगुलात्मक पद्माकार आकृति वाला गुरुपीठ बन जाता है।

रूपनारायण के मत से—मध्य से दो अंगुल की दक्षिणदिशा की तरह एक सीधी रेखा करे, तदनन्तर पूर्व और पश्चिम की तरफ तीन-तीन अंगुल की सीधी रेखा दें। फिर उत्तरदिशा की तरफ दो अंगुल की रेखा दें। ऐसा करने से दीर्घचतुरस्र गुरुपीठ बन जाता है।

शुक्रपीठ

प्रकारान्तर—एक अंगुल, सात यव और पाँच यूका का एक वृत्त बनाकर उस वृत्त में पूर्वदिशा से दो अंगुल, दो यव और तीन यूका पर चिन्ह करने से पंचकोणात्मक शुक्रपीठ बन जाता है।

रूपनारायण के मत से—तीन अंगुल, एक यव, दो यूका और चार लिक्षा को प्रकार से पूर्वदिशा, पश्चिम और उत्तरदिशा से नाप कर बनाने से चतुष्कोण (चारकोनेवाला) शुक्रपीठ बन जाता है।

प्रकारान्तर—छः यूका छः यव और दो अंगुल के प्रकाल से नापकर एक गोलाकार वृत्त बनावे। तदनन्तर उस वृत्त के पूर्वदिशा से तीन अंगुल यव और छः यूका पर एक चिह्न करे। अर्थात्-कुल ५ चिह्न करे। फिर भी चिह्न से एक चिह्न छोड़कर तीसरे चिन्ह पर जो रेखा दी जायगी उस रेखा का नाम २ यूका, तीन यव और ५ अंगुल परिमित होगा। उसे बाहू कहते हैं। इसी तरह की ४ रेखा (बाहू) और दे। तदनन्तर कोणों को छोड़कर बाहुवों और वृत्तको मिटाने से पंचकोणात्मक शुक्रपीठ बन जायगा।

प्रकारान्तर पक्ष से—एक अंगुल ७ यव और पाँच यूका का वृत्त बनाकर उस वृत्तसे बराबर के पाँचभाग करने से शुक्रपीठ बन जाता है। यह पक्ष लघुपीठमाला का है।

शनिपीठ

चार अंगुल, चार यूका और चार लिक्षाका एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस वृत्तके ठीक मध्य से एक जीवा अर्थात् लम्बी रेखा छः अंगुल, तीन यव और ५ यूका की (या ६। ६। ५) देने से धनुषाकार पीठ बन जाता है।

अथवा—छः अंगुल ३ यव और ५ यूका की दक्षिणोत्तर की जीवारेखा दे। तदनन्तर ७ अंगुल, १ यव और तीन यूका के नाप की रस्सी या प्रकाल द्वारा नापने से धनुषाकार शनिपीठ हो जाता है। या ७। १। ३। की दक्षिणोत्तररेखा दे व तदनन्तर ६। ३। ५ की देने से धनुषाकार शनिपीठ बन जाता है।

अथवा—छः यूका ५ यव और दो अंगुल का वृत्त बनाकर वृत्त के ठीक मध्य से छः यूका ५ यव और तीन अंगुल की एक लम्बी रेखा देने से शनिपीठ बन जाता है।

प्रकारान्तर पक्ष से—२ अंगुल, ५ यव, ४ यूका और ४ बालग्रका एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस वृत्तके भीतर ठीक मध्य में—३ अंगुल ६ यव और ४ यूका के परिमाण से ज्या देने से शनिपीठ बन जाता है।

प्रकारान्तर पक्ष से—एक वृत्त ४ अंगुल, ४ यूका और ४ लिक्षाका बनाकर उस वृत्त में एक चतुरस्र बनावे। (उस चतुरस्र की भुजा ६। ३। ५ होगी और कोटी भी ६। ३। ५ होगी। अर्थात्—बराबर का चतुरस्र बनेगा)। तदनन्तर वृत्त में जो चतुरस्र बना है। उस चतुरस्र से बाहर और वृत्त के भीतर पूर्वदिशा, दक्षिणदिशा और उत्तरदिशा में जो निकलती है उन जगहों को (अर्थात्—वृत्त के

सहित जगहों को चतुरस्र की तीन रेखाओं को मिटाने के धनुषाकर पीठ बन जायगा।

अथवा–२ अंगुल की भुजा और तीन अंगुल की कोटी बनाकर शनिपीठ बन सकता है। यह भी लघुपीठमाला का मत है।

[1]**प्रकारान्तर**–(१) मुख काव्यास छः यव तीन यूका होगा। अर्थात् छः यव और तीन यूका का एक गोलाकार वृत्त बनावे। उसी में आँख, कान आदि बनावे। (२) तदनन्तर दक्षिणोत्तर लम्बी रेखा तीन अंगुल और चार यव की करे। उसीको पूर्व का 'भू' कहते हैं। (३) फिर मध्य की लम्बाई तीन अंगुल की होती हुई अन्त में सकरी होगी। (४) कन्धे की चौड़ाई एक अंगुल और दो यव की होगी। (५) हाथ की लम्बाई सवा दो अंगुल की होगी। (६) कटी भाग की लम्बाई दक्षिणोत्तर दो अंगुल चार यव की होगी। (७) जांघ की एक अंगुल दो यव की होगी। (८) चरण की लम्बाई तीन अंगुल की होगी। (९) चरणका भाग ६ यव का होगा।

राहुपीठ

चार अंगुल पूर्व, चार अंगुल पश्चिम, चार अंगुल दक्षिण और चार अंगुल उत्तर रेखा एक चतुरस्र समकोण बनाकर उस चतुरस्र के बाहर ईशानकोण और अग्निकोण में २ अंगुल ३ यव ४ यूका का आधा १।१।६। दक्षिण दिशा की तरफ और १।१।६ उत्तर दिशा की तरफ बढ़ा दें। तदनन्तर बढ़े हुए भागों से क्रम से एक एक टेढ़ी रेखा वहाँ से नैर्ऋत्यकोण में और एक टेढ़ी रेखा वायव्यकोण में बढ़ा दें। फिर उस चतुरस्र का नीचे की पश्चिम की तरफ दो भाग कर (अर्थात् दो-दो अंगुल पर मध्यकर) उनमें दो वृत्तार्ध अलग-अलग बनाये। वृत्तका व्यासार्ध १।०।० होगा अलग-अलग, अर्थात्–प्रथम भाग में एक वृत्तार्ध दूसरे भाग में दूसरा वृत्तार्ध बनाकर भीतर का चतुरस्र मिटा देने से शूर्पाकार पीठ होता है।

प्रकारान्तरपक्ष से–(१) मुख एक अंगुल यवाधिक व्यासार्ध से एक वृत्त बनावे। मुख और उदर मध्य में दो यव का एक चतुरस्त्र चारों तरफ से गला होगा। मुख के आगे दो यव का ओष्ठ रहेगा। (२) तीन अंगुल की भुजा रहेगी। (३) हाथ की चौड़ाई एक अंगुल चार यव की होगी। (४) कोटी चार अंगुल की होगी। (५) नीचे पूछ ठीक मध्य में (अर्थात्–पुच्छे त्रिभुजे अंगुलत्रयमिता भूमिः) त्रिभुज करने पर ठीक मध्य से एक लम्बी रेखा उत्तरदिशा की तरफ जो होगी वह तीन अंगुल की होगी।

प्रकारान्तरपक्ष लघुपीठमाला और संस्काररत्नमाला से

(१) मध्य से पूर्व दिशा में चार अंगुल की रेखा सीधी दें। (२) दक्षिणदिशा से–चार अंगुल की सीधी रेखा दे। (३) पश्चिमदिशा में चार अंगुल की सीधी रेखा दे। (४) और उत्तरदिशा में–चार अंगुल की सीधी रेखा देना। ऐसा करने से चतुरस्त्र तैयार हो जायगा। तदनन्तर उस चतुरस्त्र के बाहर अग्निकोण में दक्षिणकी तरफ एक सीधी रेखा छः यूका, १ यव और एक अंगुल की हो। उस रेखा के अन्तिम सिरे पर चिन्ह करे। इसी तरह उत्तर की तरह (ईशानकोण में) छः यव एक अंगुल की सीधी रेखा बढ़ा दे। फिर नैर्ऋत्यकोण से एक टेढ़ी रेखा दे जो दक्षिण दिशा (अग्निकोण) में बढ़े हुए भाग के अन्तिम चिन्ह पर मिले। वैसे ही–वायव्यकोण से एक टेढ़ी रेखा दे जो उत्तरदिशा में (ईशानकोण) में बढ़े हुए भाग के अन्तिम सिरे में मिले।

तदन्तर–उस चतुररत्र के नीच के हिस्से में (अर्थातु–वायव्य और नैर्ऋत्यवाले में) अर्थात् पश्चिमदिशामें उस चतुरस्त्रका दो–दो अंगुल का मध्य से एक अंगुल के व्यासार्ध पर चिन्ह करे। ऐसा करने पर प्रकाल द्वारा अलग–अलग दो वृत्त बनावे। फिर चतुरस्त्र के भीतर का अर्धवृत्त और चतुरस्त्र मिटानेसे शूर्पाकार का बनेगा।

केतुपीठ

पूर्वदिशासे पश्चिमदिशामें एक लम्बी रेखा आठ अंगुल की दे। तदन्तर पूर्वदिशा से चार यव अर्थात्–आधा अंगुल हटाकर दूसरी लंबी रेखा उस रेखा से हटाकर दक्षिण दिशा की तरफ दे। फिर पश्िचम दिशा से दक्षिणवाली रेखा से अधोभाग से पाँच अंगुल पर चिन्ह करें और पूर्वदिशा से अर्थात्–ऊपर से एक अंगुल छोड़कर उसी रेखा पर चिह्न करे। एक अंगुल से एक सीधी रेखा चार अंगुल, एक यव की दक्षिण तरफ वैसे ही पाँचवें भाग से दूसरी रेखा टेढ़ी दे जो ऊपर वाली रेखा ४ अंगुल और १ यव में मिले। ऐसा करने से मध्यवाली रेखा होगी। उससे केतुपीठ बन जाता है।

प्रकारान्तर पक्ष से–(१) कोटी पाँच अंगुल लंबी (२) वङ्ग का त्रिकोणलंबाई दो अंगुल (३) भुजा चार अंगुल की (४) सम चतुरस्त्र एक अंगुल की मध्य में मुष्टिका।

सूर्यकुण्ड

२७ अंगुल ६ यूकाके आधे को प्रकाल द्वारा नापकर मध्य बिन्दु से एक गोलाकार वृत्त बनावे। इस कुण्ड का नाम सूर्य कुण्ड होता है।

[1]चन्द्रकुण्ड

३३ अंगुल ७ यव और ४ यूका आधा १६।६।५ को प्रकाल से नापकर मध्य बिन्दु से एक गोलाकार वृत्त बनावे। तदनन्तर उस वृत्त से (क) ईशानकोण से एक सीधी रेखा दे जो अग्निकोण में मिले। (ख) अग्निकोण से एक सीधी रेखा दे जो नैर्ऋत्यकोण से मिले। (ग) नैर्ऋत्यकोण से एक सीधी रेखा दे जो ईशानकोण में मिले। (घ) वायव्यकोण से एक सीधी रेखा दे जो ईशानकोणमें मिले। ऐसा करने से वृत्त के भीतर एक चतुरस्त्र बनेगा उस चतुरस्त्र को चन्द्रकुण्ड कहा जाता है।

मंगलकुण्ड

४२ अंगुल, तथा १ यव का आधा कर प्रकाल द्वारा मध्य बिन्दु से एक गोलाकार वृत्त बनावे। तदनन्तर (पूर्व दिशा मुख) बिन्दु से एक सीधी रेखा दे जो पश्चिम दिशा (पुच्छ) में मिले। फिर दक्षिण-दिशा (दक्षपार्श्व) एक सीधी रेखा दे जो उत्तरदिशा (बालपार्श्व) में मिले। वायव्यकोण से एक टेढ़ी रेखा दे जो दक्षिणदिशा में मिले। ईशानकोण से एक टेढ़ी रेखा दे जो दक्षिणदिशा में मिले। ऐसा करने से त्रिकोणकुण्ड बन जाता है।

अथवा–नैर्ऋत्यकोण से एक सीधी रेखा दे जो वायव्यकोण में मिले। नैर्ऋत्यकोण से एक टेढ़ी रेखा दे जो उत्तरदिशा में मिले। वायव्यकोण से एक टेढ़ी रेखा दे, जो उत्तरदिशा में मिले। ऐसा करने से त्रिकोणकुण्ड बन जाता।

बुधकुण्ड का प्रथमप्रकार

मध्य बिन्दु से चार अंगुल हटाकर दक्षिण दिशा की तरफ एक रेखा सीधी ३६ अंगुल की दे। (अर्थात् मध्य बिन्दु से चार अंगुल इधर और १८ अंगुल उधर रेखा देने से ३६ अंगुल होगा) वैसे ही मध्य बिन्दु से चार अंगुल हटाकर उत्तर दिशा की तरफ एक रेखा सीधी दे जो ३६ अंगुल की होगी।

तदनन्तर दोनों रेखाओं की समाप्ति पर उत्तरदिशा की ओर एक रेखा पूर्व से पश्चिम दिशा की तरफ दे जिसका नाप २४ अंगुल होगा।

(तात्पर्य यह है कि २४ अंगुल की जो रेखा दी जायगी उस रेखा का आधा १२ अंगुल होगा। उस बारह अंगुल के मध्य बिन्दु वाली रेखा के अन्तिम सिरे पर रखने पर पूर्वदिशा की तरफ १२ अंगुल रेखा का नाप होगा। पश्चिमदिशा की तरफ भी १२ अंगुल

रेखा का नाप होगा। यो निश्चयात्मक हो जाने पर मध्य बिन्दु से अंगुल हटाकर दक्षिण दिशा की तरफ जो ३६ अंगुलात्मक रेखा दी है और ४ अंगुल हटाकर उत्तर दिशा की तरफ जो रेखा दी है उन रेखाओं के मध्य में चार २ अंगुल और आ जायेगा। ऐसी स्थिति में दोनों छोर में अलग-अलग अंगुल के बनेगा। (इसी प्रकार अन्य प्रकारों में व्यवस्था समझ लेनी चाहिये) फिर मध्यबिन्दु में एक सीधी दे जो दोनों रेखाओं के बराबर के नाप की हो। इस तरह कुल लंबी ३६ अङ्गुलात्मक तीन रेखा हुई ऐसा पूर्ण ज्ञान होने पर मध्यवाली रेखा के अन्तिम सिरे से एक रेखा सीधी उत्तर दिशा की तरफ २४ अङ्गुल की दे।

तदनन्तर-पूर्वदिशा से पश्चिमदिशावाली रेखा के दोनों कोने से एक-एक टेढ़ी रेखा दे जो कि उत्तरदिशा में जाकर मिले ऐसा करने से बाण कुण्ड बन जाता है।

द्वितीयप्रकार

मध्य बिन्दू से ५ अंगुल दक्षिण दिशा की तरफ हटाकर एक सीधी रेखा दे जो रेखा ३६ अंगुलात्मक होगी। तद्वत् मध्यबिन्दु से ५ अंगुल हटाकर उत्तरदिशा की तरफ एक रेखा सीधी ३६ अंगुलात्मक दे। अर्थात्-मध्यबिन्दु से ५ अंगुल हटाकर पूर्वदिशा की तरफ ३६ अंगुल की एक सीधी रेखा दे। तद्वत् मध्यबिन्दु से पश्चिमदिशा की तरफ ६ अंगुल हटाकर ३६ अंगुल की एक रेखा सीधी दे। तदनन्तर-उत्तरदिशा की तरफ मध्य बिन्दुवाली रेखा को २३ अंगुल या २४ अंगुल की एक सीधी रेखा उत्तर दिशा की तरफ बढ़ा दे। फिर उत्तरदिशा की तरफ जहाँ ३६ अंगुलात्मक रेखायें समाप्त हो चुकी हैं वहाँ से पूर्वदिशा से पश्चिम दिशा की तरफ १८ अङ्गुल की एक सीधी रेखा दे। फिर इस १८ अंगुल की रेखा के दोनों छोर से एक-एक टेढ़ी रेखा दे जो-जो उत्तरदिशा में मिले। ऐसा करने से प्रकारान्तर बाणकुण्ड बनेगा।

तृतीयप्रकार कुण्डरत्नावलीका

५८ अंगुल और ७ यूका के आधे को प्रकाल से नापकर मध्य बिन्दु से ४ अंगुल, ५ यव और ५ यूका हटाकर एक सीधी रेखा दक्षिणोत्तर (पूर्वदिशा की तरफ) दे। जिसकी लंबाई ३८। ३। ५।१२।४ अंगुल होगी। जिसे 'दण्डवृहज्ज्या' जल्द से कह सकते हैं। तद्वत्–मध्य विन्दु से दक्षिणोत्तर (पश्चिम दिशा की तरफ ५ अंगुल, ५ यव और ५ यूका हटाकर एक सीधी रेखा दे। जिसका नाप ३८। ५। १२। ४ अंगुल होता है।

तदनन्तर मध्यबिन्दु में एक रेखा दक्षिणोत्तर दे जो रेखा पूर्व रेखाओं के बराबर हो अर्थात् ३८।५। १।२।४ अंगुल की अर्थात् तीनों रेखायें बराबर की हो, ऐसा निश्चय हो जानेपर उत्तरदिशा की तरफ मध्य रेखा की समाप्ति पर बायी तरफ से ८ अंगुल, ३ यव और ४ यूका की एक रेखा दे। ७ यव की एक सीधी रेखा पूर्व से पश्चिम की तरफ दे। दूसरी दाहिनी तरफ ८ अंगुल ३ और ४ यूका की एक रेखा दे। (अर्थात्–वृत्त का आठ भाग कर पूर्व–मुख, अग्निकोण अंश (स्कन्ध) दक्षिणपार्श्व, निर्ऋतिकोण–श्रोणी (कटी) पश्चिम–पुच्छ, वायव्यश्रोणी (कटी) उत्तरपार्श्व, ईशानअंश (स्कंध) तरफ–मुख (पूर्वदिशा) के समीप स्कन्ध से एक सीधी रेखा दे, जो पुच्छ के समीप श्रेणी (कटि) में मिले। उस रेखा का मध्य और मध्यबिन्दु से जो रेखा की समाप्ति हुई है–मध्य एक होगा। इसके मध्य से पूर्वदिशा की तरफ ८ अंगुल ३ यव और ४ यूका पर एक चिह्न करे। वैसे ही मध्य से पश्चिम की तरफ ८ अंगुल ३ यव और ४ यूका पर चिह्न करे। फिर उत्तरदिशा की तरफ पार्श्वका बायें का आधा और दाहिने के आधे पर एक रेखा दे। तद्वत् दक्षिण की तरफ दे। फिर मध्य बिन्दु वाली रेखा के अन्तिम सिरे से एक सीधी रेखा जो उत्तर दिशा की तरफ जाय। जिसका नाम १५।७।४। ७।२।४ है। यदि मध्यशर २।१।६।६।५७ को १५।७।४।७।२

से घटा दे तो उपर का हिस्सा रेखा का नाप हुआ। तदनन्तर दाहिनी तरफ (दक्षिण तरफ) पार्श्व का चार भाग करे, आदि के दो भाग छोड़कर मध्य के भाग अन्तिम सिरे से दक्षिणदिशावाली रेखा के अन्तिमसिरे से एक टेढ़ी रेखा जो मध्य के अष्टास्त्रिज्या के भीतर मध्यवाली रेखा के कोने में मिले। वैसे ही उत्तर वाली रेखा के अन्तिम सिरे से एक टेढ़ी रेखा दे। फिर मध्य की बची रेखा मिटा दे और वृत्तादि मिटाने से बाणकुण्ड बनेगा।

गुरु कुण्ड

३६ अंगुल, ३ यव और ७ यूका का आधा (१८।१।७।४) कर प्रकाल ले नापकर मध्य बिन्दु से एक गोलाकार वृत्त बनावे। तदनन्तर वृत्त के बराबर के चौबीस चिह्न कर ७ चिह्न को छोड़कर एक रेखा सीधी (पूर्वदिशा की तरफ) दक्षिणोत्तर वृत्त के भीतर दे इस रेखा वृत्त के भीतर दे जिसका नाप ३१।४।६।२।॥ होगा। सात रेखा छोड़ कर (पश्चिमदिशा की तरफ) दक्षिणोत्तर दे। फिर दोनों कोनों को (जिसके मध्य में तीन तीन रेखा रहेगी) रेखा द्वारा मिला दे। इन दो रेखाओं का नाप अलग-अलग १७ अंगुल, १ यव, ७ यूका और ४ लिक्षा होता है।

तात्पर्य यह है कि-दक्षिणदिशा के समीप दक्षपार्श्व से एक सीधी रेखा दे-जो उत्तरदिशा के समीप वामांश में मिले। जिसका नाप (३१।४।६।२।५) होगा फिर दक्षश्रोणी से एक रेखा सीधी देंगे जो वामपार्श्व में मिलेगी। जिस रेखा का नाप (३१।४।६।२।५) होगा। जिसको 'वृहज्जा' से पुकारा जाता है। तदनन्तर वामपार्श्व एक सीधी रेखा देंगे, जो वामांश में मिलेगी जिसका नाम १८।१। ७।४ होगा जिसको 'लघुज्या' से कहा जाता है। फिर दक्षश्रोणी से एक सीधी रेखा दें, जो दक्षपार्श्व में मिलेगी इस रेखा का नाम १८।१।८४ है। जिसे लोग 'लघुज्या' कहते हैं। ऐसा करने से आयताकार गुरुकुण्ड बन जाता है।

द्वितीयप्रकार

जो रेखा ऊपर ३१।४।६।२।५।की है।वह इस दूसरे प्रकार में ३२ अंगुल की रहेगी जिसे 'वृहज्ज्या' शब्द से कहा जाता है। दूसरे रेखा जो ऊपर १८।१।७।४।की कही है। वह यहाँ दूसरे प्रकार में १८ अंगुल की कही है। जिसे 'लघुज्या' शब्द से कह सकते हैं।

शुक्रकुण्ड

३१ अंगुल और १ यव आधे व्यास को प्रकाल से नापकर एक वृत्त गोलाकार बनाकर उस वृत्त के बराबर पाँच भाग कर (क) पूर्वदिशा से एक टेढ़ी रेखा दक्षपार्श्व में मिला दे। (ख) दक्षपार्श्व से एक टेढ़ी रेखा नैर्ऋत्यकोण में मिला दे। (ग) नैर्ऋत्यकोण से एक सीधी रेखा वामश्रोणी में मिला दे। (घ) वामश्रोणी से एक टेढ़ी रेखा वामांश में मिला दे। (ङ) वामांश से एक टेढ़ी रेखा पूर्वदिशावाली रेखा में मिला दे।ऐसा करने से 'पञ्चास कुण्ड' बन जाता है।

द्वितीय प्रकार

एक चतुरस्त्र २४ अंगुल का बनाकर उस चतुरस्त्र के बाहर चारों दिशाओं में पूर्व, पच्छिम, दक्षिण, उत्तर २४ अंगुल का सातवां भाग प्रत्येक दिशा में बढ़ाकर चतुरस्त्र को मध्य और चतुरस्त्र के बाहर के बढ़े हुए हिस्से में प्रकाल रख एक वृत्त गोलाकार बनाकर पूर्वोक्त व्यवस्था से ५ रेखा करने से पञ्चास्त्र कुण्ड बन जाता है।

शनिकुण्ड

मध्य केन्द्र से २६।२।५ के आधे से (१४ ।५।२) से एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस वृत्त के दक्षपार्श्व को केन्द्र मानकर

दक्षिणदिशा को केन्द्र मानकर प्रथम वृत्त के आधे से प्रकाल घुमाने से अर्थात् प्रथमवृत्त के मध्य में पेन्सिल रखे दक्षिण दिशा में प्रकाल का शंकु रखकर घुमा देने से दूसरा वृत्त बनेगा। तात्पर्य यह है कि दूसरे वृत्त के आधे में चला जायगा। फिर उन दोनों वृत्तों में ज्या दक्षिणोत्तर मध्य से दे। तदनन्तर दोनों वृत्तों के बाहर मध्य हिस्से से ४ अंगुल, ७ यव और १ यूका बायीं तरफ और ४ अंगुल, ७ यव और १ यूका दाहिनी तरफ बढ़ा दे। इस पूर्ण रेखा का नाम ५३। ५।७ होगा और केवल दोनों तरफ का मिलाकर षष्ठांश ९।६।१ होगा अर्थात् ५३।५७। से ९।६।१ घटा देंगे तो भीतर वृत्तों की ज्या का नाप ४३।७।६ होगा। फिर बायें वृत्त के आठ भाग बराबर बराबर के करे। (१) पूर्वदिशा को मुख कहे। (२) अग्निकोण को झुश (स्कन्ध) कहे। (३) दक्षिणदिशाको पार्श्व कहें। (४) निर्ऋतिकोण को श्रोणी कहे। (५) पश्चिमदिशा को पुच्छ कहे। वायव्यकोण श्रोणी (कटी) कहे। (६) उत्तरदिशाको पार्श्व कहे। ईशानको झुश (स्कन्ध) कहे। इसी प्रकार दाहिने वृत्त में भी आठ भाग की कल्पना करे।

तदनन्तर–बायें पार्श्व में बढ़ी रेखा (४।७।१) के अन्तिम सिरे से एक टेढ़ी रेखा दे, जो अंश और पार्श्व का जो मध्य है, उसमें मिले। वैसे ही दाहिने तरफ रेखा (५।७।१) के अन्तिम सिरे से अंश और पार्श्व का जो मध्य रेखा में मिला दे। फिर कारीगर से कहकर कुण्ड रत्नावली के नकशे (सिद्धरूप को दिखाकर ऊपरी भाग में अर्थात् पार्श्व और झुश के मध्य में जो रेखा टेढ़ी दी है, वहाँ से धनुष्य के रूप को कुछ उठा दे और दूसरी तरफ वृत्त के ऊपरी भाग से स्कन्ध और पार्श्व के मध्यवाली टेढ़ी रेखा से धनुष का आकार बनावे। फिर सब नीचे के भाग को मिटा देने से धनुषाकार कुण्ड बन जाता है। यही पक्ष उत्तम है।

मध्यकेन्द्र से–दक्षिणदिशा की तरफ १०। ४। ५। अंगुल हटाकर एक चिह्न करे। इस चिह्न से एक वृत्त १४। ५। २ का बनावे। तदनन्तर मध्यकेन्द्र से दक्षिणदिशा की तरफ १०। ४। ५ अंगुल हटाकर १४। ५। २ का वृत्त बनावे। तदनन्तर वृत्त के बराबर–बराबर के आठ भाग करे। (१) पूर्वदिशा–मुख होगा। (२) अग्निकोण इगुश (स्कन्ध) (३) दक्षिणदिशा पार्श्व (४) निर्ऋत्यकोण श्रोणी (५) पश्चिमदिशा पुच्छ (६) वायव्यकोण–श्रोणी कटी (७) उत्तरदिशा–पार्श्व (८) ईशानकोण–इगुश (स्कन्ध) होगा। इसी प्रकार बायें वृत्त में भी कल्पना करें। तदनन्तर वृत्त में कल्पना करे। तदनन्तर वृत्त के भीतर ठीक मध्य से एक रेखा दक्षिणोत्तर लम्बी सीधी दे। फिर वृत्त के बाई तरफ (दक्षिणोत्तर लंबी रेखा के अन्तिम सिरे से) दक्षिण दिशा से एक रेखा लंबी–४। ७। १ बढ़ा दे। वैसे ही उत्तरदिशा से एक लंबी रेखा ४। ७। १। बड़ा दे। तदनन्तर दक्षिणदिशा में पार्श्व और स्कन्ध के मध्य में चिह्न कर ४। ७। १ वाली रेखा के अन्तिम सिरे से एक रेखा टेढ़ी ले जाकर पार्श्व और स्कन्ध के मध्य चिह्न में मिला दे। वैसे ही उत्तर दिशा में–पार्श्व और स्कन्ध के मध्य में चिह्न कर ४। ७। १ वाली–रेखा के

अ ब = ४२॥ अंगुल, अ क = ३॥ अंगुल, क ब = २१ अंगुल, क इ उ ब = संग्राहार्धफलम् = ७३ अंगुल ४ यव, इ प क = वृत्तपाद–फलम् = ७८। ४, प च ज त्रिभुजफलम् अ क इ त्रिभुज फल= कोणांशफलम् = अंगुल २५। यव ३।

ज्यास्पृक् सूत्रान्तश्चतुरश्रम् = प फ ज उ तत्फलम् अर्थात्–चतुरस्र–फलम्=११०। यह आधे का फल है। अर्थात् मध्य से साढ़े चौबीस अंगुल का एक आधा चाप बनावे इसका फल–२८७। ३ होगा। दोनों चाप का फल ७६ होगा। मध्य से जो एक रेखा पूर्व पश्चिम होगी वह १७ अंगुल की होगी।

अर्थात्-प और उ व्यासार्धवृत्तम्। एतत् वृत्तबहिर्गतं यद् चतुरस्त्रं तदेवागन्तुकं समचतुरस्त्रम्। तत्रैको भुजः अंगुल। ४८४ = २२ × २२ = आगन्तुक चतुरस्त्रफलम्। ३८० = वृत्तफलम्। यस्य व्यासः = २२। १०४।

नोट-कुण्डरत्नावाली में जो १ श्लोक है उसकी जगह 'मध्याद् व्यासाग्नि ३ भागे स्वरविलवविहीने कृते' ऐसा पढ़ा जाय तो अच्छा मालुम होता है। व्यास २६। २। ४ का तृतीयांश निकाल कर ६। ६। १ को द्वादशांश-अर्थात् स्वमति व्यास का (२६। २।४ का जो द्वादशांश हो उसको तृतीयांश में घटा दे तो ७। २। ५ होगा।

[(२) २१। २। ४ का आधा १४। ५। २ हुआ १४। ५। २ को २६। २। ४ में जोड़ेगे तो ४३। ७। ६ होगा। अर्थात्-साद्र्धव्यासार्ध होगा। उसमें षष्ठांश जोड़ेगे तो ६। ६। १ को ५३। ५। ७ होगा। इतनी बढ़ी वृत्तों में और बाहर ज्या होगी। २६। २। ४ का चतुर्थांश ७। २। ५।]

नोट-विशेष निर्णयसिन्धु में देखें।

राहुकुण्ड का प्रथमप्रकार

३८ अंगुल ३ यव और २ यूका के आधे को (१९।१।५) प्रकाल से नापकर मध्य बिन्दु से एक गोलाकार वृत्त बनावे। तदनन्तर (१) मुख से एक सीधी रेखा दे जो वामश्रोणी में मिले। (२) दशांश से एक सीधी रेखा दे जो पुच्छ में मिले। (३) वामांश से एक सीधी रेखा दे जो दक्षपार्श्व में मिले। (४) वामपार्श्व से एक सीधी रेखा दे जो दक्षश्रोणी में मिले। ऐसा करने से मध्य में एक चतुरस्त्र बन जाता है। फिर वामपार्श्व से एक टेढ़ी रेखा दे जो वामांश से मिले। अर्थात् वामांशवाली रेखा और मुख वाली रेखा के सन्धि में जाकर मिले। वैसे ही दक्षश्रोणी से एक टेढ़ी रेखा दे, जो दक्षपार्श्व में मिले। अर्थात्–पुच्छवाली रेखा और दक्षपार्श्ववाली सन्धि में जाकर मिले। फिर–जो रेखा वामांश से दक्षपार्श्वकोण में गई है उस रेखा में अर्थात्–वामांश और मुख की सन्धि से और दक्षपार्श्व पुच्छवाली रेखा की सन्धि के बीच के हिस्से का मध्य साधन कर दे वृत्तार्ध बनावे। अर्थात्–आधे वृत्त बनाने से शूर्पकुण्ड बन जाता है।

---

(१) संग्राहोर्धे सार्धरामेण चापेन्तर्जोर्हः स्याद् वृत्तपादोदिकङ्कात्। सूत्राद्रौद्राद्वाह्यमौर्व्यर्हमेवं वृत्तं दद्याज्ज्यास्पृगेवं परार्धम्॥ चापे यदर्ष तत्र सार्धत्र्यङ्गुलेन संग्राहः भागः कर्तव्यः। ततः दशाङ्गुलात्सूत्रादन्तर्ज्यार्हः वृत्तपादः कर्तव्यः। तथा तत्र एकदशाङ्गुलेन सूत्रेण चापज्यास्पृक् बाह्यज्यार्ह वृत्तं दद्यात्। तथा च व्यासं ग्राहचिन्हयोरन्तरं २१ एकविंशत्यङ्गुलं भवति। एवमेव द्वितीयार्ध भवति। अन्तर्बहिर्ज्यार्हत्वं तदसत्वार्थम्। अत्र फलं संग्राहार्धफलम्–७३।४। वृत्तपादफलम्–७८। ४। ज्यास्पृक् सूत्रान्तश्चतुरस्त्रफलम् तत्र एका कोटिः ११ पराकोटिः १० कोणांशफलम् २६ तत्रागन्तु के चतुरस्त्रे अंशत्रयं ७८ त्वक् सूत्रान्तश्चतुरस्त्रफलम् तत्र एका कोटिः १० कोणांशफलम् २६ तत्रः गन्तु के चतुरस्त्रे अंशत्रयं ७८ त्यक्त्वा शेषांशो ग्राह्यः २६। तथा च ७३।४। एवं ७८।४ एवं ११० एकत्र २२८ एवं परार्धस्य २८८ मिलितिम्–५७६।

नोट–जोड़ में २८७।७३।४, ७८।४, ११, २५।३, २८८। आता है। पाँच यव का अन्तर पड़ता है। मुद्रित संस्कार रत्नमाला, संस्कारगणपति, कुण्डरत्नावली, लिखित–ग्रहपीठ–माला आदि भी देखिये।

द्वितीय प्रकार–३६ अंगुल ६ यूका का आधा नापकर मध्य बिन्दु से एक गोलाकार वृत्त बनावे। तदनन्तर पूर्ववत् सब क्रिया करे। केवल वामांशवाली रेखा में जो दो वृत्तार्ध। (शूर्पके आकार की तरह बने हैं) वे इन दूसरे प्रकार में न बनकर केवल उतनी जमीन का मध्य साधनकर मध्य में प्रकाल रख ईशानवाली सन्धि से घुमाकर दूसरी सन्धि में मिला देने से शूर्पकुण्ड बन जाता है।

राहुकुण्ड–तात्पर्य यह है–दक्षश्रोणी से रेखा का नाप ७२ अंगुल ४ यव हैं। दक्षपार्श्व से वामांश की रेखा का नाप १५ अंगुल है और चतुरस्र के भीतर वाली रेखा पुच्छ और मुख की रेखा का नाप अलग–अलग ६३ अंगुल है। दक्षश्रोणी और वामपार्श्व वाली रेखा जो चतुरस्र के बाहर पड़ेगी वह अलग २६ अंगुल २ यव है। अर्थात् दोनों छोर दक्षश्रोणी और वामपार्श्व १२ अंगुल ४ यव है, वामांशवाली रेखा का अर्थात् चतुरस्र का मध्य (१५ अंगुल का आधा ७॥ अंगुल का) साधन कर प्रकाल से घुमा दे तो धनुषाकारकुण्ड बन जाता है। यह लघुपीठमाला का प्रकार है।

अथवा–२८ अंगुल दक्षश्रोणीवाली रेखा दक्षापार्श्व की रेखा २० अंगुल की मुख और पुच्छ की रेखा जो चतुरस्र के भीतर है। वह अलग–अलग २४, २४ अंगुल की है। इसमें इतने ही बनने से शूर्प बन जाता है। यह लघुपीठमाला का दूसरा प्रकार है।

केतु कुण्ड का प्रथम प्रकार

(१) (क) मध्य बिन्दु से ३ अंगुल हटाकर एक सीधी रेखा पूर्व से पश्चिम अर्थात्–दक्षिण दिशा में दे जिसका नाप ५४ अंगुल होगा। (२) मध्य बिन्दु से ४ अंगुल हटकर एक सीधी रेखा पश्चिम से पूर्व अर्थात्–उत्तर दिशा में दे जिसका नाप ४५ अंगुल होगा। अर्थात् मध्य बिन्दु से ४ अंगुल हटाकर साढ़े बाईस अंगुल की रेखा पूर्व दिशा में और साढ़े बाईस अंगुल पश्चिम दिशा में (दक्षिण दिशा

मे) दे। वैसे ही साढ़े बाइस अंगुल की सीधी रेखा पश्चिम दिशा में और २२॥ अंगुल पूर्व दिशा में (उत्तर दिशा में) दे, (३) तदनन्तर दक्षिण दिशा वाली रेखा में–पूर्व दिशा से ९ अंगुल पर एक चिह्न करे। (४) उस चिह्न से फिर ९ अंगुल पर दूसरा चिह्न करे ऐसा करने से दो चिन्ह ९-९ अंगुल के अलग २ हुए। वैसे कुल जगह १८ अंगुल हुई। (४) तदनन्तर जो पूर्व दिशा से ९ अंगुल पर चिन्ह किया है उस चिन्ह से २४ अंगुल की एक सीधी रेखा दक्षिण दिशा की तरफ ले जाय। (५) दक्षिण दिशा वाली रेखा के पूर्व दिशा से एक टेढ़ी रेखा दे जो दक्षिण दिशा में २४ अंगुल वाली रेखा के अन्तिम सिरे में मिले। वैसे ही दूसरे ९ अंगुलात्मक चिन्ह से एक टेढ़ी रेखा दे जो २४ अंगुल वाली रेखा के अन्तिम सिरे में मिले। ऐसा करने से केतु कुण्ड ध्वजाकर बन जाता है। (क) मध्य बिन्दु को स्पर्श करती हुई एक रेखा मुख से प्रारंभकर (पूर्व दिशा से) पुच्छ (पश्चिम दिशा तक) में मिला दे।

द्वितीयप्रकार

जैसे मण्डप १६ हाथ है तो फी भाग ५ हाथ ८ अंगुल होगा। तो वायव्यकोण का भाग भी ५ हाथ ८ अंगुल का होगा उसका मध्य दो हाथ ९९ अंगुल होगा। उस मध्य से (२९।०।०।६) इक्कीस अंगुल ६ लिक्षा उत्तर की तरफ हटकर एक चिन्ह करे उस चिन्ह से २९ अंगुल शून्य यव ६ यूका एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस मध्य से (यह मध्य की दण्ड बृहज्या ५८।१।४ होगी) दो अंगुल और ५ यूका हटाकर एक रेखा दे, जो पूर्व में पश्चिम दिशा की तरफ हो अर्थात् दक्षिण दिशा की तरफ हो। वैसे ही उसी मध्य से २ अंगुल और ५ यूका हटाकर उत्तर की तरफ एक पूर्व से पश्चिम एक रेखा दे। जिन दोनों रेखाओं का नाम अलग ५८।०।३ होगा। तदनन्तर पूर्व दिशा से एक रेखा दक्षिणोत्तर देकर दोनों रेखाओं के

अग्रभाग को मिला दे। वैसे ही पश्चिम दिशा से दक्षिणोत्तर दोनों रेखाओं के अग्रभाग से रेखा द्वारा मिला दे।

तदनन्तर दक्षिण दिशा वाली रेखा का ४ भाग बराबर- बराबर करे। फी भाग १४ अंगुल, ४ यव, शून्य यूका और छः बालाग्र होगा। अर्थात् दक्षिण दिशा का अपूर्व दिशा से एक चिन्ह १४। ४। ०। ६ पर करे। तदनन्तर दूसरा चिन्ह वहाँ से १४। ४। ०। ६ पर मध्य से करे। वही रेखा का मध्य होगा। तदनन्तर पूर्व दिशा जो १४। ४। ०। ६ पर चिन्ह किया है। वहाँ से एक सीधी रेखा दक्षिण दिशा की तरफ दे जिसका नाप २३। ४ होगा। अर्थात् वहाँ से जो रेखा चलेगी वह अग्निकोण (दक्षांश परिधि के २४ अंश में लगेगी। फिर पूर्व दिशा से एक टेढ़ी रेखा दे जो दक्षिण दिशा में दी हुई रेखा के अन्तिम सिरे में मिले। और मध्य में पश्चिम दिशा से एक टेढ़ी रेखा दे जो दक्षिण वाली रेखा के अन्तिम सिरे में मिले। ऐसा करने से ध्वजाकार कुण्ड बनेगा।

नोट-३५ अंगुल की जो रेखा दक्षिण दिशा में दी गई। जिसे 'दण्ड बृहज्जा' शब्द से कह सकते हैं। उस रेखा के पाँच भाग करे। फी भाग ७ अंगुल का होगा।

नोट-व्यास ५८। १। ४। गुणलव १६। ३। १। ३ इनांश १। ४। ७। ३। गुणलव और द्वादश का जोड़ २१। ०। ०। ६। होगा।

तृतीय प्रकार केतु कुण्ड का कुण्डरत्नावली से

५८ अंगुल, १ यव और ४ यूका के आधे को १४। ४। ३ प्रकाल से नाप कर मध्यबिन्दु से दो अंगुल और ५ यूका हटाकर एक रेखा दक्षिण दिशा की तरफ (पूर्व से पश्चिम दिशा की तरफ) दे। तद्वत् मध्य बिन्दु से दो अंगुल और ५ यूका हटाकर उत्तर दिशा की तरफ पूर्व से पश्चिम दिशा की तरफ) दे। इस रेखा का नाप अलग-अलग ५८ अंगुल, ३ यूका होगा जिसे ध्वजदण्ड बृहज्ज्या

शब्द से कहा जाता है। तदनन्तर पूर्व दिशा से दोनों रेखाओं को मिला दे। रेखा द्वारा दक्षिणोत्तर। वैसी ही पश्चिम तरफ मिला दक्षिणोत्तर। ध्वजदण्ड बृहज्ज्या से दक्षिण दिशावाली रेखा जो है। जिसका नाप ५८।३। है उसका चार भाग करे प्रत्येक भाग अर्थात्-फी भाग १४ अंगुल, ४ यव, शून्य यूका और छः बालाग्र होगा। अर्थात् पूर्व दिशा से-१४।४।०।६ पर चिह्न करे। वह प्रथम चिह्न से एक रेखा दक्षिण दिशा की तरफ दे, जिस रेखा का नाप लंबाई २१।०।७।४ होगा। फिर-पूर्व दिशा के कोने से एक टेढ़ी रेखा दे, जो दक्षिण दिशा में बढ़ी हुई रेखा में (२३।१।७।४) में मिले। वैसे ही दक्षिण दिशा से एक रेखा २३।०।७४ वाली में मिले। ऐसा करने से केतु कुण्ड बन जाता हैं।

विशेष-कुण्डरत्नावली में जो श्लोक है-[मध्यात् घायोर्दिशायां ततिगुण] ३ लवके स्वेन भागेन हीने कृते। ऐसा पढ़ा जाय तो उत्तम मालुम होता है। व्यास ५८। १। ४ तृतीयांश १९। ३। १। ४ स्वद्वादशांश हुआ। व्यास ५८। १।४ का १२ वां भाग ४।६।६।३ हुआ इसको तृतीयायांश से घटाने से १४।४।३।० होगा। यही पक्ष उत्तम है।

अर्थात् मध्य केन्द्र से १४।४।३। का एक वृत्त बनाकर उस वृत्त में पूर्व ओर पश्चिम में एक रेखा लंबी दे जिसकी लंबाई ५८। १।१४ होगी। इस रेखा के मध्य भाग से एक रेखा दक्षिण की तरफ (अंगुल और २ यूका हटाकर होगी।) इस रेखा का जो होगा उस मध्य में पूर्व दिशा की तरफ १४।४।३। पर एक चिह्न होगा। इसकी लम्बाई दक्षिण की तरफ २३।०।७।४ होगी।

ग्रहकुण्डों में योनि का स्थान निर्देश

कुण्डरत्नावल्याम्-

पश्चास्त्रं च त्र्यस्त्रकं बाणकुण्डं दीर्घाम्नायास्त्रीति सौम्याग्रिकाणि।
चापं शूर्प पश्चिमज्यं च केतुर्दक्षाग्रः स्यात्सौमिर्क-चोत्तरास्यम्॥

निर्णयसिन्धुटीकायाम्–

यष्टिर्बाणैः सौम्यदिश्यग्र एव त्र्यस्त्रं तादृक्शूर्पकं पश्चिममास्यम्।
बार्हस्पस्पत्यं सौम्यदीर्थं धनुस्तत्पश्चाद् दिग्ज्यं शुक्रियं सौम्यकोणम्॥

नोट–(१) मध्य बिन्दु की रेखा का नाप ५८ अंगुल ३ यूका होगा जिसे दण्ड बृहज्ज्या शब्द से कहते हैं। और २५।१।४।४ वाली रेखा का नाप मध्य बिन्दु से होगा। दक्षिण दिशा वाली रेखा से तो १३।०।७।४ होगा। पूरी रेखा का नाप दक्षिण से उत्तर जायगी। अर्थात् पूर्वदिशा से जो मध्य १४।४।०।६ पर करेंगे, वही रेखा पूरी ५०।३।१ की होगी।

'कर्मकाण्डोपयोगी'

परिशिष्ट

एक वस्त्र स्नान प्रयोगः।

रुद्र स्नान प्रयोगः।

ब्रह्मयामलोक्त षड्ग्रहयोग शांति प्रयोगः।

हवनात्मक महारुद्र स्नान प्रयोगः।

विष्णवादि-प्रतिष्ठादौ मूर्ति न्यासः प्रयोग।

सूर्यारुणसंवादोक्त-एकवस्त्रस्नानप्रयोग:

अरुण उवाच-

यत्त्वया कथितं स्वामिन् एकवस्त्राभिषेचनम्।
दम्पत्योरनपत्यादिदौर्भाग्यशमनं परम् ॥ १ ॥
विधिं तस्याविलं ब्रूहि यथा श्रुतिनिरूपितम्।
कीदृग्वस्त्रं कथं धार्यमुभाभ्यामेव तत्पुनः ॥ २ ॥

श्री सूर्य उवाच-

शुभे मासे सिते पक्षे सानुकूल्ये ग्रहे दिने।
नंदनद्योः समायोगे महानद्योर्द्वयोरपि ॥ ३ ॥
प्रत्यूषे सिद्धिमास्थाय शरीस्य यथाविधि।
विधिं विविधमास्थाय पत्न्या सह ममार्हणम् ॥ ४ ॥
विधाय श्रद्धया युक्तो मन्त्रमेतमुदीरयेत्।
कर्मसाक्षिन् जगन्नाथ यन्मया पूर्वजन्मना ॥ ५ ॥
पञ्चधापत्यदुःखाख्यं दौर्भाग्यमतुलं भवेत्।
प्राप्तं तस्य विनाशाय विधिं वद ममोत्तमम् ॥ ६ ॥
सह पत्न्या दिवानाथ तत्र सिद्धि प्रयच्छ मे।
एवमुच्चार्य तद्वस्त्रं महतं द्विदशात्मकम् ॥ ७ ॥
सार्धद्वयकरायामं पञ्चविंशत्करोन्मितम्।
विततं तन्तुभिः श्लेक्ष्णैस्तन्मध्ये तद्भृतं वनैः ॥ ८ ॥
युवासुवासा मन्त्रेण मन्त्रितं देववेदिना।
सम्यग्दत्तं तदादाय परिदध्यात्सवस्त्रकम् ॥ ९ ॥

दृढनीवीरभिन्नानि देशे त्रिद्विगुणकृतम्।
सच्छेषदक्षिणाङ्गस्था सपत्नीकं सुपुत्रिका ॥ १० ॥
परिदध्यात्प्रयत्नेन संवृत्तममस्तका।
केशान्संमृज्य संगोप्य पतिपृष्ठानुगामिनी ॥ ११ ॥
उपविश्य जलस्थाने तावुभावपि दम्पती।
प्रक्षाल्य पाणिपादौ च स्वाचान्तो मम सम्मुखौ ॥ १२ ॥
वैदिकाँल्लौकिकांश्चापि सावधानौ जितेन्द्रियौ।
आपस्त्वमसि सर्वेषां देवानामग्रणीः प्रभो ॥ १३ ॥
जीवनं सर्वजन्तूनां गर्भं धेहि मम प्रभो।
यानि-यानीह पापानि अनपत्यकराणि नौ ॥ १४ ॥
हत्वा तान्यखिलानीश गर्भं धेहि मम प्रभो।
यदावाभ्यां महत्पापं पुरा जन्मनि दुःखकृत् ॥ १५ ॥
कृतं तन्मे विनिर्धूय गर्भं धेहि मम प्रभो।
त्वयैवाधिष्ठिताः सर्वे नदीनदजलाशयाः ॥ १६ ॥
पुनन्ति पापिनः सर्वान् गर्भं धेहि मम प्रभो।
त्वमावाभ्यां प्रयत्नाभ्यां शरणं दुःखशान्तये ॥ १७ ॥
प्रार्थितः परमेशा न गर्भं धेहि मम प्रभो।
आशास्महे महाभाग सन्ततिं लोकपावनीम् ॥ १८ ॥
प्रसन्नाद्भवतः स्वामिन् गर्भं धेहि मम प्रभो।
भूतप्रेतपिशाचाद्या ये नौ सन्ततिकारकाः ॥ १९ ॥
पाशेनाहत्य तान्सर्वान् गर्भं धेहि मम प्रभो।
एवं संप्रार्थ्य ता आपो दम्पती तो जलाद्बहिः ॥ २० ॥

सुनाय्य प्राङ्मुक स्तिष्ठेन्मन्त्रं सुश्रावयेदिति।
इमां गिरस आदित्येभ्यो द्वयमिमं शुभम् ॥ २१ ॥
श्रावयन् भुवि विन्यस्य पात्रं तत्प्रणमेच्च माम्।
ततोऽन्ये वाससी शुभ्रे शुचिनी परिधाय तौ ॥ २२ ॥
उपविश्यासने शुभ्रे पुष्पस्त्रक्चन्दनान्वितौ।
ततः स कनकं सर्पिः स्पृशेत सुरभीं द्विजान् ॥ २३ ॥
प्रणिपत्य ततः शेषं कर्म सर्वं समापयेत्।
आचार्यः स्वविधानेन दैवज्ञेनानुमोदितः ॥ २४ ॥
हस्तमात्रे ततस्तत्र स्थण्डिलेष्ठाङ्गुलोच्छ्रये।
स्थापयेद्विधिवद्वह्निं निजशाखाविधानतः ॥ २५ ॥
पायसं निर्वतेत्तत्र वैधेयविधिवत्ततः।
तस्मादीशानभागे तु स्थण्डिले कलशं न्यसेत् ॥ २६ ॥
अव्रणं पयसा पूर्णं स्वर्णपुष्पौषधैर्युतम्।
पूर्णपात्रं न्यसेत्तत्र पूर्ण पुष्पफलाक्षतैः ॥ २७ ॥
स्वस्वमन्त्रैः प्रतिष्ठाप्य महेशमुमया सह।
तस्याग्रे प्रजपेयुस्ते ब्राह्मणा मन्त्रकोविदाः ॥ २८ ॥
पञ्चाङ्गान्विधिवन्मन्त्रान् रुद्रसूक्तैश्च याजुषैः।
उद्वास्याथ चरून्सम्यागाचार्यः स्वविधानतः ॥ २९ ॥
आधारावाज्यभागौ च हुत्वा बाह्यविभावसुम्।
दिक्पतीन् परितः पूज्य स्वस्वमन्त्रैः समाहितः ॥ ३० ॥
प्रजापते तथाग्नेयां गर्भं धेहीति चापराम्।
अपां पृष्टां तथा होता इमं मे सप्तवारुणम् ॥ ३१ ॥

ततः स्विष्टकृतं हुत्वा कर्मशेषं समापयेत्।
होमान्ते शिवमभ्यच्च्यर्य सशिव विधिपूर्वकम् ॥ ३२॥
जपं होमं निवेद्यास्मै विधिवद्द्विजकोविदः।
ततो विप्राय विदुषे सुशान्ताय पयस्विनीम् ॥ ३३ ॥
वस्त्रस्त्रग्दक्षिणोपेतां सवत्सां धेनुमुत्तमाम्।
तथालङ्कृतसर्वाङ्गं वृषभं शुभलक्षणम् ॥ ३४ ॥
दत्वा तौ दम्पती पश्चाद्दैवज्ञेनानुमोदितौ।
मन्त्रमुच्चारयेयातां विधिवद्विहितार्हणैः ॥ ३५ ॥
देवदेव जगन्नाथ सर्वपापौघनाशन।
कर्मणानेन दानेन तथा गोयुगलस्य तु ॥ ३६ ॥
सन्तुष्टः सततं भूत्वा सन्ततिं देहि मे प्रभो।
ततस्तु वैष्णवं पात्रं शिवस्याग्रे निवेदयेत् ॥ ३७ ॥
आचार्याय प्रदेयानि दानानि निजशक्तितः।
गुरवे वाससी दत्वा कर्मशेषं समापयेत् ॥ ३८ ॥
प्रणम्य देवतास्ताश्च विसृज्य च विधानतः।
ततः कुम्भाम्भसा विप्रा अभिषिञ्चेत्पुरादृताः ॥ ३९ ॥
मन्त्रैश्च वारुणैः सौरैः शन्तिस्वस्त्ययनादिभिः।
पौराणैरागमोक्तैस्तु नानाफलविधायिभिः ॥ ४० ॥
नान्दीमुखेन विधिना ततः श्राद्धं समारभेत्।
नमो व इति मन्त्रेण नमस्कारमुदीरयेत् ॥ ४१ ॥
सप्त ते तान्त्रिका मन्त्राश्छान्दसाः पञ्चवारुणाः।
त्वन्नः प्रभृतयो द्वौ च वारुणौ चापरावपि ॥ ४२ ॥

एवं तज्जलमामन्त्र्य स्तुत्वा मन्त्रैः प्रणम्य च।
निमज्योन्मज्य च पुनस्तत्र स्नानं समाचरेत् ॥ ४३ ॥
प्रयोगं विधिवत्कृत्वा पुत्रकाम समृद्धये।
स्नास्यामहे स भगवान् प्रचेता नौ प्रसीदतु ॥ ४४ ॥
स्नायीयातां ततः स्नानं द्रव्यैर्मन्त्राभिमन्त्रितैः।
मृत्स्नागोमयगोमूत्रैर्द्रव्यैर्दधिपयोघृतैः ॥ ४५ ॥
तिलामलकपिष्टैश्च सर्वौषधिकुशोदकैः।
निवृत्य विधिवत्स्नानं दम्पती तावुभावपि ॥ ४६ ॥
स्नापितैव ततः पत्नी एकैकद्रव्यसञ्चयैः।
औदुम्बरं बहुफलं बिभ्रती निजमूर्द्धनि ॥ ४७ ॥
मन्त्रपूर्वं स्वपतिना दत्तां शाखां स्रजान्विताम्।
सप्तौषधिसुसंपूर्णैः कलशैश्चैव सप्तभिः ॥ ४८ ॥
मन्त्रपूतैः सदैवज्ञः स्नापयेत्तां विधानतः।
वर्धाकरश्च रास्ना च सहदेवी शतावरी ॥ ४९ ॥
पञ्चैला लक्ष्मणा चेति सप्तौषध्यभिषेचने।
या ओषध्यनुवाकेन सप्तौषध्यभिषेचने ॥ ५० ॥
ततस्तु वैणवं पात्रं सप्तधन्योप संभृतम्।
मुद्गतण्डुलगोधूमयवशालिसमन्वितैः ॥ ५१ ॥
सकङ्गुसहमाषैश्च धान्यैरिति च सप्तभिः।
फलानि विन्यसेत्तत्र याः फलिनीरिति मन्त्रतः ॥ ५२ ॥
नारिकेलं च नारिङ्गं दाडिमं बीचपूरकम्।
उत्तथीमथं पूगं च जम्बीरं चात्र सप्तमम् ॥ ५३ ॥

वैदिकैर्लौकिकैर्मन्त्रैः पूर्वोक्तैरेव सप्तभिः।
शिरौमेत्यनुवाकेन स्नानं दौर्भाग्यनाशनम् ॥ ५४ ॥
समाप्य विधिवत्पश्चान्मन्त्रमेतमुदीरयेत्।
शिशुमृत्युकरं यन्मे दौर्भाग्यं प्रागुपस्थितम् ॥ ५५ ॥
पादांगुष्ठादानखाग्रादाकेशान्तं समुत्सृजन्।
स्नानेनानेन मे देव तान्सर्वानपसारय ॥ ५६ ॥
इति विज्ञाप्य वरुणं मां च कर्मादिसाक्षिणम्।
एकचित्तः स्मरेद्देवमुमया सहितं शिवम् ॥ ५७ ॥
नान्दीमुखेन विधिना सन्तर्प्य पितृदेवताः।
बिभ्राडित्यनुवाकेन फलपुष्पाक्षताञ्जलिः ॥ ५८ ॥
उपस्थाय ततः पश्चात्कर्मशेषं समापयेत्।
ततस्तद्वैष्णवं पात्रं शिरस्याधाय योषितः ॥ ५९ ॥
कुशाग्रेण समालभ्य पठेन्मन्त्रान्सुशान्तिकान्।
स्वस्त्ययनाय च तथा शान्तये च मुहुर्मुहुः ॥ ६० ॥
मध्यमं पिण्डमस्नाति पत्नी दैवज्ञनोदिता।
आधत्त पितरो गर्भमिति मन्त्रेण मन्त्रितम् ॥ ६१ ॥
आचम्य विधिवत्पश्चात्कर्मशेषं समापयेत्।
शतं च भोजयेदन्यान् द्विजान्सन्तोष्य शक्तितः ॥ ६२ ॥
कृतकृत्यौ च तौ स्यातां पुत्रपौत्रसुखान्वितौ।

॥ इति सूर्यारुणसंवादोक्त-एकवस्त्रस्नानप्रयोगः॥

रुद्रस्नानप्रयोगः

हेमाद्रौ भविष्योत्तरे, युधिष्ठिर उवाच–

रुद्रस्नानं विधानेन कथयस्व जनार्दन।
सर्वदोषोपशमनं सर्वशान्तिप्रदं नृणाम् ॥ १ ॥

श्रीकृष्ण उवाच–

देवसेनापतिं स्कन्दं रुद्रपुत्रं षडाननम्।
अगस्त्यो मुनिशार्दूलः सुखासीनमुवाच ह ॥ २ ॥
सर्वज्ञोऽसि कुमार त्वं प्रसादाच्छङ्करस्य वै।
स्नानं रुद्रविधानेन ब्रूहि कस्य कथं भवेत् ॥ ३ ॥

स्कन्द उवाच–

मृतवत्सा तु या नारी दुर्भगा ऋतुवर्जिता।
या सूते कन्यकां वन्ध्या स्नानमासां विधीयते ॥ ४ ॥
अष्टभ्यां वा चतुर्दश्यामुपवासपरायणा।
ऋतौ शुद्धे चतुर्थेऽह्नि प्राप्ते सूर्यदिनेऽथवा ॥ ५ ॥
नद्योस्तु सङ्गमे कुर्यान्महानद्योर्विशेषतः।
शिवालये तथा गोष्ठे विविक्ते वा गृहाङ्गणे ॥ ६ ॥
आहिताग्निं द्विजं शान्तं धर्मज्ञं सत्यशालिनम्।
स्नानार्थं प्रार्थयेदेनं निपुणं रुद्रकर्मणि ॥ ७ ॥
ततस्तु मण्डपं कुर्याच्चतुरस्त्रमुदक्प्लवम्।
बद्धचन्दनमाल्यं च गोमयेनानुलेपितम् ॥ ८ ॥
तन्मध्ये श्वेतरजसा सम्पूर्णं पद्मालिखेत्।
मध्ये तस्य महादेवं स्थापयेत्कर्णिकोपरि ॥ ९ ॥

दद्याद्दलेषु नन्द्यादींश्चतुर्षु विधिपूर्वकम्।
इन्द्रादिलोकपालंश्च दलेष्वन्येषु विन्यसेत् ॥ १० ॥
देवीं विनायकं चैव स्थापयेत्तत्र पार्थिव।
दत्वार्घ्यं गन्धपुष्पं च धूपं दीपं गुडौदनम् ॥ ११ ॥
भक्ष्यान्नानाविधान्दद्यात्फलानि विविधानि च।
चतुष्कोणेषु भृङ्गारमश्वत्थदलभूषितम् ॥ १२ ॥
एकैकं विन्यसेद् ब्रह्मन्सर्वौषधिसमन्वितम्।
चतुर्दिक्षु मण्डपस्य दद्याद् भूतबलिं ततः ॥ १३ ॥
आग्नेय्यां दिशि कर्तव्यं मण्डलस्य समीपतः।
अग्निकार्ये शुभे कुण्डे पत्रपुष्पैरलङ्कृते ॥ १४ ॥
लवणं सर्पिषा युक्तं घृतेन मधुना सह।
मानस्तोकेन जुहुयात्कृतहोमे नवग्रहे ॥ १५ ॥
द्वितीयस्याग्निकार्यस्य कर्ता च ब्राह्मणो भवेत्।
रुद्रजाप्यकुदाचार्यं सितचन्दनचर्चितम् ॥ १६ ॥
सितवस्त्रपरीधानं सितमाल्यविभूषितम्।
शोभयेत्कङ्कणैः कण्ठचैः कर्णवेष्टाङ्गुलीयकैः ॥ १७ ॥
मण्डपस्य समीपस्थो जपेद्रुद्रान्विमत्सरः।
यावदेकादशगताः पुनरेव जपेच्च तान् ॥ १८ ॥
देवमण्डलवत्कार्यं द्वितीयं मण्डलं शुभम्।
तस्य मध्ये तु सा नारी श्वेतपुष्पैरलङ्कृतम् ॥ १९ ॥
श्वेतवस्त्रपरीधाना श्वेतगन्धानुलेपना।
सुखासनोपविष्टां तामाचार्या रुद्रजापकाः ॥ २० ॥

अभिषिञ्चेत्ततश्चैनामर्कपत्र पुटाम्बना।
चतुषष्टिऋचेनैव रुद्रेणैकादशेन तु ॥ २१ ॥
शतानि सप्तवर्णानां चतुर्भिरधिकानि तु।
पवित्रामिन्द्रकीटाजगृहगोदावरीमृदम् ॥ २२ ॥
सर्वौषधी रोचनां च नदीतीर्थोदकानि च।
अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद् ह्रदात् ॥ २३ ॥
वेश्यास्थानाद्राजसूयात् गोष्ठादानीय वै मृदम्।
एतत्प्रक्षिप्य कलशे शिवसंज्ञे सुपूजिते ॥ २४ ॥
आपादतलकेशान्तं कुक्षिदेशे विशेषतः।
सर्वाङ्गं लेपयेद्भक्त्या सुशीला काचिदङ्गना ॥ २५ ॥
रुद्राभिजप्तेन ततः स्नापयेत्कलशेन ताम्।
तोयपूर्णाष्टकलशैरश्वत्थदलपूरितैः ॥ २६ ॥
सर्वतोदिक् स्थितैः पश्चात् स्थापयेत्कलशाक्षतैः।
एवं स्नाता स्नापकाय दद्याद्गां काञ्चनं तथा ॥ २७ ॥
होतुरेवात्र निर्दिष्टा दक्षिणा गौः पयस्विनी।
ब्राह्मणानामथान्येषां स्वशक्त्या मुनिपुङ्गव ॥ २८ ॥
गोवस्त्रकाञ्चनादीनि दत्वा सर्वान् क्षमापयेत्।
कृतेनानेन विप्रेन्द्र रुद्रस्नानेन भामिनी ॥ २९ ॥
सुभगा कान्तिसंयुक्ता बहुपुत्रा प्रजायते।
सर्वेष्वपि हि मासेषु ब्राह्मणानुमतौ शुभम् ॥ ३० ॥

तस्मादवश्यं कर्तव्यं पुत्रात्स्त्री सुखमिच्छति।
या स्नानमाचरति रुद्रमिति प्रसिद्धं
श्रद्धान्विता द्विजवरानुमतानताङ्गी।
दोषान्निहत्य सकलांश्च शरीरभाजो भर्तुः
प्रिया भवति भारत जीववत्सा[1] ॥

॥ इति रुद्रस्नानप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ ब्रह्मयामलोक्तषड्ग्रहयोगशान्तिप्रयोगः

अथातः संप्रवक्ष्यामि ग्रहयोगाख्यशान्तिकम्।
अमावास्यादितिथिषु ग्रहयोगो भवेद्यदि ॥ १ ॥
एकर्क्षे भिन्नराशौ वा एकराश्यर्क्षभेदने।
शशिसूर्यसमायुक्ते ग्रहत्रयसमन्विते ॥ २ ॥
दुर्भिक्षादिभयं चैव चतुर्ग्रहसमन्विते।
महारोगभयं राष्ट्रक्षयो वृष्टिविनाशनम् ॥ ३ ॥
पञ्चग्रहसमायोगे दुर्भिक्षं सङ्करादिकम्।
नृपवैरं गर्भनाशो जायते जननाशनम् ॥ ४ ॥
ग्रहषट्कसमायोगे मन्त्रिणां मरणं भवेत्।
पश्वश्वादिभयं सर्वं सङ्करादिजनक्षयः ॥ ५ ॥
पट्टराज्ञो विनाशो वा महाभयमथापि वा।
सप्तग्रहसमायोगे क्षितीसमरणं ध्रुवम् ॥ ६ ॥

१-रुद्रयामलोक्त स्नान विधि और रुद्रस्नान विधि आदि विषय मुद्रित शान्तिकमलाकर में देखिये।

जगत्प्रलयमेवापि तदानिर्मानुषं जगत्।
अत ऊर्ध्वं महापातो नानादुःखमनोकुलम् ॥ ७ ॥
सूर्यस्तद्व्यतिरिक्तश्चेत्तदा योगो महद्भूतम्।
विना चन्द्रेण योगोऽपि जगत्प्रलयकारणम् ॥ ८ ॥
तदृक्षजातजन्तूनां महारोगो महाभयम्।
अर्थनाशस्थाननाशो मानहानिर्नृपीडनम् ॥ ९ ॥
वातपित्तादिसम्भूत महापीडा महाभयम्।
समायोगे गृहान्नृणां दोषान्कुर्वन्ति सर्वदा ॥ १० ॥
जन्माष्टमद्वादशे राशौ चतुर्थे पञ्चमेऽपि वा ॥ ११ ॥
पूर्वोक्तफलमेवात्र तस्याः शान्तिं प्रयत्नतः।
कुर्याद्दोषानुसारेण वित्तशाठ्यं न कारयेत् ॥ १२ ॥
तत्तद्ग्रहकृतिं कृत्वा सौवर्णेन प्रयत्नतः।
सुवर्णेन तदर्धेन पादेनापि कनीयसा ॥ १३ ॥
वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं कर्तव्यं शक्तितो नरैः।
पूर्वोक्तलक्षणे नैव गृहमूर्तिं च कारयेत् ॥ १४ ॥
ग्रहस्यैकैककलशं ग्रहयोगप्रमाणतः।
कारयेत्कुम्भमेकं वा निर्व्रणं सुदृढं नवम् ॥ १५ ॥
ग्रहस्येशानदिग्भागे शुद्धदेशेसमस्थले।
कुण्डे वा स्थण्डिले वापि होमं कुर्याद्विधानतः ॥ १६ ॥
तस्य पूर्वोत्तरेदेशै पूजास्थानं प्रकल्पयेत्।
चतुरस्त्रं हस्तमात्रं स्थण्डिलं तन्दुलेन तु ॥ १७ ॥

लिखेद् ग्रहाकृतिं तत्र स्थापयेत्प्रतिमां ततः।
अधिप्रत्यधिदेवादीन्दक्षिणोत्तरतः क्षिपेत् ॥ १८ ॥
उक्तगन्धैस्तथा पुष्पैस्तत्तन्माल्यैः फलैरपि।
तत्तद्ग्रहोक्तमन्त्रेण पूर्वोक्तेनैव पूजयेत् ॥ १९ ॥
स्वस्तिवाचनपूर्वेण आचार्यो ऋत्विजैः सह।
ग्रहपूजादिकं कृत्वा नैवेद्यान्तं समर्पयेत् ॥ २० ॥
ततो होमं प्रकुर्वीत स्वगृह्योक्त विधानतः।
चतुर्थ्यन्तं प्रकुर्वीत कलशस्थापन ततः ॥ २१ ॥
पूर्वोक्तेन विधानेन शुद्धतोयेन पूरयेत्।
पञ्चामृतं पञ्चगव्यं पञ्चत्वक्पञ्चपल्लवान् ॥ २२ ॥
तत्तन्मन्त्रैर्विनिक्षिप्य औषधानि विनिक्षिपेत्।
तत्तद्ग्रहोक्तविधिना मूलान्यादाय निक्षिपेत् ॥ २३ ॥
अब्लिङ्गैर्वारुणैर्वापि कलशं पूरयेत् गुरुः।
तत्तद्ग्रहोक्तविधिना तत्तन्मन्त्रैर्हुनेदथ ॥ २४ ॥
चर्वाज्यैर्जुहुयात्पश्चात्तिलाहुतिमथाचरेत्।
अथ स्विष्टकृतं हुत्वा होमशेषं समापयेत् ॥ २५ ॥
भद्रासनोपविष्टस्य यजमानस्य ऋत्विजः।
कलशस्योदकेनैवमभिषेकं समाचरेत् ॥ २६ ॥
योगग्रहोक्तमन्त्रैश्च जातवेदादिपञ्चकैः।
त्र्यम्बकेनेति मन्त्रेण क्षेत्रस्यपतिना अपि ॥ २७ ॥
यत इन्द्रभयेनैव लोकपालाष्टकैरपि।
सुरास्त्वामिति मन्त्रेण येन देवादयः क्रमात् ॥ २८ ॥

अन्यैश्च पुण्यसूक्तैश्च अभिषं समाचरेत्।
अभिषेकप्लुतं वस्त्रमाचार्याय निवेदयेत् ॥ २६ ॥
ततः शुक्लाम्बरधरः कुर्यादाज्यावलोकनम्।
ऋत्विग्भ्यां दक्षिणां दद्यात् धेनुशङ्खादिकानपि ॥ ३० ॥
तदभावे यथाशक्ति हिरण्यमपि दापयेत्।
ब्राह्मणान् भजयेत्पश्चाद्यथाविभवसारतः ॥ ३१ ॥
एवं यः कुरुते भक्त्या ग्रहदोषविवर्जितः।
पूर्वोक्तसर्वदोषैश्च विमुक्तः पुत्रवान् सुखी ॥ ३२ ॥
आयुरैश्वर्य संपन्नो जीवेद्वर्षशतं नरः।
इहलोके सुखी भूत्वा पश्चाच्छिवपुरं व्रजेत ॥ ३३ ॥

॥ इति ब्रह्मयामलोक्तषड्ग्रहयोगशान्ति प्रयोगः॥

हवनात्मकमहारुद्रन्यासप्रयोगः

विनियोगः–

ऊर्ध्वकेशि०। पृथ्वीति मन्त्रस्य०। सद्योजातमित्यस्य सद्योजात-ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता, वामदेवायेत्यस्य वामदेवऋषिः जगतीछन्दः विष्णुर्देवता, अघोरेभ्य इत्यस्याघोरऋषिरनुष्टुछन्दः रुद्रोदेवता, तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुषऋषिर्गायत्रीछन्दः रुद्रोदेवता, ईशान इत्यस्य ईशानऋषिरनुष्टुछन्दः रुद्रोदेवता सर्वेषां भस्मपरिग्रहणे विनियोगः।

ॐ सद्योजातं०। ॐ वामदेवाय०। ॐ अघोरेभ्यो०। ॐ तत्पुरुषाय०। ॐ ईशानः सर्व०। सव्यहस्ते परिग्रहणम्। दक्षिणहस्ते-नाच्छादनम्।

विनियोगः—अग्निरित्यादिभस्माभिमन्त्रणमन्त्राणां पिप्पलाद-ऋषिः गायत्रीछन्दः कालाग्निरुद्रोदेवता भस्माभिमन्त्रणे विनियोगः।

ॐ अग्निरि० वायुरि० जलमि० स्थलमि० व्योमेति० सर्वꣳ० हवाइदं भस्म मन इत्येतानि चक्षूंषि भस्मानि तस्माद् व्रतमेतत्पाशुपतं यद्भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत्तस्माद्व्रतमेतत्पाशुपतं पशुपाशविमोक्षाय।

विनियोगः—आपोज्योतिरित्यस्य प्रजापतिऋषीर्यजुश्छन्द-र्ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता भस्मानि अप आसेचने विनियोगः।

ॐ आपोज्योती०। ॐ नमः शिवायेति संमर्दनम्—

१-ईशान इत्यस्य ईशानऋषिरनुष्टुछन्दः रुद्रोदेवता शिरसि भस्मोद्धूलने विनियोगः। ॐ ईशानः सर्व० शिरसि।

२-तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुषऋषिर्गायत्रीछन्द० रुद्रो० मुखे म०।

३-अघोरेभ्य इत्यस्याघोरऋषिरनुष्टुछन्दः रुद्रो देवता हृदये भ०। ॐ अघोरे० हृदये।

४-वामदेवायेत्यस्य वामदेवऋषिर्जगतीछन्दः विष्णुर्देवता गुह्ये भ०। ॐ वामदेवाय० गुह्ये०।

५-सद्योजातमित्यस्य सद्योजातऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मादेवता पादयोर्भ०।ॐ सद्योजात० पादयोः।प्रणवेन मस्तकादिपादान्तम्।

मानस्तोकइत्यस्य कुत्सऋषिर्जगतीछन्दः एको रुद्रोदेवता भस्मोद्धरणे विनियोगः।

ॐ मानस्ताके०। त्र्यंबकमित्यस्य वशिष्ठऋषिरनुष्टुछन्दः त्र्यम्बको रुद्रोदेवता, त्र्यायुषमित्यस्य नारायणऋषिरुष्णिक्छन्दः आशीर्देवता भस्मना त्रिपुण्ड्रधारणे विनियोगः

यास्य प्रथमारेखा मा गार्हपत्यश्चाकारो रजो भूर्लोकश्चात्माक्रिया-शक्ति ऋग्वेदः प्रातः सवनं महादेवो देवता, यास्य द्वितीयारेखा सा दक्षिणाग्निरुकारः सत्वमन्त-रिक्षमन्तरात्माचेच्छाशक्तिर्यजुर्वेदो माध्यन्दिनं महेश्वरोदेवता, यास्य तृतीयारेखा साऽऽहवनीयो मकार-स्तमोद्यौः परमात्मा ज्ञानशक्तिः सामवेदस्तृतीय सवनं शिवो देवता, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेक०। त्रिपुण्डधारणम्। ॐ नमः शिवायेति रुद्राक्षधारणम्।

ॐ तिर्यग्विलाय चमसोर्ध्वबुध्नाय नमः शिरसि।
ॐ गौतमभरद्वाजाभ्यां नमः नेत्रयोः।
ॐ विश्वामित्रजमदग्निभ्यां नमः श्रोत्रयोः।
ॐ वशिष्ठकश्यपाभ्यां नमः नासापुटयो।
ॐ अत्रये नमः वाचि।
ॐ गायत्र्यै छन्दसे नमः शिरसि।
ॐ उष्णिहेछन्दसे नमः सवित्रे नमः ग्रीवायाम्।
ॐ बृहत्यैछन्दसे नमः बृहस्पतये नमः अनूके।
ॐ बृहद्रथन्तराभ्यां नमः द्यावापृथिवीभ्यां नमः बाह्वोः।

ॐ त्रिष्टुभेछन्दसे नमः इन्द्राय नमः उदरे।
ॐ जगत्यै छन्दसे नमः आदित्याय नमः श्रोण्योः।
ॐ अतिछन्दसे नमः प्रजापतये नमः लिङ्गे उदकोपस्पर्शः।
ॐ यज्ञायज्ञियाय छन्दसे नमः वैश्वानराय नमः पायौ।(गुदे)
ॐ अनुष्टुपछन्दसे नमः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ऊर्वोः।
ॐ पङ्क्तयै छन्दसे नमः महद्भ्यो नमः ज़ान्वोः।
ॐ द्विपदायैछन्दसे नमः विष्णवे नमः पादयोः।
ॐ विच्छन्दसे नमः वायवे नमः प्राणेषु।
ॐ न्यूनाक्षराय छन्दसे नमः अद्भ्यो नमः मस्तकादिपादान्तम्।

विनियोगः–

मनोजूतिरित्यस्य आङ्गिरसो बृहस्पतिऋषिः यजुश्छन्दः विश्वेदेवा देवता हृदये न्यासे विनियोगः।

ॐ मनोजूति० हृदयाय नमः। अबोध्यग्निरित्यस्य बुधगविष्ठिरावृषी त्रिष्टुप्छन्दः वैश्वानरोग्निदेवता शिरसि न्यासे विनियोगः।

ॐ अबोध्यग्नि० शिरसे स्वाहा। मूर्द्धानमित्यस्य भरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वैश्वानरोग्निर्देवता शिखायां न्यासे विनियोगः।

ॐ मूर्द्धानन्दिवो० शिखायै वषट्। मर्माणित इत्यस्य विवस्वानृषिः त्रिष्टुप्छन्दः लिङ्गोक्तादेवता कवचन्यासे विनियोग ॐ मर्माणि ते० कवचाय हुम्। विश्वतश्चक्षुरित्यस्य विश्वकर्माभौतनऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः विश्वकर्मादेवता नेत्रन्यावे ॐ विश्वत० नेत्रत्रयाय वौषट्। मानस्तोक इत्यस्य कुत्सऋषिर्जगतीछन्दः एकोरुद्रोदेवता अस्त्रन्यासे विनियोगः।

ॐ मानस्तोके० अस्त्राय फट्। या ते रुद्रेत्यस्य परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः एकोरुद्रोर्देवता शिखायां न्यासे विनियोगः।

ॐ या ते रुद्रशिवातनूर० शिखायाम्। अस्मिन्महतीत्यस्य परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रादेवता शिरसि न्यासे विनियोगः। अस्मिन्मह० शिरसि। असंख्यातेत्यस्य परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रादेवता ललाटन्यासे विनियोगः।

ॐ असंख्याता० ललाटे। त्र्यंबकमितिद्वयोः क्रमेण वशिष्ठ-प्रजापतिऋषिरनुष्टुप्छन्दः त्र्यंबको रुद्रो दे० नेत्रयोर्न्या०। ॐ त्र्यंबकं यजामहे० नेत्रयोः। मानस्तोक इत्यस्य कुत्सऋषिर्जगतीछन्दः एको-रुद्रो देवता नासिकायां न्यासे विनियोगः।

ॐ मानस्तोके तन० नासिकायाम्। अवतत्येत्यस्य परमेष्ठी-ऋषिरनुष्टुप्छन्दः एकोरुद्रो देवता मुखे न्यासे विनियोगः। ॐ अव-तत्य० मुखे। नीलग्रीवा इति द्वयोः परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा देवता कंठे न्यासे विनियोगः। ॐ नीलग्रीवाशि० कंठे। नमस्ते आयुधायेति परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः एकोरुद्रो देवता प्रकोष्ठयोर्न्या०। ॐ नमस्त ऽआ० प्रकोष्ठयोः। ये तीर्थानीत्यस्य परमेष्ठीऋषिरनुष्टु-प्छन्दः बहवो रुद्रा देवता हस्तयोर्न्या०।

ॐ ये तीर्थानि प्र० हस्तयोः। नमो वः किरिकेभ्यः परमेष्ठीऋषिः सामोष्णिक्यजुरुष्णिक्दैवीजगतीछन्दांसि किरिकादयो

मन्त्रवर्णावगता अन्यतरतो न० हृदये न्या०। ॐ नमो वः कि० हृदये। नमोहिरण्य बाहवे-इत्यस्य परमेष्ठीऋषिः-अत्रैकादशाक्षराणां यजुस्त्रिष्टुप् अष्टा- क्षराणां यजुरनुष्टुपू दशाक्षराणां यजुः पंक्तिश्छन्दो हिरण्यवर्णा० नाभौ न्या०। ॐ नमो हिरण्य०। इमारुद्रायेत्यस्य कुत्सऋषिः जगतीछन्दः गुह्ये न्यासे विनियोग। ॐ इमारुद्राय० गुह्ये। मानोमहान्त- मित्यस्य कुत्सऋषिः जगतीछन्दः एकोरुद्रो देवता ऊर्वोर्न्या०।

ॐ मानोम० ऊर्वोः। एषते इत्यस्य प्रजापतिऋषिः सामपंक्ति-र्यजुर्जगत्यश्छन्दांसि रुद्रोदेवता जान्वोर्न्या०। ॐ एषते० जान्वोः। अवरुद्रमित्यस्य प्रजापतिऋषिः पंक्तिश्छन्दः रुद्रोदेवता जंघयोर्न्या०। ॐ अवरुद्र० जंघयोः। अध्यवोचदित्यस्य परमेष्ठीऋषिः पंक्तिश्छन्दः एको रुद्रो देवता कवचन्यासे विनियोगः।

ॐ अध्यवोचद० कवचम्। नमो विल्मिन इत्यस्य परमेष्ठी-ऋषिः-अत्र षडक्षराणां यजुर्गायत्रीछन्दः पञ्चाक्षरयोर्दैवीपंक्तिः सप्ताक्षरस्य यजुरुष्णिक्गतिछन्दांसि विल्वादयो मन्त्रवर्णावगता अन्यतरतो नमस्कारा० उपकवचन्यासे विनियोगः। ॐ नमो बिल्मिने० उपकवचम्। नमोस्तु नीलग्रीवायेत्यस्य परमेष्ठीऋषिः अनुष्टुप्छन्द एको रुद्रो देवता तृतीयनेत्रन्यासे विनियोगः। ॐ नमोस्तु नी० तृतीयनेत्रम्। प्रमुञ्चेत्यस्य परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्द एको रुद्रो देवता अस्त्रन्यासे विनियोगः।

ॐ प्रमुञ्चध० अस्त्रम्। य एतावन्तश्चेति परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रादेवता दिग्बन्धने विनियोगः। ॐ यऽएतावन्त० दिग्बन्धः।

ॐ नमो भगवते रुद्राय-इति दशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापतिऋषिः विराट्छन्दः श्रीरुद्रो देवता न्यासे विनियोगः।

ॐ नमो मूर्धनि। ॐ नं नमो नासिकायाम्। ॐ मो नमः ललाटे। ॐ भं नमः मुखे। ॐ गं नमः कंठे। ॐ नं नमः हृदये। ॐ हें नमः दक्षिणहस्ते। ॐ सं नमः वामहस्ते। ॐ द्रां नमः नाभौ। ॐ वं नमः पादयोः।

त्रातारमित्यस्य गर्गऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवता प्राच्यां०। ॐ त्रातारमि० त्वन्नो अग्नेइत्य हिरण्यस्तूप आंगिरसऋषिर्जगतीछन्दोग्नि-र्देवता आग्नेय्यां स०। ॐ त्वन्नो अ०। सुगन्नुपन्थामित्यस्य प्रजापति ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वैवस्वतोदेवता दक्षिणस्यां०। ॐ सुगन्नुप०। असुन्वन्तमित्यस्य प्रजापतिऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः निर्ऋति-र्देवता नैऋत्यां विनियोगः।

ॐ असुन्वन्तम०।तत्वायामीत्यस्य शुनः शेषऋषि त्रिष्टुप्छन्दः वरुणो देवता प्रती०। ॐ तत्वायामि० आनोनियुद्भिरित्यस्य वशिष्ठऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वायुर्देवता वायव्यां स०। ॐ आनो नि०। वयठं० सोमेत्यस्य बन्धुऋषिः गायत्रीछन्दः सोमोदेववता उदीच्यां स०।

ॐ वय० सोम०।तमीशान मित्यस्य गौतमऋषिः जगतीछन्दः ईशानो देवता ईशान्यां स०। ॐ तमीशान०। अस्मे रुद्रा इत्यस्य

प्रगाथऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ऊर्द्धायां स। ॐ अस्मेरुद्रा०। स्योनापृथिवी-त्यस्य मेधातिथिऋषिः गायत्रीछन्दः अनन्तोदेवता अधोदिशि स०। ॐ स्योना०। यज्जाग्रत इति षडर्चस्य शिवसङ्कल्पसूक्तस्य शिव-संकल्पऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः मनो देवता हृदये न्यासे होमे च विनियोगः।

ॐ यज्जाग्रतो दू० हृदयाय नमः। सहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्यनारायणपुरुषऋषिः आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप्छन्दः यज्ञेन यज्ञमित्यस्य त्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीजं पुरुषोदेवता शिरसि न्या० हो०। ॐ सहस्रशीर्षा० शिरसे स्वाहा। अद्भ्यः संभृत इति षड्गर्चस्यो-त्तरनारायणपुरुषऋषिः आद्यानां तिसृणां त्रिष्टुप्छन्दः चतुर्थपञ्चमयोरनुष्टुप्छन्दः आन्त्याया: त्रिष्टुप्छन्दः आदित्यो देवता शिखा० होम०।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० शिखायै वषट्। आशुः शिशान इति द्वादशानामप्रतिरथऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवता कवचन्यासे होमे च विनियोगः।

ॐ आशुः शिशानः० कवचाय हुम्। विभ्राडित्यस्य विभ्राट-सौर्यऋषिः जगतीछन्दः सूर्योदेवता, उदुत्त्यमिति तिसृणां प्रस्कण्व-ऋषिः गायत्रीछन्दः सूर्योदेवता, तं प्रत्नथेत्यस्य स्वयंभूब्रह्मऋषिः जगतीछन्दः विश्वेदेवादेवता, अयं नेन इत्यस्य स्वयंभूब्रह्मऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सोमोदेवता, चित्रमित्यस्य स्वयंभूब्रह्मऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता, आन इत्यस्य अगस्त्यऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता यदद्येत्यस्य श्रुतकथसुतकथावृषी गायत्रीछन्दः

सूर्योदेवता, तरणिरित्यस्य प्रस्कण्वऋषिः गायत्रीछन्दः सूर्योदेवता तत्सूर्यस्येतिद्वयोः कुत्सऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता, बण्महानिति द्वयोर्जमदग्निऋषिः आद्यस्यबृहतीछन्दः द्वितीयस्य सतोबृहतीछन्दः सूर्योदेवता, श्रायन्त इवेत्यस्य नृमेधाऋषिः बृहतीछन्दः सूर्योदेवता, अद्यादेवा इतस्य कुत्सऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता, आकृष्णोनेत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गिरसऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता, नेत्र त्रयेन्यासे होमे च विनियोगः। ॐ विभ्राड्बृह०। नेत्रत्रयाय वौ०। शतरुद्रिया-ख्यस्य नमस्ते इति रौद्राध्यायस्य परमेष्ठीऋषिः नमस्ते इत्यस्य गायत्रीछन्दः यातेरुद्रेत्यादीनां तृसृणामनुष्टुप्छन्दः मानोमहान्तमिति द्वयोः कुत्सऋषिः जगतीछन्दः सर्वेषामेकोरुद्रोदेवता, नमोहिरण्य-बाहवे इत्यादीनां श्वभ्यःश्वपतिभ्यश्च वो नमः इत्यन्तानां पञ्चचत्वारि-शत्सख्याकानां यजुषां हिरण्यबाहुः सेनानीर्दिशांपतिरित्यादिमन्त्रा-वर्णांवगता उभयतो नमस्कारा बहवोरुद्रादेवता, नमो भवाय च रुद्रायचेत्यादीनां प्रखिदतेचेत्यन्तानां पञ्चसप्तसंख्याकानां यजुषां भवादयो मन्त्रलिङ्गावगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रादेवताः, नमः इषुकृभ्द्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नम इत्यस्य यजुष उभयतो नमस्कारा बह०, नमो वः किरिकेभ्य इत्यादीनां यजुषामन्यतरो नमस्कारा बहवो रुद्रादेवताः द्राप इत्यस्य उपष्टाद्बृहतीछन्दः इमारुद्रायेति कुत्सऋषिः जगतीछन्दः याते इत्यस्य अनुष्टुप्छन्दः परिन इति द्वयोः त्रिष्टुप्छन्दः विकिरुद्र सहस्राणीति द्वयोरनुष्टुप्छन्दः सप्तानामेकोरुद्रोदेवता असंख्ययातेत्यादीनां दशानां यजुष अनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रादेवताः, नमोस्तु रुद्रेभ्य इत्यादिनां

त्र्याणां यजुषां घृतिश्छन्दः बहवो रुद्रादेवताः सकलाध्यायस्य शतशीर्षा रुद्रोदेवता अस्त्रन्यासे होमे च विनियोगः। दे नमस्ते रुद्र० अस्त्राय फट्। एषते इत्यस्य प्रजापतिऋषिः सामपङ्क्तिर्यजुजगत्यश्छन्दांसि रुद्रोदेवता मुद्राप्रदर्शने विनियोग। ॐ एषतेरुद्र० योनिमुद्राप्रदशनम्। वयर्ठ० सोमेत्यस्य ऋषिर्गायत्रीछन्दः सोमोदेवता, एषते इत्यनयोः प्रजापतिऋषिः सामपङ्क्तयजुर्जगत्यश्छन्दासि रुद्रोदेवता अवरुद्रमित्यस्य प्रजापतिऋषिः सामपङ्क्तश्छन्दः रुद्रोदेवता, भेषजमसीत्यस्य प्रजापतिऋषिः ककुप्छन्दः रुद्रोदेवता, त्र्यम्बकमित्यनयोः क्रमेण वशिष्ठप्रजापतिऋषिः अनुष्टुप्छन्दः त्र्यम्बकोरुद्रोदेवता, एतत्त इत्यस्य प्रजापतिऋषिः आस्तारपङ्क्त-श्छन्दः रुद्रोदेवता त्र्यायुषमित्यस्य नारायणऋषिः उष्णिक्छन्दः आशीर्देवता, शिवोनामेत्यस्य प्रजापतिऋषिः प्राजापत्याबृहतीछन्दः क्षुरोदेवता, निवर्त्तयामीत्यस्य प्रजापतिऋषिः प्रजापत्यात्रिष्टुप्छन्दः लिङ्गोक्तादेवता जपे विनियोगः ॐ वयर्ठ० सोमव्रते०। उग्रश्चेत्यस्य प्रजापतिऋषिः गायत्रीछन्दः मरुतोदेवता, अग्निर्ठ० हृदयेत्यादीनां यजुषां प्रजापतिऋषिलिङ्गोक्तादेवता, आयासाय स्वाहेत्यादीनां प्रजापतिऋषिः लिङ्गक्तादेवता जपे विनियोगः। ॐ उग्रश्च भीम०। वाजश्च मे इत्यादि चमकमन्त्राणां धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्तानां वाजाय स्वाहेत्यादीनां वेट् स्वाहेत्यन्तानां देवा ऋषयः, वाजश्च मे इत्यादीनां चतुरक्षराणां दैवीबृहतीछन्दः, ऊर्क् च मे इत्यादित्र्यक्षराणां दैव्यनुष्टुप् प्रयतिश्च मे इति पञ्चाक्षराणां दैवीपङ्क्तः, आधिपत्यञ्च मे इत्यादीनां देवीत्रिष्टुप्छन्दः

हारियोजनश्च मे इत्यादिसप्ताक्षराणां दैवी जगती—आयुर्यज्ञेन कल्पन्तामित्यादीनामष्टाक्षराणां यजुरनुष्टुप् भुवनस्य पतये स्वाहेत्यादीनां नवाक्षराणां यजुबृहती मुग्धाय वैनठं० शिनायेत्यादीनां दशाक्षराणां यजुस्त्रिष्टुप अङ्गुलयः शक्वरयोदिशश्च मे इत्यस्य द्वादशाक्षरस्य यजुर्जगतीछन्दः, सर्वेषामग्निर्देवता होमे विनियोगः। ॐ वाजश्च मे०। ऋचं वाचमिति शान्त्याध्यायस्य दध्यङथर्वर्णऋषिः विश्वेदेवादेवता ऋचं वाचमिति चतुर्णा यजुषां देवीजगतीछन्द ऋगादयो लिङ्गोक्तादेवता, वागोज इत्यस्य यजुर्जुगतीछन्दः वागादिलिङ्गोक्ता देवता, यन्मे इत्यस्य पङ्क्तिश्छन्दः बृहस्पतिदेवता, तिसृणां महाव्याहतीनां दध्यङथर्वणऋषिः देवीगायत्रीदैव्युष्णिक्दैवीगायत्रीछन्दांसि अग्निवायुसूर्यादेवता, तत्सवितुरित्यस्य दध्यङथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः सवितादेवता कयान ऋचस्य दध्यङथर्वणऋषिः द्वयोर्गायत्रीछन्दः तृतीयायाः पादनिचृद् गायत्रीछन्दः इन्द्रोदेवता, कयात्वमित्यस्य गायत्रीछन्दः इन्द्रोदेवता, इन्द्रोविश्वस्येति द्विपदाविराट्छन्दः इन्द्रोदेवता शन्नो मित्रः शन्नो वात इतिद्वयोरनुष्टुप्छन्दः मित्रावरुणादयो लिङ्गोक्तादेवता, अहानिशमित्यस्य द्विपदागायत्रीछन्दः अनानि रात्रयश्च देवता, शन्नो इन्द्राग्नीत्यस्य त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्राग्नी इन्द्रावरुणौ इन्द्रापूषणौ इन्द्रासोमौ च देवता, शन्नोदेवीरित्यस्य गायत्रीछन्दः आपोदेवता, स्योनापृथिवी देवता, आपोहिष्ठेति ऋचस्य दध्यङथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः आपोदेवता, द्यौः शान्तिरित्यस्य शक्वरीछन्दः द्यौरादयोलिङ्गोक्ता-देवता, दृतेदृठं० हेत्यस्य ब्राह्मो

अनुष्टुप्छन्दः आशीर्देवता दृतेदृठं० हेत्यस्य उष्णिक्छन्दः आशीर्देवता नमस्ते हरसे इत्यस्य दध्यङाथर्व-ऋषिः बृहतीछन्दः अग्निर्देवता, नमस्ते अस्तु० यतोयतः इत्यनयो-रनुष्टुप्छन्दः आद्याविद्युत्स्तनयित्नुर्भगवान्देवता, सुमित्रियान इत्यस्य दध्यङाथर्वणऋषिः प्रजापत्याजगतीछन्दः आपोदेवता द्वितीयाः महावीरोदेवता, तच्चाक्षुरित्यस्य दध्यङ्ङाथर्वणऋषिः अक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः सूर्योदेवता शान्त्यर्थं होमे विनियोगः। ॐ ऋचं वाचं प्रप०।

ध्यानम्–

ॐ शुद्धस्फटिकसंकाशं त्रिनेत्रंपञ्चवक्त्रकम्।
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम् ॥ १ ॥
नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम् ॥ २ ॥
कमण्डल्वक्षसूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिनम्।
ज्वलन्तं पिङ्गलजटाजूटमुद्योतकारिणम् ॥ ३ ॥
अमृतेन युतं हृष्टमुमादेहार्धधारिणम्।
दिव्यसिंहासनासीनं दिव्यभोगसमन्वितम् ॥ ४ ॥
दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम् ॥ ५ ॥
सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत् ॥ ६ ॥

॥ इति हवनात्मकरुद्रन्यासप्रयोगः॥

विष्ण्वादिप्रतिष्ठादौ मूर्तिन्यासः

कर्ता प्राङ्मुख होकर इस संकल्प को करे–

देशकालौसंकीर्त्य–अस्मिन् अमुकदेवार्चाधिवास कर्मणि देवकलासान्निध्यार्थं प्रणवादिन्यासान् करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके हाथ में पुष्प लेकर कर्ता न्यास कार्य करे–

प्रणवन्यासः–सर्वदेवसाधारणः		ॐ एं नमः	ऊर्ध्वदशनेषु
ॐ अं नमः	पादयोर्न्यसामि[1]	ॐ ऐं नमः	अधोदशनेषु
ॐ उं नमः	हृदये	ॐ ओं नमः	ऊर्ध्वोष्ठे
ॐ मं नमः	ललाटे	ॐ औं नमः	अधरोष्ठे
व्याहृतिन्यासः सर्वदेवसाधारणः		ॐ अं नमः	ललाटे
ॐ भूः नमः	पादयोः	ॐ अः नमः	जिह्वायाम्
ॐ भुवः नमः	हृदये	ॐ यं नमः	त्वचि
ॐ स्वः नमः	ललाटे	ॐ रं नमः	चक्षुषोः
मातृकान्यासः–सर्वदेवसाधारण		ॐ लं नमः	नासिकायाम्
ॐ अं नमः	शिरसि	ॐ वं नमः	दशनेषु
ॐ आं नमः	मुखे	ॐ शं नमः	श्रोत्रयोः
ॐ इं नमः	दक्षिणनेत्रे	ॐ षं नमः	उदरे
ॐ ई नमः	वामनेत्रे	ॐ सं नमः	कटिदेशे
ॐ उं नमः	दक्षिणश्रवणे	ॐ हं नमः	हृदये
ॐ ऊं नमः	वामगण्डे	ॐ क्षं नमः	नाभौ
ॐ ऋं नमः	दक्षिणगण्डे	ॐ लं नमः	लिङ्गे
ॐ ॠं नमः	वामगण्डे	ॐ पं फं बं भं मं	दक्षिणबाहौ
ॐ लृं नमः	दक्षिणनासापुटे	ॐ तं थं दं धं नं	वामबाहौ
ॐ लृं नमः	वामनासापुटे	ॐ टं ठं डं ढं णं	दक्षिणजङ्घायाम्
		ॐ चं छं जं झं ञं	वामजङ्घायाम्
		ॐ कं खं गं घं ङं	सर्वाङ्गुलिषु

(1) 'न्यासामि' इस पद को सर्वत्र जोड़ देना चाहिए।

अथ ऋक्षन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ रविचन्द्राभ्यां	नेत्रयोः
ॐ भौमाय	हृदये
ॐ बुधाय	स्कन्धे
ॐ बृहस्पतये	जिह्वायाम्
ॐ शुक्राय	लिङ्गे
ॐ शनैश्चराय	ललाटे
ॐ राहवे	पादयोः
ॐ केतुभ्यो	केशेषु
ॐ रोहिणीभ्यो	हृदये
ॐ मृगशिरसे	शिरसि
ॐ आर्द्रायै	केशेषु
ॐ पुनर्वसुभ्यां	ललाटे
ॐ पुष्पाय	मुखे
ॐ आश्लेषाभ्यो	नासिकायाम्
ॐ मघाभ्यो	दन्तेषु
ॐ पूर्वाफाल्गुनीभ्यो	दक्षिणश्रवणे
ॐ उत्तराफाल्गुनीभ्यो	वामश्रवणे
ॐ हस्ताय	हस्तयोः
ॐ चित्रायै	दक्षिणभुजे
ॐ स्वात्यै	वामभुजे
ॐ विशाखाभ्यां	हृदि
ॐ अनुराधाभ्यो	स्तनयोः
ॐ ज्येष्ठाभ्यो	दक्षिणकुक्षौ
ॐ मूलाय	वामकुक्षौ
ॐ पूर्वाषाठाभ्यो	कटिपार्श्वौः
ॐ उत्तराषाठाभ्यो	लिङ्गे
ॐ श्रवणधनिष्ठाभ्यो	वृषणयोः
ॐ शतभिषाभ्यो	नेत्रे
ॐ पूर्वाभाद्रपदाभ्यो	दक्षिणोरौ
ॐ उत्तराभाद्रपदाभ्यो	दक्षिणणौरौ
ॐ रेवतीभ्यो	दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ अश्विनीभ्यां	वामजङ्घायाम्
ॐ भरणीभ्यो	दक्षिणपादे
ॐ कृत्तिकाभ्यो	वामपादे
ॐ ध्रुवाय	नाभ्याम्
ॐ सप्तर्षिभ्यो	कण्ठे
ॐ मातृमण्डलाय	कटिदेशे
ॐ विष्णुपदेभ्यो	पादयोः
ॐ नागवीथ्यै ॐ अङ्गवीथ्यै	वनामालादेशे
ॐ ताराभ्यो	रोमकूपेषु
ॐ अगस्त्याय	कौस्तुभदेशे

अथ कालन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ चैत्राय	शिरसि
ॐ वैशाखाय	मुखे
ॐ ज्येष्ठाय	हृदये
ॐ आषाढाय	दक्षिणस्तने
ॐ श्रावणाय	वामस्तने
ॐ भाद्रपदाय	उदरे
ॐ आश्विनाय	कट्याम्
ॐ कार्तिकाय	दक्षिणोरौ

ॐ मार्गशीर्षाय वामोरौ
ॐ पौषाय दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ माघाय वामजङ्घायाम्
ॐ फाल्गुनाय पादयोः
ॐ संवत्सराय दक्षिणोर्ध्वबाहौ
ॐ परिवत्सराय दक्षिणोर्ध्वबाहौ
ॐ इद्ववत्सराय वामावोबाहौ
ॐ अनुवत्सराय वामोर्ध्वबाहौ
ॐ पर्वभ्यो सन्धिषु
ॐ ऋतुभ्यो लिङ्गे
ॐ अहोरात्रेभ्यो अस्थिषु
ॐ क्षणाय
ॐ लवाय
ॐ कामायै
ॐ काष्ठायै — रोमसु
ॐ कृतयुगाय मुखे
ॐ त्रेतायुगाय हृदये
ॐ द्वापराय नितम्बे
ॐ कलियुगाय पादयोः
ॐ चतुर्दशमन्वन्तरेभ्यो बाह्वोः
ॐ पराय
ॐ परार्द्धाय — जङ्घयोः
ॐ महाकल्पाय शरीरे
ॐ उदगयनाय
ॐ दक्षिणाय — पादयोः
ॐ विषुवद्भ्यो सर्वाङ्गुलिषु

अथ वर्णन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ ब्राह्मणाय मुखे
ॐ क्षत्रियाय बाह्वोः
ॐ वैश्याय ऊर्वो
ॐ शूद्राय पादयोः
ॐ सङ्करजेभ्यो पादग्रे
ॐ अनुलोमजेभ्यो सर्वाङ्गसन्धिषु
ॐ गोभ्यो मुखे
ॐ अजाभ्य
ॐ आविकाभ्यो — हस्तयोः
ॐ ग्राम्यपशुभ्यो
ॐ आरण्यपशुभ्यो — ऊर्ध्वोः

अथ स्तोयन्यासःसर्वदेवसाधारणः

ॐ मेघेभ्यो केशेषु
ॐ अभ्रेभ्यो रोमसु
ॐ नदीभ्यो सर्वगात्रेषु
ॐ समुद्रेभ्यो कुक्षिदेशे

अथ वेदन्यासः सर्वदेवसाधारणाः

ॐ ऋग्वेदाय शिरसि
ॐ यजुर्वेदाय दक्षिणभुजे
ॐ सामवेदाय वामभुजे
ॐ सर्वोपनिषद्भ्यो हृदये
ॐ इतिहासपुराणेभ्यो जङ्घयोः
ॐ अथर्वाङ्गिसेभ्यो नाभौ
ॐ कल्पसूत्रेभ्यो पादयोः
ॐ व्याकरणेभ्यो वक्त्रे

ॐ तर्केभ्यो	कण्ठे
ॐ मीमांसायै ॐ निरुक्ताय	हृदये
ॐ छन्द: शास्त्रेभ्यो ॐ ज्योति: शास्त्रेभ्यो	नेत्रयो:
ॐ गीताशास्त्रेभ्यो ॐ भूतशास्त्रेभ्यो	श्रोत्रयो:
ॐ आयुर्वेदाय	दक्षिणभुजे
ॐ धनुर्वेदाय	वामभुजे
ॐ योगशास्त्रेभ्यो	हृदये
ॐ नीतिशास्त्रेभ्यो	पादयो:
ॐ वश्यतन्त्राय	ओष्ठयो:

अथ वैराजन्यास: सर्वदेवसाधारण:

ॐ दिवे नम:	मूर्ध्नि
ॐ सूर्यलोकाय ॐ चन्द्रलोकाय	नेत्रयो:
ॐ अनिललोकाय	घ्राणे
ॐ व्योम्ने	नाभौ
ॐ समुद्रेभ्यो	वस्तिदेशे
ॐ पृथिव्यै	पादयो:

अथ देवतान्यास: सर्वदेवसाधारण:

ॐ हिरण्यगर्भाय	शिरसि
ॐ कृष्णाय	केशेषु
ॐ रुद्राय	ललाटे
ॐ गणेशाय	वामपार्श्वे
ॐ यमाय	भ्रुकुट्याम
ॐ अश्विभ्यां	कर्णयो:
ॐ वैश्वानराय	मुखे
ॐ मरुद्भ्यो	घ्राणे
ॐ वसुभ्यो	कण्ठे
ॐ रुद्रेभ्यो	दन्तेषु
ॐ सरस्वत्यै	जिह्वायाम्
ॐ इन्द्राय	दक्षिणभुजे
ॐ बलये	वामभुजे
ॐ प्रह्लादाय	दक्षिणस्तने
ॐ विश्वकर्मणे	वामस्तने
ॐ नारदाय	दक्षिणकुक्षौ
ॐ अनन्तादिभ्यो	वामकुक्षौ:
ॐ वरुणाय	हस्तयो:
ॐ मित्राय	पादयो:
ॐ विश्वेभ्यो-देवेभ्यो	ऊर्वो:
ॐ पितृभ्यो	जान्वो:
ॐ यक्षेभ्यो	जङ्घयो:
ॐ राक्षसेभ्यो	गुल्फयो:
ॐ पिशाचेभ्यो	पादयो:
ॐ असुरेभ्यो	पादाङ्गुलिषु
ॐ विद्याधरेभ्यो	पार्ष्ण्यो:
ॐ ग्रहेभ्यो	पादतलयो:
ॐ गुह्यकेभ्यो	गुह्ये
ॐ पूतनादिभ्यो	नखेषु
ॐ गन्धर्वेभ्यो	ओष्ठयो:
ॐ कार्तिकेयाय	दक्षिणपार्श्वे
ॐ गणेशाय	वामपार्श्वे
ॐ मत्स्याय	मूर्ध्नि

ॐ कूर्माय पादयोः
ॐ नृसिंहाय ललाटे
ॐ वराहाय जङ्घयोः
ॐ वामनाय मुखे
ॐ परशुरामाय हृदये
ॐ रामाय बाहुषु
ॐ कृष्णाय नाभौ
ॐ बोधाय बुद्धौ
ॐ कल्किने जानुदेशे
ॐ केशवाय शिरसि
ॐ नारायणाय मुखे
ॐ माधवाय ग्रीवायाम्
ॐ गोविन्दाय बाह्वोः
ॐ विष्णवे हृदये
ॐ मधुसूदनाय पृष्ठे
ॐ त्रिविक्रमाय कट्योः
ॐ वामनाय जठरे
ॐ श्रीधराय दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ हृषीकेशाय वामजङ्घायाम्
ॐ पद्मनाभाय गुल्फयोः
ॐ दामोदराय पादयोः

अयमेव 'मूर्तिन्यासः' "देवयोनिन्यासः' इति चोच्यते।

अथ क्रतुन्यासः-सर्वदेवसाधारण

ॐ अश्वमेधाय मूर्ध्नि
ॐ नरमेधाय ललाटे
ॐ राजसूयाय मुखे
ॐ गोसवाय कण्ठे
ॐ द्वादशाहाय हृदि
ॐ अहीनेभ्यो नाभौ
ॐ सर्वजिद्भ्यो दक्षिणकट्याम्
ॐ सर्वमेधाय वामकट्याम्
ॐ अग्निष्टोमाय लिङ्गे
ॐ अतिरात्राय वृषणयोः
ॐ आप्तोर्यामाय ऊर्वोः
ॐ षोडशिने जान्वोः
ॐ ऊक्थ्याय दक्षिणाजङ्घायाम्
ॐ वाजपेयाय वामजङ्घायाम्
ॐ अत्यग्निष्टोमाय दक्षिणबाहौ
ॐ चातुर्मास्याय वामबाहौ
ॐ सौत्रामणये हस्तेषु
ॐ पश्विष्टिभ्यो अङ्गुलीषु
ॐ दर्शपूर्णमासाभ्यां नेत्रयोः
ॐ सर्वेष्टिभ्यो रोमकूपेषु
ॐ स्वाहाकाराय ⎤
ॐ वषट्काराय ⎦ स्तनयोः
ॐ पञ्चमहायज्ञेभ्यो पादाङ्गुलीषु
ॐ आहवनीयाय मुखे
ॐ दक्षिणाग्नये हृदये
ॐ गार्हपत्याय नाभौ
ॐ वेद्यै उदरे
ॐ प्रवर्ग्याय भूषणेषु

ॐ सवनेभ्यो पादयोः
ॐ इध्मेभ्यो बाहुषु
ॐ दर्मेभ्यो केशेषु

अथ गुणन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ धर्माय मूर्ध्नि
ॐ ज्ञानाय हृदि
ॐ वैराग्याय गुह्ये
ॐ ऐश्वर्याय पादयोः

अथायुधन्यासो विष्णुप्रतिष्ठा मात्रविषयः

ॐ खड्गाय शिरसि
ॐ शार्ङ्गाय मस्तके
ॐ मुसलाय दक्षिणभुजे
ॐ हलाय वामभुजे
ॐ चक्राय नाभि-जठर-पृष्ठेषु
ॐ शङ्खाय लिङ्गे-वृषणदेशे च
ॐ गदायै जङ्घयोर्जानुनोश्च
ॐ पद्माय गुल्फयोः पादयोश्च

अथायुधन्यासः शिवप्रतिष्ठा मात्रविषयः

ॐ वज्राय शिरशि
ॐ शक्तये मस्तके
ॐ दण्डाय दक्षिणभुजे
ॐ खड्गाय वामभुजे
ॐ पाशाय जठर-नाभि-पृष्ठदेशेषु
ॐ अंकुशाय लिङ्गे-वृषणयोश्च
ॐ त्रिशूलाय जान्वोः
ॐ ध्वजाय जङ्घयोः
ॐ चक्राय गुल्फयोः
ॐ पद्माय पादयोः

अथ शक्तिन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ लक्ष्म्यै ललाटे
ॐ सरस्वत्यै मुखे
ॐ रत्यै गुह्ये
ॐ प्रीत्यै कण्ठे
ॐ कीर्त्यै दिक्षु
ॐ शान्त्यै हृदि
ॐ तुष्ट्यै जठरे
ॐ पुष्टयै सर्वाङ्गे

अथाङ्गमन्त्रन्यासः विष्णु प्रतिष्ठामात्रविषयः

ॐ हृदयाय नमः हृदये
ॐ शिरसे स्वाहा शिरसि
ॐ शिखायै वषट० शिखायाम्
ॐ कवचाय हुँ सर्वाङ्गेषु
ॐ नेत्रत्रयाय वौषट नेत्रयोः
ॐ अस्त्राय फट करयोः
ॐ नमः हृदये
ॐ नं नमः शिरसि
ॐ भगवते शिखायाम्
ॐ वासुदेवाय कवचे
ॐ नमो भागवते वासुदेवाय अस्त्रम्
ॐ श्रीवात्साय स्तनयोः
ॐ कौस्तुभाय उरसि
ॐ वनमालायै कण्ठे

ॐ ॐ नमः पादयोः
ॐ नं नमः जानुनोः
ॐ मों नमः गुह्ये
ॐ भं नमः नाभ्याम्
ॐ गं नमः हृदये
ॐ वं नमः कण्ठे
ॐ तें नमः मुखे
ॐ वां नमः नेत्रयोः
ॐ सुं नमः भाले
ॐ दें नमः मूर्ध्नि
ॐ वां नमः दक्षिणापार्श्वे
ॐ यं नमः वामपार्श्वे

एवमेव तत्तद्देवताया अङ्गमन्त्रन्यास कल्पना कार्या।

अथ मन्त्रन्यासः सर्वदेव साधारणः

ॐ अग्निमीले पादयोः
ॐ इषेत्वोर्जे गुल्फयोः
ॐ अग्नआयाहि जङ्घयोः
ॐ शन्नोदेवीर जान्वोः
ॐ एका च ऊर्वोः
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो जठरे
ॐ दीर्घायुस्त ओ हृदये
ॐ विश्वतश्चक्षु कण्ठे
ॐ त्रातारमिन्द्र वक्त्रे
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे स्तनोर्नेत्रयोश्च
ॐ मूर्द्धानं दिवो मूर्ध्नि

अथ नारायणमूर्तौ द्वादशाक्षर मन्त्रेण न्यासः

ॐ केशवाय शिरसि
ॐ नं नारायणाय मुखे
ॐ मों माधवाय ग्रीवायाम्
ॐ भं गोविन्दाय कण्ठे
ॐ गं विष्णवे पृष्ठे
ॐ वं मधुसूदनाय कुक्षौ
ॐ तें त्रिविक्रमाय कटिदेशे
ॐ वां वामनाय जङ्घयेः
ॐ सुं श्रीधराय वामगुल्फे
ॐ दें हृषीकेशाय दक्षिणगुल्फे
ॐ वां पद्मनाभाय वामपादे
ॐ यं दामोदराय दक्षिणापादे

अथ नारायणमूर्तौ विष्ण्वष्टाङ्ग मन्त्रन्यासः

ॐ हुं हृदयाय हृदये
ॐ विष्णवे शिरसि
ॐ ब्रह्मणे शिखायाम्
ॐ ध्रुवाय कवचे
ॐ चक्रिणे अस्त्रायफट् अस्त्रहस्तयोः
ॐ नमः शम्भवाय गायत्रीं दक्षिणनेत्रे
ॐ विजयाय सावित्रीं वामनेत्रे
ॐ चक्रशूलाय पिङ्गुलास्त्रं दिक्षु

अथ नारायणमूर्तौ पुरुष सूक्तन्यासः

ॐ सहस्रशीर्षा पादयोः

ॐ पुरुष एव जङ्घयोः
ॐ एतावानस्य जान्वोः
ॐ त्रिपादूर्ध्व ऊर्वोः
ॐ ततो विराड वृषणदेशे
ॐ तस्माद्यज्ञत्सर्वहुतः सं कट्योः
ॐ तस्पाद्याज्ञात्० ऋचः सा नाभौ
ॐ तस्मादश्वा हृदि
ॐ तं यज्ञं ब स्तनयोः
ॐ यत्पुरुषं बाह्वोः
ॐ ब्राह्मणोस्य मुखे
ॐ चन्द्रमा मनसो चक्षुषोः
ॐ नाभ्या आसी कर्णायोः
ॐ यत्पुरुषेण भ्रुवोः
ॐ सप्तास्या भाले
ॐ यज्ञेन यज्ञ शिरसि

अथोत्तरनारायणन्यासः

ॐ अद्भ्यः सम्भृ हृद्ये
ॐ वेदाहमे तं शिरसि
ॐ प्रजापतिश्च शिखायाम्
ॐ यो देवेभ्य आ कवचे
ॐ रुचं ब्राह्मं नेत्रयोः
ॐ श्रीश्चते अस्त्राय फट्

अथ गायत्रीन्यासः सूर्यस्य -

ॐ तकारं पादाङ्गुष्ठयोः
ॐ त्सकारं गुल्फयोः
ॐ विकार जङ्घयोः
ॐ तुःकरं जानुनोः
ॐ वकारं ऊर्वोः
ॐ रेकारं गुह्ये
ॐ णिकारं वृषणयोः
ॐ यंकारं कटिदेशे
ॐ भकारं नाभौ
ॐ गोकारं जठरे
ॐ देकारं स्तनयोः
ॐ वकारं हृदये
ॐ स्यकारं कण्ठे
ॐ धीकारं वदने
ॐ मकारं तालुदेशे
ॐ हिकारं नासिकायाम्
ॐ धीकारं चक्षुषोः
ॐ योकारं भ्रूमध्ये
ॐ योकारं ललाटे
ॐ नःकारं पूर्वशिरसि
ॐ प्रकारं दक्षिणशिरसि
ॐ चोकारं पश्चिमशिरसि
ॐ दकारं उत्तरशिरसि
ॐ याकारं मूर्ध्नि
ॐ तकारं सर्वत्र
ॐ तत्सवितुः हृदये
ॐ वरेण्यं शिरसि
ॐ भर्गोदेवस्य शिखायाम्
ॐ धीमहि कवचे

ॐ धियोयोनः	नेत्रयोः	ॐ ह्रीं झं स्थित्यै	वामाङ्गुलिमूले
ॐ प्रचोदयात्	अस्त्रे	ॐ ह्रीं ञं सिद्ध्यै	वामाङ्गुल्यग्रेषु
अथ देवमूर्तौ निवृत्तिन्यासः		ॐ ह्रीं टं जरायै	दक्षपादमूले
ॐ ह्रीं अं निवृत्यै	शिरसि	ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै	दक्षजानुनि
ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै	मुखे	ॐ ह्रीं डं शान्त्यै	दक्षगुल्फे
ॐ ह्रीं इं विद्यायै	दक्षिणनेत्रे	ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै	दक्षपादाङ्गुलीषु
ॐ ह्रीं ईं शान्त्यै	वामनेत्रे	ॐ ह्रीं णं रत्यै	वामपादाङ्गुल्येग्रेषु
ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै	दक्षिणश्रोत्रे	ॐ ह्रीं तं कामिन्यै	वामपादमूले
ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै	वामश्रोत्रे	ॐ ह्रीं थं रदायै	वामजानुनि
ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै	दक्षिणनासापुटे	ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै	वामगुल्फे
ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै-	वामनासापुटे	ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै	वामपादाङ्गुलिमूले
ॐ ह्रीं लृं परायै	दक्षकपोले	ॐ ह्रीं नं दीर्घायै	वामपादाङ्गुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं लॄं सूक्ष्मायै	वामकपोले	ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै	दक्षिणकुक्षौ
ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै-	ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ	ॐ ह्रीं फं सुप्त्यै	वामकुक्षौ
ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै-	अधोदन्तपङ्क्तौ	ॐ ह्रीं बं अभयायै	पृष्ठे
ॐ ह्रीं ओं सावित्र्यै	ऊर्ध्वोष्ठे	ॐ ह्रीं भं निद्रायै	नाभौ
ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै	अधरोष्ठे	ॐ ह्रीं मं मात्रे	उदरे
ॐ ह्रीं अं सुरूपायै	जिह्वायाम्	ॐ ह्रीं यं शुद्धायै	हृदि
ॐ ह्रीं अः अनन्तायै	कण्ठे	ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै	कण्ठे
ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै	दक्षबाहुमूले	ॐ ह्रीं लं कृपायै	ककुदि
ॐ ह्रीं खं ऋध्यै	दक्षकूपरे	ॐ ह्रीं वं उल्कायै	स्कन्धयोः
ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै	दक्षमणिबन्धे	ॐ ह्रीं शं मृत्यवे	दक्षिणकरे
ॐ ह्रीं घं मेधायै	दक्षकराङ्गुलिमूले	ॐ ह्रीं षं पीतायै	वामकरे
ॐ ह्रीं ङं कान्त्यै	दक्षाङ्गुल्यग्रेषु	ॐ ह्रीं सं अरुणायै	दक्षिणपादे
ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै	वामबाहुमूले	ॐ ह्रीं हं अरुणायै	वामपादे
ॐ ह्रीं छं द्युत्यै	वामकर्पूरे	ॐ ह्रीं त्र असितायै	मूर्द्धादिपादान्तम्
ॐ ह्रीं जं स्थिरायै	वाममणिबन्धे	ॐ ह्रीं क्षं सर्वसिद्धिगौर्यैं	पादादिमूर्धान्तम्

अथ देवीमूर्तौ वशिन्यादिन्यासः

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओ औं अं अः क्लॄं वशिनीवाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ललाटे। ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये। ॐ टं ठं डं ढं णं ब्ल्यूं विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे। ॐ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः हृदि। ॐ पं फं बं भं मं ह्स्ल्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः नाभौ। ॐ यं रं लं वं हस्ल्ब्यूं- सर्वेश्वरीवाग्देवतायै आधारे। ॐ शं षं सं हं क्षं क्ष्मीं- कौलिनीवाग्देवतायै सर्वाङ्गे। ॐ मं जीवात्मने नमः। ॐ भं प्राणात्मने नमः। देवशरीरे व्यापकं। ॐ बुद्ध्यात्मने०। ॐ फं अहङ्कारात्मने०।

ॐ पं मन आत्मने	हृदि	ॐ झं पाण्यात्मने	पाण्योः
ॐ नं शब्दतन्मात्रात्त्मने	शिरसि	ॐ जं पदात्मने	पादयोः
ॐ धं स्पर्शतन्मात्रात्मने	मुखे	ॐ छं पाय्वात्मने	पायौ
ॐ दं रूपतन्मात्रात्मने	हृदि	ॐ चं उपस्यात्मने	उपस्थे
ॐ थं रसतन्मात्रात्मने	हस्तयोः	ॐ ङं पृथिव्यात्मने	पादयोः
ॐ तं गन्धतन्मात्रात्मने	पादयोः	ॐ द्यं अबात्मने	वस्तौ
ॐ णं श्रोतात्मने	श्रोत्रयोः	ॐ द्यं तेज आत्मने	हृदि
ॐ ढ त्वगात्मने	त्वचि	ॐ खं प्राणात्मने	घ्राणे
ॐ डं चक्षुरात्मने	नेत्रयोः	ॐ कं आकाशात्मने	शिरसि
ॐ ठं ज़िह्वात्मने	जिह्वायाम्	ॐ पं सूर्यात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये
ॐ टं घ्राणात्मने	घ्राणे	ॐ सं सोमात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये
ॐ ञं वागात्मने	वाचि	ॐ वं वह्न्यात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये

स यथा स्वहृत्पद्मात् ऐश्वर्य तेजः पुञ्जवामनाड्या निः सार्य, ब्रह्म-रन्ध्रेण प्रतिमाया बुद्धिकर्मेन्द्रियाणि मनः सहितानि यथास्थानं हृत्पद्मे पुरुषं न्यसेत्।

ततः अर्चाबीजं स्वाभिमतं मूर्त्या स्वमन्त्रेण संयोज्य विशेषबीजाद्यनुपलब्धौ तु देवतानाम्नः आद्यमक्षरं सानुस्वारं चतुर्थ्यन्तं तत्तद्देवतानाम्ना संयोज्य तद्यथा–

ॐ शिं शिवात्मने–ॐ विं विष्णवात्मने नमः। ॐ रां रामात्मने नमः इत्यादिप्रकारेण देवं भावयित्वा। ॐ यं सर्वात्मने इति सार्वसाक्षिणं भावयित्वा। ॐ गं सर्वात्मने–इति देवं सर्वतोमुख भावयित्वा ॐ वः अनुग्राहकात्मने–इत्यनुग्राहक भवयित्वा ॐ सर्वभूतात्मने–इति सर्वभूत कारणं भावयित्वा ॐ लं सर्वसंहात्मने–इति सर्वसंहारात्मकं भावयित्वा ॐ क्षं कोपात्मने–इति सर्वभयकारकं ध्यात्वा तत्वत्रयं न्यसेत्। ॐ आत्मतत्वाय। ॐ आत्मतत्वाधिपतये ब्रह्मणे। ॐ विद्यातत्वाय। ॐ विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे हृदये। ॐ शिवत्वाय। ॐ शिवतत्वाधिपतये रुद्राय-शिरसि।

अथ शिवस्य ब्रह्मन्यासः		ॐ अघोराय	शिखायाम्
ॐ ईशानाय	अङ्गुष्ठयोः	ॐ तत्पुरुषाय	कवचे
ॐ तत्पुरुषाय	तर्जन्योः	ॐ ईशानाय	अस्त्रे
ॐ अघोरेभ्यो	मध्यमयोः	ॐ हृदयाय	कनिष्ठिकयोः
ॐ वामदेवाय	अनामिकयोः	ॐ शिरसे स्वाहा	अनामिकयोः
ॐ सद्योजाताय	कनिष्ठिकयोः	ॐ शिखायै वषट्	मध्यमयोः

ॐ सद्योजाताय हृदि ॐ कवचाय हुम् तर्जन्योः
ॐ वामदेवाय शिरसि ॐ अस्त्राय फट् अङ्गुष्ठयोः

एवं विन्यस्य, परेण तेजसा संयोज्य, कवचेनावगुण्ठ्य, सर्वकर्मसु निजोजयेत्। आचमन सर्वत्र इत्थं देवस्य करन्यासं कृत्वा 'लिङ्गमुद्रां' बध्वा ॐ ईशानः सर्वविद्यानां० सदा शिवोम्' इति मन्त्रेण ईशान (नाम्नी) मुष्टिं बध्नीयात्।

अथ शिवस्य कलान्यासः

ॐ ईशानः सर्व० ईशानं मूर्ध्नि (अङ्गुल्यग्रैः रुद्रमुद्रया अयं न्यासः कार्यः।

ॐ तत्पुरुषाय वि० तत्पुरुषं मुखे (तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन अयं न्यासः कार्यः)।
ॐ अघोरेभ्योऽथ० अघोरं हृदि (मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन अयं न्यासः कार्यः)
ॐ वामदेवाय वामदेवं गुह्ये (अङ्गुष्ठानामिकायोगेन अयं न्यासः कार्यः)
ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि (पादादारेभ्य मस्तकान्तं कनिष्ठाङ्गुष्ठयोगेन न्यासः
ॐ ईशानः सर्वविद्यानां नमः ईशानीं देवस्य उपरितनमूर्ध्नि। ॐ ईश्वरः सर्वभूतानां नमः अभयदां देवस्य पूर्वमूर्ध्नि। ॐ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपांति-ब्रह्मा इष्टदां कलां देवस्य दक्षिमूर्ध्नि। ॐ शिवो मे अस्तु नमः मरीचीं कलां देवस्य उत्तरमूर्ध्नि। ॐ सदाशिवोऽम् नमः ज्वालिनीं पश्चिममूर्ध्नि।

अथ शिवस्य तत्पुरुषकलान्यासः

ॐ तत्पुरुषायविद्महे-पूर्ववक्त्रेशान्तिम्
ॐ महादेवाय धीमहि दक्षिणवक्त्रे-विद्याम्
ॐ तन्नो रुद्रो उत्तरवक्त्रे प्रतिष्ठां
ॐ प्रचोदयात् पश्चिमवक्त्रे घृतिम्

अथ शिवस्याघोर कलान्यासः

ॐ कलविकरणाय सञ्जीवनींवामजानौ
ॐ बलविकरणाय धात्रींदक्षिण जङ्घायाम्
ॐ बलाय वृद्धिं वामजङ्घायाम्
ॐ बलाय छायां दक्षिणस्फिचि
ॐ प्रमथनाय क्रियां वामस्फिचि

ॐ अघोरेभ्यो तमां हृदये
ॐ थ घोरेभ्यो जरां उरसि
ॐ घोर सत्वां स्कन्धयोः
ॐ घोरतरेभ्यो निद्रां नाभौ
ॐ सर्वेभ्यो सर्वव्याधि कुक्षौ
ॐ सर्वसर्वेभ्यो मृत्युं पृष्ठे
ॐ नमस्ते अस्तु क्षुधां वक्षसि
ॐ रुद्ररूपेभ्यो तृषां उरसि

अथ वामदेवकलान्यासः

ॐ वामदेवाय जरा गुह्ये
ॐ ज्येष्ठाय रक्षां लिङ्गे
ॐ श्रेष्ठाय रतिं दक्षिणोरौ
ॐ रुद्राय पालिनीं वामोरौ
ॐ कालाय कलां दक्षिणजानौ
ॐ सर्वभूतदमनाय-भ्रामणीं कट्याम्
ॐ मनो शोषिणीं दक्षिणपार्श्वे
ॐ उन्मनाय ज्वरां वामपार्श्वे

अथ सद्योजातकलान्यासः

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सिद्धि-दक्षिणपादे
ॐ सद्योजाताय वै नमो ऋद्धिंवामपादे
ॐ भवे दितिं दक्षिणपाणौ
ॐ भवे लक्ष्मी वामपाणौ
ॐ नातिभवे मेधां नासायाम्
ॐ भवस्व मां कान्ति शिरसि
ॐ भव स्वधां दक्षिणबाहौ
ॐ उद्भवाय प्रभां वामबाहौ

ततः 'तमाद्याः कला अत्र विशन्तु' इति मन्त्रेणा-वशिष्टकलान्तर न्यासभावनां कुर्यात्। इत्थं न्यासकरणेन विद्यादेवं हं सं भावयित्वा 'ॐ हंस हंस' इति। मन्त्रेण हृदयादिन्यासं कुर्यात्। तद्यथा–ॐ हं सां हृदयाय नमः। ॐ हं सीं शिरसे स्वाहा। ॐ हं सूं शिखायै वषट्। ॐ हं सैं कवचाय हुम्। ॐ हं सौं अस्त्राय फट्। नृसिंहमूर्तौ तु 'नायं हृदयादिन्यासः किन्तु 'ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल स्वाहा' इति मन्त्रेण षडावृत्तेन षडङ्गन्यासाः कार्याः। न्यासानन्तरं बलिश्च नृसिंहाय देय हिति वशेषः। नारसिंही यदा स्थाप्या अधिवास्य निशागमे। कृत्रिमं वाऽथ साक्षाद्वा पशुं दत्वा बलिं हरेत्–इति वचनात्। एवं न्यासविधिं कृत्वा निद्राकलशे निद्रामावाहयेत्।'

॥ इति विष्ण्वादिप्रतिष्ठादौ मूर्तिन्यासः॥

विशिष्ट - परिशिष्ट

विविध विषयों पर आवश्यक विचार
विविध देवी-देवताओं के गायत्री मंत्र

विविध विषयों पर आवश्यक विचार

१. जिसकी पत्नी दूरदेश में ही, पतित हो, रजस्वला हो और अनिष्ट करनेवाली हो, उसके पति को अन्य कुशा की या शरकी पत्नी बनाकर नित्यकर्म करने का अधिकार कहा है।

२. किसी के मत से सधवा को तिल और कुशा का स्पर्श करना लिखा है।

३. गणेशजी को तुलसी पत्र छोड़कर बाकी के सब पत्र प्रिय है। भैरव की पूजा में तुलसी का ग्रहण नहीं है।

४. केवल सूर्य देव को शंख के जल से पाद्यादिक विहित नहीं है।

५.कुन्द का पुष्प शिवको माघ महिने को छोड़कर निषेध है।

६. बिना स्नान किये तुलसी पत्र जो तोड़ता है, उसे देवता स्वीकार नहीं करते और तोड़ने वाले को पञ्चगव्यप्राशन से शुद्धि कही है। रुद्रधर का मत है कि-तुलसी शब्द से पुष्पमात्र का ग्रहण है।

७. रविवार को तुलसी तोड़ने के जो निषेध वचन मिलते है, वे कृष्ण तुलसी परक नहीं है। यह आचारेन्दु का मत है। रविवार को दूर्वा नहीं तोड़नी चाहियें।

८. केतकी पुष्प शिवको नही चढ़ानां चाहिये। अन्य मत से केतकी पुष्प धत्तुर परक या वन केतकी परक है।

९. केतकी पुष्प से कार्तिक मास में विष्णु की पूजा अवश्य करे।

१०. करवीर से विष्णु की पूजा न करे। इसका यों अर्थ है-घर में लगाये हुए करवीर से विष्णु की पूजा करे।

११.भगवान् सूर्य को बिल्वपत्र विहित और अविहित होने से विकल्प है-यह ज्ञानमाला का कथन है। शिव आदि देव को बिल्वपत्र उलटा, सीधा, छिन्न-भिन्न और सूखे पत्रका चूर्ण भी चढ़ाया जा सकता है।

१२.देवताओं के प्रीत्यर्थ प्रज्वलित दीप को बुझाना नही चाहिए।

१३. शालीग्राम और बाणलिंग का आवाहन तथा विसर्जन नहीं होता। यदि उनपर देवतान्तर का अर्चन करेंगे तो आवाहनादि होंगे। यह तृचभास्कर का मत है।

१४. जो मूर्ति स्थापित हो चुकी उसमें आवाहन और विसर्जन नहीं होता है।

१५. तुलसी पत्र को मध्याह्नोत्तर ग्रहण न करे – यह गोधूलस्मृति का कथन है।

१६. पूजा करते समय यदि गुरुदेव, ज्येष्ठ व्यक्ति या पूज्य व्यक्ति आ जाय तो, उनको उठकर प्रणाम कर उनकी आज्ञा से शेष कर्म को समाप्त करे–यह कुलार्णव का मत है।

१७. सभी देवी–देवताओं का पूजन पुरुषसूक्तसे किया जा सकता है यह आचारेन्दु में लिखा है।

१८. मृतिका की मूर्ति का आवाहन और विसर्जन होता है और अन्त में शास्त्रीय विधि से गंगाप्रवाह भी किया जाता है। जैसे– काली, दुर्गा, सरस्वती आदि।

१९. कमल को पाँच रात, बिल्वपत्र को दस और तुलसी को ग्यारहरात बाद प्रक्षालन कर पूजन के कार्य में लिया जा सकता है। यह हेमाद्रि का मत है।

२०. पञ्चामृत में यदि सब वस्तु प्राप्त न हो सके तो केवल दुग्ध से स्थान कराने मात्र से पञ्चामृतजन्यफल मिल जाता है। यह आचारेन्दु का मत है। पञ्चामृत का सम विभाग ग्रहण करना मिलता है।

२१. अक्षत यवको भी कहते है। पञ्चायतन पूजन में अक्षत का निषेध नहीं मिलता है। यह हेमाद्रि का मत है। केवल शालीग्राम पर अक्षत नही चढ़ता। लाल रंग मिश्रित चावल चढ़ाया जा सकता है। अर्घ्यादि कार्य में अक्षत का ग्रहण है। यह निबन्ध का मत है।

२२. हाथ में धारण किये पुष्प, ताबें के पात्र में चन्दन और चर्म पात्र में गंगाजल अपवित्र हो जाते है।

२३. पिघला हुआ घृत और पतला चन्दन देवताओं को नहीं चढ़ाना चाहिये।

२४. दीपक से दीपक को जलाने से प्राणी दरिद्री और रोगी होता है। दक्षिणाभिमुख दीपक न रखें। देवी के बायें और दाहिने दीपक रखें।

२५. द्वादशी, संक्रान्ति, रविवार, पक्षान्त, निशि और सन्ध्या काल में तुलसी पत्र न तोड़े।

२६. विष्णुधर्मोत्तर के मत से देवकार्य के लिये तुलसी, दानकार्य लिए समिधा और गौ के लिये तृण का इन्दुक्षय में ग्रहण कर सकता है।

२७. प्रतिदिन की पूजा में साफल्यता के लिये दक्षिण अवश्य चढ़ावे।

२८. एक हाथ से प्रणाम करना और एक प्रदक्षिणा करने से पूर्व कृत किया हुआ पुण्य नष्ट हो जाता है। केवल चण्डी और विनायक में एक ही प्रदक्षिणा का साधारण विधान मिलता है, यह हलायुध का मत है।

२९. शैव और सौर नैवेद्य भक्षण में चान्द्रायणव्रत करना लिखा है। अनापत्ति में अन्य निर्माल्य भक्षण में भी उपरोक्त ही प्रयश्चित्त है, ज्योतिलिङ्गादि ने पूज्यक द्वारा शिवभक्त फल-तीर्थादिक-अन्न अलोभी होकर ले सकता है। पञ्चायतन स्थिर चर लिङ्गों में और प्रतिमा में अन्नादिक स्वयं ग्रहण कर सकता है। यह आचारेन्दु का मत है।

३०. बलिदान देने से दुर्गा प्रसन्न अवश्य होती हैं, लेकिन देनेवाले को हिंसाजन्य पाप अवश्य लगता है। यह ब्रह्मवैवर्त प्रकृतिखण्ड का मत है। उत्सर्गमात्र करने वाले, छेदन करनेवाले, पुष्टि करनेवाले, रक्षक, आगे पीछे बाँधने वाले भी वध के भागी होते है।

३१. मांगलिक कार्यों में अन्य निर्मित (अन्य धारित) अँगूठी धारण नहीं करनी चाहिये।

३२. आसन, शयन, दान, भोजन, वस्त्रसंग्रह, विवाद और विवाह के समयों पर छींक शुभ मानी गयी है।

३३. मूत्र और पुरीषोत्सर्गयुक्त जो जप, हवन, अर्च्चनादि करता है, वह सब अपवित्र होता है।

३४. जो मलिन वस्त्र पहिनकर, मूषक आदि के काटे वस्त्र युक्त हो, केशादि बाल कर्तन युक्त और मुख दुर्गन्ध युक्त हो जप आदि करता है, उसे देवता नाश कर देते हैं।

३५. मृत्तिका, गोबर को निशा में और प्रदोषकाल में गोमूत्र ग्रहण न करे। प्रातःकाल, मंगलवार और रविवार को मृत्तिका से स्नान न करे।

३६. स्त्री और शूद्र के शंखध्वनि करने मात्र से रुष्ट और भयान्वित हो लक्ष्मी वहाँ से हट जाती हैं।

३७. दर्भ या दर्भरूपी कुशासन पर अकारण शयन नहीं करना चाहिये।

३८. पीपल को नित्य नमस्कार पूर्वाह्न के दोपहर में ही करना चाहियें, इसके बाद न करे। यह मलमासतत्त्व का कथन है।

३९. दिन में कपित्थ की छाया में बैठना, रात्रि में दधि-भोजन और कपास की दतुवन करने से लक्ष्मी का नाश होता है। यह अत्रिस्मृति का कथन है।

४०. जहाँ अपूज्यों का पूजा होती है और विद्वानों का अनादर होता है, उस स्थान पर दुर्भिक्ष मरण और भय उपस्थित होता है। यह पद्मपुराण का मत है।

४१. स्कन्दपुराण का मत है कि-पौष मास की शुक्ल दशमी तिथि, चैत्र की पञ्चमी और श्रावण की पूर्णिमा तिथि को लक्ष्मी प्राप्ति के लिये लक्ष्मी का पूजन करे। यदि गुरुवार युक्त पूर्णिमा हो तो, लक्ष्मी पूजन करने से पुनर्जन्म नहीं होता और धनपुत्र आदि बढ़ते है।

४२. कालचन्द्रिका का मत है कि–कृष्णपक्ष में रिक्ता तिथि में दशमी, द्वादशी और श्रवणादि नक्षत्र में लक्ष्मी का पूजा न करे।

४३. स्कन्द का मत है कि- अपराह्न काल में रात्रि में कृष्ण पक्ष में द्वादशी तिथि में और अष्टमी को लक्ष्मी का पूजन प्रारम्भ न करे।

४४. शनिवार, मंगलवार, बुधवार और शुक्रवार को लक्ष्मी की पूजा प्रारम्भ न करे।

४५. जो व्यक्ति स्नान वस्त्र से ही अपने शरीर को पोछते है, उनका शरीर कुत्ते की जीभ से चाटे हुए के समान होता है। उनकी शुद्धि पुनः स्नान से होती है।

४६. चन्दनादि लगाने पर भस्म धारण कर सकते हैं और भस्म लगाने पर लौकिकादि चन्दन धारण न करे।

४७. स्मृतितत्त्व का कथन है कि–सोमवती अमावस्या, रविवार युक्त सप्तमी, सोमवार युक्त चतुर्थी और गुरुवार युक्त अष्टमी का जो व्यक्ति पाप या पुण्य करता है, वह साठ हजार वर्ष अक्षय हो जाता है।

४८. जो नित्य देवताओं का पूजन नहीं करता है, उससे देवता अत्यन्त बुभुक्षित हो उसको सन्तान और सम्पत्ति का भक्षण कर ही लेते हैं।

४९. लक्ष्मी की कामनावालों को तांबे के कुण्ड या ईंटे से निर्मित कुण्ड में हवन करने का विधान मिलता है।

५०. लक्ष्मी प्राप्ति के लिये मण्डप बनाकर जो हवन किया जाता है उसके पूर्व भूमि का शुभ मुहूर्त में संशोधन करना उचित है।

५१. जो होम जिस देवता के उद्देश्य से हो, उसका उसी के मन्त्र से हवन करना चाहिये।

५२. महाभारत में लिखा है, जो यज्ञ नहीं करते, वे उस श्रेष्ठ लोक अर्थात परलोक को प्राप्त नहीं करते।

५३. हवन के समय सभी मंन्त्रों के अन्त में 'स्वाहा' का उच्चारण करना चाहिये, यह प्रयोगसार का मत है।

५४. स्कंदपुराण में वर्णित है कि, मिट्टी की प्रतिमा का अधम और उत्तम कहा गया है। रत्नमयी प्रतिमा को सर्वोत्तम कहा गया है। जो समस्त मनोरथों की पूर्ति करती हैं।

५५. जो पुरुष एक पीठ में यंत्रके बिना भिन्न-भिन्न देवताओं की पूजा करता है, उसे देवता श्राप देते हैं तथा वह रौरव नरक को प्राप्त करता, यह शक्तिसंगमतन्त्र का मत है।

५६. अत्रिस्मृति-२४६ के अनुसार, देवयात्रा विवाह, यज्ञक्रिया तथा सभी प्रकार के उत्सवों में स्पर्शास्पर्श का विचार नहीं होता है।

५७. यज्ञादि कर्म की समाप्ति होने पर पृथक रूप से ब्राह्मण को दुग्धवाली गौ देवे, यह याज्ञवल्क्य संहिता का मत है।

५८. रुद्रयाग १८११ (एक हजार आठ सौ ग्यारह) आहुति होती है।

५९. विष्णुयाग में १६००० (सोलह हजार) आहुति होती है।

६०. गणेशयाग में १००००० (एक लाख) आहुति होती है।

६१. लक्ष्मीयाग में श्री सूक्त (ऋग्वेदोक्त) मन्त्रों से आहुति होती है।

६२. विश्व शान्ति यज्ञ शुक्लयजुर्वेद के छत्तिसवें अध्याय के सभी मन्त्रों से आहुति होती है।

६३. स्थण्डिल या स्थानापन्न कुण्ड पक्के प्रांगण में बिना खोदे भी बन सकता है।

६४. कुण्ड के अठारह संस्कार तांत्रिक मत से होते है।

६५. लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये-वर्तुल, चतुरस्र, पद्मकुण्ड आदि का विधान मिलता है।

६६. विचित्र वस्त्रों से मण्डपाच्छादन करे।

६७. स्थण्डिल लाल मिट्टी या बालू से बनवा सकते हैं।

६८. कुण्डों की मेखला के कई एक पक्ष है। जैसे–एक मेखला, दो मेखला, तीन मेखला और पाँच मेखला उसमें चार मेखला जो बनाते है उसका कोई प्रणाम शास्त्रीय नहीं दीखता। न उनके रंग का विधान मिलता न देवताओं की स्थिति ही मिलती।

६९. मण्डप के नव भाग होते है, वे सब बराबर–बराबर के होते हैं अर्थात–टेढ़ा मेढ़ा नहीं होता है।

७०. जिस कुण्ड की शृंङ्गार द्वारा रचना नहीं होती, वह यजमान का नाश करता है।

७१. कुण्ड के पूर्व भाग का संज्ञा है, दक्षिण और उत्तर हिस्से की बाहू संज्ञा; योनी और पैर पश्चिम दिशा में होते है, तो उदर कुण्ड माना जाता है।

७२. कुण्डों की मेखला कुण्ड के आकार वाली होती है।

७३. कुण्डों की मेखलाओं को कुण्डों के बाहर ही रखने का शास्त्रीय सिद्धान्त तथा विधान मिलता है, कुण्डों के भीतर का नहीं मिलता है।

–पं० अशोक कुमार गौड़

विविध देवी-देवताओं के गायत्री मंत्र

१. शिव-गायत्री-

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

[नारायणोपनिषत्१४]

२. सूर्य-गायत्री-

आदित्याय विद्महे सहस्त्रकिरणाय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।

[सूर्योपनिषत्]

३. लक्ष्मी-गायत्री-

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

[ऋग्वेद, परिष्टिभाग]

४. विष्णु-गायत्री-

नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

[महा नारायणोपनिषत् ६]

५. हनुमत्-गायत्री-

रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि। तन्नो हनुमत् प्रचोदयात्।

६. गणेश-गायत्री-

लम्बोदराय विद्महे महोदराय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

[अग्निपुराण ७१।६]

पूजन-सामग्री

रोली
मौली
धूपबत्ती
कर्पूर
केसर
रुई
चावल आधा किलो
यज्ञोपवीत (चार)
अबीर (गुलाल)
बुक्का (अभ्रक)
सिन्दूर
पान
सुपारी
पुष्पमाला
कुछ पुष्प फुटकर
दूर्वा
अतर का फावा
इलायची छोटी
लंवग
पेड़ा ५०० ग्राम
ऋतुफल एक दर्जन
दुग्ध ५०० ग्राम
दही २५० ग्राम
घृत
गुड़

चीनी २५० ग्राम
सहत
गंगाजल
चन्दन घिसा हुआ
आम्रपत्र
गूलरपत्र
वटपत्र
पाकरपत्र
पीपलपत्र
सर्वौषधि की एक पुड़िया
गिरिका गोला दो
नारियल जटादार एक
दीयट
दीयासलाई
जिस देवता की पूजा करनी हो
उसकी मूर्ति एक
सिंहासन
मूर्ति के सभी वस्त्र
धान का लावा
हलदी की गांठ ५ या ७ या ८
करंजा १
धनियाँ
कमलगट्टा
मजीठ
पूजनार्थ एक कटोरी

गेहूँ २५० ग्राम
कटोरा बड़ा पंचामृत के लिये एक
कलश ताम्र का एक
सफेद कपड़ा आधा मीटर
सकोरा मिट्टी का
लाल कपड़ा आधा मीटर
पूजनार्थ एक थाली
॥ इति पूजन सामग्री समाप्तः ॥

प्रतिष्ठा-समाग्री

रोली २५० ग्राम
मौली २५० ग्राम
धूपबत्ती चार पैकेट
केसर ८ मासा
कपूर पाँच तोला
अबीर (गुलाल)
बुक्का (अभ्रक)
सिन्दूर
हलदी पीसी ५०० ग्राम
मेंहदी पीसी २५० ग्राम
यज्ञोपवीत (पचास)
रूई २५० ग्राम
चावल १० कि.
पान ५० प्रतिदिन
सुपारी पाँच किलो
पेड़ा एक किलो प्रतिदिन
बतासा एक किलो
ऋतुफल एक दर्जन प्रतिदिन
पंचमेवा एक किलो
मिश्री आधा किलो
इलायची छोटी दो तोला
लवंग दो तोला
जावित्री दो तोला
जायफल २०
अंतरकी शीशी दो
गुलाबजल की शीशी एक
कस्तूरी की शीशी एक
गोबर
गोमूत्र
दुग्ध आधा लीटर प्रतिदिन
दधि २५० ग्राम प्रतिदिन
चीनी ५०० ग्राम प्रतिदिन
गो घृत
सहत २५० ग्राम
पीली सरसों
कच्ची सूत सौ हाथ
पुष्पमाला पचीस प्रतिदिन
फुटकर पुष्प प्रतिदिन
तुलसी प्रतिदिन
दूर्वा प्रतिदिन
बिल्वपत्र प्रतिदिन
कुशा
नारियल जटादार पचीस
गिरिके गोले ग्यारह

चन्दन का मुठ्ठा सफेद एक
चन्दन का मुठ्ठा लाल एक
हरसा एक
एक रुपये का लालरंग
एक रुपये का पीला रंग
एक रुपये का हरा रंग
एक रुपये का काला रंग

पंचरत्नकीपुड़िया सात सर्वैषिधि–

१ रुपये का मुरा
१ रुपये का जटामासी
१ रुपये का वच
१ रुपये का कूट
१ रुपये शिलाजीत
१ रुपये आंवाहलदी
१ रुपये दारूहलदी
१ रुपये का सटी (कचूर)
१ रुपये का चंपा
१ रुपये का नागरमोथा

सप्त–मृत्तिका–

हाथी के स्थान की मिट्टी
घोड़े के स्थान की मिट्टी
बल्मीक (दीमक) की मिट्टी
नदी संगम की मिट्टी
तालाब की मिट्टी
राजद्वार (चतुष्पथ) की मिट्टी
गोशाला की मिट्टी

सप्त धान्य–

यव दो किलो
गेहूँ दो किलो
धान दो किलो
तिल दो किलो
ककुनी आधा किलो
सावां आधा किलो
चना दो किलो

नवग्रह की लकड़ी–

मदार की लकड़ी १०८
पलास की लकड़ी १०८
खैर की लकड़ी १०८
अपामार्ग की लकड़ी १०८
पीपल की लकड़ी १०८
गूलर की लकड़ी १०८
शमी की लकड़ी १०८
दूर्वा १०८
कुशा १०८
मृगचर्म नवीन एक
कम्बल नवीन एक
सूतकी डोरी दस हाथ की
तांबे का तार बीस हाथ का
काली उड़द एक किलो
लोहे की कंटिया चार
काष्ठकी दो चौकी
काष्ठ की पाटा तीन

दो रुपये की सूतरी
केले के स्तम्भ आठ
दो रुपये का हरताल
दो रुपये का मैनसिल
दो रुपये का सुरमा काला
दो रुपये का सुरमा सफेद
दो रुपये का पारा
कांक्षी बरिका
कौसिस
गेरू
अगर
तगर
खश
वैष्णवी
सहदेवी
लक्ष्मणा
ब्राह्मी
सोंठ
शमी
शताबरी
गुडूची
सौराष्ट्री
अर्जुन
आंवला
गोरेचन
कौवाकोठी

शंखपुष्पी
वरियरा
भटकटैया
सोमलता
ऋतु जन्य फल
बड़ा नीबू
कागजी नीबू
जामुन पत्र
अशोक पत्र
शमीपत्र
कदम्बपत्र
सेमरपत्र
पंचपल्लव की छाल
सेवार (नद्यावर्त)
ऊखका रस
सुरोदक
शान्त्युदक
क्षारोदक
सितपुष्पोदक
गोशृङ्गोदक
फलोदक
नवरत्नोदक
सुवर्णोदक
मेघजल
तीर्थजल
गुलाबजल

केवड़ाजल

अतर

फुलेल

अग्निहोत्र की भस्म

मक्खन २५० ग्राम

दुग्ध पाँच किलो

दही ढ़ाई किलो

गोबर

गोमूत्र

धान का लावा एक किलो

सत्तू (सतुवा) एक किलो

जौका आटा डेढ़ किलो

चावल का आटा २५० ग्राम

मसूर का आटा २५० ग्राम

जटामासी का चूर्ण ५० ग्राम

आँवला का चूर्ण ५० ग्राम

अन्नाधिवाय के लिये अन्न–

चावल का एक बोरा

गेहूँ का एक बोरा

घृताधिवास के लिये–

गो घृत टीन एक

ब्रह्मशिला एक

कूर्मशिला एक

मिट्टी की पेटी एक

लोहे की कंटिया आठ

ऊनका सूत एक पाव

तीन ताँगे का सूत पाँच सौ हाथ

चांदी का तार दो सौ हाथ

कलश चाँदी का अथवा

ताम्र का एक

कलश ताम्र के अथवा

पीतल के पाँच

कमण्डलु (झारी) एक

तस्तरी पीतल दस

पूर्णपात्र कलश (ब्रह्मा के लिये)

बघोना (खीर पकाने के लिये)

कटोरा कांसेका बड़ा एक

कटोरी ग्यारह

थाली दो

थाली कांसे की एक

परात एक

कड़छुल पीतल एक

सड़सी पीतल एक

दो कांसेकी कटोरी

आरतीदानी एक

धूपदानी एक

घण्टा एक

घड़ौला एक

शंख एक

मिट्टी के कलश दो सौ पचास

मिट्टी सकोरे एक सौ

पत्तल एक सौ

मीठा तेल ढ़ाई किलो

सुवर्ण के टुकड़े पाँच
चाँदी के टुकड़े पाँच
ताँबे के टुकड़े पाँच
पीतल के टुकड़े पाँच
शीशा एक
रागा एक

वरण सामग्री

धोती
दुपट्टा
अंगोछा
लोटा
गिलास
पंचपात्र
आचमनी
गोमुखीमाला
यज्ञोपवीत
कुशासन
सुवर्ण की अंगूठी

आचार्य के लिये वरण सामग्री-

देवताओंको चढ़ाने के लिये वस्त्र-

पीताम्बर रेशमी दो
दुशाला एव
सिल्क दो
रेशमी जनानी साड़ी एक
धोती सूती इक्कीस
दुपट्टा इक्कीस
अंगोछा इक्कीस
रेशमी चुंदरी एक
शीशा बड़ा एक
सौभाग्यपिटारी एक
सुवर्ण की मूर्ति प्रधान देवताकी
डेढ़ तोले की एक
सुवर्ण की मूर्ति वास्तुकी
दस मासे की एक
सुवर्ण की मूर्ति क्षेत्रपालकी
दस मासे की एक
सुवर्ण की मूर्ति योगिनी की
दस मासे की एक
सुवर्ण की मूर्ति नवग्रह की
दस मासे की एक
सुवर्ण की मूर्ति असंख्यात रुद्रकी
दस मासे की एक
सुवर्ण की शलाका दो
सुवर्ण का सर्प (नाग) एक
सुवर्ण का कमल एक
सुवर्ण के टुकड़े नब्बे
सुवर्ण की जिह्वा एक
चाँदी का सिंहासन एक
चाँदी का छत्र एक
चाँदी की तस्तरी एक
चाँदी की थाली एक
चाँदी की कटोरी दो

चाँदी का पंचपात्र एक

चाँदी की आचमनी एक

चाँदी की का अर्घा एक

चाँदी का तष्टा एक

ध्वजा-पताका तथा वेदियों के लिये वस्त्र–

सफेद कपड़ा दो थान

लाल कपड़ा एक थान

पीला कपड़ा एक थान

हरा कपड़ा एक थान

काला कपड़ा	एक थान
पंचरंगा चंदवा	बड़ा एक
चंदवा छोटे	पाँच

भगवान् की फोटो सोलह

शीशा बड़ा	एक
घड़ी	एक

शय्या-सामग्री–

पलंग नेवार का एक

दरी	एक
गद्दा	एक
रजाई	एक
कंबल	एक
सुजनी	एक
मसहरी	एक
चदरा	दो
तकिया	दो

आचार्य के पाँच वस्त्र

आभूषण सुवर्ण के

चाँदी के बर्तन

भोजन के बर्तन

अन्न (यथाशक्ति)

घृत टीक	एक
छाता	एक
छड़ी	एक
जूता	एक जोड़ा
पानदान	एक
पीकदान	एक

मन्दिर के लिये शय्यासामग्री–

पलंग नेवार का	एक
दरी	एक
गद्दा	एक
रजाई	एक
चदरा	दो
तकिया	दो
मसहरी	एक
चंवर	एक

मन्दिर के लिये पूजन-सामग्री–

पूजन के बर्तन पञ्चपात्रादि

घण्टा	एक
घड़ौल	एक
शंख	एक
आरतीदानी	एक

धूपदानी	एक
अतरदानी	एक

हवन सामग्री–

तिल	८० किलो
चावल	४० किलो
यव	बीस किलो
चीनी	दस किलो
गौ घृत	एक टीन
पंचमेवा	दो किलो
कमलगट्टा	एक किलो
गुग्गुल	५०० ग्राम
चन्दनका चूरा	एक किलो
गोयठा (कण्डा)	एक सौ

यज्ञ-सामग्री

रोली	२५० ग्राम
मौली	२५० ग्राम
धूपबत्ती	चार पैकेट
केसर	छह मासा
कपूर	चार तोला
अबीर	(गुलाब)
बुक्का	(अभ्रक)
सिन्दूर	
पीसी हलदी	२५० ग्राम
यज्ञोपवीत	पचास
रूई	२५० ग्राम
चावल	

सुपारी	पाँच किलो
पान	पचास प्रतिदिन
पेड़ा	एक किलो प्रतिदिन
ऋतुफल	एक दर्जन प्रतिदिन
बतासा	डेढ़ किलो
पंचमेवा	डेढ़ किलो
मिश्री	डेढ़ किलो
इलायची छोटी	दो तोला
लवंग	दो तोला
जावित्री	दो तोला
जायफल	पन्द्रह
अतर की शीशी	एक
गुलाबजल की शीशी	एक
कस्तूरी की शीशी	एक
दुग्ध आधा ली.	प्रतिदिन
दही २५० ग्राम	प्रतिदिन
चीनी २५०ग्राम	प्रतिदिन
गो घृत	
सहत २५० ग्राम	
गोबर	
गोमूत्र	
पीली सरसों	
कच्चा सूत २५० ग्राम	
पुष्पमाला दो दर्जन	प्रतिदिन
पुष्प फुटकर	प्रतिदिन
तुलसी	प्रतिदिन

दूर्वा प्रतिदिन
बिल्पवत्र प्रतिदिन
कुशा
गंगाजल प्रतिदिन
नारियल जटादार पच्चीस
गिरिके गोले ग्यारह
चन्दन का मुट्ठा एक
हरसा एक
रुद्राक्ष की माला एक
एक रुपये का लाल रंग
एक रुपये का हरा रंग
एक रुपये का पीला रंग
एक रुपये का काला रंग
पंचरत्न की पुड़िया सात
पंच-पल्लव
आम्रपत्र
गूलरपत्र
पाकरपत्र
वटपत्र
पीपलपत्र

सर्वैषिधि

एक रुपये का मुरा
एक रुपये का जटामासी
एक रुपये का वच
एक रुपये का कूट
एक रुपये का शिलाजीत
एक रुपये का आंवाहलदी और दारूहलदी
एक रुपये का सठी (कचूर)
एक रुपये का चंपा
एक रुपये का नागरमोथा

सप्त-मृत्तिका-

हाथी के स्नान की मिट्टी
घोड़े के स्थान की मिट्टी
बिल (दीमक) की मिट्टी
नदी संगम की मिट्टी
तालाब की मिट्टी
राजद्वार (चतुष्पथ) की मिट्टी

सप्त धान्य-

यव डेढ़ किलो
गेहूँ डेढ़ किलो
धान डेढ़ किलो
तिल डेढ़ किलो
ककुनी २५० ग्राम
सावाँ ५०० ग्राम
चना डेढ़ किलो

नवग्रह की लकड़ी-

मदार की लकड़ी एक सौ आठ
पलाश की लकड़ी एक सौ आठ
खैर की लकड़ी एक सौ आठ
अपामार्ग की लकड़ी ,, ,,
पीपल की लकड़ी ,, ,,

गूलर की लकड़ी ,, ,,
शमीकी लकड़ी ,, ,,
दूर्वा ,, ,,
कुशा ,, ,,
मृगचर्म नवीन एक
कंबल नवीन एक
सूत की डोरी मोटी दस हाथ की
रूई २५० ग्राम
लोहे की कंटिया चार
तांबे का तार पचीस हाथ
काष्ठ की चौकी नूतन दो
काष्ठ का पीढ़ा नूतन चार
काला उड़द डेढ़ सेर

यज्ञ पात्र–

प्रणीता
प्रोक्षणी
स्रुवा
स्रुची
स्फय
वसोर्धारा
अरणि–मन्था
शंख एक
घण्टा एक
घड़ौल एक
आरती दानी एक
प्रधान कलश चाँदी का अथवा
ताम्र का एक
वास्तु कलश ताम्र का एक
क्षेत्रपाल कलश ताम्र का एक
योगिनी कलश ताम्र का तीन–
अथवा एक
रुद्र कलश ताम्र का एक
प्रवेश कलश ताम्र का एक
कलश ताम्र के अठारह
पुण्याहवाचन कलश कमण्डलु एक
पूर्णपात्र (बघोना) ब्रह्माके लिये एक
प्रधान कुण्ड का ताम्रकलश एक
थाली मुरादाबादी चार
परांत बड़ी एक
आज्यस्थाली (कटोरा बड़ा)
हवनार्थ एक
चरुस्थाली (बघोना) एक
अभिषेकपात्र एक
कांसे की थाली एक
कड़छूल पीतल एक
सड़सी पीतल एक
चिमटा पीतल एक
छायापात्र (कांसे की कटोरी) दो
कटोरी पूजनार्थ ग्यारह
बालटी पीतल एक
गंगासागर एक

देवताओं को चढ़ाने के वस्त्र–

भगवान् के लिये रेशमी
पीतांबर एक
रेशमी जनानी साड़ी एक
कब्जा जनाना एक
रेशमी चुंदड़ी एक
सौभाग्य पिटारी एक
शृंङ्गारदान एक
दुशाला अथवा ऊनी चादर एक
धोती पन्द्रह अथवा ग्यारह
डुपट्टा पन्द्रह अथवा ग्यारह
अंगोछा पन्द्रह अथवा ग्यारह

ध्वजा-पताका तथा वेदी आदि के लिये वस्त्र-

सफेद कपड़ा पचीस गज
लाल कपड़ा पन्द्रह गज
हरा कपड़ा पन्द्रह गज
काला कपड़ा पन्द्रह गज
पीला कपड़ा पन्द्रह गज
चंदवा पचरंगा बड़ा एक
मण्डपाच्छादनार्थ वस्त्र सफेद-थान दो
देवताओं की तस्वीर बड़ी सोलह
शीशा बड़ा एक
घुँघरू पीतल के पचास
प्रधान देवता की प्रतिमा सुवर्ण की ४ तोले की अथवा १। तोले की १
प्रधान देवी की प्रतिमा सुवर्ण की १। तोले की एक
भगवानके लिये सुवर्णकी एक माला
वास्तुकी प्रतिमा सुवर्ण की छह मासे की एक
क्षेत्रपालकी प्रतिमा सुवर्ण की ६ मासे की एक
योगिनी की प्रतिमा सुवर्ण की ६ मासे की एक
नवग्रह की प्रतिमा सुवर्ण की ६ मासे की एक
रुद्र की प्रतिमा सुवर्ण की ६ मासे की एक
सुवर्णकी शलाका ३मासेकी एक
सुवर्ण की जिह्वा ३ मासे की एक
सुवर्ण खण्ड इक्यावन
गरुड की प्रतिमा चाँदी की एक
नन्दी की प्रतिमा चाँदी की एक
चाँदी का सिंहासन एक
चाँदी का छत्र एक
चाँदी का चंवर एक
चाँदी की थाली एक
चाँदी की कटोरी दो
चाँदी का गिलास एक
चाँदी की तस्तरी एक
चाँदी का पंचपात्र एक
चाँदी की आचमनी एक

चाँदी का अर्घा एक
चाँदी का तष्टा एक
चाँदी की धूंपदानी एक
चाँदी की आरतीदानी एक
चाँदी का चौकोरपत्र (१६ अंगुल लंबा और चौड़ा) एक

वरण-सामग्री-

धोती रेशमी सूती
दुपट्टा ऊनी, रेशमी अथवा सूती
अंगोछा
लोटा
गिलास
पंचपात्र
आचमनी
गोमुखी माला
खड़ाऊँ
जनेऊ
आसन
अंगूठी सुर्वण की

आचार्य-वरणसामग्री-

पीतांबर रेशमी एक
दुशाला एक
सिल्क रेशमी एक
अंगोछा एक
लोटा चाँदी का एक
गिलास चाँदी का एक
पंचपात्र चाँदी का एक
आचमनी चाँदी की एक
अर्घा चाँदी का एक
तष्टा चाँदी का एक
सुवर्ण की अंगूठी एक
सुवर्ण की माला एक
रुद्राक्ष की माला एक
ऊनी गलीचे का आसन एक
गोमुखी माला एक
खड़ाऊँ एक जोड़ा
यज्ञोपवीत एक

शय्यादान-सामग्री-

पलंग नेवार का एक

दरी	एक
रूई का गद्दा	एक
चाँदनी	एक
चदरा	एक
सुजनी	एक
मसहरी	एक
रजाई	एक
कंबल	एक
तकिया	दो
धोती	एक
दुशाला	एक
सिल्क	एक
पीतांबर	एक

जनानी साड़ी	एक	सभी प्रकार के अन्न	
कमीज	एक	गौघृत टीन	एक
साफा (पगड़ी)	एक	शीशा बड़ा	एक
छाता	एक	सौभाग्यपिटारी	एक
जूता (स्वदेशी)	एक जोड़ा	शृंगारदान	एक
घड़ी	एक	अंगूठी सुवर्ण की	एक
पानदान	एक	सिकड़ी सुवर्ण की	एक
पीकदान	एक	कण्ठी सुवर्ण की	एक
अतरदान	एक	चाँदी के बर्तन	पाँच
भोजन के बर्तन	पन्द्रह या ग्यारह	गीता की पुस्तक	एक
लालटेन	एक	वेद और पुराण की पुस्तकें	

अथ यमुनास्तोत्रम्

कृपापारावारां तपनतनयां तापशमनीं मुरारि प्रेयस्यां भवभयदवां भक्तवरदाम्। विपज्ज्वालान्मुक्तां श्रियमपि सुखाप्तपरिदिनं सदा घोरो नूनं भजति यमुनां नित्यफलदाम् ॥ १ ॥

मधुवनचारिणि भास्कारवाहिनि जाह्नवीसंगिनि सिन्धुसुते मधुरिभूषिणि गोकुलभीति-विनाशकृते। जगदधमोचनि मानसदायिनि केशवकेकिनिदानगते जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकट नाशिनि पावय माम् ॥ २ ॥

अयि मधुरे मधुमौदविलासिनि शैलविदारिणि वेगभरे परिजनपालिनित दुष्टनिषूदिनि वाञ्छिकामविलासधरे। व्रजपुरवासिजनार्जित-पातकहारिणि विश्वजनोद्धरिके जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ३ ॥

अतिविपदम्बुधिमग्रजनं भवता पशताकुलमान सकं गतिमतिहीनमशेषभयाकु लमागतपादस-तोजयुगम् ऋणभय-भीतिमनिष्कृतिवातककोटि शतायुयपुञ्जतरं जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ४ ॥

नवजलदद्युति कोटिलसत्तनुहेममयाभरणाञ्चितके तडिदवहेलिपदाञ्चलचञ्चल-शोभितपीतसचैलधरे। मणिमयभूषण-चित्रपटासनरञ्जितगञ्जितभानुकरे जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ५ ॥

शुभपुलिने मधुमत्तयदूद्भवरासमहोत्सवकेलिभरे उच्चकु-लाचल-राजितमौक्तिकहारमयाभररोधसिके। नवमणिकोटि-कभास्करकञ्चु-किशोभिततारकहारयुते जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ६ ॥

करिवरमौक्तिकनासिकग भूषणवावचमत्कृतचञ्चलके मुख-कमलामलसौरभचञ्चलमत्तमधुतव्रलोचनिके मणिगणकुण्डललोल-परिस्फुरदाकुलगण्ड-युगामलके जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ७ ॥

कलरवनुपुरहेम-मयाचितपादसरोरुहसारुणिके धिमिधिमिधिम-धिमतालविनोदितमानसमञ्जु लपादगते। तवपदपंकजमाश्रित-मानवचित्तसदाखिल-तापहरे जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ८ ॥

भवोतापाम्भोधौ निपतितजनो दुर्गतियुतो यति स्तोति प्रातः प्रतिदिनमनन्याश्रयतया। हयाह्रेषैः काम करकुसुमकुञ्ज रविसुतां सदा भुक्त्वा भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ॥ ९ ॥

अथ त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्

कदम्बवनचारिणीं मुनिकदम्बकादम्बिनीं, नितम्ब-जितभूधरां सुरनिर्त्तन्बनीसेविताम्। नवाम्बुरुहलोचनाम-भिनवाम्बुदश्यामलां त्रिलोचनकुटम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरी-माश्रये ॥ १ ॥

कदम्बवनवासिनी कनकवल्लकीधारिणी, महार्हमणिहा-रिणी मुखसमुल्लसद्वारुणीम्। दयाविभवकारिणीं विशदलो-चनीं चारिणौ त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दररीमाश्रये ॥ २ ॥

कदम्बवनशालया कुचभरोल्लसन्मालया कुचोपमित-शैलया गुरुकृपामसद्वेलया। मदारुणकपोलया मधुगभीरवा-चालया कयापि धनशीलया कवचिता वयं लीलया ॥ ३ ॥

कदम्बवनमध्यगाकनकमण्डलोपस्थितां षडम्बुरुहतासिनीं सततसिद्धिसौदामिनीम्। विडम्बितजपारुचिं विकचचन्द्रचूडा-मणिं, त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुर-सुन्दरीमाश्रये ॥ ४ ॥

कुचाञ्चितविपञ्चिकां कुटिलकुम्भलालंकृतां, कुशेशय-निवासिनीं कुटिलचित्त विद्वेषिणीम्। मदारुण विलोचनां मनसिजारिसम्मोहिनीं मतगमुनिकन्यकां मधुरभाषिणीमा-श्रये ॥ ५ ॥

स्मरेत्प्रथमपुष्पिणीं रुविरबिन्दुनीलम्बरां गृहीतमधुपानिकां मधुविघूर्णनेत्राञ्चलाम्। घनस्तनतरोन्नतां गलितचूलका श्यामलां, त्रिलोकनकुटुम्बिनीं त्रिपुर-सुन्दरीमाश्रये ॥ ६ ॥

सकुंकुमविलेपनामलकचुम्बिकस्तूरिकां समदेहसितेक्षणां सशरचारपाशांकुशाम्। सुशेषजनमोहिनीमरुणमाल्यभूषाम्बरां जपाकुसुमभासुरा जपविधौ स्मराम्यम्बिकाम् ॥ ७ ॥

पुरन्दरपुरन्ध्रिकां पितामहपतिव्रतां पटुपटीरच-र्चारताम्॥ मुकुन्दरमणीं मनोलसदलं क्रियाकारिणीं भजामि भुवनाम्बिकां सुखधूटिका चेटिकाम् ॥ ८ ॥

हमारे यहाँ से प्रकाशित कर्म–काण्ड एवं धर्म शास्त्र के अमूल ग्रंथ

पुस्तक का नाम-	लेखक का नाम-	मूल्य-
१. श्रीमद्भागवत् (भाषा-टीका)	श्री दौलतराम गौड़ वेदाचार्य	३५०/-
२. प्रभु विद्या प्रतिष्ठार्णव (भाषा-टीका)	श्री दौलतराम गौड़ वेदाचार्य	१५०/-
३. यज्ञ मन्त्र-संग्रह	श्री वेणीराम गौड़ वेदाचार्य	१५०/-
४. विष्णु याग प्रयोग (भाषा-टीका)	श्री अशोक कुमार गौड़	८०/-
५. कुण्ड निर्माण स्वाहाकार (भाषा-टीका)	श्री अशोक कुमार गौड़	५०/-
६. गणपति प्रतिष्ठा पद्धतिः (भाषा-टीका)	श्री अशोक कुमार गौड़	२०/-
७. गृह वास्तु शान्ति पद्धतिः (भाषा-टीका)	श्री अशोक कुमार गौड़	३०/-
८. लक्ष्मी उपासना (भाषा-टीका)	श्री अशोक कुमार गौड़	२५/-
९. कुम्भ विवाह (भाषा-टीका)	श्री वेदप्रकाश गौड़	५/-
१०. शिव रात्रि व्रत कथा (भाषा-टीका)	श्री वेदप्रकाश गौड़	५/-

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-१